

www.KitaboSunnat.com

ترجیر اشیخ محدومت ارق نلیل اسیخ محدومت ارق نلیل

مليت شيخ الاسلام المام البن تعييده عدالله ناشر

العالقة الترجيم التالي مع المناع في التوليغ ومت أباد في المناد



معدث النبريري

اب ومنت کی روشی میں لکھی جانے والی ارد واسازی کتب کا سب سے بڑا مفت مرکز

معزز قارئين توجه فرمائين

- کتاب وسنت ڈاٹ کام پردستیابتمام الیکٹرانک تب...عام قاری کے مطالعے کیلئے ہیں۔
- 💂 بجُجُلِیمُرالیجُقینُونُ الْمِیْنِیْ کے علمائے کرام کی با قاعد<mark>ہ تصدیق واجازت کے بعد (Upload) کی جاتی ہی</mark>ں۔
 - معوتی مقاصد کیلئان کتب کو ڈاؤن لوژ (Download) کرنے کی اجازت ہے۔

تنبيه

ان کتب کو تجارتی یا دیگر مادی مقاصد کیلئے استعال کرنے کی ممانعت ہے کے محانعت ہے کے محانعت ہے کے محانعت ہے کے م

اسلامی تعلیمات میشتل کتب متعلقه ناشربن سے خرید کرتبلیغ دین کی کاوشول میں بھر پورشر کت اختیار کریں

PDF کتب کی ڈاؤن لوڈنگ، آن لائن مطالعہ اور دیگر شکایات کے لیے درج ذیل ای میل ایڈریس پر رابطہ فرمائیں۔

- ▼ KitaboSunnat@gmail.com
- www.KitaboSunnat.com



ترجه

الرّدعلى الاننائي

www.KitaboSunnat.com

تاليف شيخ الاسلام امام ابن تيمير رحم الله

ترح/ـ

رشنخ مخرّصت وق خلیل ایسنخ مخرّصت وق خلیل

ناتير

بببالزخل جآويد متنجرصن بإراك

ادارة التزجر الناليف الاشاعك التبليغ رحت أباد فيبكراباد

(باكستان)

جمله حقوق لجق مترجم محفوظ

رُوصنه ا قدس کی زیارت معنتن، 2,582 امام ابن تيميير رحمته الله عليه مولانا محمدصا وق غليل مترجم : ناشر : مينجرضيار السنتة ادارة الترجمة التاليف-رمت آباد سنبصل آباد دیکشان، محمدعاشق حسين ماشمي کتابت : تزيمن ا حببيب الرحمن حاوير طباعت: www.KitaboSunnat.com ا۲ دمضان الهادک ۴ ۹۳ حر تاریخ اثاعت : تعبدا د ؛ قىمىت ؛ ۲۱ زوسیے

> 1027 1027 1031'Uil 4 . 19

www.KitaboSunnat.com

فهرست عنوانات

| صغم | عوان | منبرتهار | صفحه | عنوان | تنبشمار |
|----------|------------------------------|----------|------|--------------------------------------|---------|
| 14 | الردعلى الأخناق كاترجمه | ir | q | يشخ الاسلام ابن تيمييه | -1 |
| ۲۸ | تتبيد | (10 | 1. | افت تأمير | - |
| 19 | اتب بع رسو ل | ١٣ | 150 | معتدير | ۳ |
| 44 | النهرباك كافوت | 10 | -19 | عظميت انسان | الم |
| ٣٣ | مدم علم كا عدر قابل قبول نيس | 14. | i۵ | رسول كريم كي عظمت | ۵ |
| | لبشن انبيار كالمقعد | 1,4 | 10 | آپ پر در در در مجیجنا | 7 |
| 49 | التدباك ملادكسي ومتيازي | JA. | 14 | مافظابن تمييا ورزيارت | |
| ۲. | رسول أرم ويحبى ختيارتبين | 19 | | روضه نبوي | _ |
| 44 | سبب تاليف كماب | ۴۰ ا | 1^ | كيار دونيا قدس ركفرك بوكر | |
| 44 | قامني لغنائي كربيالت | וץ | | درود مجيجة والحكى أداراب | |
| 4 | قاضى اخنائ كاافتراض | ۲۲ | | مستنتے ہیں ؟ | |
| ۵۲ | ا نزاین عسسر | 75 | 19 | يشيخ الاسلام ابتيمية بإرام الملي | • |
| ٥٤ | مافظابن عزم ماتدل | riv , | ۲۰ | يشخ الاسلام كي ملالت علمي | 1- |
| 41 | 1 60 | 10 | 46 | پا <i>ک مبند مین حا</i> فظ ابن تیمیه | |
| чт. | 1.11.13.27 | 1 | | كيعلوم ومعارف كاتعارف | |

| صفحر | عنوان | نبثمار | صفر | عنوان | نشمار |
|-------------|---|-------------------|------|---|------------|
| ^6 | فبروں کی زیارت کیلئے سفر کی مشروعیت پڑمیعہ نے مدیثی وضع کیں | k 1 | 44 | قروں پامتیازی میشیت صحابہ کرام میں زیادت قبر بنوی کا لفظ سستعمل تھا | 44 |
| 19 | قامنی افغاتی کاالزام اور اس کاجواب | ۲۴ | 44 | نبی التعطیہ و آم کی ہنات مستجد نبوی کے فضائل | ra r4 |
| 91 | أقاصني سماعيل براسحاق كأقرل | ۳ | ۷٠ | قاصنی اخناتی کی الزام اثنی | ۳. |
| 95 | قاصنى عبدالوماب كاقول | 44 | 10 | سوال کے الف ظ | امو |
| 94 | قبرون بردع الميلتية انا | 40 | . 44 | ہواب کے الفاظ | ۳۲ |
| • | قبر بنوی کی زیارت امامشعبی نخعی این میرین کلسلک | لاد لاع | 44 | من زارنی و ذارابی مدین کمنتیق | ۳۳ |
| | صاحبةبرسے ماکزا شرک مشرکین کی تین شمیں | ل م لم | 44 | من من من خواد قبری مدیث کی تحقیق | ۳۴ |
| 1 °¥ | حبنوں انسانوں کی سفارش امام مالک کا قول | a. al | 4 | من زارقبری وجبت لا شفاعتی <i>مدیث کی تحقیق</i> | r s |
| 1.4 | تاصنی عیامن کا قول | or | 49 | الومحمدمقدس كااشدلال | ۳۲ |
| 14 | الوالقاسم بن ملاب كاقرل | ٥٣ | ΛÍ | خيرمسامد ثلاثه كانذر | ٣٧ |
| J• ^ | محمد من مواز کا قول | ٥٢ | Al | زیارت قربنوی کی ترم مدیش منعیف بیں | ۳۸ |
| . Him | ا ہی مربیہ صف جبر و ق کی زیارت کا تھم | ٥٥ | Ar | مدسینی صنعیقت ہیں امام احمد کا قول قربنوی کی شرع صیشت | 79 |
| i ii | ابن القاسم كا قو ل | 04 | ٨٣٠ | قربنوی کی شرع صیثیت | ۲۰. |

| صفح | عنوان | نبرشمار | صفح | عنوان | نبرثمار |
|------|---|--|-------|-------------------------------------|---------|
| 150 | سفيان بن عينيه عصاستفيا | 44 | 411 | مديث ردالنه على روحي | ۵۸ |
| 144 | قبورمین اورئت برستوں میں مما | 45 | (194 | يبول لنرص لأنرمليه وسلم | 09 |
| 144 | ايك مثال | 4,4 | | ك خصومسيات | |
| 149 | دُوسری مثال | 44 | 114 | زیارت قبور کے مقاصد | 4. |
| الما | عبادا ترحمٰن کون ہیں ؟ | ۷۸ | ी।द | رُوصْنُهُ رسول کن زیارت | 41 |
| 144 | انبيار كادشمن كون سيد ؟ | ۷9 - | | ابلِ بدعت كامال | 44 |
| 147 | وافض خواج كطومام باطله | ۸۰ ا | l lr. | محابركم ك قبرب نجاد منتبين | 72 |
| 144 | قرس كاج كرنيواليا دروارج | 1 4 | 141 | ایک دا قعه | 44 |
| 1519 | ادّله مشرعيه كاما خذ | \\ \tau \\ \ta | 171 | مُوسِراً وا تعب | 40 |
| 101 | کیانمازمیں آپ پر درود | 1 | JYY | كيا وفات كے بعد آپ بيلے كى | 44 |
| | معيجنا ضرورى سي | • | | طرح زنده بین ؟ | |
| 104 | امام محمد باقر کا قول | 14 | 144 | قیام این کے درسب | 44 |
| 104 | فرشتول ورنبيول كانتم كمانا | 100 | 144 | اوليار كى قبر <i>ي حصو</i> ل امن كا | 44 |
| 104 | موصرین کے عقائد | 14 | | سبب نہیں | |
| 14. | عصمت انبياء | 14 | 144 | مدمية منوره كي توشحال كاسبا | 1 |
| 171 | قاصى عياص كى وضاحت | ^ | 119 | مكه كرّمه مين شرك كي ابتدا | 4. |
| (4) | أتخضرت مسلى الترعلييه وسلم | 19 | 1991 | غير كمشرعي زيارت | 41 |
| | كالبحريان حيئسدانا | | (۳۲ | بیت النوکے بالمقابان گر | 44 |
| (44 | کا بکریاں حیک رانا آپ کا اُئی ہونا آپ کا شن صدر | 9. | | معبدخالول كاعشر | |
| (41 | آب کاشن صدر | 91 | ITT | عزّىٰ اورمنات كاذكر | 44 |
| | 1 | i | l1 | 1 | t |

| 4 | | | , | | |
|------|---|---------|---|--|---------|
| صفحر | حنوان | نمثرمار | صفحه | عنوان | نبرثمار |
| 114 | اولين تنفاعت كااعزازآب | 1.9 | ١٩٢ | آ ب كى منابعت | 94 |
| | كوماصل سي | | 146 | مقوق معطف سقبار نبوي | 97 |
| 114 | ا کچاپی والدگی قبری زیار کرنا | 11. | | كي مقوق مقدم بي | |
| IAA | زيارت روفنهٔ رسول | 111 | 149 | زیارت بنوی کے آداب | 94 |
| 194 | ابن صبیب کا قول | HY | 14. | مشرع زبارت مجد نبوی کی | 90 |
| 194 | ميرانظسري | 111" | 141 | قبرون ک ^ز یارت میل ختلا | 94 |
| 194 | على بنسين زين لعابدري مقام | 114 | 144 | چندامثله | 94 |
| 4-1 | مسجدس واخل بوته وتت | 110 | , | عام قرور رپزاز جنازه مبائز | 91 |
| | آپ رچملوهٔ وسلام تعینا | | 144 | اب ی قبرا طهرر جنازه رئیضا | 99 |
| | عمروبن دسيت ركاقرل | 114 | | ثابت نہیں | |
| | امام تخعی کا قول | 114 | 149 | نبى كے بعدميغه امر وجرب | 100 |
| | علقمه اور تعب احبار كا قول | 11/ | | كامتنامني ننبي | |
| | سلام تحبية اوسلوة سلامين ق ر | 119 | 149 | مثال اول | 1-1 |
| | قیاسس فاس <i>دی جندامتله</i> میسر سر عبت | 14. | i/A+ | ثال ثان | 1.4 |
| PIY. | تبراطهرکی زمارت کی مدم مشرو | ۱۲۱ | IAI | شال ثا <i>لث</i> | 1:11 |
| | کے دمج بات | | I IVI | مثال رابع | ١٠١٠ |
| | ابل بدعت كالمرزعمل | 177 | jAí | مثال فامس | 1.0 |
| | قبراطهرک زیارت کیشرو ^ی را را را | 144 | <i> </i> | مثال سادس مثال سابع زیارت قبورکے کئے مفرخا | 1.4 |
| | کیونگرممکن سبے | | INF | مثال سابع | 1.6 |
| 141 | محابكرام بدمات محفوط تحقي | 144 | 144 | زیارت قبورکے کئے مفرقوا | 1-1 |
| | • | • | | ı i | |

| صفح | عنوان | مبرشمار | مفح | عنوان | نهرشمار |
|-----|---------------------------------|---------|------|---------------------------------|---------|
| 101 | سلام التحتيته | ۲۲ | 444 | قبرا طهرريه دُما كرنا | ira |
| 409 | الآماشارالتركا استثناء | 100 | pp. | مامن احد يسلم على | 14.4 |
| 44. | قاصى عياض كالقطير نظر | 144 | | العديث كهجابات | |
| 44. | أبحاق برابرأتهم نقيه كانقطه نظر | ۱۲۵ | 441 | مسحبرنبوى كي خصومتيت | 176 |
| 44+ | معنالطه كارد | الإط | 741 | زیارتِ قبر بنوی کامجاز | 170 |
| 141 | تبرنبوي بربدعات | الهر | 444 | قبرنبوی بر القدیمیرنا | 179 |
| 744 | قبر بنوی کی زیارت کی نزانا | ۱۴۸ | 140 | درول اكرم كالماعت فرض سي | ۱۳۰ |
| 440 | آپ کا زندگ میں آپ کا طر | 149 | 444 | أب كي رسالت رانبياً كاحبلياً | اس |
| | سفرہجریت | | ۲۴. | رمول كرم مرارقا منية كمباكيا ہے | 194 |
| 440 | وفودكااسالم كيكي سفركرنا | 10. | 444 | ترول کا ج | 155 |
| 442 | من دارنی بعدماتی صربیت | 101 | 754 | حهرصحا بركرام اورفبرنبوى | IMA |
| | كيتقيفت | | 454 | جمرة ماكنته كوكمب سيحبرنبوى | 100 |
| 444 | لسي بعبى قبركي زباريت سيختلف | 101 | | میں واخل کیا گیا | |
| | سفركرنا مبائز ننبين | | 400 | عمربن عبدالعزرز كامشوره | ١٣٩ |
| 449 | لیا قبربوی کی زیارت آپ | 100 | 440 | سعيد بن سبيب كافول | 182 |
| | سے محبت کی علامت ہے | | 444 | مجرول سے کیامرادہ | 144 |
| 74. | مغالطه کی تردیبر | 100 | 404 | زدر مطرات جرب وقا | 1 179 |
| 464 | میا قبربوی کی زیارت کے لئے | 100 | | فوقتاً بنائے گئے | |
| | سفركرنامعفيت سبدج | | + 4v | | |
| 424 | شفیان وری کا قول | 104 | 461 | سينوي مين ملحقه مائم كاحكم | 1 100 |
| | l . | i . | Ħ | l | 1 |

| صفحر | عنوان | تنزشار | صفحه | عنوا ن | نميشمار |
|-------|-------------------------------------|--|-------|-----------------------------------|---------|
| ۲.4 | بلادلیر کسی کوا جماع کافی | 144 | ۸۷۰ | ابل قبور کے مناقشات | 104 |
| | كناميح نهي | | ۲۸- | وبهب بن منب کا قول | 101 |
| ۳۰۶۰ | امام احمد کا قول | 144 | 444 | كباانبيأ كاشم اتفا ناجا تزسية | 109 |
| ۲۰ ۲۷ | قرص كررارت كأنتعظم كليصب | 141 | 117 | قبرنبوی کا زیارت کشمیں | 14. |
| 4.4 | رسولِ أكرم كاشفاعت فنرمانا | 149 | 170 | كيا قبربنوى كوالمحدلكانا ثابت | 141 |
| P4 | مباد قبور موبادا وثان <i>ایک بن</i> | 14:3 | 114 | سفیان بن عینیه کاقول | 144 |
| ۳۰۸ | انبياء كأتغظم | \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ | 714 | ابراسيم بن سعد كاقول | 144 |
| ۳۱۳ | اہل مدهمت سے جہا د | 141 | YAA | ائم اربعا ورثم وملاكا مسلك | 146 |
| ۳۱۴ | | 14 del | 1/19 | ابن حوم كانظريه واستدلال | 170 |
| MID | ست درمال | M | 49. | ومقاماجهان شالمین <i>ست</i> ے ہیں | 144 |
| 1417 | من عمته | 112 | 191 | كيارجال فيربيس ؟ | 144 |
| ۸۱۲ | تهم البيأ أيك دين برتھ | 144 | 191 | كوربها لأكي طروب غرك ممانعت | 144 |
| 444 | خانص توصيد | 114 | Har | ابن عمر کی حدیث | 179 |
| ۳۲۴ | رمولِ اكرم كى عبرتيت | jaa | 198 | الوسعيد خدرى كى حديث | 14. |
| ٣٢٤ | جج قبور | 119 | ۲۹۳ | مارز حکم کے درسائل | 141 |
| ۳۲۸ | ايب اشكال | 19+ | 198 | قرنبوی کی زیار سطحے محوزین | 124 |
| ۳۳۰ | كياكسى كوشفاعت كاستحقاق سب | 191 | 190 . | ابن لبطر حسكرى | 147 |
| r#1 | رسول كرم كى شفاعت | 194 | 794 | البوالوفا بن عقيل | 164 |
| ٣٣٣ | انبياراوليأكي تغطيم مين غلو | 195 | p. | زيارت قبربنوى ادراجاع | 160 |
| rra | روصنهٔ بنوی کی زیارت | 194 | | فبم كااختلات | |
| | I | 1 | 11 | 1 | 1 |

شیخ الاسلام این تیمین www.KitaboSunnat.com

الم م ابن جیمید اس حبلالت و مرتبت کے امام ابل سنت تنفی کد بالاتفاق تمام المیمالی کے ان کی امام ابن جیمید اس حبلالت و مرتبت کے امام ابل سنت نے شاید ایک امامت نی الدین اور کمال مرتبت علم و اجتهاد و مجرد والعصر و مح الملت موسف براس درج انکت علم و اعاظم است کا الفاق موا بوگا حبیسا کہ امام موصوت بر بولیت موسف براس درج انکت علم و اعاظم است کا اتفاق موا بوگا حبیسا کہ امام موصوت بر بولیت وہ مذصر خامام اور محدوج و محتمد معلیہ بین، ان کے معامی میں سے امام و بین این دقیق الدین بی ، ابن قدامہ میں سے امام و بین این دقیق العبد ، الوالی ج مزی ، حافظ برزائی تقی الدین بی ، ابن قدامه مفدی ، حافظ ابن شامه ، بربان الدین الفزاری ، قاصلی ابن از ملی ان ، ابن سیدان سیدان سوالعب سابن جی ، الوالعباس واسطی ، ابوعد التد الحریری و فیر بیم جیسے سلم البتوت انکہ اہل سنت و میڈالعم بین اوران کی شاگر دی وک ندر بیمفتیز بیں۔ حافظ ذہبی جیسے سلم البتوت کا اعتراث کرتے ہیں اوران کی شاگر دی وک ندر بیمفتیز بیں۔ حافظ ذہبی جیسے سلم البتوت امام ابنی امام البتوت کا دوار و مدار ہے ۔ امام ابنی سام البتوت کا دیات دول بین شمار کرتے ہیں۔

مولانا الجوالسكلام آ ذاد ما خوذ ازتبرگات آزاد بِسمُ اللهِ الرّحانِ الرَّحِيمُ

افت تاحبير

www.KitaboSunnat.com

العمد لله وحدة والصلوة والسلام على من لا بتحسب بعيلة. يشخ الاسلام ابن تيمتيراوران كي لميذرشيل أم ابن القيم رحمهاالسُّر كي ذات گرامي كمى تعارت كى ممتاج ننبير - ايك دُوراليبا مجى بيتاسينے كداس سُرزمين ميں ان سيے كونً فروشنا سانه تھا،كيونكەاس ملك كےمسلمان برعات وخرافات منسق وفجور ميرمتبلاتھے اورنام نبادعل ركاب وسنت كي تصريحات سے بالك ناوا قف اورب بهره تھے يا عمدًا انہوں نے اس سے اغماص رنا بحر نکشینین کی تالیفات رسائل، فتاویٰ کتابسنت کی تشریح میشتمل ہیں اسی لئے اس بات کی ضرورت بھی کہ اسس پنجرز میں میں ان کے لٹریچر كوارُ دوكے قالب میں ڈوھا لاہ اِستے -اس سلسلہ میں جہاں سعودی عرب کے سلطان عبل خزر نے ان کی تالیفات کی طباعت کا بیڑا اتھایا اورعقیدہ وعمل بیشتمل کن بیں طبع سورطار کمیٹ میں ثنائع وذائع ہوئیں، وہاں اس ملک میں خاندانِ غزلوں کے سُربر آ در دہ ملما مسف بعض كمابيں اوران كے زاجم بيش كئے - ان كے بعد علا مشبل مرحوم سف ان كى سبرت كو جا ركيا-اوران کے علی مقام سے عوام کومتعارف کرایا ،لیکن مولانا البرالكلام آزاد رحمدالتد نے پورے طنطنہ اورطمطراق سے ان کی تجدیدی ، اصلامی اوزبلینی مساعی سے پردہ اعظایا ، ان کی زندگی کےمشن کو ایسے اعلی اسلوب میں پیش کیاکہ قارئین ان کی مفحقیت سے گرویده موگتے ؛ چنا بخدان کے معنامین سے متافز ہوکران کی مساعی سے ٹینخ الاسلام کی كمّا بوں كے اُردو تراجم كى روب نكلى ؛ چنائى بوب مولانا محدصا حب مرحوم ہوناگڈھن الدملونیّ محکم دلائل و براپین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

نے اعلام الموتعین جسی مبسوط کتاب کا ڈین محدی "نام کے ساتھ ترجم کرکے شابع کی تومولانا الجوال کلام آزاد رحمہ النرنے انہیں مبارک باد کا خطا کھے کرمش کریدا داکیا اورا بل علم نے اس کتاب کوہ تھوں باتھ لیا اور بہلی باراس ملک میں تعلیق خصی کے خلاف اتن واضح اور مدلل لا لی بھر بڑھنے میں آیا۔ مولانا آزاد "کے مضامین سے متافر ہونے والے لوگوں نے جہائی خین کی کتابوں کے تراجم کی طرف اپنی تو جہائت کو مبذول کیا۔ وہاں انہوں نے امام الهذمولان آزاد کو مبذول کیا۔ وہاں انہوں نے امام الهذمولان آزاد کا بھی سے کریے اداکیا کرا نہوں نے ایک مصلی مجدد اور پشنے الاسلام کی زندگی کے علمی اصلائی سیاسی، تعنیفی آتا لیعنی کار باتے نمایاں کو نہایت عمدہ انداز میں بیش کیا تو جولوگ اب جبی اسی میدان میں حبد دجہدکر رہے ہیں ، وہ مبارک باد کے ستی ہیں۔ الٹر تعالی ان کی مساعی جمیلہ میدان میں حبد دجہدکر رہے ہیں ، وہ مبارک باد کے ستی ہیں۔ الٹر تعالی ان کی مساعی جمیلہ میدان میں حبد دجہدکر رہے ہیں ، وہ مبارک باد کے ستی ہیں۔ الٹر تعالی ان کی مساعی جمیلہ کو بار آ در کرے اور ان کی مخلصا نہ کو ششول کوعروس کا میں بی سے مہمکنار کورے۔

زرِنظركاب الود على الدخنا في "شخ الاسلام المم ابن تيميه كي عرب اليف ب اس میں جناب رسول اکرم صلی الترعلیہ وسلم کی زیارت روضة رسول کے موصوع پرمعبط بحث کرگئی ہے۔ اگرمپراس میں فقہا کا روایتی ذہبن کا رفر ماہے کہ رومنہ رسول کی زیارت سے سئے سفركر ناحائز ہے، ليكن نيح الاسلام رحمه الترب عقبی اورنقلی دلائل سكے ساتھ اس كيختی ترديدك سب ميشخ الاسلام فوس محصة عصكهاس الركمستدرقهم اطعالا سان نهين الكن انہوں نے رسول اکرم صلی الدوليد وسلم کے عاب کے بیش نظر البین آپ کو اس کھن کام کے لئے آمادہ کیا اورعوام کی مخالفت ادر دشمنی کی پروا اُن کرنے ہوئے اس کومفعل مسبوط اوروا منح شكل ميں يميش كرديا - خيال رہے كہ جہاں شيخ الا سلام رحمہ النّدسف رومنهُ رسول کی زیارت کی نبتت سے سفر کرسنے کوروکا سبے اور اسے نامباز قرار ویا ہے۔ وہاں انہوں نے مطلق زیارت کی اجازت دی ہے۔ اس کے سائحہ ساتھ رسولِ اکرم صلی اللہ علیہ وسلم كا حلال واحترام، توقير واكرام ايسے رُكشش انداز اور د ل نشين بيرليئے ميں ذكر ذماييا ہے کہ نتایہ قائنی عیا من بھی اکٹ فاہّ میں کمال محبّت ، حذب مِستی اور وارفنت گی کے باوجود اس مقام پرزینج سکامو ؟ تام مسیرت کی کتابون کامطالعه کرنے کے بعد فیصلہ دینا پڑتا ہے کہ جس تنوق وذوق کے ساخھ قامنی عیاض کے انشفاء کو مرتب کیا ہے ، وہ آہیں برد :

> ئۇرىرة ئىكەندۈلاكىمىمىن ئىداتىرا سىسەبىكانەسەكەددىت شناساتىرا

ضیاء السند ادارة الترجمه والما لیف کے مُریر دفیقی وزمیلی صاحب السعادة مولانا محرصا دق ملیل الموقرکے بم ممنون بین کرانہوں نے کتاب کاسلیس اور شکفته اُردومیں با محاورہ ترجم کیا جس طرح نفس کتاب بین کرارتھا۔ مولانا موصوف سنے اسی کرارو تنوع کو برقرور کھا تاکہ دیا نت کے نقاضے بھی بی رسے ہوجا تیں۔

بسرور المداري المست برادور ورود الماست بهداس كی نشرواش عن میں اداره كا باتھ باكر ان كی حوصله افزائ كريس تا آئنده يسلسله جارى وسارى رسے-

> دالت لام! رون

آپ کانگلمن! www.KitaboSunnat.com الوقفس عثمانی ناظم الجامعة السلفیه ماجی آباد- لائل گور

۵ ررمضان المبارك مستليم

كبسم الترالرحن الرحيم

مومسترمه www.KitaboSunnat.com دعظمت انسان)

يه حقيقت روزروش كى طرح وامني كتمام كائنات ميسه انسان كامقام أرفع وا على بيد اس ليحكم انسان محذوم اورتمام كائنات اس كى خاوم ب يعوركري كم أسمان وزمين سورج م باندُ شا رب، بإن سواء بهار وخير وسيهي انسان كے لئے مسخرين ليكنكهمي آپسف سومياكه انسان كويرشرف كيون عطام وااوركن خصوصيات كى بنابرا نسان کو کا نّنات کی *سرداری کا اعزا* زملا -اس کا جواب نہایت آسان اور واضح ہے کہ تمام کان^ت اس ن سیست الله باک کے امر تکوین کے لفام سے مربوط ہے۔ اس سے سرموالخرات مكن بيس-تمام كانّات رات دن اپنے مفوضه فرائفن سرائغام دينے ميں مروث ہے۔ اس کی اطاعت اور فرما برداری مجالاری سے - ندزبان مال پر مجد شکوه سے اور بنها س سے کھوسروکا رہے کہ یہ نگ و ذو اور مبرو جہد کس سلتے ہے اوراس کی منزل کہاں ہے لیکن انسان امرتکوین کی پابندیوں کے ساتھ امرتشریعی کا بھی محلف سیسے اوراس ذرتہ داری کی وجرسے ہی اس کو انٹرون المخلوقات کالفتب ملاسیے۔ وہ ذمتہ داری وہیسیے جس کے انھانے سے آسمان زمین اور پہاڑوں نے معذرت کی لینی شریعت اسلامبر کے ا دا مرفوا ہی کے مطابق زندگی گزار سے اور کاربند رہنے کی ذمتر داری ہے۔ارشادر بان سے انا عرضنا الامائة على السموت . سم سنے بار ا مانت کو اسمالوں اورزمین

اور میار وں بربیش کیا توانہوں نے اس کے والادمن والجبال فابين ان اعھانےسے انکار کردیا اوراس سے ڈرگئے بجمئنا واشفقن منهما وحملها ا درانسان نے اس کواٹھالیا بیشک فطالم وراہما الانسان انذ كان ظلومًا جهولًا-پس اگرکوئ انسان اطاعستِ خداوندی میں محور شاہیے اس سے سرحکم کے سامنے مرسلم خم كرديا ہے، كر دو پيش كى صلحتوں اور تقامنوں سے بے نياز سوكر استار فعاوندى كا می وسمجهتا بسے۔اس کے اشاروں برائمنا وصدقناکی صدائیں بلندکرتا ہے اور بالکل اس طرح تسليم ورضاكا دامن مقامع ركفتا بيع جس طرح كدامر تكويني كى اطاعت ميں باليل حبت محواورر شارر متلب ، توبه وه انسان ب سب سف ابنى عظمت كو محفوظ كرابياس كا دل مجتب اللي كا آشيام بن گيا اور ده خدا كاتقرب ماسل كرفي مين كامياب بوكيا-ما فظابن القيم لے قصيده نونيديں است علق كوكتے عمده پريائے ميں ذكركيات، انسان كاول النُّدعزومِل كالمُصرِبِيةِ بِسِ ل القلب بيت ألرب جل حبلاك میں الدُّر مِل مبالهُ کی محبّت اخلاص فایت حبًا واخلاصا مع الأحسان درم وارنتگی موجود ہے ، وہ دل اللہ کا گھر ہے۔

بس ان اوگوں کی سعادت مندی نوش کنتی قابل رننک ہے اوران کا لی ظرنی مستقل مزاجی کا کی کا بی خوش کا کی طرف مستقل مزاجی کا کی کمبائی میں محونا والوش میں میں کو اور وہ فرکہ الہٰی میں محونا والوش میں ، لیکن سے میں ہیں ہوں ہوں ، لیکن سے

ایں معادت بزورِ بازو نیسست تا نہ مجنشہ مندائے مجنشند ہ

معلوم ہوا اگر دل ہیں الٹرکی مجتت کا غلغلہ موجو دہسے اور اسی کی رصا پر زندگی کے تمام پروگرام بنتے ہیں، توسمجھ لینا جا ہیئے کہ اس النیان سنے بارِ امانت اٹھاکر اس کا حق ا وا کرویاا درجس عظمت وشرف کا عطیة دیا گیا تھا،اس نے اس کوبرقرار کھا میر درد نے کتنا عمدہ شعر کہا ہے ۔

ارمن وسماکهال تیری وسعت کو پاکسکے !! میرا ہی ول سے وہ کہ جہساں توسماکے!

سکن وہ انسان مجاطا حت خدا وندی سے روگردانی کرتاہے ، غیرالٹرکوماجت روکھےتا سے مسامدسے ہوتا انسان ہے جس سے مسامدسے ہوتا دم انسان ہے جس سے مسامد سے کو دم ہوگیا۔ سے انسانی عظمت کوخاک میں ملادیا اور عطاکر دہ شرف سے محروم ہوگیا۔

رسول اكرم صلى التُرعليه وسلم كي عظمت

آپکوبی نوع انسان پفسیلت حاصل سے۔ النّہ پاک سے تمام انبیارسے وعدہ لیاکہ تم نے اس پرایمان لانے کا حکم دینا ہوگا۔
اس لیاکہ تم نے اس پرایمان لانا ہوگا اور اپنی امتوں کو بھی اس پرایمان لانے کا حکم دینا ہوگا۔
اس لی ظرے آپ کوتمام انبیاء پنفیبلت حاصل ہوگئی اور اسی بنا پرائپ سے پہلے تمام انبیا کے دین منسوخ قرار دے دیلے گئے . نجات اُخروی کے لئے اگر خدائے قرار دے دیلے گئے . نجات اُخروی کے لئے اگر خدائے وہلی کی الوہیت ہران کھی حدودی ہے ہوئے اُن ان امتروری ہے نواس کے ساتھ ساتھ آپ کو خاتم النبیتن بینے بران کھی صروری ہے عور کی ہے اُذان اور مکبیرے کلمات میں جہال النّہ عزد میل کی الوہیت کا اقرار ہے۔ وہال آپ

ین بسالت کی شہادت کا بھی اعلان ہے اور جہاں جہاں سلمانوں کی آبادیاں موتو دہن ہاں اسلمانوں کی آبادیاں موتو دہن ہاں ان رات میں یا بخ بارآب کی رسالت کے اقرار کے کلمات ادبی آواز سے کے مبانے ہیں۔

یا فیرَ نعنا لک ذکرک کی صیح می کاسی نہیں ہے دربیرا ذان کے بعد آپ پر در و دمیمیا جاتا ہے۔ ارکسٹون دُ عا میں آپ کے لئے وسیلہ طالب کیا جا تا ہے۔

آپ پردرو دنجیجنا

متاب وسنت میں مکم دیاگیا ہے کہ امتت محدید کوجا ہینے کہ وہ رسول اکرم صل النّعلیہ وسلّم برکترت کے بعد اور سحد میں داخل ہوتے دقت، ور دو دیکھیے ، خاص طور پر انتخابت کے بعد اور سحد میں داخل ہوتے دقت، ور سکتے وقت مسنون وُ عاکے ساتھ آپ پر درود اور سلام کہنے کا حکم دیاگیا ہے۔ ایک مدیث میں آپ نے فرایا :

به به بردرور مسائد مهم به به بی بی بی بی با بی با بی با بی بی بردرور مسائد مهم به به بی در بارت که لئے سفر کرنامستحب سب اور تیخف منج نبوی کی زیارت کے قسد سے سفر کرتا ہے ، دہ روضة اقدس کی زیارت کرسے اور وہاں کھڑ سے بہو کہ دُرووو سلام کا بد بہ بھیجے ، لیکن خاص طور برروضة رسول کی زیارت کے لئے باہ ہاں جا کر درودو کالم کا بد بہ بھیجنے کے لئے سفر کرنا ممنوع سب اس کی اجازت کسی میچے صدیث میں موجود نہیں ۔

الکو با ایک اولائل کی روشنی میں اگر کوئی شخص روضة نبوی کی زیارت کے لئے سفر کرنے کے مار بہم بھتا ہے تود وہ بی کھکم کی اطاعت کر رہا ہے ۔ اس لئے فرتو وہ کرون زونی محتمد محتمد دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

سے اور نہی وہ احترام رسول میں کواہی کامرنکسب مبور ہاسے ،بلکداس کاطرزعمل مین وطاحت رسول کا مینددار سے حس طرح مولانا محد بشیر مسوانی اگرہ سے بیت اللہ کے ج كے كئے تشريف لے گئے ، ليكن اراد تًا مرميز منوره مذكنے اور واپس آگئے - ان كا مرينہ مؤره نرحانا اس بنارير عفاكم سجد نبوى كى زيارت كے لتے سفركرنا منرورى نبير متحب ہے، جبحہ بیت النُّدکے جے کے لئے اگر لما قت ہوتوجانا صروری ہے ، لیکن روہنہ نبوی کی زیارت سکے ملتے سفرکرنا جا تزنہیں ۔ حب ان سکے اس **طرزعمل م**یالگوں سنے اعتراض كبا توانهول لے اپنا مؤتقت واضح كرتے ہوئے القول المحقق المحكم فی حكم زیارہ صبیب المكرم " کا ب تخرر فرمانی ۔ ان کے زدیں علّامہ عبالی لکھنوی نے اُلکلام المبرورٹیکے نام سے ایک كَتَابِ تَحْرِيرِ فِرِ مَا نَ بَصِ سَكَ بَوَابِ مِينِ مُولانًا مُوصُوتَ لِنْ ٱلْقُولِ الْمُنْصُورٌ ا ورشِّخ عبدالحي نے اس کے جواب میں المذہب لم اُلور کتاب محرر فرماتی جس کا مدال اورمسقط حواب مولانا سهسوانی نے "اتمام الح علی من اوحب الزیارة كالحر"كے نام سے دیا - اس سے بنتیج نكالنا کممولانا موصوف مولٰلقًا روضهٔ نبوی کے ق ئل نرتھے خلاط ہے ۔ بلکہ وہ معلق زیارت کے قائ*ل مقے ۔لیکن حب طرح بین* النُدکی زیارت فرمن سبے اور اس *کے لئے سفرکر*نا من^{وری} ہے،اس طرح رومنہ بنوی کی زیا رہ کے لئے سفرکرنا شدرحال کی مدیث کے پیش نظر نام افرسے۔اسمسلکو وامنح کرنے کی صرودت اس لئے تھی کرکچے لوگ روضۂ نبوی کی زیار کوئی ج سمجھنے لگ گئے تھے۔اس طرح دین اسلام کے احکام میں تلبیس و تحریف کا ایک سلسلہ شروع ہوگیا تھا جیساکہ آجکل بھی اکثر حجاج اسی نیتت سے سفرکر تے ہیں لکہ لوگوں کے سلام اور درخواسیں رومنہ نبوی پر کھڑتے ہو کر بنجاتے ہیں۔ آہ یہ لوگ مراط سقیم سے بھٹک میکے بیل انبیں کو ن مجهائے کہ اس طرح ان کا ج می نبیں ہوگا۔

ما فطابن تيميرا ورزيارت روضة نبوي

سیخ الاسلام ما فظ ابنتیمید نے اس میں فاص طور پراس مسلا کو نها یت عمده اور مدل انداز میں سینس کیا ہے۔ اگر جاس سلد کے بیان کے شمن میں ویکر سیکر طول مسائل مل ہو گئے ہیں جن کی اہمیت سے انکار ممکن نہیں ؟ تاہم اس فارک مسلومی انہوں نے صب مادت کو تی شبر ایسا نہیں تھیوڑا جس کا ازالہ نہ کیا ہو۔ ولائل کوشکفتگی سنجیدگی اور متانت کے ساتھ پیش کیا ہے اور کھلے نفطوں میں اعلان کیا ہے کہ میرے خلاف یہ جھوٹا ہر وہ بگیر اور مسائل کے ساتھ پیش کیا ہے اور کھلے نفطوں میں اعلان کیا ہے کہ میرے خلاف یہ جھوٹا ہر وہ بگیر اور مسائل کیا جار کہ ہور کی اور مسلمان کا عندہ یہ نہیں ہوئے کی کہ وہ دوشتہ اقدس کی زیادت کو جائز نہیں تھی کہ دوشتہ اقدس کی زیادت کو جائز نہمی تھی اس بات کا اعلان جائز نہ سمجھتا ہو ؛ البقہ ولا کی نزیادت کے لئے سفر کرنا مشروع نہیں ؛ البقہ مسی نبوی کی زیادت سے اور ہی کہ نیادت کے لئے سفر کرنا مشروع نہیں ؛ البقہ مسی نبوی کی زیادت کے لئے سفر کرنا مشروع نہیں ؛ البقہ مسی نبوی کی زیادت کے لئے سفر کرنا مشروع نہیں ، البقہ مسی نبوی کی زیادت کے لئے سفر کرنا مشروع نہیں کا دیادت کرنا ہوں کہ دیادت کرنا ہوں کی زیادت کے لئے سفر کرنا مشروع نہیں ، البقہ مسی نبوی کی زیادت کرنا ہوں کہ دیادت کرنا ہوں کہ دیادت کرنا ہوں کی زیادت کی دیادت کرنا ہوں کی زیادت کرنا ہوں کی زیادت کرنا ہوں کہ دیادت کرنا ہوں کرنا قرافت کرنا ہوں کی زیادت کرنا ہوں کرنا ہوں کرنا ہوں کرنا ہوں کا مشالم ہوڑ یارت میں ہی نہیں ۔

کریر خصوصتیت توالڈ کریم کی ہے ، وہ تمام نخلوق کی اوازوں کوسنی ہے۔ اگرالڈ کریم کی خصوصتیت کورسول اکرم ملی الڈ علیہ وہ کم میں تسلیم کیا مباس نے توسلم الوں اور عیسائیوں میں کیا وق وصلے گا۔

ایم اللہ میں جب آپ سفتے ہی نہیں ہیں تو محص آپ پر در دو وسلام ہیں ہے کے لئے سفر کی زخمت اللہ اور خیر شروع طریقہ اختیار کرنا کسی سلمان کے لئے زیبا نہیں کیا آپ کی عظمت شان اس میں نہیں ہے کہ الڈرکڑیم نے کچے فرشتے محص اس کام رہت عین کر دبیتے ہیں کہ دو لوگوں کے اس میں نہیں ہے کہ الڈرکڑیم نے کچے فرشتے محص اس کام رہت عین کر دبیتے ہیں کہ دو لوگوں کے معلوٰۃ وسلام ہیں کہ دو آپ برسلوٰۃ وسلام ہیں ماس لئے جہال کہیں سے بھی جو کوئی آپ پر سلوٰۃ وسلام ہیں کا ، دہ آپ تک بہنیا دیا جائے گا۔

علان دہ آپ تک بہنیا دیا جائے گا۔

علان دہ آپ تک بہنیا دیا جائے گا۔

مشيخ الاسلام بإنارواحك

"أفتضار الفراط أستقيم ما فظ محد بن عبرالبادى كى الصارم السكى فى الردعل السبكي علامه نیراِلدین نعمان بن محمود اوسی بغدادی حنفی کی ملا را تعینیین علامرالوالمعالی شا فغی کی "غايبة الاماني ني الروعلي المبنها في علآم وحديث يرسهسواني كي صيانة الانسان كامطالع كمري تومعليم معاسة كاكرش الاسلام ابن تيميداس ستلدين منفرنهين بين الجدش الاسلام كرحمايت ميں علاّمه خیرالدین بن محموداً لوسی بغدا دی حنفی حبلاء العیبنین ص<u>حا^۳ پررقمطرانسی</u>:

يشخ الاسلام ابن تيميه فيمطلقًا زيارت سے منع نہیں کی ہے ، بلکہ شدر حال ادرمیری قبر*كوعيد*ية بنانا معديث كيميثين نظرنا^ت کے لتے سفرکرنے سے منع کیا ہے۔

انه لم يمنع المذيارة مطلقا بل منع السفوللزبارة بجدىيت لانشثدالوحال وبجديث لاتتخذأ تبرى_مىدًا-

نناه ولى التُدعجة التُدصيرة امين رقمطراز بين ا ہے۔ صیحع مسل*ک توبیہ ہیے (کہنندر* حال ک مد كي بين نظر، أب كى قبراطهرا دركسي فحاللًا کی عبادت کرنے کی حگدا ورطور بیا اروینی ہ نمام كونهى شامل ہے كران كى زيارت كيلئے سفرسكيا جا

والحتى عنل ى ان القبو ومعسل عبادة ولى من اولياءالله والطور كل ذالك سواء فى النهى والله

يشخ الاسلام ابن تيميه كى جلالتِ علمى

ينيخ الاسلام ابن تيميه كوالنُدياك نے بہترين ملاحيتيوں سے لوازا مقا . ذہن سا ف ستقراعقه اکتاب وسنت سے والہا پزشغف رکھتے تھے بھی وم ہے کہ جب انہوں لیے ا پنے گرد و میشین میں ملی اندا فیکار و نظر بات کے سیلاب کو الڈتے ہوئے و میکھا توال کو رو کے لئے مصنبوط چٹان بن کر کھڑے ہوگئے . مجلاوہ انسان حس کا دل معارف اسلامیہ سے منّو ہوں کا ہوا درجس کوالٹدا وراس کے محبوب رسول اکرم مسل لٹدعلیہ وسلم کے ساتھ کی عقیدت اور

محبّت ہو بنواحش ومنکرات کے احساس سے ہی جس **کا د**ل سیماب کی طرح لرزنے نگھا ۔وقود كتاب وسنت كى فالفت كيسے كواراكرسكتا ہے يہى وجر سے كەجہال انہوں في مبتدعين كے خدات محاذآ داد پرکے دن کی بھھتی ہوتی شہرت کو ہیست و نابود کر دیا ، و ہاں مبابل صوفیا سکے برگھر ادراد ووظا نُقت کابرده جاک کیا اور ان کے الہامات دمنامات کیشف فلبیساند سرکات کی خوب خبرلی اور انبیں موامی محفلوں میں مقابلہ میں ارتنے کا جیلیج کیا الیکن وہ ان کے مقابلہ کی تاب نہ لاكردُم د باكر بهاگ كية اور اگرايك طرف انهول في تقليد كوكماب وسنت كے خلاف قرار دیتے موے اس کے گمراہ کن نتائج سے خبردار کیا تو دوسری طرف فوت شدہ مینمبرول بزرگوں کا تقرّب حاصل کرنے والوں 'ان سے استمدا دمیا سینے والوں 'ان کی قبروں پرحرس منافے الول اوران کا جح کرنے والوں کے خلاف مجی ان کا قلم حرکست میں آیا ور مکمل شرح وبسط کے ساتھ مخالفین کے شبہات کے مسکت ہوابات دیئے ؛ چنامنی رالردّ علی الافناقی ، جس کا ترجم پہیٹس كرسف كى مم معادت ماصل كررست بين اسى موضوع برست ادرى يدد كماب سبے جس كے مطاعم سے قامنی اخنا نی کا غفتہ شدّت اختیار کر گیا اور اس کی کومشسشوں سے شیخ الاسلام کی تسام "اليفات بجق مركار صبط كر لگئيں.

اسس حقیقت سے کون انکار کرسکتا ہے کہ وہ تمام علوم ونون میں مبارت رکھتے عقے ۔ قرآن پاک پراہم نفسیری نوٹ مخری فرائے اور سکہ صفات میں فاص طور پرمتزائوائ جمید، قدریہ، صلولیہ انتحادیہ ، فلاسف، مناطقہ متکلمین اور شیعہ کے اصول دسنوا بط کے تاریخ مجمید، قدریہ، صلولیہ ، انتحادیہ ، فلاسف، مناطقہ متکلمین اور شیعہ کے اس کی دوہ پیچیدہ گھتیوں کو سلح میں انہیں زیادہ دشواری منہوئ ، قلم کی روانی جملوں کا تناسب استخراج کی دلکشی استدلال کی بوقلمونی ، مقدمات کی ترتیب ، مجت کا تجزیہ اور اس کا اختتام اس قدر عمدہ ہے کر عصبیت کی علینک انارکرمطالع کرنے والاانسان مناز ہوئے بغیر نہیں رہ سکتا ۔

یشخ الاسلام ابن تیمیه جهال زبان اورقلم کے ساتھ جہا دیں متحرک نظر آنے ہیں اور تمام

مصالح کوبالاے طاق رکھتے ہوئے دین اسلام کواس کی سیحے شکل میں بیش کرنے میں سرگزال نظر آتے ہیں اور کوئی علی تحف خواہ وہ صاحبِ اقتدار ہی کیوں نہیں ،مچھر بھی ان کی زمان قِلْم سے بی نہیں سکا جب اس کامو قعن نفوص مرکجیکے خلاف ہے ، وہال وہ تلوا مے کرمیان جنگ میں رط^یتے ہوئے بھی دکھا تی دسیتے ہیں [،] توہ وسری طرف خشینت انابت الی النّد میں منفرو دکھاتی دینے ہیں اورلوافل کی ادائیگی میں ان کا انہماک بہت بڑھا ہوا ہے۔ وہ اکثر کھاکرتے تھے راناالمکدی اناالمسکدی و حکذاکان ابی و جدی) میں تیرے درکا مجھکاری ہول ال میں تیرے در کا سائل موں ، میں ہی نہیں بلکے میرے باب دا داہجی تیرے در سے بھے کاری تھے۔ يبى وحد ب كم ان كے محدد اللت والدين مجتبد المام بوسن برنقر الم علم شفق ہيں ؛ پنا پنما فظ ذہبی رجن کا قول رواہ کی جرح و تعدیل کے بارے میں سلم بے ، تکھتے بیں : ده اس سے کہیں بلند سے کرمیرے مبیان هواکبرمن ان بینبه علی سیریت أكى سيرت سنائے بغدا اگر میں مكن اورمت م مثلى ووالله لوحلفت مبين اكوكمن اراسيم كے درميان شما شاكركبوں كرميرى

والمعتام انى مادایت بعسیسى معثله وان مادائ مثل نفسه لها خفت -

النبی بزرگوں اسکے باوبودیعض کوتاہ بین بدا ندنش قسم کے لوگ ان برطعین وتشینع کرتے ہیں اور النبی بزرگوں کا بے ادب گستان کہتے ہیں، ان کے خلاف شدید نفرت کا اظہار کرتے ہیں: چنائجہ کوٹری حنفی سرزہ مرائی کرتا ہے۔

ولوقلت فم يبل الاسلام فى الادوار الاخيرة بسن هو اخومن ابن تيمير

اگریم کہیں کہ اسلام کو اپنے آخری دو میں کسی ایسے شخص سے واسط نہیں پڑا مجسلمانوں

ہ نکھوں نے اس مبسانہیں دکیھا اور شاس

ابنے میسا دیکھا ہے اومیری شم سی ہوگ

کے درمیان افتراق پیداکرنے میں ابن تیمیہ سے زیادہ نقصان دہ ہونواس میں چھرمبالعنہ نہیں ہوگا۔ بہتخص مہل انگار حقائق کو تھیا نے

فى تفديق كلمة السلمين لماكنا سابغين فى ذالك وهو سهل منسامح مع اليهودوالنساد والايهوداول عيسائيول كاسائقى سے-

نیز زبان درازی کرتے ہوئے کہتا ہے ،

جس اسلام میں ابن تیمیدکوشنے الاسسلام سمحھاماتاسہے اس برسلام ہو دبینی تم لیسے اسلام سے باز آستے ،

ان كان ابن تيمية لايز البعد شيخ الاسلام نعلى الاسلام السلام.

ن کی ایک میں کران کی ہے۔ فضائل بیان کرتے ہوئے لیکھتے ہیں ا مصال میں ایک میں ایک المال ع

وهو الامام الفاصل البادع التقى النقى الوادع الفادس فى علم الحديث والتفسير والفقد واصول الساين بالتقرير والتحرير والسيف الصادم على المسبترعين

والسيف الصادم على المسبتدعين والحبوالقائم بامول المدين والامر بالمعروف والنهى عن المسنكرو

لمجالم هنفات المشهورة المقبولة

دین کے احکام کو قائم کرسنے والے تقے۔ عالم رّابی تھے۔ امر بالمعرون اور بنی المنکر کے میدان میں مرزَّم رہتے۔

امام ابن تمييه فاصل الماسط نبايت برميز كار

بإكيزه نفس اورزىد نه ورع مهم حدميث بتقيسيرً

نقه و اصول ، تقر*ر و تقرریک شام*سوار

تھے۔ بدمتیوں کے خلامت فاطع کوارتھے

والفتا دی المقاطعہ خدیدالمعلولہ ان کی تصنیفات کو شہرت ماصل ہوتی اوراہل علم نے ان کو تبہرت ماصل ہوتی اوراہل علم نے ان کو تبویت سے نواز ااوران کے فتو مقطعی اور کم دوری سے باک ہیں -منز طاعلی قاری صنی شرح شمائل میں لکھتے ہیں :

انهماكانا من اكا بو احل السنت ما فط ابن يميه اورمافظ ابن التيم اكالإلهنت والعدماعة ومن اولياء حدن مي شمار يوقي بي اوراس لمت كاولياك الاسة ومن اولياء حدن الاسة بي -

ان دولوں نہا دتوں کے بعد کس قدرظلم اور ناانسانی ہے کہ اگر موج و دور کے بعض حنی علماً نہیں ہو دیں اور میسائیوں کی صف میں کھڑا کریں اور ان کے علمی شخص کو واغدار کریں۔
یشح الاسلام ابن تیمیہ کی تالیفات رسائل فیا دی کی مکل فہرست حضرت مولانا عطاً اللہ صنیف محبوجیا نی نے نہایت عرق ریزی اور محنت شافہ کے ساتھ حیات ابن تیمیہ کے آخر میں شامل کی ہے ۔ یقیناً مولانا موصوف کا یہ علمی کام قابل تحسین ہے، اس فہرست میں شامل کی تعامیت علی اور جلالت شان کا تعتور دماغ میں کے تہ ہوتا ہے اور ان کی زندگی کے مشاعل مصوفیات کا مکسل نقشہ آنکھوں کے سامنے آجا آ

<u>پاک ہند میں ابن تیمیہ کے علوم ومعارف کا تعارف</u>

ون بنیں جانا کہ یہ ملک تمرک و بدعت کا گہوارہ رہاہے، اگرم اسلام کی منیاء باشیوں نے اس ملک کے بچھ افراد کو اسلام کی منیاء باشیوں نے اس ملک کے بچھ افراد کو اسلام کی منیاء باشیوں کے فقد ان کی دھرسے تاب وسنت کے خدوخال روشن بنیں تھے اورکوئی شخص حرات نہیں کرسکا متما کہ کھنم کھبلا برعات کو مدف تنقید بنائے مساجد ویرانی کا منظر پیش کرری تھیں لورمزارات میں مبید لگار بنا تھا، وہ اس کو اسلام سمجھتے تھے کہ مزارات بعرس منا تے جائیں، ندر و نیاز کا سلسلہ میں مبید لگار بنا تھا، وہ اس کو اسلام سمجھتے تھے کہ مزارات بعرس مناتے جائیں، ندر و نیاز کا سلسلہ

قائم رہیے ؛ پنا پخربہ عات خرافات کا بازارگرم تفاا ورقبروں کے مجاورزائرین سے خطیر تمیں وصول کرکے بڑے تھا تھی زندگی بسرکر رہے تھے، ان کی دیجھا دیجی لعب طلحد مردین لوگوں نے سیم دزر کی ہوس کے بہتنی نظر جعلی قبریں کھڑی کرڈالیس ، نتیجہ تا وال بھی عوام لئے آناجا نا ترقع کرویا اور ان کی دکا میں جلنے لگیں۔

ماہل صوفیا سے کشف اور ان کی کرامات کا عام جرما تھا اور ان کی ہاتوں کو خداتی بیغام محجاماتا تھا کو یا کہ بیٹے می الدین ابن عربی کے گراہ کن نظریات کا پرچار ہوئا ہا تھا، سیکن بیغام محجاماتا تھا کو یا کہ بیٹے می الدین ابن عربی کے گراہ کن نظریات کا پرچار ہوئا تھا، سیکن بیٹے الاسلام ابن تیمید دعبوں نے فی الحقیقت شرک و بدعت کے خلاف بڑسے زور شوکست می ذائر ان کی کھڑے او معیورے تھے کے خام اور ان کے لڑیجر کے بختے او معیورے تھے کے خام اور ان کے لڑیجر کے بختے او معیورے تھے کے خام اور ان کے لڑیجر کے بختے او معیورے تھے کے خام اور ان کے لڑیجر کے بختے او معیورے تھے کے خام اور ان کے لڑیجر کے بختے اور عمیرے تھے کے خام اور ان کے لڑیجر کے بختے اور عمیرے تھے کے خام اور ان کے لڑیجر کے بختے اور عمیرے تھے کے خام اور ان کے لڑیجر کے بختے اور عمیرے تھے کے خام اور ان کے لڑیجر کے بختے اور عمیرے تھے کے خام اور ان کے لڑیجر کے بختے اور عمیرے تھے کے خام اور ان کے لڑیجر کے بختے اور عمیرے تھے کے خام اور ان کے لڑیجر کے بختے اور عمیرے تھے کے خام اور ان کے لڑیجر کے بختے اور عمیرے کے بختے اور عمیرے کے خام اور ان کے لڑی کے بال کی بالدین کا معام کی بالدین کے باتھ کے بالدین کے بالدین کے بالدین کے بالدین کی بالدین کے بالدین کے بالدین کے بالدین کے بالدین کے بالدین کے بالدین کی بالدین کے بالدین کے بالدین کے بالدین کے بالدین کے بالدین کے باتھ کے بالدین کے بار کے بالدین کے

الغرض رصغير ريد عات ، خرافات كاتسلط تها اوركماب وسنت كاتعليمات سے بالكل بداعتنا تى تقى اورحق برست علما مصلحةً خاموش تقط مشاه ولى التُداكُر حِراصيا سِنْت كي كوششون بين معروف تقير، ليكن رسوم وبدعات كوشريعت قرار دينے والے علماً ان كى ا صلای مساعی کامختی سے او کٹس ہے رہے تھے اور ان کے خلاف پروپیگیٹرے میں مصروت تقے۔ اس لئے وہ کھل کرمیدان میں نہ آسکے ؛ البتہ جب وہ ج پرگئے، تو وہاں انہیں شخ الاسلام ابن تميير كى بعض تقسنيفات وسيجف كاموقعه المامن كے مطالعه سے وہ بہت زياد ا مخطوط موست، نیکن ان سے الریجری اشاعت کا اگرمپرانہوں سے مجھ انتظام مذکیا اور نہی ان كى تخفتيت كاتعارف فروايا تامم انبول نے واضح الفاظ بيں ابل بدعت برتا برا تورط تھلے كئے، اور قبر ربست كاسدليس الا ذ ل كوخبروا ركياكه جولوگ قبرو ل بيشمار تين تعميركرت بين ، ده ملحون بين اور شدر حال صرف تین مسحد و ل کی طرف م کوسکتا ہے۔ بہال یک که رسول اکرم صلی الشرعلیہ وسلم کی قبرا طهر کی زیارت کے لئے مبی سفر کرنا جا ٹزنہیں ، کہا کہ اولیاء اللہ کی قبرول کی زیارت سے لئے سفر کیا مائے - ان کے بعد بھی کانی عرصہ تک شیخ الاسلام ابن تیمیہ کی تحدیدی احسسلامی

حیثیت پروہ خفا میں ستور سب تا نکدام البند صفرت مولانا ابوالکلام آزاد سنان کی ضرمات میں البند کا ذکر ایسی محبت اور ول بوزی سے میں کہ ان کی شخصیت بحث ومباحثہ کاموضوع بن گئی اور السکے میں ان پرشائع ہونے والے مشالات توجہ کامرکز بن گئے اور یہ بہلامو فع مقاکہ اس ملک سے المی علم وانشوران کے علمی جوام باروں سے سے سند تفید ہوتے ، چنا بخد مولانا ابوالکلام نے بوراز وردے کرکہا کہ شرک و بیعت کی زخ کئی کے سے شروری ہے کہ شرح الاسلام ابن تیمید کی تالیفات کے اُردو میں تراجم کئے جائیں ۔ چنا بخدان کے سخت مولونے اور بدیدار کرنے کا نتیجہ یہ نکلاکہ ان کی زندگی میں ہی بعض کی ابول کے اُردو تراجم کھئی و سیع تر بوتا جا کا درا شاعت کا سیاسلہ وسیع تر بوتا جا کا کر درا شاعت کا سیاسلہ وسیع تر بوتا جلاگیں ۔

را قم الحروث زمارۃ طالب علی سے ہی مولانا الوالکلام آزاو کے علم وفضل کامداح رہا ہے۔
اور پر حقیقت ہے کہ جو تحص بھی ان کی علمی کا وشوں کا بغور مطالعہ کرے گا اوران کے فاصلانہ فقیہا نہ
مصنا مین کا مبائز ہ لیے گا، اس کے دل ود ماغ پران کا علمی تنظیم ہو عبائے گا اوران کی قریبی
مولانا الوالکلام آزاد کی تحریب کون ہے جوان کی دل آ ویزلوں سے مخطوط نہیں ہوگا ، جنا پی مولانا الوالکلام آزاد کی تحریب وں سے متافز ہونے کا نتیجہ یہ ہے کہ شنخ الاسلام ابن تیمیہ اوران کی نالیفا کے ساتھ ذہن کی واب سنگی بڑھ متی ہی گئی اور ان کی اصابت فکر بچی تلی رائے اور مدل تنقیر سے متافز ہونے کا نتیجہ یہ ہوئے ان کے رشات اور مرائی نالیفا متاز ہونے واب کے استدلات اور جوابر باروں کو تقسیم کرتا رہا، سے نالیفی میدان میں اس سعاوت سے مہکنا رہونے کا یہ بہلا موقعہ ہے۔
تالیفی میدان میں اس سعاوت سے مہکنا رہونے کا یہ بہلا موقعہ ہے۔

الردعلي الاخنائي كاترحمه

جما پندالروعلی الا فنائی کاتر جم (روضتر افدس کی زیارت) کے نام سے فارئین کی فدت کم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ بیں پیش کیا جا رہ ہے ۔ جس طرح اصل کتاب میں تکرار موجود ہے، ترجمہیں مجی اس کا خیال رکھا گیا سے اویمکن کوسٹسٹ کی گئی ہے کہ افا دیت میں کچید فرق ندآتے۔

یں نے ۱۹ اور میں جب بہل باراس کتاب کا مطالعہ کیا تواسی وقت سے بیعزم کولیا تھاکہ اگر مالات نے ہوا فقت کی اور توفیق ایزدی شامل مال دہی تواس کو اُردوکالباس بہنایا جائے گا۔ اس وقت سے لے کرائیج نک اگر جاس کا ترجمہ فارخ اوفات میں ہوتار ہا، لیکن درمیان میں بعض ملی تدریسی دخیرہ مصروفیات کی وجہ سے یرمبارک کام چائیے تھیل مک رزیم سکا۔ اس وران کی معلق الترادی کا اُردو ترجمہ قبروں پرسمجدیں اور اسلام ، صلاق الترادی کا اُردو ترجمہ قبروں پرسمجدیں اور اسلام ، صلاق الترادی کا اُردو ترجمہ فرون پرسمجدیں اور اسلام ، مسلوۃ الترادی کا اُردو ترجمہ قبروں پرسمجدیں اور اسلام ، مسلوۃ الترادی کا اُردو ترجمہ قبروں پرسمجدیں اور اسلام ، مسلوۃ الترادی کا اُردو ترجمہ باللہ اور شیخ اللہ کا اُردو ترجمہ باللہ اور ریاض الفیالی تین کتابیں اللہ تک کے مراصل کے کرر ہی سے جبکہ بہلی تین کتابیں اللہ اس کے بہان منسل وکرم سے جبھ بہر کرار کریٹ میں آجی ہیں اور قارئین ان سے ونسائدہ اللہ میں اور قارئین ان سے ونسائدہ و بیرضی۔

اب بحدالات اس کتاب کوئیش کرسنے کی سعادت اصلی کرد ہا ہوں اور ان اسب کا شکر ہے اور ان اسب کا شکر ہے اور ان اسب کا سکا کا کرتا ہوں جوں سے میرے ساتھ اس تاب کے سلسے میں کوئیم کا تعاون کیا اور اس گنا ہم کا انگار اور کا وارد ہی ہیں ندامت سے تھے کا ہوا ہے کہ وہ ایک نہایت نازک مسئلہ کوشنے الاسلام کے انداز برا کُرد و میں بیش کررہ ہے اور جو بنکہ اصل کتاب (روضہ اقدس کی زیارت) کے مسئلہ کے متعلق معلومات فرائم کررہ سے اس لئے اس کتاب کا یہ نام تجویز کیا گیا۔

آخریں فارمبن سے التماس سے کہ وہ ولمجھی ولسوڑی سے کماب کا مطالعہ فرائیں گے اور اس کے مطابق ممل کرنے کی گوشش کریں گے اور میری غلطیوں پر مجھے مطلع فرائیں گے۔ فیعشر عبادی السدیں پستمعون اکتھول فیپشبعون آحسنہ۔

محترصادق فليل مريضياء الشسته

بِشِي اللهِ الرَّحَلْنِ الرَّحِيثِيمِ ﴿

الحدالله محمد ونستعين ونستغفره ونعود بالله من شومد انفسنا و من سيأت اعمالنا من يهده الله فلا مضل له و من يضلل فلا ها دي له ونشهد ان لااله الاالله وحده لاشويك له ونشهد ان محمد اعبد لأ ورسوله صلى الله عليدوسلم تسليما و بعثه الله بالهدى ودين الحق لينظهم على المدين كلم وكفي بالله شهيدا ه وا من لعليه واكمل له تكتب بالحق معد قالما بين يديد من الكتاب ومهيمنًا عليه واكمل له والممتر المدين واتم عليهم المنعمة وجعلهم خيرامة اخرجت للناس-

www.KitaboSunnat.com

ممهبرا

نا بت ہو اکدرسول الندصلی النوعلیہ وسلم نے کوگوں مک جن آیات رہانی کو مہنجایا ' نیزمیح کی اوں میں جوسنن نا بت ہیں۔ ان کے بارسے میں مذرید کہنا درست سے کرآپ محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ کی نوابشات کامجموعہ بی اور نہ بیک وہ آپ کے منطنونات کا مجموعہ ہیں ، بلکہ حقیقت تو یہ ہے کہ قرآن پاک اورسننت رسول دحی المبی ہیں ارشادِ ندا وندی سے اف حوالا وجی یوجی (بلکہ یہ قرآن تو کم فدا سے بوان کی طرن بھیجا ما آسسے)

إتبارع رسول

ا بل علم حضرات اس بات برلقین ر کھتے ہیں کہ جس چیز کموالٹ د تعالیٰ کی طرف سے آب يرنازل كيا كياسيد وه حق ب اوروه كتاب الترب جو فالب تعرب وال کے راستہ کی طرفِ رسنما اُن کرتی ہے۔ یس اہلِ علم کتاب النّدی اتباع کرتے ہیں اور تقیقت مستمهب كتمام لوگول سنے زیاوہ افضل اورا قرٰب الی الٹروہ انسان سیے ہو كەرسول التُرْصلى التُدعليه وسلم كى اتباع كرمّاسيه اورتمام وكون سنه زياده بديخبت وه انسان يم حوک رسول الندصلی الندملیہ وسلم کی ا تباع سے دُوری اختیار کرتاسیے ۔ لیکن وہ انسان جورسول التُدصل التُدعليه وسلم كُولا في موتى كتاب كويهيا نتا توسيد الكين آب كى اطا مستنها کرتا، 💎 وہ انسان مہو دکے ساتھ مشا بہت رکھتا ہیے اور پوشخص جہالت ا ورگھراہی ک بناربیمننز ک من الله کتاب کی مخالفت کرتا ہے۔ وہ عیساتیوں کے ساتھ شاہمت ر کھنا ہے ہوکہ مذربب میں غلوا ختیا ر کرتے ہیں۔ پس النّد باک سے دما ہے کہ وہ ہمیں ا در بمارے بھائیوں کو اپنے ان بندوں کی فہرست میں شامل فرما نے جو الٹر کی کتاب ست رہنمائی ماصل کرتے ہیں ، رسول الڈصل الدُّمليہ وسلم کی رسالت کوسليم کرتے ہيں ، التُدك رَسَى كومفنوطى كے ساتھ پكرليلية ہيں ،اولياء التّدسے موالات كرتے ہيں ؛ اعدار الدسے شمنی کرتے ہیں ، جہا د فی سبیل الند کے ساتھ ساتھ مغضوب ملیم ریمودی اور صالبن دلفیاری ہکے راستوں سے امتناب کرتے ہیں۔ مہاجرین والفیار کے گرو^ہ مصصابقین اولین اوران کے بہترین منتین کی اتباع کرتے ہیں۔

ا ما اجد ، الله پاک نے محرصل الله علیہ وسلم کو بدایت اور دین می کے ساتھ مبعوث فرمایہ، آپ نے من و باطل کے درمیان استیازی نشانات قائم فرما ہے۔ بدا ادرگرا ہی کے راستوں کو واضح طور پر بیان فرمایا ، رشد وضطالت کو الگ الگ کر کے پیش کیا ۔ جنت اورجہتم کے نقاضوں کی پر دہ کشائی کی ۔ اللہ کے دوستوں اور شمنوں کے درمیان فرق کو واشکاف الفاظ میں بیان فرمایا ۔ معروف اورمنکو کے صدود کو متعیق کیا ۔ فیبیت اور پاکیزہ جیزوں کو متمیز کیا ۔ صلال اور حرام کی تفصیلات کا نقشہ شی کیا ۔ دین حق اور دین باطل کے بیمانوں کو شکوک وشہات سے الگ کر کے مصنفا شکل میں بیشین کیا ۔

بس ملال وه چیزی بی ،جن کوالند پاک ادراس کے رسو ل صلی الندعليه وسلم نے **سلال** قرار دیا ا ورحرام وه چیزی میں جن گوالند پاک اوراس کے رسول صلی النّعلیہ دم مصحرام قرار دیا۔ دین ان چیزوں کا نام میئے جن کوالٹدا ور اس کے رسول نے مشروع قرار دیا۔ پس جنّ وانس میں سے کوئی بھی رمنائے اللی ٔ رحمتِ اللی اوراکرام اللی کے مقام كواس وقعت نك حاصل نهبين كرسكتا ، جب يمك كم محدصلى التُدعليه وسلم بإليمان نہیں لا آا درآپ کی اتباع نہیں کرتا ، اس لئے کہ النّر پاک نے رسول النّد سلی النّرعليد كم کوتمام جن وانسان کے لئے عمومیت کے ساتھ رسول بناکر بھیجا۔ آپ نے دین کے امورظامرى ورباطنى جمله اسلامى شرائع اورايمانى حقائق كويزصرف عام السالول كمح سامنے بلکہ علماً عباداً زما وصحام رعایا عرض تمام لوگوں کے سامنے پیش کیا۔ بس أكرح كوتن تتحف علم وعبادت ياعز وجاه ميركس قدر بلندمقام كانهمى مالك کیون نبیں ہے، اس کو اس بات کی ا جا زت نہیں وی حاسکتی کہ وہ اس تعلیم سے ر دگر دانی کرے جب کو حصرت محمد صلی الشرعلیہ وسلّم نے بیش فرمایا ۱۰ س سلتے وین کے محتى يمى معاملے ميں آپ كى مخالفت كرنا جائز نہيں ، بلكہ تمام انسانوں بردا جب ہے كروہ

آب کی اتباع کریں اور آب کے حکم کے سامنے سرتسلیم نم کردیں۔ ارتباد فدا وندی ہے؟

فلا و د بد کا لا یو نمنون حتیٰ تمبارے پرور دگار کی تم بر لوگ بب یک موٹ فیما شہر بینیم شمر لا کک اپنے تنازعات بیل تمبیل نعسف یک اپنے تنازعات بیل تمبیل نعسف یک و و اس سے یک وافی انفسیم حوجا مما فضیت نه بنائیں اور یوفیصله تم کروو اس سے و کیسا تبوا کہ اس کے و کیسا تبوا کے اس کو فرش سے مان لیں ، نب بک مومن نہیں ہول گے۔

مومنو خداا دراس کے رسول کی البردار کرو، اور ہوئم میں سے صاحب حکومت ہیں ان کی بھی -

اورسب لوگ دیبلے، ایک ہی امت دلینی ایک ہی ملّت پر، تھے، پھر مُبُرا جُدا ہوگئے اور ایک بات ہوتمہار سے پُرورڈر کی طرف سے پہلے ہوچی سبے، نہ ہوتی، تو

میح مسلم میں مفرت عالت رسے مروی سے :

معضرت عائشہ بیان کرتی بین کرسول الشوصلی الشوعلیہ وسلم جب رات کونماز کے لئے کھڑے ہوتے تو کہنے کے الشہ جبریل میکاتیل اسرافیل کے پُروردگار نیزارشادِ فدا وندی سیع ، یا ایبهالمدین آمنوا الحسیعوالله واطیعوا الوسول واولی الامو منکم - (النساء) (۵۹)

ارشا وخدا وندی سیے:

وساکان الناس الداسة ولعد قلام ورسب لوگ ورسب لوگ فاختلفوا ولد لا کلمة سبقت سن رلینی ایک ہی ملت دبل که لقصنی سینهم فیما فید پختلفون موسکتے اور ایک ہو گئے اور ایک ہو گئے اور ایک ہو گئے اور ایک ہوگئے ور ایک ہوسکتے اور ایک ہوسکتے ہوساں میں فیصلہ کر ویا جاتا ہوں ہیں فیصلہ کر ویا جاتا ہ

عن عائشة - ان المبنى صلى الله على على الله على وسلم كان اذا قام من الليل يصلى يعتول اللهام دب جبريل وميكائيل واسرافيل

آسمالؤں اور زمین کے پیدا فرمانے والے پوشیدہ اور ظامر کو ماننے والے توبی لینے بند وں میں ان کے ختلف فیامور میں فیعد کرے گا دئے اللہ کو مجھے لبينه ا ذن كے ساتم مختلف فيہ چيزول میں حق بات کی رسنما تی فسرما ، بلاشبرتوجس

رسول برائيان لاستة اودان كاجهمان

لیاء بھراں کے بعدان میں سے ایک قہ

مهرما آسہے اور بہلوگ صاحب میان

بخبهي ميں اورحب ان كوخدا اوراس

کے رسول کی طرف بلایا جاتا ہے ماکد (مول

فاطرالسموات والارض عالمالغيب والشهادة انت تخكميبين عبادك فيماكانوا نسيه يختلفون اعدنى لما اختلف فيه من الحق باذنك ائك متهدى من تشّاء الحاصولط ستقيم

شخص کومیاستاہے سیدھے را ہ کی برایت کر تا ہے۔

نقین الله پاک نے انسان کی کا میا بی کواپنی الماعت کے ساتھ معلق فرمایا ، جی کینا یہ اللہ پاک ہے۔

کی مذمت بیان کرتے ہوئے ارشادِ خداو ندی ہے۔ اوربعض لوگ کہتے ہیں کہم خداا ور

و يقونون آمنًا بالله فس َ كإلمهسول والمعناثم يبتولى فوتق

منهم من بعد ذالك وماال^{يمك}ُ بالمومنين واذادعوا الىءلله

ودسوله ليحكم بينهما ذافوليق منهم معوضون. دالنور، ۱۸٬۲۸

خدا) ان كا تضية جيادي توان ميسه ايف رقممن بهيرليتاسيه-

التدياك كانون

ان قانون پرتمام ایمان داروں کا الّفاق ہے ؛ لہذا ہرمسلمان کے لیصزندی ہے کہ دہ استطاعت کے مطابق اللّٰہ پاک کا ڈراپنے دل میں رکھے۔ ارت دِ خداوندی ہے ،

فاتقت الله ما استطعت م - طاقت کے مطابق الله کا ڈرر کھتو۔ اللہ پاک کا مذکورہ بالا ارشاد ذیل کی آیت کو واضح کررہا ہے - ارشاد ضرا وندی ہے -اتقوالله حق تقاض - الله سے ڈروجب کراس سے ڈرنے کا حق ہے

كتشريح عبالتدبن سعود

کی نافر مانی نرکی حاست ۱۰ س کی یا دیس مشغول را جلئے ۱ س کو فراموش ندکیا جائے نیز اس کا شکریر بجالا یا جائے ، کفران نعمت سے دور را جاستے ، لیکن ان تم م احکامات کو استطامت سے ساتھ مقید مانا حاستے گا، حبیباکہ اس کی دضاحت د فاقت واللہ سا استطعم ، ارشا دِخدا وندی سے ہورہی ہے۔

حق تقامته كامعنى يرب كدالله تعالى كى اطاعت كى ماستة اوراس كا علم

عدم علم کا عدر فابل قبول نبین سے

اگرایک انسان دسول الڈصل المتٰدعلیہ دیم کی فرماں برواری میں توکوشاں رہنا ہے لیکن رسول النُّرمسل النُّرعلیہ وسلم کے بعض فرامین ا ورسنیں اس پرنخفی ہیں تو وہ انسان معندورسہے ۔ النَّر باککس نفس کوطا قت سے زیادہ تکلیف نہیں دینا، اسی سلتے نبی مسلی لنُّدعلیہ وسلم نے فرمایا :

رالابھی آبک تواب کا حقدارسہے۔ بخاری وسلم۔

لیکن اگرکو تی شخص عدم علم جبالت کی بنا مربر فیصل **ملور کرایے تو وہ اسی طرح گنا سگار** محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ ہوگا جس طرح وہ انسان ہوتق کومبا نننے کے با وجود اس کے خلاف فیصلہ کرتا ہے -بنا پنسنن کی تنابوں میں نبی صلی النّدعلیہ وسلم سے مروی سبے :

القضاة ثلثه قاضيان فى النّاد قاصنی جہتمی اور ایک مبنتی ہے دفتہ اول، وقاض فىالجنة رجل علم الحق و جس قامنی نے حق وصدا فت کے مطابق قمنى مبرفهو فى الجنة ودجلة ضي ىلناس على جهل فهو فى المتّار جس نے عدم علم کے با دہود جہالت کے ورجل علمالحق وقفئى بجنلاف فهو فیالتّاد۔

کے خلاف فیصلہ دیا، دونوں جہتمی ہیں۔

الله ماک نے ان لوگوں کی مذمرت فرما نی سبے ہوجہالت کے ساتھ فیسلے کرتے ہیں۔ قتران پاک میں متعد دم قامات پر اس سے منع فر مایا گیا ہے ، ارشادِ خدا و ندی ہے : اور دانے بندسے بہ بیز کا تھے انہیں

ولاتقف ماليس اك مبرعلم. ربنی اسرائیل ۲۲

ارشا دِفدا وندی ہے:

قل ۱ نیباحرم ر بی ۱ لفوا حش ما ظهرمتها والبلزوا لأثم والبغثى بغيير الحق وان تشركحوا بالله حالم بينزل **ب**رسلطانا وان تقولواعلى الله مالا تعلمون -رالاعلن) ۳۳

ا قاصنی مین قسم کے بیں ، دوشم کے فیصلددیا و م مبنتی ہے رقسم تان د ثالث، ساته فيصله كميا ورجس سفحق وصداقت

اس سمے بیچھے زیر طو۔ کمردوکرمیرسی پروردگارنے نوبے حیاتی کی باتوں کو فلا سرمہوں یا پیے شیدہ اورگ ہ کو اور ناحق زیار ق کوسفے کو حرام کیا ہے اور اس کومبی کرتم کسی کوخدا کا شر کیب بناؤنس کی اس مفے کو تی سند ناز ل مبین کی اوراس کم تھی کہ خداکے با رہے میں ایسی باتیں

م كو، جن كالمهير كير عامنيي

شیطان تعین سے بارے میں ارتنا دِ طرا وندی سہے:

وہ تم کو بُران اور بے حیان ہی سے کام

کرلنے کو کہتا ہے اور یہ بھی کہ خدا کی نبت البسى باتين كهوسن كالتهبين وتجيمهمي علمنهين

نزابل كتاب كوفاطب فرواتے ہوئے الله تعالى فرواتے ہيں :

دريھواليى بات ميں نوتمسنے فيگراكيا ہی تھا جس کا تمہیں کچھ علم تھا بھی، گراہیں بات بیں کیوں حیکڑنے پڑجس کا تم کو کچیر

علمنهيں اور خدا حانتا ہے اور تمنه بلنے

كيان سے كتاب كنسبت جدنهيں ليا گیاکہ خدا پریج کے سواا در کھے نہیں کہیں

گے اور ہو کچیراس رکتاب، میں ہے،اس کو

ا سے اہل کتاب اسپنے دین دکی بات ، میں صدیت نہ برطھوا ورضاکے بارے

المنساء) ۱۷۱ میں تق کے سوا کچھ نہ کہو۔ بس معلوم ہوا کہ جینحف علم کے بغیر عمل کرتا ہے، وہ جھوٹا ہے اور پیرخض علم سکے

تل کا لیذ کو بین حرم ام الانثیین کہدوکہ د<mark>خدانے ، دونوں دکے ، نروں کو</mark>

إنسايا مزكم بالسوء والفخشاء وان تقولوا على الله ما لا تعلمون.

رالبقرين ١٦٩

هااشتم لهؤلا يرحاججنم فيمالكم ببعلم فلم تحاجون فيما ليس لكمب،

علم والله يعلم وإنتتم لا تعلمون. دآل عمران) ۲۲

ارشادِ خدا وندی سبے: الم يوخذعليهم مييثات الكتُّب- ان لايقولوا علىٰ اللَّه الا

الحق و درسوا ما نسيه ر (الاعران) ۱۹۹

انہوں نے پڑھ کھی لیا ہے۔ ارشا دِندا دندی سبے ،

يا ا هــل الكتّاب لاتغلوافي دينيكم و لاتقونواعلى الله الآا لحق -

(المنساء) اءا

مطابق عمل كرتا سبع، وه ستياسهـ -

ارشادِ خدا وندی ہے ،

حرام کیا ہے یا دو اول رکی ، مادینوں کو ا ابو بچرا دنیوں کے پیٹ بھی لیٹ راہو

ا مااشتملت عليه ارمام ا لاننبين نبئونى بعلم إن كمنقرصا دقين-طلإنعام، ۱۸۲

ارشاد خدا وندی سیے :

قل حاتوا برحائكم ان كشبت صاد قین- زالبق ۲) ۱۱۱

د ایمبینمبران سے ، کبرد وکراگرسیتے ہوتو دلیل بیش کرو۔

بنا نخدالند باك في مشركين كوكذاب ببنان المراز جيس برس القاب كرسا متد پکارا جبکہ ایمان داروں کوصد تی واخلام حبیبی بہترین صلاحیتیوں کے ساتھ موصوٹ فرمایا سیسے اس سلتے اہل شرک اورا ہل نفاق کو ایک لڑی میں برود یا سہے۔

ارشا دِخداوندی سیے ،

حوالـذى انزل السكينة نى قلوب الموسنين ليزداد واليمانا

مع ايما نهم رالفتخ)م

ويعذب المنافقين والمنافقات والمشوكين والشركت أنظانين بالله لخان السوء عليهم دائوة السوع يخضب الله عليهم ولعنهم واعدلهم جهنم

وساءت مصيراً د (ا لفتح) ٢

خداان برخصته بوا وران بربعنت ك اوران کے لئے دوزخ تیار کی اور وہ بڑی حبر سہے۔

ارشادِ ضا وندی ہے :

اسے اگرسیتے ہو قومجھے مندسے بتاؤ۔

وہی توسیے جس سنے مومنوں کے دلوں پرتسلی نازل فرمائی تاکدان کے ایمان کے ساتھ أورايمان برشصے اور اس كئے دكر، منافق مروول ا درمنا فق مورثول ا ويُشرك مردول اورمشرك مورتول كومو خداكيحق میں بُرے بڑے خیال رکھتے ہیں، جذاب دے، اہمیں ریرے مادثے واقع مولور

جھو**ٹی بات سے ابتناب کرومرٹ** موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

اجتنبوا قول المن ورحنفاء لله محكم دلائل و برابين سے مزين متنوع و منفر

ایک فدا کے ہوکرا دراس کے ساتھ تڑک مظہرا وُادر ہوشخص کسی کو، فدا کے ساتھ شرکی مقررکرے تو وہ گویا ایسا ہے جیسے اسمان سے گریڑے اور مھراس کو پزیسے

اوتہوی دبرا لو یج نی مکان سحیق۔ شرکی مخورکا (الحجی ۳۱ ایک کرلے مبائیں یا ہواکسی دورم بگراڈ اگر کمچینک دیے۔

غاروالول كيمتعتق فرمايا:

غيومشوكمين مبروسن يشوك بالله

فكاتما حرسن السماء فتخطف الطين

ان ہماری قوم کے لوگوں نے اس کے سے اوگوں نے اس کے سواا ورمعبود بنار کھتے ہیں ، مجلا بدائ کے، مدا ہونے کوئی کھلی دلیل کیوں نہیں لاتے ، قواس سے زیادہ کون فالم سبے ہوضدا پر

المهتر لولایا تومنا اتخان وامن دومد الهتر لولایا تون علیهم بسلطان بین فسن اظلم ممن ا فستری علی الله کسذبا - (الکهفت) ۱۵ مجموط ا ورافتراکست -

محضرت ابراسيم عليدالسلام كے بارے ميں فرمايا: انسا تعبد ون من دون الله تم تو خدا كوچ واركر بتول كوچ جتے اور

اوثانا وتخلقون افكا والعنكبق، ١٤ موفان باندعث بوس معرت ابراسم عليالسلام اسپنے باب ا وراپنی قوم سے يول مخاطب ہوتے ہيں ا اذخال لا ديد وقومہ ما ذا جب انہوں سے ایپنے باپ اوراپنی

توم سے کہاکئم کن چیزوں کو پوہتے ہو' کیوں حصوف د بناکر، مندا کے سواا ور

تعبدون اَ ئِعْگاالهة دون الله تربيدون دالعنفت، ۱۹٬۸۵ معبودوں كے لحالب مور

قرآن باک میں اس صمون کی آیات متعدد مقامات میں باتی مباتی ہیں مشرکین اہل کتاب اہل برعت جہالت وگراہی کی وجہ سے شرکے مبسی خطرناک مرصٰ میں مبتلا ہیں۔ اعاد نا

الله من ذالك -

لعثنت انبيار كامقصد

التُدْتُعالُ نَ مَم بِيغِيرُون اوراً سمان كَابُون كواس كِ نازل فرمايا تاكرمون
ايک النّد وحدهٔ لا شريک کی عبادت کی جائے۔ انجيار، فرشتے، سورج، جاند، ستارے عرض كوتى هى چيزاليسى نہيں جس کی عبادت کرنا جائز ہو، اسى طرح انجيار کی قبريں، ان کی مورتيان، سورج، ميا ندکی مورتيون جسموں كوالنّد باک سكے ساته شريک منطقم إيا جائے انجيار كرام عليم السلام والعلوة في واشكاف الفاظ ميں بار باراس بات كودم رايا كه الله باك كے علاوه كسى بيغير يا فرشت كوعبادت كے لائت مجھنا كفرسے اوران سے كسي فعت كى توقع يا معزت كا نوف نهيں ركھن جا جيئے ۔ ارشا دِ ضواوندى سبے :

قل اد علالذين ذعبتم سن كوركم شركونى جن لوگول كي نسبت قل اد علالہ بن ذعبتم سن

کہود کہمشرکو آن جن لوگول کی نسبت تمہیں رمعبود ہونے کا کمان سبے ان کو مجلا دیکھو ، وہ تم سے تعلیف کے دور کرنے

ولا تحویلا و بنی اسرائیل م ۲۵

دوند فلا بيلكون كشيث الفيوعنكم

یااس کے بدل وسینے کا کچومجی اختیارنہیں رکھتے۔

صرف ابک الترعبا دے کے لائن سیے

مرکورہ بالا آیت میں النّدسجانئے اس بات کو بیان فرمایا کہ جولوگ النّد کے ملاوہ فرمشتوں جنوں ، انسا نوں سے فریا درسی کرتے ہیں ، وہ ان سے تکالیف کو وُور کرنے اوران سے عذاب الہی کو وُ فع کرنے کی طافت نہیں رکھتے ، بلکہ ان کے میہ وُ فرشتے انبیار خود النّد کا قرب وُ معون لڑنے کی معی میں لگے ہوئے ہیں ، النّد ہی سے اپنی امیدیں والبستہ کئے ہوئے ہیں اوراس کے عذاب سے خالف رسیتے ہیں ۔ الیسے ہی امیدیں والبستہ کئے ہوئے ہیں اوراس کے عذاب سے خالف رسیتے ہیں ۔ الیسے ہی

انسالوں کا وہ گروہ ہو حبّول کواپنامعبود بنا تے ہیں ' ان کےمعبود بھی الٹریا*ک برای*ان ۔ رکھتے ہیں اوراس کی عبادت میں معروف رستے ہیں ، جبکہ انسانوں کا ایک گروہ ان حبّول کی عبادت میں صروف سیتے جب اللّہ بن سعودست اسی طرح منقول ہے

التدباكح علا وكهى كواختيارتهين ارثنا د خداوندی سے ا

قل ا دعوٰٰلِلْاِينَ دَعمتُم من دون الله لايملكون متقال ذوبخ فىالسنموت

كبددوكه جن كوتم فداكے سوا (معبود) خیال کرتے ہو'ان کو ملاؤ ، دہ آسمانوں *ور* زبین بیں فرہ مجر چیز کے تھی مالک نہیں ولانی الایض وما لهم فیسمها سسن ا ورنهی ان میں ان کی مشرکت سبعے اور نہ شريى ومالمه منهممن ظهير ان میں سے کوئی خدا کمدیکار ہے۔

اس آیت سیمعلوم ہواکہ فرشتوں انسا بول بلکہ تمام وہ مخلوق جن کی عبادت بورى سبى ان كواسما نول ا در زمينول مين فره مجرا مننيا رصاصل نهيس اور ساك كا كوتى حصة بيه بلكه تمام كائنات مين الله بإك كاكوتي مثل نهين اور نهى اس كاكوتي معاف ہے۔ بیس نہ توالٹر کے علاوہ آسمانوں اور مینوں میں کسی کا قبصنہ اور کنٹرول ہے اور نہ ہی اس قبصنہ میں النّد کے ساتھ کو تی شریک ہے اور نہی النّد یاک کوکسی معاون اور در گا كى ضرورت ہے ، بال بار گا والى ميں وي تعنی سفارش كے لئے ما صربهوسكا ہے جس کو بارگا ہ ایزدی سے امبازت مل گئی، ارشا دِرْبانی ہے:

ولاتنتفع الشفاعة عنده الآ

لمن اذن له، دسبا، ۲۳ بارے ہیں وہ ا مازت بختے۔

اور خداکے مل رکسی کے لئے ،سفارش فامدہ مذر ہے گی، گراس کے لئے بس کے

نصوصیت کے ساتھ فرشتوں اور ا نبیار کے بارسے میں واضح اعلان فرمایا : کسی آ د می کوشایان شان نهیں کہ خدا تواسيح كمآب اورحكومت اورنبوت محطأ فرانے اور وہ لوگوں سے کیے کہ خدا کو چھوٹر کرمیرے بندے ہوما ق بلکہ داس كويركها مزا وارب كركساب كآب بم دعلماً ، ربان موما و مكونكه تم كما بي دخدا ،

ما كان يَشْرِان يؤتيه الله الكتب والحكمرالنبوة ثم يقول للناس کونوٰاعبادا کی من دون الله ولکن كونوادبا نيين بساكنترتع لمعون اككتب وبماكنتمرتدرسون.

(آلعموان) ٥٠

پڑھتے پڑھاتے رستے ہو۔

اس آیت میں کھنلم کھلا بیان موجددہے کرفرشتوں اور انبیاکورب سمجنا کفریے -ارتثادِ فدا وندی سیے۔

> لعّدكغراليزين قالواان الله هوا لمسيح ابن مريم وقال المسيح يا بنى اصواشيل اعبد واالله وَ بى و دبكم ان من يشوت بالله فقدح الله عليه الجنة ومأ وله النارو ماللظلمين من ا نعبار-

وہ لوگ بے شک کا فرہیں ہو کہتے ہیں كرمريم كمصبيط دعيسلى مسيح خدابي الأهم مسح یپودسے یہ کہا کرتے تھے کہ لے بی اسرائيل خدابى ك مباوت كرو بوميرا مجي پردردگا رہیے ، تہا راہی (اورمان کھو کہ، ہوشخص مندا کے ساتھ مٹرک کرے گا اس پر بہشت حرام کردسے گا اور اس کا

دالمائل، ۲۷ د

متعكانا ووزخ سيسا وزفالمول كأكوتى مدد كأنبين

معلوم سواكه وشخص مسيح عليدالسّلام ياكسى ببغم كو بيكا ذئاسبعه ، تووه البيسانسانول مص منرورتیں مانگ رہا ہے بحن سے قبعنۃ قدرت میں نفع رسانی یا ایڈارسان نہیں ہے رسورل اكرم صلى النرعليه وسلم كومجي اختيار نهيس

غور كيجة مائم البنيين سيغم برخداصلى التُدعليه وسلم سعدالتُدياك كمس قدرُ وزار انداز میں خطاب فروائتے ہوستے ان کوبے اختیار مونے کا کمٹیفکیدہ عمطا فرہا تے ہیں : کہد دو کہ میں تم سے بہنہیں کہنا کرمیرے یاس النداک کے خزافے ہیں اور شام كم) بي علم فيب ما نيامون ا ورندتم سيميما بول کومی فرشته بول میں توفراس محم پرمیات ہو

ر که دوکه میں اسپنے فائدسے اورنقصا كالجريمي اختيارنهين ركمتاه مكر وضاميليه ا وراگریس منیب کی باتیس مبانتا سوتا، تو مبهت سعے فائدے جمع كر ليتا ا ورمجه كو محوتى تنكليف نهبنيتي امين مومنون كوذراور

کبرد وکرمیں تو اپنے نقصان اور انگرے کا پھیمی اختیا رمہیں رکھنا مگر بوندا چاہیے۔ یر مجری کهردو که میں تنہارے حق میں نقصا^ن اور **نفع کا** کچھ اختیار نہیں رکھتا۔

قل لا ا قول لكم عندى خزائن الله ولااعلم الغيب ولاا تول لكم اني ملك ان ا ثبع العمليوجي الي-دالانغام، ۵۰ بونچے (نداک طرف سے) 'آسہے۔

نیزارشا و ندا دندی ہے : كَلُّ لَا املَكَ كَنْضَى نُفْعًا وَلَاصْرَالِلَّا ماشاءالله ولوكنت اعلم الغييب لاستكنثوت من الخنيوومامٌننيئ السوء ان انا الا نذ يووبشير لقوم يومُنون ـ (الاعراف) ١٨٨ پخوشنخبری سناسلنے والاہول -ارشا دِ مندا دندی سیسے ، قل لااملك لشفسىضرا وكفعا الَّا مَاشًا وَاللَّهُ وَرَيْوِيْسَ} وَلِمُ نیزارشاد ضاوندی ہے:

قل انی لا املك مكم صوا ولارشدا

ارشاً ونداوندی سید .

رالجن، ۲۱

راے بغیر، اس کام میں تہارا کھے اختیار نہیں راب دوصور میں ہیں، ماضرا ان کے مال برمبر بانی کرے یا انہیں عذا

دلے محد، تم جس کود وست رکھتے ہو' اسے مدایت نہیں کرسکتے ، بلکہ خدا ہمجس کو چاہتا سہتے ، ہدایت کر تاسیے اوڑہ ہائی ارفثا دِخدادندی ہے :

اگرتم ان دکفار ، کی مبرایت کے گئے لکپا و توجس کو خدا گمراہ کرو بتاسپے اس کووہ بدایت نہیں ویاکرتا ا درا ہیں لوگوں

ليس لك من الامر شيئ اويتوب عليهم اولييذبهم فانهم ظالمون-رآل عموان ۱۲۸ دے کہ یہ ظالم نوگ ہیں۔ ارشاد منداوندی سے ا انك لا شهد ى من الحببت ومكن الله يهدى س يشاء وهواعهم بالمهتدين رالقصص) ٥٩ پانے والوں كوخوب مانتا سبے-ان تحرص على حدا أهم فان الله لايعدى من يـضل وما لهم س نئسدين رأ لغل ، ٣٠ كاكوتى مدد كارى بنهين بوتا-

سُبِب نا لِيفُ كَتَاب

میرے ایک رفیق نے میری طرف ایک کمابچ ارسال کیاجس میں اس مسلکو فعیل کے ساتھ بیان کیاگیا تحرکیا تین سجدوں سے علاوہ مثلاً قبروں کی زبارت کے لئے سفر اختیار کرنا حرام ہے یا مائز بامستحب بیں تعریبًا پندر ہ سال ہوئے قاہرہ کی زندگی میں اسم سنله کا بواب تحریر کردیکا مضا ، لیکن بعقن لوگوں نے اس د ورمیں اس بات کا برملا اظہار کرنا شروع کر دیا کہ میں نے اپنے رسالہ میں جو کھیے تحریر کیا، وہ اجماع امت کے خلاف سیعے ا ورا نبیا صلحا کی قبرول کی زیارت کے لئے بلاانتلاف سفرکرنامتحب ہے، مبیسا کومسجہ نبوی کی طرف سفر کرنااس میں نمازا واکرنا ، آپ پرصلوٰۃ وسلام پہنجانا آب کے جماع تقوق کی نگہ اِشت کرتے ہوئے آپ کی تعظیم ہمالانا دجب کہ آپ کی قبر *ترلیف* مسیدنیوی کے جوارمیں سیے مستحب سے ،بلکہ جملہ انبیارصلحار کی قبرول کی نیارت کے لئے سفرکر نامستحب سبے اور اس استحباب پراجماعِ امّت سبے حبیباکہ مدینیتالترول كاسفر كرنا لصًا وراج مًا مشروع سب - أكركوتى شخص آيام ج كے علا وہ مجدنوى كُيار کاسفرا فتیارکر ناہے، تو شرعًا اس کے لئے ایسا کرنا جائز ہے۔ تاریخ پنددیس كه خلفاً را شدین سے دور میں مسلمان قراخت تج کے بعد گھڑں میں ابن جلتے تھے بھراز میرلو مسحد نبوی کی زیارت کے لئے سفر افتیار فرمانے بسمجنے ہوئے کہ سبحد نبوی کے بلتے انشار سعز میاوہ مستقلہ ہے ،جیسا کہ نبیت المقدس کی زیارت کے لئے مفرکزا عبادسيج لكين مسجلينوى كي طريب ه فركرنامسح إقصى كي طرف سف كرسف سے زيا وہ ففيلت كھتا سے ليريع جن اوك س غلطنهى بين مبتلا بو كگئے كہ ورحقیقت سفركی مشروعیت بنی صلی التّدعلیہ وسلم كی قبرتربیث ک زیارت کیلنے سے مسمبر نبوی کے بلتے نہیں مسجد نبوی ک ریارت کرما عنما کہے اور

قرشریف کی زیارت کے ، بع ہے ۔ علی بزائقیاس تمام ابنیار کی فروں کی زیارت کونا مشروع ہے ، بیساکہ بن سعدوں کی زیارت کے لئے مفرکر نامست ہے بعض انہا پہندوں نے بہاں ہک دوئی کردیا کہ ابنیار کی قروں کی زیارت تبنون سعدوں کی زیارت بندوں نے بہاں ہک دوئی کردیا کہ ابنیار کی قروں کی زیادہ نواب ہوتا ہے ۔ مسجد الحرام ، مسجد نبوی ، عرف ، مز دلفہ منی دیگر مساحد اورتنا عراجے میں دعائیں انگا اتنا افضل نبیں متبنا کہ ابنیا را وصلحا کی قروں کے باس پنے کروعائیں کرنا افضلیت کے متاب ان افضلیت ہر اجماع امت کے متاب ہو کہ بی میں کرتے ، بلکہ اس افضلیت ہر اجماع امت کے متاب ، وہ اجماع کی فرون سفرکو ان جا تریا فیمستحب قرار دیتا ہے ، وہ اجماع کی فرون سفرکو ان جا تریا فیمستحب قرار دیتا ہے ، وہ اجماع کی منا لفت کرر ہا ہے ۔

سین ان لوگون کی به باین طنیات سے زیادہ کچے چینیت نہیں رکھیں۔ ان سے قوال کی فات کی نائید نہ تو کتاب وسنت سے بوری ہے اور نہ ہی معتبرا تمہ دین سے ان کی فات میں کوئی قول موجود ہے ، بلک کتاب و مُصنّت اجماع سلف اوم شبورا تم کرام کے قوال ان لوگوں کے مطنونات سے فلاف ہیں ، پی حقیقت اظہر من اشسس ہے کرمسائل کے اختلاف میں جن اہل کو اجماع احمت سے ساتھ تعبیر کیا جا اجا دہ تم ان ان لوگوں کے خلاف ایک محاف کی مجتمع ہیں۔

تاضى انعنائى كى جهالىت <u>:</u>

جب میں نے قامنی افغائی کے گاہی کا مطالعہ کیا ، اومعلوم ہواکہ یہ گاہی ہو گا کا پلندہ ہے اور اکسس کے مباحث اس کی جہالت اور بے وقوفی کا پنہ دیتے ہیں، بار بارمیرے ذہن میں یہ فیال بیدا ہو رہا تھا کہ اس قسم کی مبا ہلا نہ بابیں تو معمولی پڑھے لکھے لوگ بھی تحریز نہیں کرتے، پر مبائیکہ ایسی باتیں ایسے انسان کی اوک قلم سے مسفحہ قرطاس کی زینت بنیں جوا پنے آپ کو وقت کا قامنی القضا الاسمیت سے باہم اس کے کلام سے ی یہ بات مترش مور بی تھی کہ وہ مذہب سے بری نہ سے مبیدا کہ اس جیسے انسان اپنی فدہی وابستگی کا ڈھنٹ ورابیٹے ہیں ، اگرچ انہیں دین کا اہم میتر نہیں قالدان کی

ان لوگوں کی سبے وقونی کی انتہا اس سے زیادہ اورکیا ہوسکتی سبے کہ یہ لوگ رسول النّدصلی النّدعلیہ وسلم سے فرمودات کو جاسنتے بہرا سنتے ہوستے اس انسان پر کفرکا فنوی لگاد بننے ہیں جورسول النّدمِسلی علیہ وسلّم سکے ارشادات کو اپنی زندگ کالاتح

مور مين ماه بيب بي برو رن معرف بير مين على ممتاسيدا وراس كرا ركامات ك الحاعث كوفر من مجتاسيد -

بلکہ اگر شظر غائر ان کی علمی بے مجارگی کا جائزہ لیا جائے تو معلوم ہوتا ہے کہ یہ لوگ ا پنے آپ کومس مقام و مذہب کی طرف منسوب کرتھے ہیں اس سے محقو ات سے بالکل ناآشنا ہیں -

ظامریکی ابر النزاع مسکه بس کے بواب میں مجھے فلم امھانا پڑا ہے اس کاؤگر انتوافع حنا ملکری کتا بوں میں موجو د ہے ۔ اہام ابوطنیفہ رحمۃ الندعلیہ اس مسلمیں اہام شافعی اور اہام احمد رحمہ الله سے زیادہ متنفد و نظر آتے ہیں ایکن مالکی فقد کی آبول میں بیمسکہ متعدد منفا مات برطری نفصیل کے ساتھ مذکور ہے ۔ خالبًا مختصرا ورم طول میم کتابول میں بیمسکہ متعدد منفا مات برطری نفصیل کے ساتھ مذکور ہے ۔ خالبًا مختصرا ورم طول میم کتابول میں اس کا تذکرہ ملی سیے ، بلکہ اہام ہاک رحمۃ الترطیبہ بنفسہ مراحتًا فراتے بیں کول المراح اللہ منابع میں منابع و منفرہ موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ محتمد دلائل و برائین سے مزین متنوع و منفرہ موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

اس مدیث کوعمومیت پرجمول کرنے ہیں -

معلوم ہوتا ہےکہ قاصنی اخناتی اوراس کے رفقاً اکٹر اربعہ کے کلام کیمجے سکے ہیں اور مذ تقد علمار کی مباحث کامیح جائزہ ہے سکتے ہیں، ملکہ سنّت رسول سنتتِ خلفارا شدین و معابر تابعین کے انداز کو بھی میچے محل برجمول کرنے سے فاصر سے ہیں۔ قاضى اخنائى نے اس رسالہ میں جس انداز کو اپنانے كوكشش كى سے - غالباً اس کی د دسری تمام کنابوں میں جموا دملتا ہے ، اس کی مخالفت کرتے ہوئے نغرّتے ہیں۔بیس اس کے اس طرز عمل کو یا کذب عمد رچمول کیا ماستے گا یا بھراس کا فہمناقش

ہے اوراس نے اپنی خوامش کے مطابق ان غلط خیالات کواس رسا لہ میں جمع کر دیاہے۔ بعض لوگ دین بین جہالت اورعدم علم سے با وجود بھی علمی مباست میں صدالینے کو ابب

على مقام ثابت كرف كم المقدب فائده ماسة باؤل مارست بين بينا بخدان كلمين اصل حقائق سے بہت دور ہوتی ہیں۔ نیزا ن کی حما قت ہے وقو نی پر دلالت کررہی

ظ الربع كم وتخف درج اجتها دير فا مَرْنهين، وه اكرديني معاملات مين البيف ذمني خبالات کو ملاکسیش مرتا ہے، تو وہ رضه اندازی کرتا ہے۔ اپنی جھوٹی باتول سے بہرہ

گناه کامرنکب مہذنا ہے۔ ارتشاد نبوی سہے: من بريدة عن النبىصلى الله

بريده صحابي نبي صلى الشرعليه وسلم سيروا كرتے ہي۔ آپ نے ضروایا كہ قاصی بير قسم

کے ہیں۔ دونسم کے فاصٰی بتمی اور ایک

جنتي ہيے م اول حبن نے قق وصداقت کے مطابق فیصد کیا [.]

وه منتی ہے قسم نانی ، مت، نالث جس نے جہالت کے ساتھ فیصلہ کیاا ور جس نیری ومیراقت کے خلاب فیصا کیا مقدم موضوع میراقت کے خلاب فیصا کیا

عليه وسلم اندقال القضاة ثلثة قاضيان

نى المناروقاض فى الحبنة دجل قضى للنا^س

علىٰ جهل فهو في النار ودجل عرف

الحج وقفنى بخلاف ونهو فى النا رؤيط

علم الحقو قضى بد فهوفى الجنته

ارشاد نبوی ہے ،

اذااجتهد الحاكم فاصاب صله جب فیصله کرنے والا کوشش كے ساتھ اجد ان واذاا جتهد الحاكم فاخطاً راوصواب كو پالیتا ہے تواس كو دگنا تواب فله اجدواحد - طے گا اور حب فیصله کرنے والا كوشش

ے با وجود خطا کرما ناسید، تواس کوجی ایک اجر ملے گا۔

لین بوخس بربنائے جہالت فیصلہ کرتاہیے اور بغیر کسی کوشش کے لب کشائی کرتا ہے آور بغیر کسی کوشش کے لب کشائی کرتا ہے قاس کے بارسے بیں رسول النُّرصل النُّرعليہ وسلم کی سخت وسیر موجود سہے۔ارشا د بنوی ہے : ۔

· عن ا بن عباس عن البنى صلى الله عليه وسلم اشهُ قال من قال في نقون بايد نلیتبومقعده من المار و نی معایدة بغیر عمر *برشخص قران پاک بین اپنی رائے* کو دخیل گروانتا ہے تواسے اپنا ملے کا مذہبی سمجنا چاہیتے) اس کی تشریح ایک دوسری مدیث سے ہورہی ہے۔ میحین میں حمدالند بن مروسے مروی ہے ،ارشاد بوی ہے، انّ الله لاينسن العلم السّراعا بے شک الندنعالی علم کولوگوں کے ينتزعدمن المناس ومكن بقبضد د لوں سے قبض نہیں کریں گئے ؛ البنۃ علما کے يقبيض العلما ً فا ذا لم يبنى عالما انصنالناس رؤو سًاجعالاً فسست لموا فرت ہوم! نےسے علم قبض ہومائے گا' بس جب علمار کاوجو د نہیں رہے گا اولوگ فا فنوًا بغيرعِلم فضلوا وا ضلوا ما ہل لوگوں کو اپنا پیٹیو ا بنالیں گئے۔ بیں و فى دوايية ا لبخارى فا فتوابرابيتم وہ لوگوں کے سوالات کا لا علمی کے ساتھ حواب دیں گے ، نینجیڈوہ توخو د کمراہ ہیں اور لوگوں کوبھی گمراہ کر دیں گے اور مخاری کی روایت میں ہے کہ لوگوں کو اپنی رائے کے مطابق فتوسے دیں گے۔

لیکن وہ مجتبد حس کے درل بیں التد کا ڈرمو جود سے مسلم کی تلاش میں امکانی

مساعی کو با تھ سے نہیں مانے دیتا ، فقط التہ کی رضا اور خوشنودی کے لئے زبان کو ترسی میں لا اسبے ۔ دلائل کا مواز نہ کرنے کے بعد امو رمر تحد کے بیش نظر ایک مانب کو تربی ویتا ہیں لا اسبے ۔ دلائل کا مواز نہ کرنے کے بعد امو رمر تحد کے بیش نظر ایک مانب کو تربی ویتا حدیث کے مطابق سبے تو وہ دو گھنے تواب کا مقدار ہوگا اور اگر لوری کوشش کے با وجود مقدیث کے مطابق سبے تو وہ دو گھنے تواب کا مقدار ہوگا اور اگر لوری کوشش کے با وجود مقدمین باسکا، تب بھی اس کو ایک اجر صرور مطے گا، بیس اگر کو تی شخص کی تو جمید سے برج تہد کو معید بسی مجتابے کہ وہ اللہ تعالیٰ کی اطابعت سے مرتبا بی نہیں کرتا ور توشخص میں سے ایک را فیواب کو تواب کو باتا ہے اور می خص میں سے ایک را فیواب کو باتا ہے اور می خص میں میں اسے اور می خص میں میں میں اس کا میں کو معلوم کھنے باتا ہے اور می دو اور اس کا بھی لول کہنا درست ہوگا ، متعد دمقا مات میں اس کو تفعیل اور کو کی گیا ہے ۔ قو اسس کا بھی لول کہنا درست ہوگا ، متعد دمقا مات میں اس کو تفعیل فرکریا گیا ہے ۔ قو اسس کا بھی لول کہنا درست ہوگا ، متعد دمقا مات میں اس کو تفعیل فرکریا گیا ہے ۔

مرامقعود برہے کہ جنھی بغیرہ کم کے حق وصدا قت کے خلاف لب کشائی کی جرآ کرتا ہے ، وہ جھوٹا ہے تو اس نخص کو جھبوٹا کبوں سمجھا جاستے گا جواصل کلام سے نقل کرنے میں کذب بیانی کا ارتشاب کرتا ہے ۔ ظاہر ہے کہ اس کا جھوٹ پہلے انسان کے جھوٹ سے زیادہ واضح اور ظاہر سہ اگرچہ پہلے انسان کو بھی جھوٹا کہا جائے گا ورجیو کے وہال سے بی نہیں سکے گا ، جیسا کہ نبی صلی الٹر علیہ دسلم نے فرمایا :
کے دہال سے بی نہیں سکے گا ، جیسا کہ نبی صلی الٹرعلیہ دسلم نے فرمایا :

کے سبیعہ اسلمیے کا واقعہ شہورسہے کہ بعب اس کا خاد نہ نوت ہوگیا تو اس سے خاد ندی وفات سے جند دن بعد بجتہ جن دیا اور وہ منگئی کا بیغا م جیجنے والے لوگوں کے لئے اپنے آپ کا سنگھا دکرنے لگی قوالوا بل نے اس کی حرکت پراس کو ڈو کا اور کہا کہ چار مجینے عدت گذارنے کے بعد تجھے بنا وّسند گادکرنے کی اجازت ہوگی جنگہ سبیعہ نبی اکرم مسل لڈ علیہ ولم سے مسلہ ہو چھنے گئی تو آپ نے فرما یا ابوالسنا بل نے جھوٹ کہا ۔ فاہرہے کا اولسنا

ا و المربع بالائل ومعارض المعجمين و متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مكتب

نیزوب لوگوں نے بنی مسلی الٹرعلیہ وسلم کی فدمت میں کہا کہ عامرنے نو دکتی کر لی ہے لہذا اس کے اعمال مناتع ہو گئے تو آپ نے فرمایا کہ جٹخف یہ بات کہتا ہے ، وہ حجموث کہتا ہے ۔

نیزجب الومحدسن وترول کودا جب کها، توعباده بن صامست سن فرمایا کم الجرمحد حجوث کهتا سید. نیزجب نوف بکالی سے کها که موسی بنی امراتیل وه موسی علیه السلام میں جوخعنرملیہ السلام کی رفاقت میں رہے تو عبدالنّر بن عباس سنے کہا کہ نوف بہائی جھوٹ کتا۔ سہ

پس جب ان لوگوں کے اقرال کو مجوث کہا گیا ہے ہوکہ عدم علم کی بنار پران کی زبان سے سنگلے ہیں قوجولوگ اصل کلام سے نقل میں فل سڑاکذب بیانی کے مرتیب ہوتے ہیں ان کو کیوں کا آب نہیں کہا جا ہے گا۔ جیسا کہ پہلے گزرجیا سے کہ وشخص جہاست کے ساتھ کو زَ نیسلہ معا در کرتا ہے، تو وہ قاضی جہتم کا حقد ارسے۔ اگر چر خطا کا رمجتہد مندالٹر قابل محوسے ، کیکن جس اجتہا دمیں نص صربے یا اجماع کی مخالفت کرر اسے، علماً متعنی ہیں کواس کے اجتہاد کی باطل قرار دیا جائے گا۔

قاضی اختاتی اوراس تماش کے تمام نام نبادا ہا علم جادہ مستقیم سے دُور جا حِیجے ہیں ان اہم مسائل سے انہیں کچے واقفیت نہیں، جبکہ دہ یہ وقرآن پاک ہیں فوق فکری خرورت محسوس کرتے ہیں اور نہ ہی سنت رسول آ ٹار صحافی تابعین جم وال تر کی معرفت ماصل کرنے کے لئے کہ جسم کے کششش اپنے اغرباتے ہیں۔

یہ نوگ وین سے اجبنی ہیں ۔ اصلام سے انہیں کوئی تعلق نہیں جس طسرت کہ ابتدا یہ اسلام میں اسلام کو اجبنی سمجھتے ہیں ۔ اس طسد ت یہ جی اسلام کو اجبنی سمجھتے ہیں ۔ انہیں مشربیت اسلامیہ اسلام کو اجبنی سمجھتے ہیں ۔ انہیں مشربیت اسلامیہ سمجھتے ہیں۔ انہیں مشربیت اسلامیہ کے دلائل جائے ہوئے سے تعلق دا تفیقت نہیں۔ ظامر ہے کہ اگری لوگ شربیت اسلام کے دلائل جائے ہوئے ۔

تویقینا برلوگ اتنی بڑی گراہی اور جہالت میں نہ مبتلا ہوتے اور تمام پیغبرول کے اجماع کی مخالفت نکرتے اور نہی اتمۃ دین کے مفاہب سے بغاوت کرتے ہوئے ، التداوراس کے رسول ابن علم اور راقم الحروف پرافترا با ندھتے۔ بدلوگ اپنے مدی کے اثبات میں جن لا ل کو رسول ابن علم اور راقم الحروف پرافترا با ندھتے۔ بدلوگ اپنے مدی کے اثبات میں جن لا ل کو رسیت کرتے ہیں، نواس کی ولا است معلوب پرنیں اگر کو تی حدیث وعوی کے میں مطابق ہے کہ وہ وہ مدیث موضوع ہے ؛ البنہ جب الس ک ت کونا بت ندکیا جائے اور مطلوب کے میں مطابق ہے ما تھاس کی ہم آسٹی کو بیان ذکیا جائے مطلو ثابت نہیں ہوسکتا ، ابن قاصنی اختاتی اپنے مذکور میں انہوں کی اس کی زبان نہیں رکھتا تو مجھ پر اتہا مات کی رور دار بارش کرتا ہے ، البتہ جب ولائل کی زبان نہیں رکھتا تو مجھ پر اتہا مات کی رور دار بارش کرتا ہے ، البتہ جب ولائل کی زبان نہیں رکھتا تو مجھ پر اتہا مات کی رور دار بارش کرتا ہے ، البتہ سے یہ دستور چلاآیا ہے کہ اہل تو صد پرلوگ افست میں نہیں سبے یہ میشہ سے یہ دستور چلاآیا ہے کہ اہل تو صد پرلوگ افست میں نہیں سبے یہ میشہ سبے یہ دستور چلاآیا ہے کہ اہل تو صد پرلوگ افست میا

بنت بين ارثا د فدا د ندى سے ؛

ان الد يب جاء و ا تم ہى يں سے ايک جما عت ہے ،

الانك عصبه منكم لا تصبيق اس كوا بينے حق بيل برًا نه مجمئ بكم سك اس كوا بينے حق بيل برًا نه مجمئ بكم سك الكم مل هو خدولكم د كل وه تمارے لئے انجها ہے ، ان بل سے المدئ منهم ما اكتسب من وه تمارے لئے انجها ہے ، ان بل سے الا تم دا لذور)

الا تم دا لذور)

پئس میراس تا ب کی تالیف سے نہ قاصی افنائی پر اور نہ کسی دوسرے انسان پرزیا دی کرنا ہے اور نہ کسی دوسرے انسان پرزیا دی کرنا ہے اور نہ صرف خصوصتیت کے ساتھ قاصلی اخنائی کونشار نبانا سے ہے، بلکہ اللہ پاک اوراس کے فرستا دہ بیٹیم وحرصلی السّرعلیہ وسلم اور اس برمند کہ من اللّٰہ قرآن پاک

کی تعلیمات براعتراضات کا رضائے الی کے لیے جواب دینا مفسود ہے۔ نیز علمی تقامنوں کے بیش نظرا سلام کے راوا عندال سے روستناس کراناہے، ارشا دِخدا دندی سے :

یا تبط المدنی استواکونوا است ایمان والو بفد اسکے لیے الفا قوامین مله شهد اء مالقسط کی گوائی دسینے کے لیے کھر سے ہوجایا ولا یجد منکم شنان قوم علی کرواور لوگوں کی دشمنی تم کواس بات پر

ان لا تعدد لوا اعد لوا هو آماده نه کرسے که الفاف جیور دو انفائر ا اقرب المتقوی ، (الماشدة) ۸ یمی پرمبزگاری کی بات سے ،

نیزکسی معین انسان کی مذمّت بیان کرنامقصو دنهیں ہے، بلکہ اس مسلہ بیس غلطیوں اور گرا سیوں کو واشکا مت کرنا ہے اور مذموم منہی مینہ بییزوں سے آگا

علىطيوں اور كمرا ببيوں كو واشگا حث كرنا ہے اور مذموم منہى عمنہ بجيزوں سے آگا كرنا ہے -اس سلسلہ ميں ارشا دِنبوى سے رہنما ئى حاصل كيجئے ، رسول النّد صلى لنّد عليه وسلم جب سى مذموم فغل كو دسيجھتے ، تو فر ماتتے ؛

ما بال رجال یشولون به بهرده بات کهرست بیر یاده تابن نفت، او یفعلون کرنداد

ا فعال كاارتكاب كررسيس

پئس آپ بلا تعیین فعل کو مذموم قرار دسیتے ہیں اورلوگوں کو اس کے ارتکاب سے ڈرار سے ہیں ، اسیک تا ہی میں کا من کا تنہ کی میں کتا ہے می

پوری قوتت مرف کر ڈالی تومیرسے سلتے اس کے سواکو تی جارہ کارنہ رہا کہ میں اسس کے کتا بچیسسے اسی کے اسپنے الفاظ بیشش کر وں اور بھیر ولا تل ک روشی میں ان کی ترد بدکر ول ،خصوصًا جبحہ بہ خص اسلامی تعلیمات کا لبادہ افٹر حکوالیے مسائل کا پرچار کرر باسے جو دین ا سلام سے متصادم ہیں اور بعثت نہوی کی عرض وفایت بیان کرنے ہیں جن چیزوں کو بیان کرتا ہے ، ان کواسلام کا نام نہیں دیا جاسکت ، بلکہ کفر کہنا چاہیئے کہ پشخص مبدلین عم فین کالیڈرہے ؛ لہٰذا دیا جاسکت ، بلکہ کفر کہنا چاہیئے کہ پشخص مبدلین عم فین کالیڈرہے ؛ لہٰذا بعب اس کا نام سے کررد کیا جاستے گا تواس کے تمام دنقار کار دسمجھا ماسے ہے۔

<u>قاضی اخناتی کا اعتراض</u>

ا بن تیمیر کے ایک فتوئی کا مطالعہ کرنے سے اس کا برترین اور مذموم مقعد علم مہوا کہ وہ ندصرف برکرمام قبرول کی زیارت کرنے کوحرام کر دا نتا ہے ، بلکر تمام انبیار کی قبرول کی زیارت ا وران کی طرف سفر کوسنے کو حرام کہتا ہے اور برایک الیمی نا فرمانی ہے جس کی حرمت پرتمام امنت کا ابماع ہے۔

جواحب، اقاضی افنانی سے اسپے اس اعتراض میں اوّلاً کدب بیان سے کام لیا ہے۔ اہنااگرقامنی افنانی کو کذابین کی فہرست میں داخل سمجھا جاستے تو کچھ حرج نہیں بلکہ البسے کذاب کی شہادت معتبر نہیں ہوتی۔ ثانیا اس کی کلام سے معلوم ہوتا ہے کہ وہ جابل ناقص الفہم نهایت کند ذہن انسان ہے ، اس کے لئے صوری تھا کہ وہ اعتراض کرتے دقت بعینہ میری عبارت کو نقل کرتا اور پھر محل اعتراضات کی نشان دہی کرتا ایک بات میں میان سے بہت میں ماہ وصواب اعتبار کیا ہوتا ہو بات جرب رقل سے نہیں نہی اس کو ذکر کرنا تھا، تب بھی را ہ صواب اعتبار کیا ہوتا ہو بات جرب رقل سے نہیں نہی اس کو ذکر کرنا

ا ورج بات میں سنے ذکر کی سیے اس کو ذکر مذکر نا انعیا نہیں ، بلکہ افترا باندھنا اور مجه بزلجلم كرناسير يمبرسے جواب ميں قطعاً اس باست كا فكر نہبى كہ قبروں كى زيارت كرنا مرام ہے بنوا ہ موام الناس کی قبریں ہوں یا ا بنیارہ یک قبرین موں اور مرمجہ سے اس کاسوال ہوا تھا۔ میں ہے ۔ ہواب میں اس مسد برقلم اٹھ باکہ کیا قبروں کی زیار کے لئے سفر کی معوبتیں برداشت کرکے جانا ورست ہے ؟ یں لے سمسکویی علما کے اقوال کومجی نقل کیا۔ آپ مبری کتابوں اور فتو دن کا مطامعہ کریں ، تو آپ 👚 اس مسئلہ ک وضا صة معلوم کرسکیں کے قبروں کی زیارے ستحب سے ۔ نیزا ہلِ بقیع شہدا امد کی قبرو کی زیارت کرنامستعب سبے۔نیز میں نے نبی اگر مصلی لندسیہ وسلم کی فبر کی زیارت اور سجد نبوی میں داخل ہونے کے آ واب اور علما رکے اقراں کو بن کا بول میں وکرکیا ہے۔ میں سنے اس جواب میں قطعًا اس بات کا ذکر نہیں کباکہ قبروں کی زیارت كرنامعميت بهد ، بلكه جب ميں جواب تحرير كرر بائة ، تواس وفت ميرا مقيده بي تقا کم قبروں کی زیارت سے استحاب پراجماع سے، پھیریں نے اس سلومیں علمائے اختلاف كومعلوم كياليكن ميرسه نر ديك علما كااختلاف مرجوح تنفااوريين اس بات كومبحح سمجننا را کمقرول کی ریارت ستحب بعد علماً کے اختلاف کو بیان کرنےوقت بیس نے علماسے دوا قوال ذکر کئے۔ان میں سے ایک تول بیٹھا کیعف علما کے نزدیک قبرول کی زیارت کرنامعصیت ہے ،لیکن اس بات کا ذکر نہیں کیا کہ برابسی عصی*ت سیے جس کی حرمت* پراجماع ہود پا سے علی رکا دوسرا تول یہ بیان کیا کر قبروں کی زیادت مِن توحرام فعل ہے ا درہٰ ہی سخب فعل ہے۔ بس اس وضاحت کے بعدا گرکوتی شخص پر لنظر پرکھٹے ہے کہ قبول کی زیارت کے لئے سُفرکر: قبادت تو وہ اجماع کی مخالفت کر تاسیے اس لئے کہ عبادت سمجعنا بالاجاع حرام ہے ۔

ا بل علم ذیل کی مدیث کی دو مختلف توجهیں پیش کرتے ہیں د مدیث ملا خطر کیجے،

فرتین محدول کی طرف شدّرمال کیا جائے مستسجد حرام ،مسجد نبوی ممسسم یا قصلی ۔

لاتشدالهمال الاالى ثلثة مساحلسيدا معرام ومسعلى هذا والمسجد الاقصلي -

توجیب اول ان تین سعبدوں کے علاوہ سی جی سعبہ یا مگر کی طرف شرمال کر نا حرام ہے ۔ اکثر متقد بین علمار کا ہی نظریہ ہے ، بلکہ تمام متقد بین کا اس پراتفاق ہے کہ یہ حدیث قبروں کی طرف سفر کورنے کو بھی حرام قرار دیتی ہے ۔ معام کرام تا ابعین عظام آتہ کہ برس اختلات نہیں کہ قبریں انبیار کے آثار اسی حرمت میں واخل ہیں ، جیسا کو گور پہاڑ کی طرف سفر کو بھی کو وات کی فہرست میں شمار کیا جائے گا، اگر جواللہ پاک نے کو گوا کہ وات کی فہرست میں شمار کیا جائے گا، اگر جواللہ پاک سے کو گوا کہ وات کی فہرست میں شمار کیا جائے گا، اگر جواللہ پاک سے کو واد کی مقدس کا لقت ویا ہے اور اسے بقت مبار کہ کے نام سے بھی موسوم کیا ہے گور ہوئے ۔ مدیث پاک کے الفاظ اگر جر میں خریب کی فوست خبر ہیں، لیکن معنی برزی ہیں ، موست ہے کہ الزان تین مسعبہ ول کے علاد ہ کسی بھی مقام کی طرف سفر کرنا با لا جماع معمیت ہے کہ لہذا ان تین مسعبہ ول کے علاد ہ کسی بھی مقام کی طرف سفر کرنا با لا جماع معمیت ہے کہ بہی روایت میسی عیں مین خریب کے ساتھ بھی مذکور سے ، ملاحظہ کیجئے :

عن ابى سعيد الخددى عن المنبى صلى الله عليه وسلم قال لاتشدوا الرحال الا ثلاثه مساجد مسجدى هذا والمسجد الحلم والمسجد الاقصل.

الرهال الا الى ملت مساجد مسجد ى هذا والمسجد الحنام والمسجد الحام والمسجد الاقصلي - الاقصلي - صحابة البعين اس بات برتفق بين كدان سجد ول ك علاوه كسى جبى قابل تعظيم مكان كى طرف سفر كرنام منوع سب ا ورجب كسى دور مرى سجد كى طرف سفر كرنا جائز نبين ، تو مكان كى طرف سفر كرنا جائز نبين ، تو منا عرب ك الفاظ بين عموميت موجود سب اس سنة تومسا حد ك غير كوبى اس بين شا مل سميما كياسيد موطا امام ما كي شرب أن كرد بول مين الوليمره ففارى سع روايت سب كداس سف الوم ربه مسع سوال كي ،

کرآپ کہاں سے آرہے ہیں، فرانے لگے کوہ کورسے اس پر کہنے نگے کہ اگر ترب مبالے سے پہلے مبری تجھسے ملاقات وسی ترتجھے وہاں مرمانے دیاماتا۔ میں نے رسول الترصلي الترملير وتتم سے سنا ہے ك س فرمائے تھے کومرٹ میں سمبروں کی طر سواراوں کو د ثواب کے لئے جلا یامائے۔ مسحدا لحرام ميرى سجدا دمسحدا يكيالعف روايات مين سحد بيت المفدس كالفظسه-الوزيدبن شيبة نميري اخبارالمدمينة النبوير میں تحریر کھیتے ہیں کہ ہمیں ہشام بن مبدالملک سنے ان کوعبدالحمید بن بہرام سفےان کوشہرین یوشب سفیمدیث بیان ک که میں لے الوسعيد خدري سے سنا جبكاں کی مجلس میں طور مقام میں نمازا داکرنے کا ڈکڑ سبوا، تواس في رسول التُرصلي التُرعليب ولمست بیان فراتے موسئے کہا کرسوار او**ں ک**اشار مال

من این اقبلت قال من الطور قال لواددكنشكث قبلان تغوجها خرجت سمعت دسول الله صلى الله عليدوسلم يقول لا تعمل السطئ الاالى تللتة سياجد المسجد الحرام دالىمسجدى هذا والى سجدايليا اوقال ببت المقدس وقال ابوزيد عسروبن شيبية المنميوى في كتاب اخبارالمدينة النبوية مدثنا حشام بن عبد الملك حدثناعبلجيد بن بهرام مدثنا شهر بن حوشبهمعت اباسعيدا لحذدى وذكى عنده الضائح في الطود فقال قال وسول الله صلى الله على وسلم لا ينبغى للمطى ان تشدّ دحالها الىسبير تبنتنى فيدا لصلواة غيرالمسجد الحرام والمسجد الاقصلى دمسجدی عذار كسى يجى مسجد كى طرون نما زا داكر ليے سكتے ماسوئى تين مسجد وں مسحد إلحرام ، المسجد الاقصلي

المسحدالنبوى كحدثركيا مباستے۔

ندکورہ بالا حدیث بیں مراج نامسجد کا لفظ موجود ہے اور بنی کا حکم کوہ طور کو بھٹی ل سبے ۔ اگرچ و ہاں سجد کا دجو دنہیں ہے۔ خامبر سبے کہ جولوگ کو ہ طور یاکسی اور مبترک مقام کا تصدکر کے جاتے ہیں، توان کا قصد کسی سجد کے لئے نہیں، جبحہ کوہ طور کے زدیک کوئی بستی آباد نہیں کہ وہاں کے مکینوں کو سبح تعمیر کرنے کے ضرورت پیش آتی ۔ اور جس مقام میرکوئی می زاد اکر سے والامتنفس نہیں، وہاں سے تجمیر کرنا ہوعت ہے۔ بس لوگ کوہ طور کے فرون کے بیش نظر دیاں جالے کا تصدر کے بین توجب مساحد کا قصد کرنا ممنوع ہو گا۔ ارشاد نبوی سبے :

میح مدیث میں نبی سلی الٹرطلیہ وسلم سے منقول سیے -آپ لنے فروا پاکوز مین کے تمام ٹکرٹوں سے الٹرکے ہاں بہترین ٹکڑا

وقِل ثُنبت في الصعيح عن المنبي صلى الله علي وسلم انط قال احب الهقاع الى الله المساجد .

ا**صحیح**یخادی ₎

مساجد ہیں۔ یاد کر ر

پس حبب ان تین سعد وں کے علادہ کسی بھی عندالسُّر محبوب مقام کی طرف سفر کر نا حوام قرار دیا گیا ہے توجومقا بات ان سے کم فضیلت رکھتے ہیں ، ان سے بالاول منع کیا جائے گا، جیسا کداس کی ومناحت محار کرام خصوصًا عبدالسُّر بن عمرسے منفول ہے ۔

انزعبدالتدبن عمر

الوزیدسفراخبادالدینتهالنبویر پس)این ابی الوزیرسے اس فی موبن دینار سے اس فی طلق سے اس فی فرعہ سے بیان کیا کہ ہیں عبداللہ بن عمر کے باس بنجا ا در اس سے بیان کیا کہ میں کوہ طورم با میات قال الجرزيد حد ثنا ابن إلى الوذير حد ثنا سفيان عن عموين ديبنا ر عن لملق عن قن عتر قال ا تيت ابن عموفقلت الى اديد الطور فشال النما تشد الرحال الى ثلاثة ساجد موں تواس سنے بواب دیا کہ صرف تین سحدیں ذسجدالحام ہمسجالمدینۃ ہمسجدالاتھئی، کی طر شدرمال کیا جائے ادر کہا اسے قرع تھوڑ طور برمت حائیے ۔

المسجدالحرام ومسجد المديسنة والمسجد الاقعلى فلاع عنك الطور فلاتاشه -

نوجید تائی: مسامہ تلتہ کی طرف سفرکرنا با عثِ نفیلت سیے۔ دیگر مسامہ کی طرف سفرکر نا جائز توجید درست نہیں۔ جبکہ اکثر متقدین طرف سفرکر نا جائز توجید درست نہیں۔ جبکہ اکثر متقدین علمار اس کے خلاف ہیں۔ متاخرین علمار کا خیال ہے کہ تین سعد وں کے بخیر منفام کی نذر مانے کے باوج دیمبی سفر کونا مزوری نہیں۔ مدیث کی عومیت کے پیش نظر انبیار اور ان کے آثار کی طرف سفر کورنا مزوری نہیں۔ عدیث کی عمومیت کے پیش نظر انبیار اور ان کے آثار کی طرف سفر کورنے کو مستحب قرار نہیں دیا جاسکتا۔

ابن عزم ظاہری کاقول

ابن حزم طاہری کا قول ہے کہ بین سحبروکی علادہ دیجرہ جبی طرف سفرکر ناحرام ہے البند آثار ابیاری طرف سفرکر نامشحب ہے ۔ حافظ ابن حزم ہج نکہ ظاہری ہیں منطوق کے آقائل ہیں ،مغیوم کے قائل نہیں ۔ واؤ ذکا مبری سے ہمی ایک روایت اسی طرح منعول ہے۔ پیندا مشلہ طاح ظریجیئے۔

قرار دسیتے ہیں الیکن حافظ ابن حزم انبیاکی قبروں کی طرف سمی نبیں · بلکہ ا نسبیاء کے آثار کی طرف می مورست براردیتی بین بادر کھیے فقط قبروں کی زیارت کے لیے سفرکو كسيحبي عالم دين في مستحب نهين كها ؛ البقه علما بركا اس مسله بين اختلا ف صرور ب كم كيا اس سفرکومباً ح کما مباستے گا یا شرعًا اس کوممنوع قرار دیا جائے گا ، لیکن اس اجماع اوداکما کے اخلاف کا قطعًا یرمطلب نہیں سیے مبیراکہ لبعض علماً نسنے کہا سپے کہ نبی اکرم صلی الٹریل پیلم کی تبرمبارک کی زیارت کے ملتے سفرکر نامستحب سہے اور مذہی مطلقاً برکہنا ودست ہے کہ بی اكرم مل التُدعليه وسلم كى قرر شرليف كى زيارت كے لئے سفركر نامستىب سے يعن على جب ج كعبر كا ذكر كرنے بي توكيتے بيں كه حاجى مسلك الله عليه وسلم كقر ک زیارت کرنامستحب سے . ظامرہے کدج پرآ لنے والا بھب آپ کی فبرمبارک کی زیارت کے ملتے استے گا، تواسے مفرکی معوبتوں کو برداشت کرنا ہوگا، مدینیۃ الرسول کہ کمرمرسے تقريبًا تين سوميل وورسب ، نيكن ان ا , لم علم كى كلام كالحمل بول معلوم بهوناسب كم مسجد نبوى كى زيادت كم ملت سفركرنامستحب سبع - ليم ديجعت بين كدنما زا واكرف واسلے ا ور ذامّرين مسعدنبوی کا قصد کرتے ہیں، کو ن تھی قبر شرایٹ کا قصد نہیں کر تا اور نہی کوئی سیڈعا تشہ کے جرة مبارکہ میں دانل موسف کے لئے سفراختیار کرتا ہے۔ بس زاترین کا سفر قبر شریف کے لئة نہیں ہے ، اسی لئے علماً كروہ مانتے اگركوئى شخص كہتا ہے كہ میں سنے قبرنبوى كى زيات کی میکن بعض علماراس کلام کو مکروه نهیں مانتے۔ نام معلماً کے دولوں فریق اس بات میخق ہیں ک*رجس طرح* عام قبروں کی زیارت کی مباتی *سپیدا*س *لمرح* قبربنوی کی زیارت نہ کی لئے صرف مسجد نبوی بیں واخل ہونا ہی قبربنوی کی زیادت سبے ا در چ شخص مسجد نبوی ا ورقبرنوی د و نوں کی زیارت کی نیت سے سفر کرتا ہے اواس میں علمار کا اختلا ف ہے۔ نلا سرے کہ جو شخف مرن مسجدنبوی میں نما ڈکے ارا دہ سے سفراختیار کر ٹاسیے تواس کا سفرنسٹا ہما مًا درست سیدا وراگر صرف قبربنوی کا قصد کرتاسید، تویپی مسّله ما برالنزاع سید- امام مالک

ا مم احدے تلاندہ سے اس شخص کے متعلق جو قبروں کی طرف سفراضتیا رکر تلہے نما ز تھر کے متعلق مبار مختلف مبار مختلف مبار مختلف مبار مختلف اللہ منافذ اقوال ذکر کئے گئے ہیں ۔ ایک قول مطلقاً قصر کرنا جائز ہیں ۔ دو مرا قول مطلقاً جسر کرنا جائز نہیں ۔ تھر نما ذکے جارسے ہیں تبیسرا قول حرف بنی صلی اللہ علیہ وسلم کی قبر کی طرف مسافر اختیا دکر سے والا میں نماز فقر کرسکتا ہے ، بچر تھا قول تمام انبیا ہر کی قبروں کی طرف سفرا ختیا دکر سے والا قصر کرسکتا ہے ۔

افری دونوں افرال سے معلوم ہور ہا ہے کہ پیغمبرا درخیر پیغمبر میں فرق کرنا چاہیے اور ہوشخص اس فرق کو ملحوظ نہیں رکھتا، دہ ان مسائل میں اصل حقیقت کو معلوم کرنے سے قاصر مہتاہے۔ یہ بات کس قدر واضح ہے کہ ہوشخص فرنہوی کی زیارت کے لئے سفر کا قصد افتیار کرتا ہے کہنا جاہیئے کہ دراصل وہ شخص محد نہوی کی زیارت کے لئے سفر کا قصد کرتا ہے۔ نصا اوراجما عام سالبقہ اوراق میں یہ بات ٹابت ہو میکی ہے کہ مسجد نہوی کی نیار اوراس میں نمازی ادائیگا کے لئے سفر کا قصد کیا مبائے۔ آپ۔ کا حصر کے الفاظ کے ساتھ تین سعبدوں کے ملاوہ شدرمال سے منع کرنا قربنوی کی طرف شدرمال کو متناول میں نہیں ہے اور مذہبعن لینا ممکن سے کہ صرف سعبر نبوی کی طرف شدر مال کا معنی لینا درست ہے۔ نثر عًا یہی مشروع ہے، لیکن جب درگر مقامات کی طرف شدر مال کا معنی لینا امکانی صدود سے فارج نہ تقاتو اس کو ممنوع قرار دسے دیا گیا۔ اب در کھنا یہ سبے کہ ذائر دولؤں کا فصد کرتا ہے، مبیسا کہ امام مالک نے اس شخص کے بارسے میں کہا جس نے قرنبوی کی زیارت کی نذر مان رکھی تھی۔

اگراس کا ارادہ مسجد نبوی کی زیارت کا سے تومسجد نبوی میں آئے اور نما زا داکرے اوراگر قبر نشر لیف کا ارادہ سے تو مذہبائے – مدیث میچے میں اس کی ممالغت سے کرم^{ون} میں میجدوں کی طرف مواریوں کو لیے آنا درستے۔

فقال ان كان اداد مسجد البنى صلى الله علي وسلم فليات وليصل في دان كان اداد القبر فلا يفعل للعديث الذى جاء لا تعمل المطي الاالى ثلاثة مساجد-

الا ای ملت مساجد معوم ہوتا ہے کہ ندر ماننے والا انسان عرف عام کے لیا ظرسے مجمعتا تھا کہ بی صالاً لا
علیہ وسلم کی قبر ٹریوٹ کی زیارت کا قصد مجر نبوی میں آنے والے کو بھی شامل ہے ۔ اگرج اس
کا را دہ قبر نبوی کی زیارت ہے ۔ نام ہے کہ جنحف قبر شریف پر ماضر ہوتا ہے ۔ وہ سجد
نبوی میں داخل مونے کے بعد ہی ما مزہوتا ہے ؛ جنا پنجہ متا خرین علما عرفاً مسجد نبوی کی
زیارت کو قبر نبوی کی زیارت کے بعد ہی ما مزہوتا ہے ؛ جنا پنجہ متا خرین علما عرفاً مسحد نبوی ک
الفاظ کے معانی اور ان کے مقصو دا مسطلا ما متغیر ہوتے رہتے ہیں ۔ اگرچ اصل مقانت کنی میں کوئی تبدیلی رونما نہیں ہوتے ۔ غور کیجئے شدر مال سے یعنی اخذکر نا غلط ہے کہ اگر قبر
میں کوئی تبدیلی رونما نہیں ہوتی ۔ غور کیجئے شدر مال سے یعنی اخذکر نا غلط ہے کہ اگر قبر
میں کوئی تبدیلی رونما نہیں ہوتی ۔ غور کیجئے شدر مال کرنے کی مزورت محسوس نہ ہوتو زیارت کرنا جائز ہوئے ۔ اگر یمعنی درست ہوتا، تو آپ نز دیک رہنے دالے انسانوں کے لئے زیارت قبر نبوی کومشر وع قرار د بیتے ۔

قبرنیوی کی طرح دیگرمزاروں، شہدار کی قبروں کے لئے شدرمال کی صورت میں جانا نا جائز بھی جا ما سے اور باشدر حال جائز بھی اجائے مشربیت اسلامیہ کی وہ کے منان ہے۔ مدینۃ الرسول کے باشندوں کو بھی قبر سرلیت کی زیادت کی اجازت تبین وی مجدد تقوق اور آلے والے لوگوں کو منع کیا گیا ہے۔ ہمام امت محمدیہ بنی صل الدُّ علیہ وسلم کے جملہ حقوق اور احترامات میں مساوی بہتے جس مقام میں کوئی مسلمان رہتا ہے تو وہ باں سے ہی اس کواپ پرمسلوٰۃ وسلام کا ہدیہ جی بنا چا جیتے۔ بعض لوگ اس سے برعم مسلم اس بات کے قاتی ہیں کہ دور دراز سے سفر کرسکے آلے والا النسان آپ کی قبر شراییت برکھ طرے ہو کر مسلوٰۃ و سلام کا بدیہ بنین کرسے ، لیکن مدینۃ الرسول کے باشندوں کے ساتے درست نہیں۔ بدیر بنین کرسے ، لیکن مدینۃ الرسول کے باشندوں کے ساتے درست نہیں۔

امام مالک کا قول

مدینة الرسول کے باست ندوں کے سلتے جائز نہیں کہ جب وہ مجر نہوی میں داخاتی قرشر لیٹ پرحاضری دیں۔ البقہ امرے اسنے والے لوگ تو مجد نہوی میں داخل یا خارج شدر مال کرتے ہیں سلف صالحین محالہ کرام تا بعین عظام معجد نبوی میں داخل یا خارج ہمونے وقت قرشر لیف پرحا صری نہیں دستے تھے ؛ لہذا اس کو برص کہا جائے گا۔ امام مالک کا قول شہور سبے من یصلح آخر هذا ہا الاست الابسا مسلح جا و لھا (امت محدیہ کے آخری ادوار ہیں جی ابتدائی ادوار کی اصلاحات کو بروستے کا رالا کراصلاح کی جاسکتی کے آخری ادوار ہیں جی ابتدائی ادوار کی اصلاحات کو بروستے کا رالا کراصلاح کی جاسکتی سبے) پس جو تفس صرت قبر شرایف کا قصد کر تا ہے ہم برد بوی کا قصد نہیں کرنا ، وہ مدیث میں آ یا ہے کہ معبد نبوی کا قصد شہری کرنا سب میں ایست کے اور ایک نماز کا تواب ایک برا رہے ہی جو احدیث میں آ یا ہے کہ معبد نبوی کا قصد سب برار نماز کے برا برہے ؛ چنانچر ترام ایل علم کا اس پرا تشا ت سب ادر ایک نماز کا تواب ایک میز موی کرتمام مسا مید پر فضیلت اور فرقیت ما صل ہے ہے ہو ۔ نیز معبد الحوام کے بعد مسجد نبوی کو تمام مسا مید پر فضیلت اور فرقیت ما صل ہے کہ دو دسول النہ صلی المد علیہ وسلم اور آپ کے برا برے کہ دو دسول النہ صلی المد علیہ وسلم اور آپ کے برا برے کہ دو دسول النہ صلی المد علیہ وسلم اور آپ کے برا برے کہ دو دسول النہ صلی المد علیہ وسلم اور آپ کے برا برے کہ دو دسول النہ صلی المد علیہ وسلم اور آپ کے برا برا ہوں کو یونش بات مرف اس میں عدر دول النہ صلی المد علیہ وسلم اور آپ کے دول النہ صلی المد علیہ والمد کی کے دول النہ صلی المد علیہ وسلم اور آپ کے دول النہ صلی المد علیہ وسلم المد کی کو یونش بات مرف اس میں میں کو یونش کی کو دول المد کی کو دول المد کی کو دول المد کی کو دول کی کو دول کے دول کو دول کے دول کا کھر کو دول کی کو دول کی کو دول کی کو دول کو دول کی کو دول کی کو دول کی کو دول کو دول کو دول کو دول کو دول کو دول کی کو دول کو دول کی کو دول کو دول کو دول کی کو دول کو دول کو دول کو دول کو دول کو دول کے دول کے دول کو دول

صی برکے باعقوں تعمیر ہوئی۔ آپ اور آپ کے صحاب اس میں نمازیں اواکرتے رہے ،جبکہ آپ ایمی کک ستیده هائشه کے تجروبیں دفن نہیں موتے تھے اسی طرح آپ کی وفات کے بعد عمی سعد کو و ہی فضیلت ماصل رہی، لیکن سیمجمنا کہ آپ کی قرر تربیت کی جا ورت کی وجهسيم سيدنبوي كويفيدلت ماصل سيء فلطسيده مبيساكه سيرالحوام كوكسي قبركي مجا درت ک دم سے فعیدلت نہیں ا ور نہی سحبرا لاقعلی کوکسی قبرکی ومبسے فعیدلت سیے پس مختفی ہے سمجتا ہے ک*مسح*دنبوی کی فنیلت آپ کی فہرٹڑلین کی ومہسے ہے باآپ کی فہرٹرلین کی ومسهد مر نبوی کی طرف شدر مال کرنا با سیتے، نواس انسان کو اثمن سے وقوت اہل ملم كراجهاع كافخالف معجاجائيكا بكريفض سيرالمسلين كى سنت كااستخفاف كررام م رسول الشمل ولنُدك إرشا دات كى مخالفت كرّما سهوا شان رسول ميں گستا خى كامرتكب ہور ہاہیے۔ نشرلیت محدیہ اور اقوالِ رسول کی تکذیب کرر ہاہیے۔ اگریم ز ہا ن سے بنظا ہر دیویٰ کرتا ہے کہ میں حضرت کی تعظیم کررہا مہوں جبیسا کہ عیسا نی *حضر* عیسیٰ علیہ السلام کی تعلیمات کی ٹیحذیب کرتے ہیں ،اگرچہ زبان کے ساتھ اس کی تعظیم کے مدی ہیں ، یا در کھتے رسولوں تعظیم کا مطلب یہ سے کدان کی باتوں کوسیا مانا ما سے اور ال كي كمول كى الماعت كى جائے وال كى رفا قت مجتل موالات كو اختياركياما سے وال سی باتوں کی تکذیب کرناان سے ساتھ مٹرکیے عظیرانا ان کی تعرفیف میں غلوکرناانہیں مطعون قرار دیناان کے ساتھ و تمنی رکھنا کفر سے مقصود یہ ہے کہ چنخص مدینة الرسول کے سفر کا قصدر کھتا ہے،اس کے لئے صروری سے کہ وہ سجد نبوی کی زیارت اوراس میں نمازاوا کرنے کے ارادہ سے مغرافتیار کرے ، لیکن اگر قبر تزلیف کی زیادت کا قصد کرتا ہے مسجد نبوی کوفبر کے تابع سمجھتا میسے مبیسا کہ صلحاکی زیارت کے مقدرسے لوگ ان کا قب*ھد کورتے* بیں اور قبروں کے قریب مسجدوں میں نما زیں ادا کرتے ہیں او وہ اجماع امّت کی خالفت کرتے ہیں۔ سیدالمرسلین کی تفریعت کے باغی ہیں ۔ امتتِ محد بیر کے درخشندہ اصولوں سے

بین کرکسی بدعست کاارتاب کرے -البقاس کے اعمال کامقام مسجر بوی سیے ہجر شخص مسجد بہوی میں الباقات کامرتکب ہوگا، وہ قابل تعربیت سیے اور تواب کاستحق سے اور چشخص بدعات کامرتکب ہوگا وہ قابل مذمت سیے اور عذاب کامستحق سے صحیحین میں سیے وہی کریم صل الله علیہ وہم لئے فرمایا ؛

انحراف کررہے ہیں اور مذکسی مسلمان کویہ بات زیب دیتی ہے کہ دہ قبر ترلیف کے پاس

مدیته تعیرسے توریک مرم پاک قرار یا گیاسپے پس مختف حرم پاک میں کسی مدوت کورائج کرے گا یاکسی مدحتی کو مطمانا دے گا قدوہ النّدفرشتوں تمام لوگوں کی لعنت کا حقدار ہوگا، اس کی فرض نفل مبادت جبانیں

المدينة مل ما بين المدينة مل ما بين عبوالى تور من احدث فيها عدثا والد من احدث الله المدينة الله والماس اجمعين لايقبل الله متعرفا ولاعد لاً-

بنی اکرم صلی الترعلیہ وقم کی قرنز کیف کو وسری قبران امتیازی تیت صلی الشراک نے رسول الشرعل الشرعید وسلم اور دیگرانسانوں کی قبروں میں واضح طور پر فرق کو نابت کیا ہے، جبر محمار کرام نے آپ کو سیّدہ عالم شدے مجرہ میں دفن فایا آپ کی قبر کا انتظام عام کھی جگر میں نہ کیا گیا جیسا کہ عام دستور تھا تا کہ کبیں آپ کی قبر کو کمبری نہ کا انتظام عام کھی جگر میں نہ کیا گیا جلا لوگوں کو آپ کی قبر کی زیارت کے لئے لوگوں کو رہاں کہ مرام کرنے میں دوک دیا گیا بہنا نیخہ آپ کی قبر کی زیارت کے لئے لوگوں کو مجرہ مبارکہ میں واضل موسف سے بازر کھا گیا ۔ یہاں نک کم مجرہ مبارکہ کے درواز سے کو بند کر دیا گیا اور داوی ارکہ طری کردی گئی تاکہ عام قبروں کو بند کر دیا گئی تاکہ عام قبروں کی زیارت نہ کر سے۔ کی زیارت نہ کر میں مرام میں تربار رہا رہاں کی قبر شراح کی کی زیارت نہ کر سے۔ صحابہ کرام میں تربارت قبر بنوی کا لفظ میں متعمل نہ تھا

كسى بمبى مى نى سے منقول نہيں كمداس نے زيارت قبررسول صلى التعليد والم كو سخب كب بويا ينيرمستحب بلكه اس لفظ كااستعمال ميم فقود نظرة أسبعا ورندي زيارت قبرشركيت پرکسی مکم شرعی کوٹا بت کیا ہے ،اسی لئے علمار اس لفظ کے استعمال کو کمروہ گردانتے ہیں، بلکہ یہ ایک ایسا لفظ سہے جس کی حقیقت موجود نہیں۔ ایک ایسا اسم سہے جس کامسمی موج دنہیں ۔ البیّہ مثا خرین علما نے اس لفظ کو کسنعمال صرور کیاہیے ، لیکن انہوں سے مجي اس كامعروب معنى زيارت القبورنه بيليا بيناني جشخعس ذيادت سمے لينے مباستے گالسے مسجد میں ہی مبانا ہوگا ، لیکن اگراس بات کوتسبیم کرلیا حاسئے کہ زا مرّا نسان راستے میں گر کی جانب کھڑا ہوکریٹرفِ زیارت سے مشرف ہومائے توہم اس کومسنون فرارہیں دیں گئے جب مِرْتم کے زامر کے لئے مسجد میں ا ناصروری سے پنوا مسجد میں قبر شرایف کا دیج سوتا یا نہ ہوتا، توبیرکیوں نہ مرف مسمبر کی نیت سے آیا جائے اورسجد نبوی میں مسجد کی حيثيت سعة تمام مبادات مشروع بي خواه قبرشريين كا وجود مويا نه مواورخوا وعبادلت كالبحقدرسول الشمسلى التدعلب وسلم سمص سائق متعلق مو دمبيهاكم آب يرمسواة وسلام كالجيجا ہے۔آپ کی تعربیت کرناہے۔ آپ کے لئے وسید کاسوال کرنا ہے ، دیگرآپ کے جلم ا مترامات تعظیمات توتیرومجیت کا بربرپیش کرنا ہے ، یا عبادات کا وہ معترض کاتعلّ رسول المدملي الترمليه وسلم كے سائتھ نہيں د مبيها كەنمازا داكرنا اعتكاف بليھنا) أكرم نم زمیں بھی دسول النُّدصلی النُّدعلیہ وسلم کی رسالت کی شہا دت کا اقرارآ پ پیمِسلوٰۃ وسلام کا ذکر<u>ے</u>۔

جلہ عبادات اورحقوق نبوی کی مشروعیت تمام مساجد میں موجودہے اگرم ہے وہاں آپ کی قبر شرلیف نہیں سے ، بلکہ بعض مستنتیٰ مقامات کے علاوہ تمام مقاماً سے آپ پریدیوملوٰۃ وسلام جمیجا مباسکہ سے اور بھیجنا میاسیتے ۔

زبارت قبرنوی کالفظ دراصل معبر نبوی کی زیارت کے لئے مشروع سے

قبرنبوی کے لئے شرخاکے خصوصیت نہیں اور نہی اس کی زیارت کی شروعیّت ثابت ہے۔ لدا کھے لوگ قبر نبوی کے جوادیں جن بدعات کا ارتکاب کرتے ہیں، نشرعًا اس کا کوئی نبوت نهي بس علوم بواكه شريعت محديدك اصطلاح بين كودي عمل ايسانبين جس كوزيارت قبر بوی کے ساتھ موسوم کیا ماسکے اور یہ ایسامہل اسم سے جس کاکوئی مسمی موجود نہیں اور بولو*گ اس لفظ کا استع*مال کرنے ہیں ، اگراس لفظ سے کوتی شرعی اصطلاح مراد <u>لیتے</u> ہیں، توسمجھ لیجئے کرنٹر مُّااس لفظ کا کوئی معنی نہیں، اسی لئے تو علمی ّاس انسان کے کہنے کو کرڈ گرداسنے بیں بو قبر تربیف پرسلام کھنے کوریارے قبر نبوی سے تعبیر کرتاہیے اور اگراس کا کمل کوئی نٹری معنی نہیں ، تو اس کا غلط مہونا وامنے ہے ، بلکہ حقیقت توبیہ ہے کہ اگر کوئی شخف منجوی میں اکر قبر نبوی کے سامنے سحدہ کر تا ہے اور آپ کو خداسمجت ہے۔ قبر کے اردگر دوان کرتاہے، قبر کالس کرتاہے، بوسہ لیتاہے، اگرمہ میسب کچھ قبرٹر لیف کے پاس **کرنامح**را^ت سے ہے ،لیکن ان سب کو زیارتِ قبرنہوی نہیں کہاماسکی ۔ جب اس نعظ کی تعیقت ترميه بركجه نبين نوان كامول كوزيارت كانام كيسيره يام سكتاسير، بلكه إس لفلكوالممال کرسنے وا سے انسان کوکہا مباستے گا۔ یا یسے نام بیں بن کوتم نے اور تہا سے انهى الااسهاء سميتموعاانتم آباؤامدادن وصنع كرركعاس الثرباك واباؤكم ماانزل الله بعامن سلطان ان سے بارسے میں کوئی دلیل فازل نہیں فرمائی۔ (البجم ۲۳)۔

بنی ملی الدعلیہ ولم کی ظمت کے بیش نظر سرمقام سے آپ پر مدیۂ صلاۃ وسکلام بھیجا حاستے

عام لوگول کی قبرول کوره اسمیت ماسل نہیں جواہیتت قبر نبو ی کوما صل ہے.

اورنه بی عام قبروں کے معتوق اس قدر زیادہ بیں کرمیاں کہیں یم کوئی انسان رہتاہے، ده و بيسه عام قبول پر سلام بحيج سكت بديس فيصوميت تومرت قربوى كوبى مامل بے كركريس سے لوگ آپ يملوة وسلام بھيجة بين اوران كاصلوة وسلام آپكو بمنجا دیاجا تا سبے ۔ آپ برصلوة وسلام كبف كے كئے سبّدہ مائشركے حجره كے نزديك آنا مرودی نہیں ؛البیّہ عام فوٹ نترہ مسلمانوں کے لئے دعا ما ننگنے کے لئے ان کی قبروں پر میبنی انٹر ماستعب سے بلکرجس میت کے نماز جنازہ میں آب ٹٹر کے نہیں ہوستے۔اکٹر علماً کے نزدیک اس کی قبر رہناز جنازہ اداکرنا مائز ہے جیساکہ امادیث محیر میں اس کاذکر ہے: البتر اس میں علی کا خلاف ہے کہ تک قبر یا زجنازہ پڑھی جاسکتی ہے۔ امام شانعی، امام احمد کا ایک تول رہے کہ میشہ مہیشہ کے لئے قرریماز جنازہ پڑھی ماسکتی ہے۔ ال اس پرتمام علمار کاا تعا ق*ہے ک*وقبرنبوی پرنماز جناز ہنیں پڑھی ماکتی جبحة پ کے مدفون ہونے کے بعد آب کی مظمت ادر شان کی بلندی اس میں ہے کہ نه صرف آب پرصلوة وسلام كابر بقر شريف كے پاس ما منر بوكر بھيما ماست ابلك جهال کہیں بھی کوئی النسان رہنا سبے ، د ہیں سے عظمت نبوی کو ملحوظ خا طرر کھٹا ہواکٹرت کے سائحة آپ پر مربیصلواة وسلام بھیجتا رہے الیکن آکیے علاد عام انسانوں کی قبروں کو میرتفام ومرتبه ماصل نہیں۔

وسربہ میں ہیں۔ مزید برآن آپ کی قبر شریف برما منر ہونے میں برابر یخطرہ منڈلار ہا ہے کہ کہیں آپ کی قبرشر لیف معین خادا در میلہ کی حیثیت نداختیار کر جائے اور یہ بات منروری ہے کہ مردومن آدمی کے ول میں آپ کی تعظیم آپ کی مجتب جملہ احترابات آپ پرصلوٰۃ وسلام کا مدیج بیجنا و مغیرہ صرف قبر نبوی کے ساتھ مخصوص مذہو، بلکہ جہاں کہیں کوئی مومن آباد ہے، وہ و بیں سے آپ کی عظمت اور محبّت کے پیش نظر آپ پرسلام بینچا آ سے اور جو شخص ان احترابات کے ساتھ صرف قبر نبوی محاص کرنا ہے بھیڈ ادوسرے مقامات میں

اس کے احترابات میں کمی آئے گی بیس اس کا پتیجدیہ تھے گا کہ وہ یعول الٹر کی شان ہیں كوتا بى كرر باسبى ا درس تېيزست منع كيا گياتها، اس كامر تنحب مور با بيد، يعني آپ كي قبر مشرلین کومیلہ کی حیثیت وسے رہا ہیے ، لاز گااس کا نتیج دیں نیکلے گاکہ لوگ وریگرمقا، تیں آب كا احترام مي كوتا بي كري كي بيس محد ملى الشرطيد وسلم كعلاوه وسكرا بل ايمان کی تبروں کی زیارت کے وقت جس لمررہ کے افعال کرنے کا حکم د پاگیا ہیے۔ آپ کی قبر شریف کوان افعال سے آپ کی علو فدرضو صیات امتیازات کے پیش لظامتنتیٰ کیا گ بیے، میساکہ عام سلمانوں کی طرح آب کو کھلے میدان چن رنبیں کیاگیا بلکہ سیدہ عالتشہ کے تجرہ میں دفن کیا گیا ۔ پُس اب یہ بات کھ ل کر سامنے آگئی ہے کہ میں منے لینے رسالہ میں صرف اس بات کا بواب دیا تھا کہ کیاا نبیا بھلیہم السلام الصلاق والسلام کی قبرو۔ رئیس سرف اس بات کا بواب کی زیادت کے لیئے سفرکرنا حوام ہے یامباہ۔ بیہوا ب صرف امام مالک کے قول مے مطابق جبجہ مسیبجد نبوی ... کی زیارت کے ارادہ سے سفرکیا ماستے ۔ آپ کی قبرتر ريف كويميمتنا ول موسكتام وكريه زيارت قبر نبوى النساني مقدور مين نبين اس لفة ك زيارت قبر نبوى كى نه تومشروعيت سبع اور فد بهى نشرعًا اس كامحم دياكيا سبع بلكه اس لفظ كاننبوت بى محابركرام كے دُور ميں مذمخها۔

مسجد نبوی سے فضائل

قبرنبوی کی زیارت کی مشروعیت کی اصطلاح متربیت محدید میں نہیں ہے کتنی اصح بات سے کداگرچ کوئی شخص قبرنبوی کی زیارت کے لئے سفر کرتا سے تواسے محد نبوی میں بی جانا ہوتا ہے اور وہیں نمازا وا کرنا پراتی ہے ، جبحہ قبرنبوی استحصوں سے اوجعل سے اور اس کے اردگر دویوا رہی ہیں تو اس کی زیارت کا کمیام طلب البقہ کچھ لوگ اس تعدم مال ہیں کہ وہ ویجھتے ہیں کہ آپ کی قبر شراحیت کی زیادت اگر جہز نہیں ہور بی ہے ، لیکن

4/

مسجدنبوی مرف قبرنبوی کے احترام کے لئے تعمیر گئی ہے ، جیسا کہ قبرول پر قبرول کے احترام کے لئے مسجدیں تعمیر کرلی ماتی ہیں۔ بس مسجد میں آنے والے زائرین اگر میر بطام مرحد میں تعینہ السحداد اکرتے ہیں، لیکن ان کامقصد آپ کی قبر شرایف کی تعظیم موتا ہے۔ ا ورکچدایسے لوگ بھی موستے ہیں ، جن کومسجد نبو کی اترام معلوم ہی نہیں اور وہ اتنا بھی نہیں ماننے کەمرف مجدنبوی کے ارادہ سے سفرکرنا ماہیتے ، قبربُوی کی دمہسے سفرزاختیا کیا مائے، اور کچه لوگ ایسے عبی موستے ہیں ہونہیں مانے کرسمدنبوی میں ایک نمازادا كمناأيك مزارنما زمك برابرسيه اورمسحدا لحرام اورمسحبدا لاقفلى كى طرح اس كے ملتے مفر اختیار کرنامشروع ہے۔ اکٹرلوگ کیمجھتے ہیں کہ صرف قبر نبوی کے لئے سفرکر نامستحب ج مىحد نبوى كےسلنے معفرکرنا منستحب ہے اور نہ ہى اس كى ترفیب دلا تى گئى ہے۔ بہلوگ مسحدالحوام كے بعدتمام مسامد پرسمد نبوی کو فوقیتن ماصل ہے۔ أكرميرات كى فبرزيجى موجود موتىء مبيساكه رسول التُرصل التُرعليه وسلم كى زندگى ميرم يحدِنوى كونغيبلت ماصل بھى، بلكہ دسول الدُّصل الدُّعليہ وسلَّم كى زندگى ئيں محابرُوام كى جُمات جوکہ اس *محبر* میں نمازیں ا داکرتے تھے ، وہ لوگ سب سے افضل تھے۔ نیز ُفتح مک_ہسے بیلے رسول التُرصلی التُرعلیہ وسلم کی زندگی میں تم مسلما بوں پر مدینة الرسول کی طرف بجرت كمنا منرورى تفاجس كو دار الهجرت وار السنتة ، دارا لنصرة كے القاب سے تهى بكاراما تا تعاد نيزرسول التُرصلي التُرعلية وسلم كي زندگي بين مدينة الرسول بين سجينوي کے علا و کسی دوسری سحد میں جمعت المبارک کی نمازا وانہیں کی ماتی تھی تمام مسلما ن جمعت المبارک ا واکرلے کے لئے مسحد نبوی میں حا حربوتے سے ۔ بیرمسی نبوی وہ بہل مسحد ہے حس کوتقوی اور برمیز گاری کی بنیاد دل براستوار کیاگیا بیمی وه بهلی مسجد ہے جس میں سب سے بیلے اذان کا انتقاح کیاگیا ورحس میں باجماعت نماز ادا کرنے کا انتقاح ہوا پس برشخف سعدنبوی کی فنیلت سے واقعت سے تواس کے ایمان کا تھا ما یہ سمے کہ

وہ سیدنبوی سے سفر کا قصد کرسے الیکن سی موقق انسان سے باور نہیں کیا جاسکا ، ہو اسلای احکام سے واقفیت رکھنا ہے کہ دہ قبرنبوی کی زیارت کے لیے سفر اختیار کرے اوراگراس کے با وج واسی ارادہ سے سفر کرتا ہے ، توہم اس کے علاوہ اور کیا کہ سکتے ہیں کہ دہ اسلا می تعلیما*ت سے ج*اہل اور مسجد نبوی کی فیسلت سے نا واقع*ن سے ،* لیکن اگر سجد نوی کے جمارفعنا مل کوما تاسیے اس کے با دہر دصرف قرنبوی کے لئے سفرًا فتیار کرتا ہے جیساکھ ملی امروں کی تعظیم کے لئے ان کے معتقدین وورورازسے قصدًاسفر کرے وہاں پیضنے ہیں اور سجد نبوی کا اُس کے دل میں کوئی احترام نہیں۔ اس کی نصیلتوں کا قائل مجى نہيں · بہ جانتے بهوستے که رسول الٹرمسل الٹرعلبہ وسلمے نے مسخدنبوی سمے سلتے سفر*مے*نے کی ترفیب دلائی ہے، بھر بھی وہ سجد نبوی کی تنظیم سے ملتے سفرنہیں کرتا، قام^{انسا}ن کو کا ر بالرسول كالقب ديا جائے گاا ور اس كاشماران مشركين سے ہوگا جو صلحار كى قبروں كے لئے سفرکومسا مدکی طرف سفرکرنے سے بہترقرار دیتے ہیں، ملکہ جج کعیم بھی القبورکوزیادہ ففیلت عطا کرتے ہیں بخلوق سے دُ عاکرانے ہو افعنل قرار دسیتے ہیں مساجد می^ن مُا مانگھنے سے فبروں کے باس دعاما نگنے کوافصل مباہتے ہیں اوربعیض نتہا پیند نماز و ں میں ستقبا قبور کواستقبال کعبه برترجیح دسیتے ہیں اور مربی دھٹا تی سے اس بات کے کہنے میں شرم محسوس نہیں کرتے کہ عام لوگوں کا قبلہ توکعبہ ہے اور سمارا قبلہ بزرگوں کی قبریں ہیں۔ پس بدلوگ رسول التُرصل التر عليدوسلم كے ساتھ كفركر رہے ہيں اور آپ كى تعليمات سے الخراف كررسيم ميں اوررب العالمين كے ساتھ بشرك كررسيے بي، إن كامول كے تمب وہی لوگ ہوتے ہیں جوسنت رسول التُرمىلي التُرعليہ وسلّم سے نا واقعت مہوں یا جولوگ ننا بعت رسول النُّدى وساطت كے بغيرو بيرٌ غلط راستوں سے النَّر پاك كا قرب مالل كمرسف كے سلنے مرگرم عمل مہوں ؛ حا لا بحۃ رسول الٹرصلی الٹوعلیہ بیتم سنے جن واصح م^{اید} کو پیش برمایا اور جن سی حقیقتول سے پروہ کشاتی کی ہے۔ اس کی مخالفت کسی کلمہ گو کو

زیب نہیں دیتی الیکن برکس قدر مالنسیسب لوگ ہیں کہ رسول الترصلی التُرملیہ وسلم کہ جشت كوعام بوگوں كے ليتے قرار وسے رہے ہيں اوراپنے شيوخ كے لينے رسول الشرسلى الله علیہ دسلم کی متا لعت کی صرورت محسوس نہیں کرتے، بلکہ اپنے تیا رکردہ را موں کو رسول التُدْمِيلِ الرَّعِليهِ وسلم كے راستة ب سے بہتراور افضل مجھتے ہیں۔ بس ان لوگوں كواڭركفار کے زمرہ میں مذوا مل کیا مائے قوا ورکون سا جمیع نزبن تام ہے حبس کے ساتھان کو موسوم کیامائے ۔اگراس قماش کے لوگ بنظام فتر نبوی کی تعظیم میں غلوکوتے ہیں مبیلاً لين شيوخ ك فبرور كعظيم بيركورى وقيقه فروگذاشت نهير تحميق، ان مين مجدلوگ البيسيجي بين جو أسيح مشيوخ كى قبرول كورسول التُرصل التُدعليه وسلم كى قبرشركيف سے بھي زيادہ قابل تعظیم استے بیں اور کچد لوگ ایسے ہیں جو رسول الند صلی الند ملیہ وسلم کی قبر شرایف کی زیاد^ہ تعظیم کرتے ہیں ،لیکن اسپے شیو خ کی قبروں کی تعظیم اس بنیاد پر کررسیے ہیں ناکہ وہ اسیں النُّد كے مقرّب بنائيں ۔ رسول النُّد صلى النُّدعليه وسلم كى فلمت ان لوگوں كے دلون بيأس میتنت سے نہیں ہے کہ تمام محلوق پر آپ کی اتباع ا پ کے جملہ اوامر کی اطاعت نیزآپ کے بناتے ہوئے راستہ کو اختیار کر نااور آپ کے جملہ فرمود ات معمولات ک اتباع مردی ہے۔ ہل فلص مومن میں ان اوصاف کے ساتھ متصف ہوسکتے ہیں حبیباکہ وہ سجد نہوی کے لتے ہی سفرانتیار کرتے ہیں۔ ہاں اگر عدم علم کی وصب سے کہمی وہ فلطی میں مبتلام می ہوائیں توجب انہیں اصل حقیقت کی معرفت حاصل موجات ہے، تو فورًا ان کی ایمانی توت ان لوگوں کورسو ل الٹرصلی الٹرطلیہ وسلم کی متابعت کی طرف کھپنے لاتی سہے ۔

قاصى اخنائي كى الزام تراشى

اس مسئلہ کوجا تناہیے کہ تسرف مسجد نبوی کی طرف قصدًا سفرکر نا چاہیئے ، لیکن اس کی مخا کرتا ہوا مسجد نبوی کو قبر نبوی کے ابع بنا تاہیے، تووہ برایت سے واضح ہوجا سنے کے الحجُر النيك رسول كح حكم كى في لفت كرباب اورايان والون كي ياستر ك خلاف استرك اتباع كرتاسيخ والتعابك اس كواسى راسة كى طرف برشيط حساسته كار وجه منوي يوباسيا وإس كانتهم دا مل کرے گا اورجہتم رسینے کے کھا ظرسے بڑامتام سیے ،لیکن قامنی اخناتی کامپریشے تق وصند ورا پیناکه میں ابنیام کی قبروں کو زیارت یا عام قبروں کی زیارت کا قائل ہیں خلطہ میرانظر به تومهسه که عام ایمان دارول کی قبرول کی زیارت مستحب سے ، جرمانیک میں صلحار اورانبیار کی قبروں کی زیارت کوستحب بہمجبوں بلکہ پیخفس مجبی قرآن وسنّت سے لسًا ذر كمتا ب اورا بل علم كى كتابول كاصطالع كرتاب، وه مردون كے لئے قبروں كى زبار كومتحب يا جائز ضروسمعمتا سب ؛ البتة مور تول كي زيارت كي بارس مين فتلاف سبع-يمسلًد بالكل واضح سے جيون برى سبكابوں بن موجود سے دراتم الحردت نے اس مسلّه کوکت مدیث کے دفاتریں أن گنت دنعه برها و برمسلّه تواد فی درص کے طالب عمول مصے بھی مخفی نہیں۔ بار امیرے تلا فدہ سنے مجد مران صدیثوں کو تکرارسے براما ،جن میں بيمستلەر جودىمقالىي ميں اپنے رسالەمىن كىيسے تحرىر كرسكنا تقاكە عام قبروں كى زيارت ایک الی افرانی سے جس برتمام مسلما اول کا اجماع ہے۔ اگر قامنی اخنانی معمول عقل کاملاک ہوناا دریہ بریم سکد حدیث کے معولی البطم کی طرف سے اس مک بینج تا تو بھی قاسی صاحب کے لف صروری منفاکدوه اس نقل کو مانتا ا وُربر ملاکتباکه مسلمانوں میں کوئی بھی شخص جو بالکل بى معمولى على ركھتا بىد، يەنىڭرىيىنىيىپىش كرسكتاكدا نېيائىكى قېرو سىكىز يارىك كىمىمىيت يرا بلع كما اجماع ب يقينًا إلى اسلام مين كوئى بريخت ايسانهي بوسكتا بوانبيام كي قبرد_{ان ک}ی زیارت کی حرمت کا قاتل مو توجب ایک مام ادنی درم کے سلمان سے یہ توقع نہیں رکھی جاسسیتی. تورا قم الحروف پکس دیدہ دلیری کے ساتھ یہ الزام لنگادیاگیا ہے

اور بیبوده ببنان طرازی سے برنام کرنے کی فاپاک کوشمش کی گئی ہے۔
قاضی اختا تی سے کس شخص سے کہا تھا کہ میرایہ نظریہ ہے اس کا ذکر کرنا صروری ہے
اوراگر کوئی فاقل نہیں، بلکہ میری کتا ہوں سے اس نے اس نظریہ کولوگوں کے سامنے بیش کی
سے تواس کو تورکرنا چاہیے کہ میں سنے اپنی کتا ہوں میں کیا لکھا ہے، مرف ایک جملہ میں جوفرق
واضح ہے اس سے آپنچھوں کو بند کر لینا اورالزام تراشی سے کام لینا بہت بڑی بردیا نتی ہے۔
باور کھیے انبیار کی قبروں کی زیارت کے لئے سفر کرنا الگ کے سستہ ہے اور مطلق انبیار کی قبرس
کی زیارت ایک دومرام سکہ ہے۔

البتہ بن اکرم ملی النوطلیہ وسلم کی قبر کی زیارت کے لئے سفر کرنا درا مس مجد نہوی کی زیارت کے لئے سفر کرنا درا مس مجد نہوی کی زیارت کے لئے سفر کرنامتحب ہے۔ اس مسلّہ میں اختلاف نہیں ۔ مہ شخس جواس بات کا علم رکھتا ہے کہ مجد نہوی کو یہ اعزاز مال سنے کہ نبی اکرم ملی النّہ علیہ وسلّم اور آپ کے صحابہ کرام نمازی ریاصفہ سہ اور مسی الحرام کے بعد تمام مساجد رم سجد نبوی کو فغیلت ہے۔ نیز اس میں ایک نماز کا آواب مزار نمازی کے بعد تمام مساجد رم سجد بنی وہ مسجد بنی ایک مساخہ شدر مال کا ذکر برابر سبے۔ نیزیہ وہ مسجد ہے جس کے بار سے میں خصوصتیت کے ساخھ شدر مال کا ذکر سے، آوی بھیناً رسول النّہ مسل النّه علیہ دسم بھیا ہمان رکھنے والامسی نہوی کی زیارت کے لئے سفر اختیار کر سے گا۔

کیکن اگر مجھ لوگ یہ دعوئی کمرین کہ ہمارسے دلوں میں چونکدرسول التّدمس الدّعلق الدّع الدّعلق الدّع الدّعلق الدّع الدّعلق الدّع الدّائق الدّائق الدّع الدّائق الدّائة الدّائق الدّائة الدّائق الدّائق الدّائة الدّائة الدّائة الدّائق الدّائة الدّائق الدّائة الدّائق الدّائة ال

بیت المقدس کی طرف سعزاختیار کرنا حصرت سلیمان علیہ انسلام کی قبر کی زیارت کے التے سفر کرنے سے افضل سیے ہو کہ بیت المقدس کی تعمیر کرنے والے ہے ۔ اس طرح می تروی کی زیارت کے التے کی زیارت کے لئے سفرا فتیا رکرنا اسی برنبوی کے صدود بیں آپ کی عبادات کو اسوہ بنا یا اور جن کا موں کا معجد میں کرنا با عث تواب سیے ، ان کا اواکرنا اسی انسان سے موسک سیے جس کے دل میں ایمان بالتد ایمان بالرسو آل کا جذبہ صاد قدم وجود سیے اور اسے نبی مسل التد ایمان بالتد ایمان بالرسو آل کا جذبہ صاد قدم وجود سیے اور اسے نبی مسل التد علیہ وسلم کی مجتب سے برق وافر حملاً گیا ہے ۔

قرض کیجے آگرکوئی تحف کے کے سے مسجدالحرام کا قصدنہیں کرتا ؛ البقہ معزت بہم ملیدالعدالیۃ والسلام کی قبر شرلیف کا قصد کرتا ہے اور ان دو اوں کو مساوی محجتا ہے اور آن دو اوں کو مساوی محجتا ہے اور قبر شرلیف کی طرف سفر کونے کو افعن ل گردا نہا ہے ، تو وہ کا فرہے مال بڑا لقیاس ہو شخص ببت المقدس کا قصد نہیں کرتا ، صفرت سلیمان علیہ السلام کی قبر کا قصد کرتا ہے او تان دو اوں کو مساوی محجتا ہے ، بلکہ قبر شریف کی طرف مفرکر سے کو افعن کی محجہ نہوی کے ما بل ہے یا کا فرہے ۔ قبر شریف کی زیارت نشری قبر شراعی مسیم نہوی کے سائے سفر شرعی میں نایاں فرق ہے جس کو مہیشہ ملی ظرنا طررکھنا جا ہیئے ۔

اعب متداحق ، قرَبُوی ک زیارت کے سفے سفرکرنے والیے انسان کوکیکے قرار ویا ماسکتاسیے ،جبہتراس کے دل میں نبی اکرم ملی الٹرملیہ وسلم کی عظرت ا درمجہت کلہیں موجزن ہیں ۔

جواب، اکثر مسلمان رسول الترصل التعلیه وسلم کی تعظیم میں غلوکرتے ہیں۔ آپ کوتمام مخلوق سے افعن کی مسلمان رسول الترصل التعلیه وسلم کی تعظیم میں غلوکرتے ہیں کہ آپ کوتمام مخلوق سے افعن ہیں کہ ماستے ہیں کہ مہلا کی اتباع کرنا ہم پروا جب بہیں کہ ہم ویں کے ایک ایسے راستے پر جل رہے ہیں کہ ہم طاب رسول سے سنتین ہیں، نیز ہما را را وعمل نی اکرم میل التعلیہ وسلم کے را وعمل سے ہمی نفسل مصر میں التر علیہ وسلم ایک معنقد ہیں کہ نی اکرم میں التر علیہ وسلم ایک بیت میں التر علیہ وسلم ایک بیت معنقد ہیں کہ نی اکرم میں التر علیہ وسلم ایک بیت معنقد ہیں کہ نی اکرم میں التر علیہ وسلم ایک بیت میں میں التر علیہ وسلم ایک بیت کے معنقد ہیں کہ نی اکرم میں التر علیہ وسلم ایک بیت میں میں التر علیہ وسلم ایک بیت کے معنقد ہیں کہ نی اکرم میں التر علیہ وسلم ایک بیت کے معنقد ہیں کہ نی اکرم میں التر علیہ وسلم ایک بیت کے معنقد ہیں کہ نی اگرم میں التر علیہ وسلم ایک بیت کے معنقد ہیں کہ نی اگرم میں التر علیہ وسلم ایک بیت کی میں التر علیہ وسلم ایک بیت کی ایک کی ایک کی ایک کی ایک کی ایک کی دیں کی ایک کی کی ایک کی کر ایک کی کی ایک کی کر ایک کی کر ایک کی کی کر ایک کر ای

کی طرف معوف کئے گئے ہیں ۔ ہم آپ کوفل سُرا باطناً قابل تعظیم مجھے ہیں الیکن آب کی اطاعت ہم پرفرض نہیں۔ یقیناً ایسے النسانوں کوا جماع امّت کے ساتھ کا فرقراد یا جائے گا۔ اسی طرح وہ لوگ جمآپ کی نبقت کے معترف ہیں۔ آپ کی توت قدسیہ کے قالی ہی نبقہ من معترف ہیں ، لیکن فلاسف کے افرائ آپ مطابق آپ کوموم الناس کا بینر تو تنہ ہم کے لئے ضور ری نہیں کہ وہ آپ کوموم الناس کا بینر تو تنہ ہم کے لئے ضور ری نہیں کہ وہ آپ کی نالم رُاباطناً اتباع کریں۔ زیادہ سے زیادہ فلاسری احکام کوسلیم کیا جا اسک ہے ، لیکن حفاق مقتلیہ مقائق باطنیہ میں آپ کی رہنمانی کی ہمیں ضرورت نہیں ۔ ان لوگوں کا اگر بنظر عالم مطالعہ کیا جا سے تو معلوم موتا ہے کہ بہلوگ قبروں کی تعظیم کے قائل ہیں۔ اصحاب قبوک مبارگاہ میں دور در ارزسے سعرا نمتیار کرکے اپنی ضرور توں کا مرا واطلب کرتے ہیں۔ یہی وہ بارگاہ میں دور در ارزسے سعرا نمتیار کرکے اپنی ضرور توں کا مرا واطلب کرتے ہیں۔ یہی وہ لوگ ہیں ہونہ صرف ملی الشرعلیہ وسلم کی قبروں کی زبار کو جکھنہی اگرم صلی الشرعلیہ وسلم کی قبروں کی زبار کو جکھنہی اگرم صلی الشرعلیہ وسلم کی قبروں کی زبار کو جکھنے ہیں۔ اسے افضل مانے ہیں۔

نېيى فرماتے عقلاً فقلاً يمبى تول ديست معلوم سوتا ہے -

ا ور بوشف نمام فبور کی طرف سفراور ان برتعمیر شده مسا حدیدی نمازگوستیب فرار دیتاسید، وه بهی نمازگوستیب فرار دیتاسید، وه بهی نفس مربع اور اجماع کی مخالفت کرر باسید بیش معترض جور شراط خرق کونبین جاننا، اس کے سلتے کیسے امبازت وی حاسکتی ہے کہ راقم الحروف پر دروغ بازی سے کام لے اور ان صور تول میں عدم فرق کومیری طرف منسوب کرسے اور مجمد پر بہتان

باندسے کہ میں اجماع امّت کامن کے ہوں اور قبر نبوی کی زیارت کا مطلقاً قاکن نہیں ہوں ' جکہ اس کوحرام قرار دیتا ہوں ۔

ہم چاہتے ہیں کہ ہمارسے تا رئین کے سامنے اصل حقیقت کھل کرسامنے آجائے لہذاہم اپناوہ جواب لفظ برنفظ پیش کرنے ہیں جس پرقامنی اخنائی جوش میں آگر ہوش کھو بیھے ہیں۔ تاریخین خودہی فیصلہ کریں گے کہ میرسے جن الفاظ کو تقل کیا گیا اور میرسے جن خیالات کو ہا لمل قرار دیا گیا ، کیا اس میں صداقت کا مجھ شائر سے یا نہیں اور کیا اس کے اعتزامیات مدل والعیاف کا مذتو نہیں چڑا رہے ہیں معوال جو ایک انفاظ مکتا خوائی

سوال

کیا فرماتے ہیں علما نے کرام کہ جب کو نُصحْف انبیارصِلماً کی قبروں مثلاً حضرت محدّصلی النُّرعلیہ دسلم کی قبر کی زیارت کی نیت کر تاسیے ، آنوکیا اس سفر میں مسا فرکونما ذِقسر کرنا جا نَہ سبے اور کیا اس زیارت کوشرعی زیارت کہا جائے گا۔ رسول النُّرصلی لنُّرعلیہ ولم سبے مروی سیرہ آب سنے فیرمالی ہ

سے مروی ہے۔ آپ نے فرمایا ، دمن جج و لم یزد ہی فقت جانے آیا

ومن ع وم يودي معتل جعالى ومن ذارنى بعد موتى فكاشاذادنى فى حياتى.

بوشخف ج کے لئے آیا،لیکن میری زیارت مذکی تواس نے میرے ساتھ بد تہذیبی افتیار ک اور جس شخص لے میری وفات کے بعدمی زیارت کی توگویا س نے میری زندگی میں مجدسے ملاقات کی ۔ نیز بٹی اکرم مسل الڈعلیہ دسلم سے مروی سبے ، آپ سنے فرمایا صرف ٹین سجدول کی طرف شدر حال کیا جائے مسجدالحرام ،مسجدالاقعٹی مستجدنبوی -

جواب.

حمد ذننار کے بعدسینے بوشخص صرف ا نبیام صلحار کی قبروں کی زیادے کے لئے سفررتاسیے، اس کے قعر نمازے بارسے میں دوشہور قول ہیں : قولِ اوّ ل ¿ اكثر متقدّ مين على شكّ لوعبدالله ابن بسطه الوالوفا بن على اس مفركو معصيت كاسفر قرارديت بين اومعميت كيسفرين قعرنما زكوما تزنهين مجت الم شافعی، مالک، احدیمی اس سفرکو نام ا تزکیتے ہیں ا ورقصر نماز کو ما تزنہیں کہتے ۔ قول ثانی ، امام ابومینیفه مُمَا زِقعرکوما زوّار دینے ہیں جبکہ ان کے نزویک حرام سفرين نماز قصركرنا درست مُمُربعن شافعة حنا بليثلًا مغزالي ، الومحد مقدسي ، الوالحسن عجنه وس مراني اس سفر كوعرام بي نهيس سميحقيل بدورا لفتبور إفبرون كي زيارت كرو الحديث كي بنياد برا نبیا صِلی کی قبروں کی زیارت کے لئے سفرکومائز قرار دینے ہیں ، چنا نچر کھاوگ السي يمي بن بوملم مديث سے واقفيت نهيں رکھتے، وہ ان احادیث سے استدلال كرتے ہيں، جن ميں قربنوى كى زيارت كا وكرسے، چنا كير من ذادى بعدمان فكانمًا ذار في في حياتى مديث كودا بِقطنى لنے روايت كيا، ليكن رس جج ولسم یزدنی فقد جفانی مریث کوکسی لے روایت نہیں کیا ، مبیا کھی من دا دن وزاد ابی نی عام وا حدصنت له علی الله الجننة) دمس نے میری اورمیرے باپ کی ایک ہی سال میں زیارت کی ، میں اس کے لئے الڈکی طرف سے جنت کی مگ دیتا ہوں) مالانفان باطل ہے۔ نه نواس حدیث کو کسی نے بسیان کیا۔ اور سر می

کسی نے اس کو تجت قرار و یا ہے ؛ البق بعض لوگ واقطنی کی مدیث کون بل مجت مانت بیں الیکن اس مدیث کوکتپ صدیث وفقہ بیں مذاستد لالاً نماعتفا واکسی نے ذکر نہیں فرمایا ؛ البتہ الواحمد بن عدی نے کتاب الصنعفا رمیں اس سے را وہوں کے صنعت کو بیان کرنے سے لئے اس کا فکر کیا ہے ؛ چنا پنچہ اس مدیث کو اوکو کھسان عن مالك عن مانع عن ابن عدر ان المنبی صلی الله علیہ وسسم قال من جے و لم یزدنی

فقد جفانی) ذکرکیاہے ۔ ابن عدی کہتے ہیں کداس مدیت کو مالک سے ابن عدی کہتے ہیں کداس مدیت کو مالک سے لغمان کے علاوہ کوئی را وی فکر نہیں کرتا موسلی بن بار وی نعمان کو متم قرار دیتے ہیں ۔ جبحد ابو ماتم بن حبان کہتے ہیں کنعمان راوی تنقہ را وبول سے خشاع جمیب وغریب قیام نے خریب قیام نے محدین فروط مون مدیث ہیں بجائے نعمان کے محدین فردوط مون

قرار دبیتے ہیں۔ مُن ذار بی وزار ابی بی عام واحد صنت له علی الله الجنت مدیث کی تقیق: یہ مدیث کتب مدیث میں سی مجمی سنر کے ساتھ موج دنہیں، یہاں کی کمکی میں

یه مدیث متب مدین یک می مسلط و مساحه الدین الدی کی زمان فتی بیت القال سند کے ساتھ بھی اس کا ذکر نہیں ۔ ماں سلطان صلاح الدین الدین الدی کے زمان فتی بیت القال کے سال موسل کی اس مدیث کا نام ونشان نہیں ملا ، اسی لئے تو علماً کے کسی گروہ نے اس کومسل کے سبیل الاعتماد دُکرنہیں کیا ۔

مُن جِج فزاد قىبرى بعد موتى كان كمن ذاد بى ف حياتى مديث كيميّت

اس مدمین کوحفس بن سلیمان ما ضری گری بن دی سیلیم سے وہ محا برعن دبن عمد خال خال دسول الله

ما *حب عاصم -* لیث بن ۱بی سسیم *سے وہ مجا ہر ع*ن ابن عسر قال قال دسول اللہ معلی اللّٰہ علیہ وسلمّ *منڈکے ساتھ ہیا ان کرتے ہیں ئے۔۔۔۔۔تمام نحدتین بالالفاق منص*

دا دى كوقرات بيرمنى البته حديث بين مطعون قرار ديته بي- الم بيعتى خرشعه الإيمان میں میر روایت حض بن ابی داؤدعن لیٹ بن ابی سلیم عن مجاهدعن ابن عمر کے طریق سے بیان کے سے اور کہا ہے کہ اس میں جفص صنعیت ہے۔ ام یحیٰی بن معیر لیس تبقة کہتے میں -البتہ فرواتے ہیں کہ یہ الدیگر بن عیاست سے قرأت میں ثقہ اور زمادہ قابلِ اعتبارہے ۔نیز فرمائے میں کر حفص ابو کمرسے زمادہ تماری ہے مگر صدیمیت میں ابوبکر صدر فی اور حفص کذاب ہے - امام بحث ری فرواتے ہیں کہ لوگوں نے اسے چھوڑ دیا ہے۔ امام مسلم اسے متروک کہتے ہں۔ اہم علی بن مدینی کہتے ہیں کہ وہ حدیث میں صنعیف ہے ۔اس لیے میں نے عمدًا اسے جے واردیا ہے ۔ اہم ان کی فراتے ہیں کہ وہ تقرب اور نداس کی حدیثی تکمی جائی مالح بن محد بغدادی کہتے ہیں کہ اس کی تمام مدیثیں منکر ہیں ؛ لہٰدااس کی تیں تحريريذكي مبائين الوزرعة ضعيف الحديث كالقب دبيته بين الوحائم رازي صعيف الحديث سترون الحديث لا يصدق والامكت حديث كاربماركس وسبت بين رعبوالرحمل بيس نے کذاب متروک مدمیثیں و صنع کرنے والا کہا۔ حاکم ابوا حمد بنے ذاہب الحدیث کہا۔ ابن عدی سے کہااس کی اکٹرمرویات *غیرفح*فوظ میں ۔

مُن ذار قبرى وجبت له شف عتم مديث كى تحقيق

اس مدیث کوبزار داقیطنی دیگر محدثین موسی بن بلال عبدالله به عمر عن نافع عن ابن عمر سن کو بندار داقیطنی دیگر محدثین موسی به بدالله یاعن عبدالله یاعن عبدالله منکر ہے بہرسی کے علا وہ اس کوکسی دوسرے را وی نے ذکر نہیں کیا ۔ امام عقبل موسی بن بلال کے بارسے میں کہتے ہیں کرموسی کی اس مدیث کا کوئی متا بع نہیں الجعائم رازی رو اس مدیث کا کوئی متا بع نہیں الجعائم رازی رو اس مدیث کا کوئی متا بع نہیں الجعائم رازی

موسیٰ کو فہول قرار دسیتے ہیں ۔ کبرینہ

ا**بوزکر یا لو دی تثرح المبیکزگ ب بین الوا**سیا **ق کا تو ل که زبنی صلی الدعلیہ وسلّم کی قبر** حکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

ابومحدمقدسي كااستدلال

ابونمدمقدسی قبروں اور سبروں کی زیارت کے لئے سفر کے جواز پواستدلال کرتے ہیں کہ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم قباکی زیارت اور قبروں کی زیارت کے ساتے مایا کرتے تھے

ببواب

بوتعف اپنے گھریں وضوکرتاہے ، پھر مسجد قبامیں نمازاد اکرنے کے لئے آبائے تواس کو ایک عمرہ کونے کے بار بواب دیا مائے

من تظهر فی بسیته شم اق مسجد قباء لایرمیدا لاا دصلوی فسیس کان کعموی -

پس نبی اکرم میل الڈعلیہ دستم کا قباکی سعبری زیارت کے سکتے مبانا شار مال میں اضل نہیں۔ نیز کسنتی فس کے نذر مانسے کے باوج دبھی قباکی طرف سفر کرنا سزوری نہیں تو بھر اس سے استدلال کرنا غلط ہے۔

ہاں تروں کی زیارت کرنے کے لئے نبی اکرم صلی الٹی علیہ وسلم مبایا کرتے تھے کیکن انبیا رصلی ہوم مبایا کرتے تھے کیکن انبیار مسلی ہوم مومنوں کی فروں کی زیارت کے لئے سفر کرنا بدعت سے محابہ تابعین کے دور میں کسی سے منعول نہیں اور بزبی کسی نے رسفر افتیار کیا اور بزبی اس سفر کا کم متحب رسول الڈوعلیہ وسلم نے فرمایا اور بزبی ہی قابل احتمادا مام نے اس سفر کومست و اردیتا ہے۔ وہ سنت رسول اجماع احت کی فراردیا ہے۔ وہ سنت رسول اجماع احت کی معمت ہونے کو ابوع برالٹراین بطر نے بھی الابانت میں الفیت کرد ہے۔ اس فعل کے معمت ہونے کو ابوع برالٹراین بطر نے بھی الابانت میں الفیت کے دور انہوں کا دور کے دور کی دور کے دور کی دور کے دور کی دور کے دور کی کے دور کی کے دور کی کے دور ک

الومحدمقدس كالاتشدالرمال كالميث كواتحباب كففي بمحول كرنا

العىغرى يى دُكركياسىيے -

ابونحدم فدسی لاتشدالرمال کی مدیث کاجواب دیتے ہوستے تحریر کرتے ہیں کیمسامبر ثلثہ کی طرف شدرمال کرنامستحب سبے اور غیرمسا مبر ثلثہ کی طرف سفر کرنامستخب نہیں ایعنی آگر جبہ بہتر نہیں مہاتز ہے۔

بهد جواب ، بقول آپ کے فیرسا مبزللہ کی طرف سفر کرنا جب سخب بہیں تواس سفر کونر قداع ال ما اور سخب بیں تواس سفر کونر قداع ال ما اور سندی اس کوعبا دت اور طاعت کی مامکنا ہے۔ بیس جو شخص اببیار صلحاء کی قبروں کی زیارت کے سفر کو تقرب عبا دت طاعت قرار دیتا ہے۔ وہ اجماع امت کی مخالفت کر رہا ہے ، بلکہ وہ حوام فعل کا مرتکب بور ہاہے ، طاہر دیتا ہے۔ دہ اجماع امت کی مخالفت کر رہا ہے ، بلکہ وہ حوام فعل کا مرتکب بور ہاہے ، طاہر جو کہ شخص اسی بی غرض سے قبروں کا سفرا فتیا رکز تاہیے ؛ البتہ اگر کوئی شخص فیرسا جد تلاث کا سفر کسی دنیوی مقد دے سے کہ تاہد قراس سفر کوجا مذکر کیا جائے گا اور اس کا مگر سونا کی اسر ہی ہے۔

دوسور جواب ، لا تشدالرحال میں سفری ممانعت استحباب کی نفی نہیں کرتی ، ملکسفر کی مرمت پردال ہے ، جیساکہ مدیت کے ظاہری الفاظ پر تورون کرکر نے سے بیم عنی واضح محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

ہوتا ہے۔

غيرمساحد ثلثه كاند ولسنف سع عبى ان كى طرف سفركرنا ما زنيين

ائمة بحدثین لاتشدالرمالی صدیت کی محت اورهمل پرتننق بین - نیزاس بات پرهبی بھی اقتہ کا آلفاق ہیں۔ نیزاس بات پرهبی بھی اقتہ کا آلفاق ہے کہ اگرکوئی شخص کسی قبر پاکسی مقدس مقام کی ندر ما نتا ہے کہ میں وہاں جاکر نماز پر بھوں گا یا وٹنکا ف بیٹھوں گا ، تو اس ندر کو پر راکر نا اس کے سلتے صروری نہیں ۔

لیکن اگر کو ٹی شخص سجر حرام ، سجر بنوی یا مسجداتھ کی میں نماز او اکر سے یا اور کا بیٹے کہ نذر ما نتا ہے تو امام مالک ، امام شاخی ، امام احمد کا ایک قول بیٹ کو اس نذر کو پوراکر نا ضروری نہیں ۔

مرنا صروری ہے ۔ البتہ امام ابو صنیف سے نزدیک اس نذر کو بوراکر نا صروری نہیں ۔

مجمور محدثین ہر طاعت کی نذر کو پوراکیا ماستے ۔ مجمح بخاری میں حصرت عاکث ہے کی طرف سفر کرنا طاعت سے ؛ البندا نذر کو پوراکیا ماستے ۔ مجمح بخاری میں حصرت عاکث ہے کی طرف سفر کرنا طاعت سے ؛ البندا نذر کو پوراکیا ماستے ۔ مجمح بخاری میں حصرت عاکث ہے کی طرف سفر کرنا طاعت سے ؛ البندا نذر کو پوراکیا ماستے ۔ مجمح بخاری میں حصرت عاکث ہے کہ طرف سفر کرنا طاعت سے ؛ البندا نذر کو پوراکیا ماستے ۔ مجمح بخاری میں حصرت عاکمت

رحنی الٹرعنہاستے روایت سبے:

ان البنى صلى الله عليه وسلم قال من شذران يطيع الله فليطعب

ومن منذران يعمى الله منلا

بی صلی الدعلیہ وسلم نے فرمایا ہوتھ اللّٰدی اطاعت کی نذر ما نیاہیے۔ وہ الحا^{مت} کرے اور و چھن اللّٰدی معصیت کی نذر مانیا سیے ، وہ اللّٰدی نا فرمانی ندکرسے۔

زیارت قبرنبوی کی تمام مدیثین ضعیف ہیں

اس باہت پرنمام ابل علم متفق ہیں کہ نبی اکرم صلی النّدعلیہ وسلم کی قبرتنرلیف کی زیارت کے بارسے میں جتنی مدینیں مروی ہیں، سب صنعیف ہیں ، بلکہ موضوع ہیں مذقوقا بل احتما دُسَتِ سنسسن کے موکنفین ان روا بات کو اپنی تالیفاحہ میں لاستے ہیں ا ور مذم ی کسی امام سفیاق

مدينون كومخت تسليم كياسيد. امام مالك كاقول

امام مالك رحمة الترعليه ربوكه مدينة الرسول مين رسين كم بنار براس مستل كونوب مانت ہیں ۔ وہ فرط تے ہی کہ یہ کہنا کر بیں نے بنی اکرم صلی اللّٰرعلیہ وسلم کی فرکی زبارت کی ہے مکروہ <u>ہے غور پچھیئے اگر زیارت قبر نب</u>وی کا جملہ اس دور میں منتہور یا مشروع یا بنی صلی الدّعلیہ وسلم مصمنتقول مبونا انوكم ازكم مدينتة الرسول مين اقامت پذيرعالم دين اس كومكرده مرمانته ل

امام احمد کا قول

امام احمد بن صنبل اپنے دور میں علم مدیث کے بہت بڑرے عالم وین شمار کے عالم ہیں، جب ان سے اس مسلد کے متعلق سوال کیا گیا، تو فروا نے لگے کے میرسے نزدیک اس مسند میں کوئی قابل احتماد صدیث الوم ریرہ کی صدیث کے علاوہ نہیں ہے جس کوام الوداؤ سنن میں لائے ہیں اور اس کو قابل اعتماد قرار دیا ہے کہ نبی صلی الٹر علیہ وسلم نے فرمایا: بوشخص بحبى مجربرسلام عبيتبا سبيه توالنريك مامن دجل يسلم على الارد ميرى روح مجري لوالدينة بين، توميل اللَّه على روحى حتى ا د د عليه کے سلام کا بواب دیے دیتا ہوں۔ www.KitaboSunnat.com

حبدالتربن تمرسے مروی ہے کہ جب ومسحدمين داخل موسقة وكهت بارسول المأر آب برسلام بواك الربحرآب يرسلام سو-

موطا امام مالک میں سے: روی عن عبدالله بن عمر امنهٔ كان اذا دخل المسجد قال السّلام عليك يادسول الله إسلام عكيك

44

با ابا کوانسلام علیك باابت شر بینصرف

لے میرے آبا جی آپ پرسلام ہؤیھروہ واپس نوٹ حاتے۔

> مرقم من الجودا وُ د ميں نبی صلی الٹرعِليہ وسلم سے مروی سہے ، مررہ بر

انهٔ قال لا تخد ما قبری عیدا وصلواعلیَّ حیثیما کنتمرفا نب صلاتکم تبلغی -

ملا تنکم تبلغنی ۔ مرمنن سعیدبن منصور میں ہے ؛

ان الحسن بن الحسن بن على بن على بن الحسن بن الحالية الى طالب داى رجلاني تلف الى قبر النبي صلى الله عليه و مسلم نقال ان رسول الله صلى الله عليه وصلم قال لا تتخدوا قبدى عيدا وصلوا على حيبتما كنتمرفان صلاتكم تبلغنى ما انت عروس با لان د لس

مندالاسواء -محیحین میں مروی سے ا

عن البنى صلى الله عليه وسسلم انه قال فى مرض موته لعن الله البهودوالنصادى اتخذواتبور البياءهم مساجد يحذرما نعلوا-

سیم سے مروی ہے ، آپ نے فرمایا کہ تم نے میری فرکومید نہ بنانا ہوگاا ور جہال کہیں سے بھی تم مجد پرصلواۃ بھیجو گے ۔ پس شماری صلوٰۃ نجو تک بنچی سے کی۔

حن بن من من من بن على بن ابى طالب فيا كمه المنوطبيرة الدي كود يجها كموه بار بارني ملى التوطيبرة المحمد فرما سف لك قرمبارك كلطرت آناسه وفرما لله معلى التوطيرو آناسه ولي التوصل التوطيرو تم المائية بنانا بوگا اور جهال كميس سه يجي تم مجر و در و يجيجو كرتها دا در و و يجيجو كرتها دا در و و يجيجو كرتها دا در اندس ميں رسن ولك وكاس ميں رابر والد وكاس ميں رابر والد وكاس ميں رابر و

بنی میل النُّر علیہ وسلم سے مروی سبے کہ آپ نے مرض الموت میں فرمایا۔ النُّر نے ہود نفسار کی کوملعون قرارہ یا جنوں نے لیسے انبیا کی قبروں کومسجد بنالیا، آپان کے زویہ سے

ڈرآآ) ما ستے باس۔ محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد مو**ق**وعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ حضرت مائشه فرماتی بین اگریخطو دامن گیرز موتاتوآپ کی قبرکو کھلے میلالیں بنایا ماتا، لیکن آپ سے اس بات کولپندمنہ

تالت عائشة ولولا ذالك لابن ذخيرة ولكن كوة ان يتخذ

فروا اکه آپ کی قبرکومسحبر بنا یا حاستے۔

اسی لئے معابر کرام نے بنی میں الٹرعلیہ وسلم کو کھی مگر کے بجائے سیدہ عاکشر کے جمرہ میں دفن کیا تا کد کوئی شخص آپ کی قبر کے پاس نرنماز اور کر اس کو معبر کی میں میں دفتا ہے۔ حیثیت دھا کہیں آپ کی قبر مبارک بنت فاندند بن مبائے۔

قبر نبوی بردوعا کی ننرعی حیثیت

ولید بن عبد الملک کے دورت پہلے جبکہ تجرہ عائشہ سحبہ نبوی سے الگ تفاء کوئی شخص تبرک تبرکا ہاتھ لگانے ہے جبکہ تجرہ عائشہ سحبہ نبوی سے الگ تفاء ہاں نماز اور د ما کے لئے مسجد نبوی کا فصد کرتے ہتے محابہ تابعین جب بنی مسلی النّه علیہ وسلم کی قبر شریعت پر آگر سلام کہتے اور ا پنے لئے دُما ما نگتے، تو وُعا کے دقت قبلہ رُخ کھڑے ہوئے۔ قبر شریعت کی طرف استقبال نہیں کرتے ہتے۔

امام البحنیفہ توسلام کھنے وقت بھی استقبال قبر بنوی کوبائز نہیں بھے لیک کرتے ہیں۔ البقہ کسی امام البحث کی الم البحث کی وقت بھی استقبال قبر بنوی کوبائز نہیں بھے لیک کرنے ہیں۔ البقہ کسی امام سے یہ بات منقول نہیں کہ لینے لئے وُماکر تے وقت بھی استقبال قبر بنوی جائز ہواس سلسلہ میں ایک جھوٹی روایت امام مالک کی طرف منسوب کی جاتی ہے جبکہ ان کا مذہب اس کے مخالف ہے۔ بنیز تمام انکہ کرام اس بات پر تنفق ہیں کہ نہ تو بنی اکرم مسلی النّد علیہ وسلم کی قبر کو باتھ دیا یا جائے اور یہ میں کہ تو بنی ام انتوار دیا گیا ہے اور یہ میں کہے وقت کے در در ہی اس کو چوما جائے اور یہ میں کہے اس لئے ناجا تز قرار دیا گیا ہے انکہ مسکہ تو بین کہ قبر دن کو مسجد یں بسانا الکہ مسکہ تو بین کہ قبر دن کو مسجد یں بسانا

سرک کی بنیاد ہے ؛ چنا بخہ سلف صالحین ذیل کی آیت کی تشریح کرتے ہوئے فرطنے ہیں۔ ارشا دِ خداوندی ہے ۔

وقالوا لا تذرن المنتكم ولانذك اوركيف لك كدليف معبودول كوم گزنه وداولا سواعا و لا يغوث ويعوق مجبوط أا ورود اوربواع اورليغوث اوريق و داولا سواعا و لا يغوث اوريق اوريق من اورنسرو بي ترك ذكرنا و دنسوا - دلاح ، ۲۳

توم نوح میں ان لوگوں کو نیک سمجھا جا تا مخفا ، جب دہ فوت ہوگئے تو لوگوں نے ان کی تبروں پر آنا مانا جاری رکھا اور ان کے فوٹو تھویری مجتمے بنائے کچھ عوسگذینے کے بعد ان کو لوجنا نٹروع کردیا ۔

امام بخاری رحمة الدُّعلیه میم مخاری میں عبدالدُّن عباس کا قول وَکرکیف کے بعداس معنی کو بیان کرتے ہوئے فرماتے ہیں کہ یہی میشے تصویری بالاً خرعرب میں بہنچاس بات کوابن جربرطبری نے متعدد اکر سے نقل فرمایا ، وشیم وغیرہ علی نے قسص الانبیاً میں متعدد طرق سے اس کا وکرکیا ہے ۔ میں نے مجی ان مسائل کود وسرے مقامات پر بسط دِ قفعیل سے بیان کیا ہے ۔

قوں کی زیارت کیلئے سفر کی شروعیت بر برشیعہ نے مدیث میں وضع کیں

الم بدعت و بن سی سے الم تشیع سے اقراد ایس صفی کی میں بین قبول کی الم بدعت و بن میں قبول کی الم بدعت و بن میں میں الم بار سے کہ الم تشیع مسامد کی تزیین و آرائش میں کوئی دلیے فی دلیے فی دلیے فی دلیے فی کوئی دلیے فی کوئی دلیے فی کہ الم شرک کرتے ہیں۔ اسلام میں میں میں کریے دلی المذکے ساتھ میرک کرتے ہیں۔ اسلام میں میرف کردیتے ہیں، مالا نکی کتاب المثرا ورسنت میں والم للم کی کردیتے ہیں، مالا نکی کتاب المثرا ورسنت میں والم للم

میں مساجد کی عظمت وحرمت کا ذکر تو موہو ڈسپے ، لیکن فتوں کی عظمت کا ذکر کہیں نہیں ہے۔ ارشادِ خدا دندی سے ،

> قل امودبى بالقسط ما قيموا وجوهكم عندكل مسجد وادعسوه مخلصين له البدين - الأثير -

(الاعراث) ۲۹

نیزارشا دِ مدا و ندی سبے ۔:

اوربه کمسحدیں دخاص ،خداکی ہیں توخدا کے ساتھ کسی اور کی عبادت نذکر و۔

کمه دوکه میرسے پروردگارنے توانعیا

وقت سیدها (قبله کی طرف) رُخ کیاکرو

اور خاص اسی کی عبادت کروا وراسی کو بکاژ

كرف كاحكم وياب إوريك مركمانك

مداک سجدوں کوتو دہ لوگ آبار کرتے بين بوندا پراورروز تيامت پرايمان للتيبن

اورحب تم مسحدوں میں اعتمان بلیٹے پوتوان سے مبامٹریٹ مذکرو۔

اوراس سے بڑھ کر ظالم کون ہے، ہو خدا کی محدوں میں خداکے نام کا ذکر کئے مبانے کومنع کرے۔ وان المساجد لله فلاتدعوا مع الله احدا- رالجن) ۱۸ یزارشادِ خداوندی ہے ؛ انما يعمرمساجدالله من آمن باللَّهُ واليوم الأَخْدِ والتَّوْمِينِ ١٨ نیزارشادِ مدا وندی ہے ، ولاتبا شووهن وإنتم عاكفون فى العساجد - دالبقره) ١٨٠ نیزارست دِ نعدا دینری سیمے،

ومن اظلم مثثن منع مساجد الله ان يذكر فيها اسمسه -(البقتية) ١١٨٧

نبی صلی الله علیه وسلم فرماتے ہیں کہ سے پہلے لوگ قبروں کومسجدیں بنالیسے تھے ، خبروا رئم سنے قبرول کومسجدیں نہیں بنا ناسبے - ہیں ہم کواس کام سے روکتا ہوں۔ والٹرالم

پس فارئین جواب کے اصل الفاظ پرجب بؤروفکرکریں گے، تو انہیں معلوم ہوجائے کاکہ ہمارے نالفین نے ہمارے ہواب کوجس غلطر نگ میں بہیش کیا ہے ، اس سے ان کی کذب بیانی ، بہتان تراشی واضح ہورہی سے ۔ اس سے پہلے تقریبًا بندرہ سال کا عرصہ گزرج کا ہے۔ میں لے اس مسلک کامخت اجواب دیا تھا، لیکن اس میں ملما یہ کے اقوال کوبسط

سے ذکر نہیں کیا متھا۔

مانا جا بیتے کہ سابقہ اوراق میں جن دوا توال کا ذکر میں سنے کیا ہے۔ نشرو صدیث کی کم ابوں میں ان کا نبوت موجود ہے ۔خصوصًا امام مالک، شافعی، احمد کے مذاہب کی کتابوں میں ان دونوں اتوال کا ذکر پایا جاتا ہے۔

امام مالک ن کے تلا مذہ امام احماداً ن کے تلا مذہ اس مدیث کا معنی یمی ذکر کتے ہیں کہ مساجد تلاش کے ملاوہ کسی متعام کی طرف سفر کرنا مبائز نہیں۔ اگر میہ قبر نبوی ہی کیول نبود

لیکن معض تلامذہ قبرنبوی کواس عام حکم سیستنتی قرار دیتے ہیں۔ چنا بخبر اکس قول کے و دمغبوم ذکر کئے جانے ہیں۔

مفہوم اقبل، قرنبوی کی طرف سفر کرنامسی بنبوی ہی کی طرف سفر کرنا ہے اور بہی فہوم سی معلوم ہوتا ہے۔ امام مالک اوران کے اکثر معتقدین اسی کے قائل ہیں۔
مذہ مدہ فاذ بھینت می سیالا علم سلم کی برسی نیادہ کے سیامتہ تضمیم نیس دی

مفعوم فانی جھزت محرس الدعليه ولم كودوس انبياء كساتھ تشبيدنيس دى ماسكتى ؛ جائے الله الله الله على والله الله على و و باسكتى ؛ جنائي امام احمد كے بعض اصحاب سے مقول ہے كداگرہ الله باك كے علاوہ علاق و الله على ماسكتى علاق ماسكتى معلى الله عليه وسلم كے ساتھ نسم اسمانى ماسكتى

سے ؛ چنا بخذا مام احمد سے بھی اسی عنوم کی ایک روایت منفقول سیے۔ ' لیکن ان کے بعض تلا مذہ زبارت قبورا نبیام کے لئے سفر اور صلف بالانبیام دفوں مرس مدید ترادی نیاس نیس میں مرسلی کے داری کے سابقہ ملاستے بین تاکیمام انسار کا

مسکوں میں تمام ابنیار کو بی کرم میں ایک ملب ولم کے ساتھ ملاتے ہیں تاکتمام انبیلہ کا حکم ایک میں میں میں میں می حکم ایک موماے میکن اصحاب شاقعی سے ابو محدوبین ادران کے موافقین اس میں

کی روشی میں مساحدِ ثلثہ کے فیرکی طرف سفرکو حرام قرار دینتے ہیں۔ پشنج ابوحا مد الوعلی الوالم عالی ، الغزالی ، ابن میدالبر الومحد مقدمی در گرامحاب احمدُ نتا فعی، مالک غیرمسامبرِثلتہ کی لمرف سفرکرسے کوستحب اور باعثِ فعیدے نہیں بھیتے جواز سفر کی نفی نہیں کرستے ؟البقر وجوب سفر کی نفی کرتے ہیں، اگر جدکو کی تحف نذر بھی کبوں مز ان سے بیں جن اقوال کو راقم الحروف نے اپنے جواب میں ذکر کیا ہے۔ کتب اسلامی میں بیا قوال موجود میں کسی معروف عالم کے بارے میں مجھےمعلوم نہیں ہوسکا كمدده انبيار بولم كالتوكي سفركومستحب قرار ديتامو اس مسكه مين الركسي تيسرك قولسے مجسة أكبى بوماتي توليقينأ ميں اس كا ذكر صرور كرن بحثير علمار كا قول سير كه بني صلى الترعلية دم کی قبرترلیف کی زیارت کرنامستحب سبے بعض علمار سنے اس کو اجماع مسله قرار دیاہے۔ میں نے اُس مقام پرکسی اُضّلاف کا ذکر نہیں کیا· بالعل عیاں سے کمسی نبو ی کی طرونت سفركرنانعنااوراجماعامستحب بيس عالم دين جب قبرنوى كى زيارت كرنا جاب ما، توقعدً المسجد نبرى كے سلتے سفر كھرے كا، بينا بخريس ورت توميرے جواب سے فارج ہے، کیونکر جواب صرف اس مستله کا دیا گیا ہے کہ تو تخص صرفِ قبر دل کی زیارت کے لئے سفر کرتا ہے اس کامکم کیاسیے، لیکن عالم بالشرلیہ انسان اس محتصد میں مبتلانہیں سزتا، وہ مان اسپے كمجيم سجدنبوى كے قصديہ کے سلے سفراختيار كرنا جا بيتے ، جبكة تقريعتِ اسلاميه ميں اس سفرکومستحب فرار د باگیاسید، توکوئی جا بل آد می بی بوگا بوکستحباب کوچیو در کرینیر مستحب کام کی طرف دوڑسے گا۔

اس لنع میں کہتا ہوں کردیگر تمام قبورسے نی صلی الٹرعلب رسلم کی قبر تربیف کے احکام الگ ہیں،لیکن ماہل ہے وقوف لوگ جن کوشیط ن نے اپنے وام تزور میں بمیسایا ہوا سے وہ زیارت قبربنوی کے سلتے سفرختیار کرتے ہیں وراصل برلوگ عادی ویکے ہیں اور ان کا بیطرز عمل ان کی عادتِ ثانیہ بن چکاہے کہ جس آ دمی کی قدر دمنز نت ان

کے دلوں میں گھر کر چی سید اس کی قبری زیارت کے سنتے دور درانسے سفراختیار کرکے دہاں کہ قبرکے ہوار کے سنتے دور درانسے سفراختیار کرکے دہاں درخواست کرتے ہوائج کے سنتے قبرکے ہوار بیں اعتمان نام بیٹھتے ہیں ۔ صاحب قبر کی تعظیم کے لئے قبر کے پاس تعمیر شدہ مجد میں اسی طرح سے نمازی اداکو تے ہیں ۔ اہل کتاب سے اسی عمل پران کو ملعون کہا گیاا ورنی مسلی المدّعلیم وسلم نے مرحق الموت میں اپنی امت داس شمناک فعل سے منع فرما یا

ار**شادنبوی سبے ا** لعن الله البعود والنصاد ی

انخذ را نبور ابنیاءهم مساجد بعذ دما فعلو ا-

کے اس فعل سے ڈرارے بیں۔

یہ مدیث صحیحین میں متعدّد طرق سے مردی ہے۔ نیز صغرت نے فوت مم نے سے بارخ روز پہلے فرمایا: سے بارخ روز پہلے فرمایا: ان من کان قبلکم کا نوا پتخذون سے بے شک تم سے پہلے لوگ لیضا نبیار

ان من کان قبلکم کا نوا پیخلال تبورا نبیاء هم وصالحیهم ساجد الافلانتخد و االنشور مساجد

فان انهاكم عن ذالك - دوا المسلم-

پس جوشخص دین اسلام کے حقّالق کو بہمانا سبے ، وہ اس حقیقت سے ہے خبر نہیں کہ قبروں کی زیارت شرعبہ اورغیرشرعیہ میں کیا فرق سبے ۔

تاسى اخنائي كاالزام اورإس كاجواب

الٹرنع کی سنے یہود ونساری کولعو قرار دیا کرانہوں سنے لینے انبیار کی قبروں پرمسجد دیتعم پرکرڈالیں آپ اپنی امن کواں

ا درصلحاکی قبروں کومسجدیں بنالیا کرنے تھے

خردارتم فيقرول كومسجدينهي بنانا بوكاأ

میں شدت کے ساتھ تہیں اسسے دِکما ہوں۔

میں نے ابن تیمید کے کتا بجیا کا مطالعہ کیا تو مجھے معلوم ہوا کہ اس کتا بجیا کا مؤلف را و مق سے معطک گیاہے۔ جہالت و کر اہی کے عمیق کر طبعے میں گر گیا ہے۔ اپنے باطل دعوول مين حادة مستقيم سع كوسول دورسع كمنكم كعلّا نبيا عليهم الصلوة والسلام كي دشمنی مول ہے رہاہیے ۔ بڑگی ہے ہاکی سے ان کی مخالفت میں محوسیے جبکہ بیخص فہرنیوی وليرا نبياء كى قبرول كى زيارت كے التے سفر كرسانے كو حرام قرار ويتا ہے بحث بور مجم عريث کی مخالعت کرنے میں کوئی بچکیا مبدلے محسوس نہیں کرتا۔ فرمان مسطفوی سے کہ د قروں کی زیارت کیا کرو) نیز حدیث میں ہے ،آب فرماتے ہیں کہ (میں کم کو قبرو ر) بازیار سے منع کیاکرتا تھا (اب اجازت ویتاموں) قبروں کی زیارت کیاکرو البترزبان سے قبیح كلمات مذكموى بس بني صلى التّرعليه وسلّم نف أولاً جس فعل كوممنوع قرار ديا بعدا زال س کومباح فرار دسے دیا۔ بہ ہات مشہورسے کہ کسی نعل سے روکنے کے بعداس کے کرنے کا حکم دینااس کے وجوب کامقتضی ہے ، لیکن اگرا یہ اس کے دجوب کو تسليم ننبي كرتے مونوكم ازمم اس كومباح يامستحب صرور ما ننا برك كا - ميسمحبنا موں كرتب النُّدياك سنة كتا بيُحِيكُ بواب كه للته مجها نشراح صدر عطا فرمايا ؛ چنا پيُه كتا بجي جن برحتوں اور کر اہموں رہشتمل تھا، ان کو مٹانے کے لئے میں نے اپنی علمی صلاحیتیوں كوبيداركيا اور اصل حقائق كوپيش كرك مين كوتى وقيقه فرو گذاشت مذكيا -

کوبیدار کیا اور اصل حقالتی کوپیش کرسے میں کوئی دقیقہ فروکذاشت نہ کیا۔
جواجب ، فاصی صاحب کی عبارت کے مطالعہ سے معلوم ہور ہا ہے کہ پرشخص
اللہ پاک اور اس کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم بربٹری جسارت اور سے باکی کے ساتھ افتہ بردوازی کرر ہاہے نہ صرف برکہ دین اسلام کی واضح تصریحات کی بخالفت کرنے ہیں کوشا ہے ، بلکہ ابتدار اسلام سے لے کرا ب بک جننے اہل علم گذر سے ہیں ، ان سب کی نمالفت کرنے میں کوئی باک محسوس نہیں کرتا ۔ اس جسم کے مفتری مبتدع انسمان سے توب کوروائی جا جیئے ۔ اگرا بہی مدعنوں افترا بردازیوں سے تاتب سو اسٹے تو خوشی کی بات ہے ، ورنہ با جیئے ۔ اگرا بہی مدعنوں افترا بردازیوں سے تاتب سو اسٹے تو خوشی کی بات سے ورنہ ورنہ

ا پساملىدمرتدا جماع امّىت كى نخالفت كرينے والاانسان اس لائق ہے كہ اسس كوقتل كرديا ماستے۔

راقم الحردف نے تو قبروں کی زیارت کے مفرکے مسئلہ میں رہے و و قول ذکر کئے ہیں کیکن فاصلی خنائی نے سرے بارے میں اس بات کا دعویٰ کیا ہے کہ تیخص ب تینو مسجدول کے عنر کی طرف یا مطلقاً قروں کی طرف سفر کوسنے کو حرام کہا ہے تو یہ تتخص ابنيا يمليهم الصلوة والسلام كي على الاعلان مخالفت برتكا مواسيه اور ان سيه تثمني يحضة ميں کوئی تثرم محسوس نہيں کرتا جس کاصا ٹ مطلب ميسے کہ اس کے نزديک قبزوي دیگر قبور کی زیارت کے لئے سفر کرنا حرام ہے ۔ پس اگراس سفر کو حرام قرار دینے پر مجھے ا نبیار کا مخالف اور دشمن متعبّورکیا گیاسہے کو ہرو پیخس جواس سفرکوحرام قرار دیے گا اس كويمى ا نبيار كا فيمن محما مائ كان ظام بها ما نبيا عليم الصادة والسلام كى تيمتى اور مخالفت انتهائ كفريب اور يوشخص اس سفركو ممنوع قرار ديناسب كداس كوكافر محجنا جابیتے تواس کانتیج بدیمی سے کہ اکٹر ائمۃ دین کواس بنیاد برکا فرسمجما مائے گا،جبکہ اکثر ائمة دين سنے اس مفركو حرام قرار دياہے۔ فاصني اخنائي صاحب جوكوفقه مالكي كے فائل ہیں، ان سے کہا جائے گا کہ امام مالک رجمۃ الٹرعلبہ سنے صراحتاً ابیسے صفرکو ممنوع قراردیا ہے۔جب ان سے سوال ہوا کہ اگر کوئی شخص نذر ما نتاہیے کہ میں قبر نبوی کے پاس حامنری دوں گا ، نوامام مالک سنے با و سور تذر کے اس سفر کومباً ح مہیں کہا ، بلکاس کو حرام ا درمنوع قرار دیا- با ں اگرمسجد نبوی کا نفید کرتا سیسے تومسحبر نبوی میں استے اور نما زا وا کرے۔البتہ اگرسفرسےمقصد قبرنبوی کی حاضری ہے تواسے نہیں جانا جا ہیے۔ارشا^ر بنوی سیے کد صرف تین مسجدوں کی طرف زیارت کے سنے سوار اور کا انتظام کب جاتے ۔ اس مستلہ میں ا مام مالک کا مذہب مالکیوں کی جملہ کا بوں میں وضاحت کے سانھ موجود ہے ' جنا بخدا بن القاسم کی الدونہ ابن الحلاب کی التفریع

موجود ہے کہ جو تحص مدینۃ الرسول صلی الدُعلیہ ہم کی زیارت کی نذر مانتا ہے ہیں اگراس کا مقعد مسجد بنوی میں نمازاد اکر نا ہے توابئ نذر کا الفاکرے اور اگر پیم قعد نہیں ہے تو نذر کا الفاکرے ویک مسجد بنوی میں نمازاد اکر الے سے نزد کیا الفاکرے اور اگر پیم قعد نہیں ہے تو نزر کا الفاکہ منجب منہیں صرف مسجد نبوی میں نمازاد اکر نے کا ارادہ مستحب سے لیکن جو خص قبر بنوی قبور شہدا کہ نبورا البقیع مسجد قباکی زیارت کے لئے سفر کرتا ہے تو اس کا پیسفر ممنوع ہے ۔ کسس منبوری میں نمازاد اکر نے کے علاوہ کے لئے ایسی نذر کا ایف جائز مہیں ، بس جشخص مسجد نبوی میں نمازاد اکر نے کے علاوہ کسی بھی فعل کی نذر ما نتا ہے تو امام مالک کے نزدیک اس نذر کا ایفا جائز نہیں ،

نذر ما نتا ہے تو امام مالک کے نزدیک اس نذر کا ایفا جائز نہیں ،

امام مالک رحمدالند کے اس مسلک کو قامنی سماعیل بن اسحاق فے ذکر کیا ہے؟ چنا پنے وہ اپنی کتاب المبسوط میں اوّلاً محمد بن سلم کے تول کا ذکر کرتے ہیں کہ جو تفق مسجد قبامیں مبانے کی نذر مانتا ہے ، تو اس کے لئے ضروری ہے کددہ میں ندر کو بچر اکرسے کا کیکن قامنی اسماعیل بن اسحاق الق کی تشریح میں تسط إنه بی :

قاصى اسماعيل بن سحاق كا قول

ال مسجد قب میں جانے کی ندر مانے کا ایفاً اس آدی کے لئے مزوری ہے جہ بہتالرہ اس کے قرب وجوار بیں رہتا ہے جسے وہاں جانے کے سئے سی سواری کے انتظام کرنے کی مزورت محسوس نہیں ہوتی ۔ ظام سے کہ سفراس کو کہتے ہیں جس بیں سواری کی طرورت واقع ہوا ورسفر تو صرف تین سجدوں کی طرف کیا عاصکتا ہے۔ نواہ ندر کی صورت ہویا نہو۔ پینا نجرا ما مالک رحم اللہ سے نتول سے کہ ان سے اس نحف کے ارسے میں ال کیا ہوتے ہوئے ہوں کے الئے نذر ما نتا ہے، تو انہوں نے فرما با کہ اگراس کا مقصد کیا گیا جو قربر نہوی پر جانے کے لئے نذر ما نتا ہے، تو انہوں نے فرما با کہ اگراس کا مقصد مسی نہوی ہے ، تو وہاں جا کرنما زا واکر سے اور اگر می مقصد قربنوی پر ماضری وینا ہے مسی نبوی ہو ما سے مذین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتب

تواسے نہیں مانا حابیتے ،اس لئے کہ صحیح مدیث میں ہے کہ صرف تین سحدوں کی طرف سفرکے سلتے سواریوں کا انتظام کیا ماستے۔ پس بہ قول الدو نبرادرودسری کتابوں کے قول کے عین مطابق سبے ؟ چنا کی الدونتہ ، حس کوام مالک کے مذہب ہیں بنیادی حیثیت ما صل ہے) می*ں ترریسکے جڑخص مدینیة الرسو*ل یا بیت المقدس میں حالنے کواپینےاوپرلازم گروا نباہے یاان دولوں کی طرف پیدل میل کرمانے کو لازم گردا نباہے تواسے ان دونوں مقامات میں اس وقت حانا حائز ہے بجب وہ ان دونوں مفاما کی سیدوں میں نماز اواکرنے کاارادہ کرے یاا وَلاً لازم گردانتے وقت مسجدوں کانام ہے، لیکن اگران دو نو مسحدوں میں نماز ا داکرنے کا ارا دہنہیں تو بجائے ہیدل سفر' محرالے ہے سوار موکر آستے اور اس کے ذمر کوئی قربانی نہیں ہے؛ البنۃ اگران دو نوں کے علاوہ کسی مجی سعید میں نماز اداکر نے کی ندر ما نتاہے ، قواسے د بالنہیں جانا چاہیئے اپنی اقامت گاہ میں می نمازا داکرنے کی مذر کا ایفا کوے۔ ان مسائل کا ذکرفقہ مالکیہ كى تيھون بردى سجى كتابوں ميں موجودى - بين معلوم ہواكه مدينته الرسول بيت المقدس كى طرف سفر کونا د جبکه مقصد بمازادا کرنانهین ، ناتوکوئی نیکی کا کام ہے بستحب سے اور نہی اسے عبادت کہاماتے گا، بلکہ اس نعل کو ناجا ترجمجھا جائے گا - اگرم وہ نذر ہی کمیوں نہیں مانیا۔ بخاری شربیف میں ہے کہ نیک کام کی نذر کو لورا کیا مباستے اور نافران کے کام کو چیوڑ دیا مبائے مقول امام مالک میں بھی بر حدیث مو بورسے بیس امام مالک كے نزديك بوشخص ميت المقدس صرف اس سلتے مباناسے كدو بإں انبيا صلحاء كى قبرل اورآ ثارا نبيارى زيارت كربسه كاتوو فخف نافرمان سبصا وراكرندر ما نتاسب تونذركوبورا نه كرسك على مذالقياس وتحف حفرت ابراسيم خليل علبه السلام ياحضرت محرصل لترعلبهم کی قبرٹرییٹ کے کہتے یا دیگر قبروں ا ورا ثارا نبیار یا مسجد قبا کے لیتے مفرافتیارکرتاہے' تووہ بھی نافروان ہے۔

قامنى عبدالوباب كاقول

تاصى عبرالوياب الفروق مي*ن رقم طرا*ز بين .

بیت الله کی زیارت کے لئے نفر ماسنے والے انسان پر لازم ہے کہ والے انسان پر لازم ہے کہ والے نیارت کے لئے نفر ماسنے والے نیارت کے لئے جائے ، لیکن مدینۃ الرسول ، بیت المقدس ماسنے کی نذر ماسنے والے انسان پر جانا لازم نہیں ہے۔ اگر چہ نینوں مقامات کی طرف قصد کرنے والا انسان قرب الله کامتلاشی ہوتا ہے ، لیکن ان میں واضح فرق موجو وہ بے ، جبکہ بیت الله کی طرف سفر کرنا نیک کام سبے ۔ بیس اس کا کرنا صروری سبے ، لیکن مدینۃ الرسول ، بیت المقدس کی کرنا نیک کام سبے ۔ بیس اس کا کرنا صروری سبے ، لیکن مدینہ المالا عت سبے ؛ لہذا صرف جانے کی نذر مان خرب مان منروری بین مان کی سبحدوں میں نماز اواکورنے کی نذر مان کے مور میں مان مزوری سبے ۔ اگر مسجد میں نماز کے علاوہ کسی دو مری چیز کی نذر مانت اسے ، تب

قاضی عبدالو ہاب کے قال کا منتجہ

مسجدیں روئے زمین کے تمام قطعات سے عدالٹر مجوب فطعانت میں صحیح مدیث ہیں ، نبى مىلى الله عليه وسلم في فرما باكربين عن اكنبى صلى الله عليهُ وسلم كحقمام قىلعات يوسطال كركے إلى بهترن إن قال احب البقاع الى الله الساب قطعات مبحدين ادميغوض قطعات إذاريب وابغفهاالى الله االاسواق ـ · طا سرہے کہ لوگ مسحد وں میں اوائیگی نمازیا وُعاوَں کے لئے جاتے ہیں،لیکن اس مح باوجودائمة اربعه كااتفاق سيحكة تينو مسجدو سك علاوه كسي هم سيدكي طرف سفركزانة وباعن أنواب سبے اور مذقرب الملی کا وسیلرہے، مذاس کومستحب کہا جائے گا، بلکہ با لا تفاق اس سفر کو حرام ترارد با مائے گا۔ جبرما تبکہ ا نبیاء اولیاء کی قبروں کی زیارت کے لئے سفرا فتایاری مائے اور مزادات پرائینے گئے دعایتی مانٹی جائیں۔ نشریعیت محمدیہ میں اس سفر کوحرام كهاكياس ورسول الترصلي الترمليروسلم ف اس مفرس ابني امنت كوروك وياسع، جبكم ال كتاب كو اس فعل كى ومبرس ملعون قرار دياب اورامت محدر كواس برس فعل سے بازر کھنے کی تاکید کی گئی ہے ۔ بس سنت صحیحہ اور علما رامت کے اجماع کا تعاصا بہت كرانبيا بمسلحاركي قبرون كومسجدين مذبنايا حباست والبتة لبعض لوك قبرستان مين نمازير صف کواس بنیاوپر کمروه نہیں مباسنتے، جبحہ ظامرًا زمین پرکوتی نجاست موجود نہیں ہے، ما لانکہ ولم كثانيرهنا لا تتخذ والتسود مساجد دقبول كومسجدين مذبناق كيمنا في سير الميكن صاحب قبرى تعظيم كمييش نظرو بال مسجد تعميركرنا جسسے قبرمبت خانه كى حيثيت اختيار كرمبائ - ابسى علنت سبع ص كے ميثين نظر مدينة السول اوركو فركے فقها نيز شوفع منا کے فقہار محدثین تین سحدول کے عیر کی طرف سفرکو اور قبروں بہیجدیں تعمیر کرنے کو حرام قرارديتي بي، بلكه شارع عليه المعدادة والسلام اسسفركو مرام كهته بين تو اس حابل مفتری انسان کے قول کے مطابق شادع علیہائسلام کویجی انبیار کا مخالف اور معاً ند محما ماستے گا۔ نعوذ بالندمن ذالک۔ البية تينون سحبروں کے علادہ ودسری سحبروں میں بلاسفرنماز و کوعا کے لئے نا عبادت ہے ۔

قرول پُردُعاکے گئے آنا

ا نبیارصلهاری قبوں پراداتیگی نمازیا دُعاکے لئے آناکسی بھی امام کے ہاں سخب نہیں مجے احادیث میں اس سے منع کیا گیاہے ، میکن اصحاب القبور کے لئے دُعاکرنا مقصود مرد تو دعا کے لئے قبروں کی زیارت کرنا مائز ہے میساکہ رسول انڈھل الڈملیدولم بقیع قبرستان میں قبروں کی زیارت کے لئے جا یاکرتے تھے ۔

قبرنبوی کی زیار<u>ت</u>

ارشا دنبوی سے کرمیری قبر کومیگار بنان - ایک زوایت میں میرے گھرکومیلہ کاہ مذبنا ااور جہاں ارشا دنبوی سے کرمیری قبر کومیلگار بنان - ایک زوایت میں میرے گھرکومیلہ کاہ مذبنا ااور جہاں کمیں سے بھی مجدیر در و بھیجہ کے اسے میرے پاس پہنیا دیا جائے گا ۔ ملام کے بارے میں بھی اسی تم کی معدیث آتی ہے ۔ نام رہے کہ جب اللہ تعالیٰ نے مطلقا آپ پرمیلوۃ وکلام بھی اسی تم کونا حکم دیا ہے ۔ آپ کی قبر شرایف کوفا میں نہیں کیا تو در و دوسلام کے لئے قبر شرایف کوفا میں نہیں کیا تو در و دوسلام کے لئے قبر شرایف کو فاص کرنا ممدوع ہے ۔ آپ کی قبر شرایف کوفا میں نہیں کیا تو در و دوسلام کے بیش فی فرار اللہ اور اس کے رسول کی اطا حت سے ۔ فرض کیجئے اگر یہ علماً اس سفر کوممنوع فترار دینے میں خطابہ ہیں ، تب بھی د ہو رکھ ان کا ارادہ ابنیار علیم العملوٰۃ کی الحاص کرنا ہے ان کو ابنیا کا دشمن اور نیالف نہیں مجماع اسے گا ، بلکہ یوگ کا انبیار کے اصام میں جب یہ علماء را ہو صواب پر ہیں ۔ نام بڑا با طنا ابنیا علیم العملوٰۃ کو اپ نے لئے مزوری قرار دستے ہیں ، لیکن جب یہ علماء را ہو صواب پر ہیں ۔ نام بڑا باطنا ابنیا علیم العملوٰۃ کو اپ نے لئے مزوری قرار دستے ہیں ، لیکن جب یہ علماء را ہو صواب پر ہیں ۔ نام بڑا باطنا ابنیا علیم العملوٰۃ کو اپ نے لئے مزوری قرار دستے ہیں ، لیکن جب یہ علماء را ہو صواب پر ہیں ۔ نام بڑا باطنا ابنیا علیم السیم العملوٰۃ کی الم المار المیا المیاب کی المیم المار المین المیاب کی المیم المیاب کی المیم المیم المار کی میں ۔ نام بھروری قرار دستے ہیں ، لیکن جب یہ علماء را ہو صواب پر ہیں ۔ نام بڑا باطنا ابنیا علیم المیم المیم کو سے میں المیم کو سے میں ۔ نام کو سے میں ، لیکن جب یہ علماء را ہو صواب پر ہیں ۔ نام بڑا باطنا ابنیا علیم کو سے میں میں میں کو سے می

والسلام كى موافقت كادم بمبرتے ہيں، تو پھر کھيسے ان کوانبيا رکوام کا دش مضورکيا مباسكا سے۔

قبروں کی زیارت کے بارہے ہیں ام شعبی نخعی ابن سیرین کامسلکٹ

جان باسیتے کہ میں نے مطلقا قروں کی زبارت کو حرام نہیں کہا،لیکن اگرسیکم کرلیاجائے كرميس في مطلعًا قبروں كى زيارت كرمنے كو حرام كتباتو مجھے كہنا پڑسے كاكر برقول اما مشعبى، تخفی ابن سیرین کا سے۔ ان کے اس قول کو دیگر ائم سے علاوہ ابن بطال می بخاری کی شرح بیں ذکرکرنے ہیں۔ ان اکر کو بالا تفاق مبلیل القدر تابعین کی فہرست میں شمار کیا جاتا ہے۔ پس اب ان پاکبازلوگوں کوا نبیار کا دشمن اور نما لعف کیسے کہا مباسکیّا ہے ،جبحدال کی امانت اور دیانت پرتمام مسلما نول کا آنغاق سبے۔ پس ان وفاشعار مبلیل القدرائمة كو دشمن فرار ديينه والا در حقيقت خودا نبيار كا شمن سب ؛ تاسم اسمستلمين اختلاف ك قطعًا كُنجانش نبيي ، بلكه راقم الحروف براعترام كرنے والا انسان ميں العتراف كتاہے كدا وّلاً بنى صلى التَّدعليه وّلم لن قبرون كى زيارت سعمتع فراديا تفاء توكيا جب رمول الله صلی التُدعلیه وسلم سنے اس فعل کو حرام قرار دیا تھا تو اکب بھی انبیار کے دشمن تھے اسلاح تمام وه مثر بیعت جومنسوخ موچنی ہے، اس میں ابنیار کی مخالفت اور ان کی میٹمنی كا قطعاً كچه شائبه دورنبير - ظامر سے كه كسى اليسے مكم كوكىجى نٹر يعت نہيں كہا ماكتا جس سے ا نبیاری وشمنی اور مخا لفت لازم آستے ، بلکہ نمام ا نبیار کرام برایمان لانا ضروی ہے،جبحہ توحیدان کامشترک مستلہ ہے۔ پس نابت ہواکہ ٹمام ا بنیارگا وین ایک ہے جیساکه بعص مدمیت میں نبی اکرم صلی الترعلیه وسلم سے مروی سے ا ٔ ہماراا نبیار کی جماعت کا دین انا معاشو الانبسياء

ایک سہے۔

نیک کرد۔

ديننا وإحد-

ارشا دِ مَداوندی سے :

يا ايهماا لريسل كلوامن للميتات واعملوا صالحا- (موینون) ۵۱

اكثر مفتسين ف امتدوا مده كامعنى ملت وامده نيزدين وامدكياسه -یزارشاد خداوندی سے ا

> واذ اخذ الله ميثاق النبيتين لمالاثيتكم من كآب وحكسة شقر جاءكمردسول مصدق لمعا معكم لتوممنن به ولشنصدينه -

> > دآل عمدان) ۸۱

ا ورحب مٰدالے بیغمبر وں سے مہدلیا كرجب مين تم كوكماب اوردا نازعطاكون محرتمبارے پاس کوئی بینمبرائے جمتہاری كتاب كى تقىدىق كرسے، توتمىي فردراس بر ايمان لاناموگاا در فروراس كى مدد كرنى موكى

لمصيغيبرو يأكيزه بعيزي كحاؤاورمل

پس درج ذیل آیت میں متقد مین پنجبرول کو حکم دیا گیا ہے کہ وہ بعد میں آنے الے أخوالزمال بيغمر برايمان لامتس مبيهاكدمنا خربن لوگوں كيے لئے مفردرى بنے كروہ منقدم تم بيغمرول برايمان لائتس معلوم مواكرمس كام كوايك دفعه شارع عليدالسلام سف مشروع قرار دیا د اگرمهمچراس کومنسوخ مجی کردیا ، تب بھی اس فعل میں مقعبود انبیار کی میلوت نبیب ہے، مبیساکہ اس فعل سے مقصور کیجی شرک نہیں ہوسکا ،اس لیے کہ اللہ پاک نے شرک کوکیوں فرع قرار تهيين دياء اسى طرح انبيار كرام كى ديمنى واليفعل كويمي كمبى مضروع تهين فرايا - البت منسوخ كومنسوخ تسبيم كرتة بهوئتة استدلال كرنا ذمرون بيكرانبيارك بخالعنت اورثيمن کے متراد ف سے، بلکہ البیار کرام کے ساتھ کفر کرنا اور ان کی تکذیب کرناسہے۔

قبری زیارت مقصود احب فبرسد ماکرناسشرک سے

قبروں کی زیادت کے لئے آنے والے بعض ماہل گراہ لوگ اس خیال سے آتے ہیں کہ انہیا صلح کی زیادت کے لئے آنے والے بعض ماہل کی دیارت کرنا ان کے صفوق میں داخل سیے ۔ تمام لوگو ہے لئے قبل کی آن صفروری سیے انہیاء کے ساتھ ایمان لانے کامطلب ہی یہی سیے کہ ان کی تعلیم کی ماہ ان کی ماہ ومنزلت کا خیال مرکھا ماہ نے ۔ جب کو تن زائر انسان عجز و نیا ڈ کے ساتھ ان ان کی ماہ ومنزلت کی وج سے وہ ا بینے گوم م قعسود سے ما نگ تا سیے ، تو ان کی سفارش یا ان کی فدر ومنزلت کی وج سے وہ ا بینے گوم م قعسود

كوبإلىتاسىي.

بعمن فلسفه گزیر ہ تصوفین کا خیال ہے کہ انبیار کرام کی قبروں کی طرف سے زائر انسان پر دعا ماسکتے سے فیضان ہوتا ہے اوراس کا مقصود حل ہوما ہاہے ۔ اگر جا اصحاب قبر کواس کاعلم بھی نہیں ہوتا جیسا کہ سورج کی شعابتی پانی میں نمودار ہوتی ہیں اور پانی کی مط^ت سے دہی شعابیں دیوار پر بھی نعکس ہوتی ہیں ۔ الماسر ہے کہ ان شعاعوں کے منعکس ہے کا سمج کا مرکبے کو بجھ علم نہیں ہے ۔

کین اس مقدسے انبیاء اور بنرا نبیاء کر ام کی قبروں کی زیارت کرنا شرابیت اسلامی کی روح کے منافی ہے ۔ کتاب التدسنت رسول التد میں کو تی نفس مربح موجو دنہیں جس سے استدلال کیا مباسکے کہ انبیاء کرام کی قبروں کی زیارت کے لئے سفر کرناستحب ہے کہ بم زیارت نہرنے والوں کو منکر اور کا فرقرار دیں اگر فرض کیا مباسے کہ نفس مربح تو موجود ہے ، لیکن برخف اس کی مخالفت کررہاہے ، وہ نفس مربح کوجا نتا نہیں یا اس پر فیرنفس کو سے ، لیکن برخف اس کی مخالفت کررہاہے ، وہ نفس مربح کوجا نتا نہیں یا اس پر فیرنفس کو

ترجے دیٹاسیے توایسے تخص کو ابلیار کرام کا مخالف اور ڈیمن نہیں کہا ما سکتا۔ پس ابلیار کرام کی قبروں کی زیارت سے مقصود ان سے کچھ مانگا سیے، توروطیر ومشرکین کا تو ہوسکتا ہے۔ موحدین کا نہیں ، نہ تورسول الترمیلی التّرملی دسلم سنے اپنی امّت کے لیے امس کو

مشروع قزار دیاا ورنه می صحابه تا بعین انترکرام سنے اس کوستحسن قرار دیا اور نه خود بی اس عرض سے انبیا سرکرام کی قبروں پرما صربہوئے۔متوانرمشہورمدیثیں ان لوگوں کوملعون کہررمی ہیں، ہو قبروں پرسجدیں تعمیر کرستے ہیں، تو دہ لوگ کیسے ملعون قرار نہیں وسیئے ما تیں گے جو قبرون والوں نسے و عاین کرتے ہیں اوران سے اپنی ماجنب انگتے ہیں -

ارشادِ خدا دندی سبے ،

ولايام كم ان تتخذوا لملائكية والنبتين ادبابا ايا مركم با لكفريع د

اذانستمسلمون - رال عمول) ۸۰

مشركين كى ين سميل

قسم اقدل و ولوگ جواس لئے اللہ پاک کے ساتھ کسی کو شریب مھمراتے ہیں تاکہ وه أن كى سفارش كرير - ارشا دخدا وندى سبع :

ويعسبدون من دون الله مالا

يضرهم ولاينفعهم ويقولون كهولأ

شفعا وُنا عندالله - (پیش) ۱۸

کہتے ہیں ضراکے پاس ہماری سفارش کرنے والے ہیں -

ان کے بارسے میں ارشا در ابی ہے :

والسلاين انتخلاط مرء وينه

اولياء مانغبدهم الاليق بينا

الى الله ذلفى و زيم ، ٣

اوراس كويرنجى نهبين كهنا جاسينة كرتم فرشتوك

اور پیمبروں کو خدا بنالو عملاجب تمسلمان ہوجیے توكيا لسے زيباہے كتبين كافر ہونے كو كے۔

اوربدادگ ، خداکے سواالیسی چیزوں

كى يرستش كرتيبي جومذان كالجدبكار بي

سکتی ہیں ا در نہ ہی کچھ مجالا کرسکتے ہیں اور

مسم ثانی دلگ موغیرالٹری عبادت کے ذریعیہ الٹر کافرب وصوند تے میں

اوروہ لوگ جہوں نے الٹرکے سواکوئی

ول بنا یا دانہوں نے کہا، ہم ان کی عباد ت

س من كرت بي الكره بم كوالله

کے قریب کر دیں۔

قسم ثالث ، وہ لوگ جرمعبودان باطلہ سے اس شدّت سے مجنت کرتے ہیں جس شدّ سے اللّٰہ پاک سے مجتب کرنی جا ہیتے ۔ ان کے بارسے میں اللّٰہ پاک فرماتے ہیں ،

لیکن قرآن پاک میں جا بحان تینوں تسم کے مشرکین کے نظریات کی تر دید موجود سبع - ارشا د خدا و ندی سبعے ، ﴿ ﴿ ﴿ ﴿

قل ادعوالدندین ذعستم سن کمودکرنشرکو، جن لوگوں کی نسبت تہیں دوسته فلایملکون کشف المسطین کم درمونے کا) گمان ہے ان کو کیھووہ تم ولا تحویلاء اولئے کے المدین یدعو سے تعکیف کے دورکرنے یا اس کے بدل یہ پنتخون الی دبم الوسیلة ایس میں دینے کا کچھی اختیار تہیں رکھتے۔ یہ لوگ

ا قوب ویدجون دهست و یخا خون جن کود فداکے موا) پکارتے ہیں۔ وہ نود عذاب ان عذاب دبك كان محذورًا ، اپنے پروردگاركے بال ورلير در تقرب الماش دبنی اسوا شبل ، ، ه محدورًا ، کرتے رہتے ہیں کون ان میں دخواكل زیادہ

دہنی اسوا ٹبل) ، ہ مقرب دیونا) سبے اور اس کی رحمت کے امیدوار رہتے ہیں اور اس کے عذاب سے خوف

> ر کھتے ہیں ، بے شک تہارہے پر ور دگار کا عذا ب ڈرسنے کی چیزہے۔ نیزارشا دِ مَداوندی ہے ،

قل ادعواالذين زعمتم مسن

كهه دوكرمن كوتم خدا كيسوادمين خيال

كرتيه بوان كوبلاؤوه آسمانوں اورزيين مين ذره بجرج يزكے بجى مالك نهيں ميں اورس ان میں ان کی ترکت ہے اور مذان میں سے كوتى خداكا مدد كارسيسه -

دون الله لا يملكون مشقال ذرة فىالسموات ولانى الارض ومالحم نيهما من شوك ومال منهممن ظهیر دسبا، ۲۲

بارگاه ضراوندی میں جنوں انسانوں کی سفارش

جن وانس تو بارگاه اللی میں ان مشکین کی کیسے دا درسی کرسکت بیں، جبکہ فرشت فیمسلّہ خداوندی کے وقت مبلالِ خدا تی کے ساسنے سرنگوں ہوماتے ہیں اور اسپنے ہوش و مواس کھومیطتے ہیں بجب ہوش میں آتے ہیں توانہیں بتہ چلتا ہے کہ اللہ پاک نے اپنا فیصلہ صادر فرما یا سے ۔بس کیسے باور کیا جاسک ہے کہ وہ امور کے تصفیر سے قبل التّدایک

کے پاس کسی کی سفارش کرسکتے ہیں ، ارشا و نعدا وندی سہے : اوروه داس کے باس کمی کی بسفارش

ولا يشفعون ا لالمين الآحنى وهم من عشيته مشفقون (انبياء 14

نیزارشا دِخداوندی سے ا

وكم من ملك فىالسموات لاتغنى شفاعتهم فيئاالامن بعد ان ياذن

الله لمن يشساء مربيرضيٰ ١١ لنجم)٢٧

نہیں کرسکتے ، مگراس مفس کی جس سے مدانوش ہوا وروہ اس کی ہیبت سے ڈرتے رہتے ہیر اوراسمانوں میں بہت سے فرشتے ہیں جن کی سفارش کی می فائدہ نہیں دی ،گھر اس وقت کر فداجس کے گئے جاسیے جازت

بخشے اور دسفارش کپنند کرسے۔ پس بیمحجنا کدّان پاکباز لوگون کی قبروں کی طرف سفرگزنا بم سب پرفرض سیے بھی مسلمان کلمیگوانسان کے لئتے زیب نہیں دیتا، جبکہ سجد نبوی معجدافضی کی طرف اگرمیہ خر مديمنا وشروع بربير ليكن ارب مركوس من مي وايوب بيري كما تدانيا مسلما ترك في الدان ك آناری طرف سفرکوکیسے واجب کہا جاسکتا ہے ، اس لئے کسی عالم دین سفیز اس سفرکو واجب بی کہا اور مذہبی سخب قرار دیا ہے ، بلکہ سلف معالیین متعدمین مختین سفے اس سفرکو حرام قرار دیا ہے ۔ البقہ متا فرین کے دوگروہ ہیں۔ ایک گروہ اس کی لغیر کسی نفیلت کے جائز قرار دیتا ہے ۔ دو سرا گروہ اس سفرکومنوع قرار دیتا ہے ؛ چنا پخیر فوع مدینیں ، اقوالِ معام متعدمین ، محدثین اس سفرکومعمیت کا سفر کہتے ہیں۔ مرفوع میں مدینی ، اقوالِ معالوہ دیگر مسافر کی طوف شدر مال کرنے سے روکا گیا ہے ۔ اس مدین ہیں ، گروپ نظام مین خرکا لفظ ہے ، لیکن معنی نہیں ہے ۔ مرف سفر کی فضیلت کی نفی ہے ، بالسک غلط ہے 'اس کر کراس میں بنی کا معنی نہیں ہے ۔ مرف سفر کی فضیلت کی نفی ہے ، بالسک غلط ہے 'اس کے کہ ابوسعیہ خدر 'نگی کی مدیث نفی کے مدینے کے ما متن نہیں ہے ، بلکہ صراحتاً نہی کا

قزے الجسعید خدری سے روایت کرتے ہیں کہ ہیں سے اس سے ایک حدیث شنی جس سے مجھے تعجب ہوا، تو ہیں نے ا سے بوٹھا کہ واقع تاتم نے اس حدیث کورول الڈمسلی الڈ علیہ وسلم سے سنا ہے تواہوں نے حواب دیا کہ کیا ہیں آپ کی طرف الیمی بات کنسبت کرسکتا ہوں جس کو ہیں نے آپ سے شہیں سنا ؟ ہیں نے آپ سے سنا آپ فرمائے شعر کے مرف تین سحدوں کی طرف شد مال کو پنرمیں سے آپ سے سنا فرمائے تھے کہ کمبی ميغرستعمل الله مديث المحظريوا عن قزعة عن ابى سعيد قال سععت منه حديثا فا عجبى فقلت له انت سمعت هذا من دسول الله صلى الله عليه وسلم-قال فانول عليه مالم (سمع اسمعة المعت المناف الاالى قلات مساعد سعبدى هذا والمسعد الحام والمسعد الانتلى وسعنه يقول لا تساخوالمواق وسعنه يقول لا تساخوالمواق وما من الدهم الاومعها ذوجها

ا و ذ و چی م منبعا ۔ کوئی عورت لپنے خاوندیا محرم دِشتہ وارکے بغیر سفرندکرسے ۔

مذکورہ مدیث میں مراخناً نہی کا میغندستعمل ہے یپن معلوم ہواکہ پیخف تین مجبل زیر ماریں بھی زیر ہائی کا سیفرندوجیب

کے فیر کی طرف سفر کرنے کو مبائز یا مکروہ کہا ہے، وہ خطاکا رہے۔ المذا جب بسفرنو وہب ہے دمستعب بلکی ممنوع ہے تو اس سفر کو مسلحارا ہل قبور کے عقوق سے قرار دینا کیسے درست موسکتا ہے۔ اس بات کا ذکر کہیں نہیں ہے کہ اللہ تعالیٰ نے اس سفر کو واجب کہا ہوا ور

ابنة بندول كواس كم كرنے كاميم ديا مور

پس اگرکوئی شخف سلمانوں کو ایسے فعل سے دو کتا ہے جس کوسٹما اپن فبور کے تقوق میں اس فعل کو واجب کہا تو اس فعل سے روکنے والوں کوسلمار کا دشمن اور مزالفت کیسے کہا جا اس فعل کو واجب کہا تو اس فعل سے روکنے والوں کوسلمار کا دشمن اور مزالفت کیسے کہا جا سکتا ہے بلاحقیقت تو یہ ہے کہ دینے خص ان کا موں کا حکم دسے راب جب جن کا موں کا حکم ان انبیا اصلاً سے سنے اپنی زندگیوں میں دیا اور جن کا موں سے انہوں نے روکا ، ان سے رول رہا ہے۔ ان کی اتباع اورا لما عت میں پیش ہے ہوت ان کی متابعت اورا لما عت کے بوت سے رسالہ موستے پشخص ان کا دشمن کیسے ہوسکتا ہے۔ مزید برآن ظامیر ہے کہ بیٹی خص اسپنے رسالہ میں علم آکھے اقوال اور ان کے ولا تل کا ذکر کرتا ہے اور برا کہ ہما کہ مسلمان ما لمین اس مفرکو ممنوع قرار و بیتے ہیں۔

امم مالك ا ورديگر علماً

پئس قامنی اخناق ہوکہ مسلسگا مالکی ہے،اس کی جہالت کا اس سے زیادہ روشن ٹبو، اور کیا ہوسکتا ہے کہ مینخص اس النسان کو کا فرکہنے سے بچکچا سرمٹے محسوس نہیں کرتاجس کا نظرتہ امام مالک کے قول کے مرکما بق ہے، ملکہ تقیقت توبیہ ہے کہ کو تن تحض نواہ ما ملی مواغیرالکی

اس کی گمرابی اور جہالت کے لئے کا نی ہے کہ وہ امام الک رحمۃ الدُّعلیکوبدفِ تنقید بنائے ، جب حمر منام اہل اسلام کا امام مالک کے علم وفضل قدر ومزلت پراجماع جب اس میں کچھشک نہیں کہ ان کے ووریں ان جیسا کوئی ووررا عالم دین نرتھا ، چنا نچر ترندی ان جیسا کوئی ووررا عالم دین نرتھا ، چنا نچر ترندی اور دیگر معریث کی گابوں میں نبی مسل النُّرعلیہ وسلم سے مرومی سیدے ۔ آب سے فرمایا ، اور دیگر معریث کی گابوں میں نبی مسل النُّرعلیہ وسلم سے مراسی مجم کی تلاش میں لیوششک ان بیضد بالناس اکباد ملم کے متلاشی بہت جلد ہی علم کی تلاش میں اونول کو مالیت ہوئے تعلیل کے الیکن مدین کے الابل فی طلب العلم خلا بجد دن اونول کو مالیت ہوئے تعلیل کے الیکن مدین کے الابل فی طلب العلم خلا بجد دن

، دون و مع جب ین من ین مارید مالم سے کوئی بڑا عالم نہاسکیں گے اکثر عل کا قول ہے کہ اس عالم سے مراد مالک

بن انس بیں۔

اعلم من عالم المدينة قال

غيرواحدٍ كانوا يرونه مالك

پس اگرامام ما لک اوران کے تلا مذہ کے خلاف بعض اتمة اسلام رائے رکھتے ہیں اوران سے تلا مذہ کے خالفین بر قواس مخالفت سے یہ کب لازم آ آ ہے کہ امام مالک اوران کے تلا مذہ کے خالفین بر کفر کا فتوی لگایا جائے اور انہیں ابنیار علیم انسلام کا دشمن اور خالف کہا جائے ، بلا خیشت توبیہ کے کمشور ائمۃ اسلام ان کے مخالفت رائے نہیں در کھتے ہیں اور معدود سے چند ہوا مُد مخالفت کر رہے ہیں ، ان کا مقصود بس اتنا ہے کہ روضة بنوی کی زیارت کے لئے سفر جائز ہے یا زیادہ سے زیادہ ست جاور اس کے مخالف دائے رکھنے والے اقتر کہ ابنیاں کا تشمن منالفت قرار دینے والے ان کہ کو انہیں منالفت قرار دینے دالے لوگ مذمرف بیکہ وہ جہالت کے مخریق بی ڈو ہے ابنیاں کا شہر منا تلف ہے۔ ہوئے ہیں ، بلکہ انہیں برنسبت مسلما لوں کے عیسا بیوں کے ساتھ زیادہ مما تلف ہے۔

قامنى القصناة اسماعيل بن اسسحاق كا قول

معتفند بالتُرخليفرعباسي كے مهرِ اقتدارين قامني القفاة كے منصب پرفار ادر بين القدر مالم تقے ، وہ اپني كما ب المبسوط ميں رقم طراز بين ؛

مدینۃ الرسول میں رہنے والے لوگ اگر ممبرقباکی طرف مبالے اوراس میں نماز پڑھنے کی مذر مانتے ہیں، توان کے لئے مبا ترہے، اس لئے کہ قبا مبالے کے لئے انہیں مواری کمستعمال کرنے کی مغرورت نہیں ہے ، اس لئے کہ سوائے تین محمدول کے ادکیم سجد کی طرف سواری اکستعمال کرنے ہوتے سفر کی معوبتیں اٹھا نا مبازنہیں۔

امام مالك كاقول

دسائل، کیا رومذنبوی کی زیارت کی ندر ماننا جائزسے ؟

ندر ماننا مها تزنهبی ؛ البقة ان دو نون معبدون میں نوافل ا دا کرنے کی نیت رکھتا ہے یا مسجد نبری اور سے برازین کی دار ماننا ہے ، تو اس کے جواز میں کی دیک نہیں۔ مسجد نبری اور سعد ایلیسا کی زیارت کی نذر ماننا ہے ، تو اس کے جواز میں کی دیک نہیں۔ کا میں میں میں میں میں این اور اس کے نیاز کر میں میں میں میں میں میں میں میں اور اور اور اور اور اور اور اور ا

اگرمپردوسری مورت میں نوا فل اداکرنے کائمبی اراد ہنہیں رکھتا، تب بھی مبا تزسیے اس لئے کہ نذر میں ان میروں کے نام لیسنے کا مطلب ان بین افل الکھنے کومنٹلزم ہے اور دیگر ر

مسا مدکی طرف نمازک نذر ماسننے والے انسان کے سلتے یہی مناسب سبے کہ وہ ان سجوں کی طرف ندحا ستے ، بلکہ وہیں اپنی | قامت گاہ میں ہی نفل ا دا کرسے۔ نیزکسی شہررو منتہ نبوئ

شهیعوں کی قبروں ، بعیج الغرقدقبرسّال ، بیت المقدس کی قبروں آ ڈارابنیا علیم العقلوٰة والسلام کی زیارت کی نذر ما نناصخرۃ بیت المقدس کو پیمنا ، اپ پر با تربھیرنا اس کا لموات

کرنا ڈی الیج کی نویں تاریخ او ہاں و توٹ کڑنا جا نرسیے ، جبھ مبا بل تسم سے لوگ اس کو عبا دست تعبق *رکوستے* ہیں ۔ البقہ مسلما نوں کا قریب سے قبرستان کی زبارت کرناا ور ان

کے لئے استغفارا ور دعاکرنا ندمرف یک مائزہ بے بلکمت بہے ، بہی قبرستان
بستی کے قریب ہے اور وہاں پہنچ کے لئے سواری وغیرہ کی مفرورت بہیں اور اگر
قبرستان کی زیارت کے لئے سفرافتیار کرتا ہے قویسٹرنا مائزہ ہے اور الیسے سفریو
نی زقد کرنا بھی مائز بہیں۔ البقاب مرالبرنے ہیں سی دوں کے ماسواکی طرف سفر کو
مائز قرار دیا ہے۔ اگر چ نذر مان نے کی مورت بی یسفر تقرب اللی کا با عن نہیں۔ امام
مالک کے اکثر تلا خرہ اس مفرکو حرام قرار دیتے ہیں۔

قاضى عياض كاقول

ندر تطوع کی شکل میں بھی تین سعبروں کے ماسوئ کی طرف سفرکرنا جائز نہیں۔ امام ابوالولید باجی سے مسعبر قباکی طرف سفرکرسنے کو معبی ناجائز قرار دیاسہے۔

قامنى عبدالوباب بغدادي مالكي كاتول

بیت الحرام سعد بیت المقدس کی طرف حانے کی نذر ماننا درست ہے اور اس کا ایفا صروری ہے ، نیکن مدینہ الرسول اور مدینہ بیت المقدس اور مکہ کمرمہ کی طرف مبائے کی نذر ماننا مبائز نہیں ، اس لئے کہ نثر عااس کو عبادت نہیں کہا جاسکتا۔ البتر اعتمان یا تعلیم و تعلم کی نیت سے جانا اور سفر کونا درست ہے، اس لئے کہا حتمان اور شفر کونا درست ہے، اس لئے کہا حتمان اور تعلیم و تعلم کے نیز بڑھنا کا ذر مبادت ہے معلوم ہوا کہ دول اور عملی التر علیہ وسلم کی قبر شریف کی طرف سفر کونا اور جانے کی نذر ما ننا جائز نہیں۔ اکرم صلی التر علیہ وسلم کی قبر شریف کی طرف سفر کونا اور جانے کی نذر ما ننا جائز نہیں۔

ابوالقائم بن ملاب كا قول

تغریع میں سبے مدینیۃ الرسول یا بیت المعکمیں نمازاداکرنے کی نذرما ننا ما تز محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ ہے اور اس کا ایفا منروری ہے اور تین سجدوں کے ماسواکسی بھی سجد کی طرف سفر کرنے کی نذر ماننے کی صورت میں اگر سے قریب ہے ، سواری کی منرورت نہیں ہے تو سجد میں جاکر نمازا داکر کے نذر کا ایفا کرے اور اگر سجد دور ہے اور سواری کے بغیر بینچنا مشکل ہے تو بچر ندجائے دہیں اپنی اقامت کا میں نمازا داکر سے اور بوم نذر سکے مذبورا مور نے کے اس پرکوئی کفارہ یا جرمانہ نہیں ہے ۔

محتدبن مواز كاقدل

مدینة الرسول مدید بیت المقدس کی طرف نماز کی نیت سے سفر کرنامت میں ہیں ۔ ابن بغیراور علاّمہ قیروانی اور کیکا بھی ہی توقی جمہور مالکیہ اس سفر کو حرام قرار دیتے ہیں ۔ ابن بغیراور علاّمہ قیروانی اور کیکا بھی ہی نوائی پس معلوم مواکدا ما م مالک اور ان سے اتباع اس بات کے قائل ہیں کہ اہل مدید کے لئے آنا جائز نہیں جبحہ اہل مدید کے لئے آنا جائز نہیں جبحہ اہل مدید کے لئے آنا جائز نہیں جبحہ اہل مدید کے لئے قبر بوی اور بقیع الغرق قرستان کی زیارت کرنا جائز ہے ، اس لئے کہ رول اکرم صلی المدّ علیہ وسلم بقیع الغرق قرستان کی زیارت فرمائے اور سرم بفتہ قبا میں کھی ہواری پرا در کھی پیدل تشریف ہے مباتے ۔

ابل مدینه کے لئے قبر نبوی کی زیارت کامکم

ابل مدین کے بنے شرعًا ما ترنہ ہیں کہ وہ تجرۃ عالمتہ صدلیقہ کے باہر کھڑے ہو کہ بہور ہو تہرہوں کی زیارت کرتے ہوئے سلام اور کو عاکریں۔ نام رہے کہ سابقین اوّلین مہاجرین والفسائر خلفار راشدین اور دیگر ملیل العدر صحابہ کرام جسب نمازوں کی ا دائیگی کے سلے مجنوی میں آتے تو مذقر نبوی کا گرخ کرتے اور نہ وہاں وقوت کرتے ، وہ مجنے تھے کہ اہل مدین کے سلتے جب ماسوی تین مساحبہ کے کسی مسجد کی طرف سفر کر ناجا تو نہیں، توقہ نہوی کی ٹیار

کوکیسے مشروع قرار دیاجا سکتاسہے کسی سے بڑھا نہ خداکی زیارت سسے قبر نبوی کی زیارت كومهتر فترارنهبين مباسكتا بينا بخدام ماكك إورد ككر مبليل القدراتمة ابل مدييز سكےسلتے قبرنوی بروقون اور سلام کو مکروہ حاست بیں معابر کرام کاطرز عمل خلافت راشدہ کے دوریس يمقاكدوه محدنبوي ميس نمازا داكرك اسبة كمرول كيطرف لوث مات مقد اس طرح ابوبجو عمررمنی النُّرعنهما وفات یک نمازکی اداتیگی کے سلتے حاصر ہوستے دسپے اورمثمان رصنی الله عنه محصور موسلے تک مسعد نبوی میں حاصر بوتے رہے اور صرت علی رمنی الدور جب يك مدينة الرسول مين مقيم رہے مسحد نبوى ميں نمازى ا دائيكى كے لئے اُت سے ب ان کے علاوہ دیجر معالب کرام تا بغین عظام بھی سحیر نبوی بیں نمازیں ا داکرتے رہے لیکن ال میں سے کوئی النسان مبی نماز کی اوائیگی کے علاوہ تغربنوی پینماصری فینتے اوز ہے ہاں كھڑسے ہوكردعا كرستے ۔ اگروقوف كرنا جا يزمونا توشيع رسالت كے برپرواسنے وال حاحزى دینتے اور کثرت کے ساتھ آپ کی قبرشرلیٹ برزارّین کا آپانیا بندھا رہتا اور *کتب میر*توالع میں اس کا تذکرہ ملی الیکن سیروسوانح کی کی بیں خاموش ہیں ۔ ان میں بہ تذکرہ نہیں ملیا۔ لبنة امام مالك فرمات ببن كرجب كوتى شخص سفرسه مراجعت فرمات تواس كصلة قرِتْرلیف پر وقوف کرناا ورسلام کهنا ما تزیہے، مبیراکدمبرالٹد بن عمررحنی الٹریز کالمرزمل اس کشهاوت پیش کرر **ا**ہے۔

قاسنى عياض كاقول

تاسی عیاض معبسوط سے امام مالک کا قول پیش کرتے ہیں کہ اہل مدیرہ جب سحیر نہوی میں داخل ہوں تو ال کے لئے قبر نبوی پر حاضری دینا خروری نہیں ، البرة جولوگ دورُد (از سے آئیں ان کے لئے قرنبوی برما ضری دینا اور سلام کہنا جا تزسیعے ۔ عبدالٹرین عمرضی الٹر عنہ بحب سفرسے والیس وطن لوسٹے ، توقیر نبوی اور قبرشیخین پر ماصر ہوکم الستالام علیک

محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

یارسول النّدزالسّدلام علیک با ا با بجر السّلام علیک یا ابت کہتے ۔ چنا بخیر اس واقعہ کوقاعنی اسماعیل بن اسماق کتا لِصِلوۃ علی لبی بیں سند کے ساتھ لاتے ہیں ۔

ا عقواص، امام الک کا بامرسے آنے والے لوگوں کے لئے قرشرلیف برمانی کا کا بامرسے آنے والے لوگوں کے لئے قرشرلیف برمانی کا مان ان کے اس قول کے منافی ہے جس کا منشا بہ ہے کہ قرشرلیف کے لئے سفر کرنا جا تزنہیں ۔

جواب : وہ لوگ بوسحدنبوی کی زیارت کے ملتے سفر کرتے ہیں ، ان سے لئے قبر نوی پرما منربیونا اورسلام کهنا ما تزسید، جیسا کدان کامسحدقبا میں مانا بقیع العرق قبرشان ادد پهدارا مدکی قبول کی زیارت کرنامستحب سید، لیکن اگروه لوگ بقیع قبرشان شهدا مد بإمسمد نبوی کے علاوہ دبگرکسی مقام کی زیارت کے لئے سفرا ننتیارکریں توان کاسفرکنا شما م با بینبی، ال اگرکو ت خص مدینة الرسول كاسفرخ رت باطلب علم يكسى اور مقعد كے پسیش نظر کستاسیے، تواس کے لیے مسحد نبوی میں مانا ، ور قبر بنوی پر^{ی من}ری دینا *اورسلا*کم كمنا ما تزيع اوريه رخصت ما مرسى آف والے لوگول كے لئے سبے ، ابل مدين كے لئے نہیں مبیاکہ با ہرسے آنے والے لوگول کے لئے نفل نم زکا سحد نبوی اور سجد الحسسرام میں ا داکرنامستحب سیے ،لیکن اہلِ مدیہ سے گھروں میں نوافل ا داکرنامستحب سیے ۔ چنا کندا ما مالک فرماتے ہیں کہ با سرسے آنے والے توگوں کے لئے میرے نزدیک به نسبت گفروں کے سے بنوی میں نوافل ا داکرنا زیادہ محبوب سیعے ، اس کی ولیل بیسیے کمسحد نبوی میں ایک نما کا تواپ مزار نما زکے برامرہے اور مدینۃ الرسول کے باشنگ فمن نما زمیشه مسینبری میں ادا کرتے ہیں۔المنزاان کے لئے افعنل بیہ ہے کہ وہ نوامنل گھروں میں دو کریں مجیح مدیت میں ہے فرض نماز کے علاوہ نفل نماز کا گھریں اداکر فا افضل ہے۔ نیز فروا یا کہ اے لوگوئم عور توں کو مسجد میں نماز اداکر سفے سے مذروکو ، اگرمیان کے لئے گھروں میں نماز پرمعنا بہترہے اور بامرسے آنے والے لوگ فرص نمازوں سکے

ادقات کے علاوہ فارخ وتنوں میں نوا فل کٹرت کے سائقد مسید نبوی میں ہے اداکریہ میساکہ مسجد الحرام میں بام سے آئے ماتھ میساکہ مسجد الحرام میں بام سے آئے ماتھ مواف کرنامستحب سے۔ مواف کرنامستحب سے۔

إبن القاسم كاقول

بابرسے آنے والے لوگوں کے لئے میرے نزدیک برنسبت اوا فل کے طواف كرنا زياده محبوب بيے، اس ليے كه ان كومروقت كرنا ممكن نہيں، جبحرا بل مكم كے ليے تمام اوقات بسطوا ف كرنامكن سے - البق بسكيمي ابل كمة بام مفررچائير، تووايس مطن بہنچنے پرعمرہ اداکریں ۔عبدالتُربن عباس فرما یاکریتے متھے واسے الی مکہ تہا راعمرہ بیت التُدکے طِواف کرنے کا نام ہے۔ امام احمد بن منبقَ عبدالتّٰہ بن عباس کے قول کے مطابق ا ہلِ مکّر کے علارہ لوگوں بڑھمرہ کو داجب قرار دیتے ہیں ۔عبداللہ بن عمریتے مننول ہے کہ وہ سفر ہلتے وقت عمرہ کے دجوب کے قائل نہیں تھے :العنة سفرسے والیبی برعمرہ اداکرتے تھے ظامرہے کہ بیخفس مفرسے والیں مکر مکرم آیا ہے اس کے لئے بعض اعمال ستحب بیں ہودوسرے لوگوں كے ليئے مستحب نہيں ہیں: بنانچ بنی اكرم مىل النّدعليه وسلم سے منقول سبے كەسفرسىيے دالىيى بر آپ مجدنوی میں دو کعت نفل اداکرتے ایکن جب سفر پر روانہ ہوتے اس وقت مسجد نبوی میں نوا فل ا دا کرنے کا ذکر نہیں ہے جیسا کہ با ہرسے آنے والے لوگوں کے سلتے طواف قدوم میں رمام تحب سے اس انتے کہ نبی مسل الله علیہ وسلم اور آپ کے محاب كرام في عمرول كي ا دائيجي اورحجة الوداع ميں ر مل كيا، ئيكن بچونكم ا بِل كمرّ فيطوات قدوم نہیں کرناسیے ،اس لئے ان کے طوات میں رمائیمی نہیں سے بیسا کہ طواب یں اضطباع مبهور محدثین الوصنیف، شافعی، احد کے نزدیک متحب ہے، لیکن ا مام مالک اس کوسنت بحی قرار نبی دیتے، اسی طرح عبدالله بن عمرسے جومنقول سے کدوہ - ب العين احراميم عياور ك وايش كنائك كوبش ك فيج سن وكال كوبلي مخد عي بروان .

محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

111

سفرسے واپس آتے، قوبی اکرم ملی الدعلیہ وسلم کی قبر شرایت پر وقوف کرتے اورسلام
کہتے تواس کومسا فر کے ساتھ ال کیا ماستے گا کہ وہ سفرسے والبی پر آپ کو تحییہ ارسال کرا ہا
سبے میسا کہ طواف قدوم کانا م طواف تحقیہ ہے اور پھو طواف میں رمل اور اضطباع میں میں این اور اضطباع میں میں مواف تحقیمی مستیب میں، لیکن ابل مکر کے سلتے طواف قدوم، رمل، اضطباع طواف و داع کچھی مشروع نہیں۔ بیس مسافر دی اور مکر بین قیم لوگوں کے در مبیان احکام میں ہو تفریق تابع میں اور اس کے ماعد موجود ہیں، جیسا میں اس کے ساتھ ساتھ امام احمد بن صنبل اور دیگر ائر قدرج ذبل مدین سے استدلال کرتے ہیں.

حدميث ر ّدالتُّدعلَّى <u>وحي</u>

ہیں۔ بس میں اس کے سلام کا جواب دیتا ہوں۔

یر روایت اگر چالو دا قد میں ہے، لیکن مسلم کی شرط پر سبے۔ اس کی سند میں الو مخرمید

بن زیاد ممتلف فیہ را وی ہے۔ ابن معین سنے اس کو سعیف کہا یا نسانی سنے کہی تقہ کہا اور
امام احمد سنے بھی صعیف کہا ۔ امام مالک احمد بن منبل، دیگرائمۃ عبداللہ بی مرکح
فعل کو حجت گردانتے ہیں، جبکہ امام احمد الو دا قد، ابن مبیب اور دیگرائمۃ نے الوم بریر ملک
دس صدیبت سے بھی اشد من کہا ہے۔ اتمہ کے اختلاف اوران کے دلائل کی تفسیل اپنے مقام پرذکر
کی مائے گا۔ بیس اسل قصود یہ ہے کہ امام مالک اور ویگرائمۃ متفق ہیں کہ بین سے فرائے

ماسوی نامی ناکوئی شهر بلکه مدینته الرسول اور روضهٔ نبوی کن زیارت کی تیت سے سفرکر نا محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

نا ما بزّ ہے۔ عام مسجدیں مجبم حدیثِ نبوی بیسسندیدہ مقامات بی، جب ان کی طرف سفر کرنے کا مازے نہیں و قبرول کا زیارت سے ملتے سفر کرنے میں فنیلت تو کھا ٹر مُامنٹو عقاب ہے۔ نیزتمام ائر اس بُرتنغق ہیں کہ اگر کو ک^{ی شخ}ف مدینتہ الرسول میں یا شہر کہائییع الغرقد قبرستان كي زيارت كي ندر مانما سبع الواس كونترعًا بيندراور ي نهيل كرني ما سيء . بلکه امام مالک تواس نذرکومعصیت کی نند قرار دسیتے ہیں، لیکن اگر سمیر نبوی میں نماز ا دا کرسنے کی نذر ہا نتاسیے، تو اس صورت میں بھی نذر کا ایفا منروری نہیں؛ چنا پنچہ ا مم الومنيف عدم وجوب اليفاك قائل بي اورامام مالك، احمد بن منبل وجوب ك طرف كقة بين البي ائمة كرام كامسلك صيح حدميث سے موا فق سبے كه مدينة الرسول كى طرف مجد بنوی کی زیارت اورنما زکی ا دائیگ کے سلتے جا ناجا نزا وربقیع قبرستان عام قبری ا وردهم نبوی کی زیارت کے لئے مانا ، م رزسیدا ورجن مقامات کی زیار بالفزال مدیز کے لئے مستحب ہے ، جب ان کی زیارت سے ابل مدینہ کے غیرکو منع کر دیا گیا ہے ، تو پھر رہ نبوی جس کی زیارت کرنا ابل مدریز کے سلتے درست نہیں، توخیرا بل مدینہ کے سلتے اس کی زیارت کے لئے سفر کر نا بالا و لیٰ ناجائز مہوگا۔

يول للرصل الله عليه وسلم كخصوصيات

الڈ پاک نے انخصرت صلی الڈھلیہ ہم کے اکرام واحزام کے پیش نظرآپ کو دیگر تمام ا بنیار پرفضیلت عطا فرائی ہے ادر چندخصوصیات اور امتیازات سے لؤاز ا سے ؛ چنا پخر سرسلمان پر خروری ہے کہ وہ ندصوف بیرکہ آپ کی رسالت کا اقرار کرے ، بلکہ آپ کے ساتھ محبّت وٹوقت کے رشہ کومصنبوط تر بنا تا ہوا دین اسلام کے جملہ دامرو فوای میں آپ کی اطاعت کرے اور آپ کے ساتھ رشتہ موالات کو اتن گرا کورے ، یمبال تک کہ خواہ روئے زبین کے کسی بھی مقام میں آباد ہو ، وہیں سے آپ پیسلوٰۃ وسلام سے جھے کا کہ خواہ روئے زبین کے کسی بھی مقام میں آباد ہو ، وہیں سے آپ پیسلوٰۃ وسلام سے جھے کا

سلسلہ جاری رکھے اور پانچوں فرض نمازوں کی ا ذان کے بعد بارگاہِ خداوندی میں آپ کے لیتے ورسیا کے عطبیہ کی دُیما کرنا رہے۔ نیز آپ کے فضائل ومنا قب اور مما مرکا ہیشہ تذكره كرتارسيد اورتمام ونياكواس بات سندروشناس كرا وسن كدابل زين برتما بعمول سے بڑی نعمت محدرسول الندمیلی الندعلیہ وسلم کورسول بناکر بھیجنا ہے ۔ اس لیتے تمٹ م مسلما اوں کا فرص سے کہ وہ اپنے نفس پریمی آپ کومقدم کھیں اوراس وقت مک کوئی شخص مومن منبيه مجمعا حاسكتا ، جب كك كروالدين اولا دتمام لوگوں سے زيادہ ملك لينے نفس سے بھی زیادہ الٹرکے رسول مل الٹرعلیہ وسلم سے مجتب نہ رکھتے۔ پس آب سے مجل حقونی احترامات اس بات کے متقاصی ہیں کہ نصرف بیکصلوۃ وسلام کے ساتھ آپ ک قبرترلیب برماضری دی مائے ، بلکه تمام روے ربین جہاں بھی مسلمان آباد موں وہیں مصلسل آب رمِيلوة وسلام بميجة رببي ادر قطعًا حائز نبي كرروضة رسول بربيني كروسكون قلب اوزخشوع خصنوع سے سانھ آپ پرصلوۃ وسلام کا مدیمیٹ کرے اورا بیے گھریں اسعقیدت اوراس ام کوملحوظ نا طرن رکھے، جبیسا کہ عام طوربرعوام النّاس جسمجت بنقیت کا اظہاررومنہ رسول کے سامنے کرتے ہیں دوسٹر مقابر بین نظر دیکھنے میں نہیں آتا،جب ا بنے گھروں میں موتے میں معتقت مین نگاموں سے اگراس کا مائزہ لیا مائے تومیور مال آپ کی عظمت شان میں کو تاہی کے مترادن ہے اور وہ انسان بڑا بدنھییب کمزور ایمان والاہے جواس طرح کے فرق کوروا رکھتا ہے۔ گویاکا س تخص منے استرام رسول ہیں جب وه منظر نهیبش کیا جرآب کی قبرمتر دیف پرپیش کرتا ہے تووہ السان شرعًا ایک ابب کے ترک سے گنا مہگار یا ایک ستحب سے ترک سے ور مات میں نقصان کا مرتکب قرار دیا مات كا اور سشخف كوالنرباك لے رسول النام الله عليه وسلم كى محبّ مرشارى سے نوازا ہے۔ وہ جس طرح روضة رسول كے سامنے تعظيم و تبجيل ميں كوتابى نہين كمانا. اسى طرح اينے شہر گاقر ل بستى ميں آپ كى ثناً وتعربيف ميں رالمب اللسان رستاسيے اور

آپ بوسوۃ وسلام بھیجتا رستا ہے۔ دونوں مالتوں بیں کسی شم کی کوتا ہی نہیں کرتا۔ یہ انسان کس قدر خوش شیمت سیے اور اس پرالٹر پاک کامہمت بڑا احسان سے۔ کون سے جس کے قلب میں رسولِ اکرم مسلی اللّٰہ علیہ وسلم کی محبّبت صحابہ کرام اور تا بعین عظام سے زیاوہ بولیکن ان کے بارے میں کسی ناریجی ثقالہت سمے ساتھ نہیں کہا ماسکتا کہ آپ کی قرٹریین کے ساصنے بہنسبت دور ہوسنے کے ان کی مجتب میں امنا فرہوا ہویا آپ کی ملو^{ین} ونوصیف میں انہوں نے مبالغہ آراتی سے کاملیا ہوسی کستے ان کا آپ کی قبرشریف پر آناجاً، كبم كبهي ببإنا تنا . وسمجھنے منے كرآب كے مقو ق وآداب كو سرِ مبكر برمسادى ركھناما ہتے . اوراس میں کونا بی نہ آئے ، وہ ما تر نہیں مجھتے تھے کہ آپ کی قبر شریف کومیلہ گا ہ بنا یا ما اوراس کوخصومیتن کے سابھ مزارک حیثیت دی مائے، دہ سردقت نوفزدہ ^رسب<u>تے تن</u>ے كمبيرا مصورت ميں اسلام كے دائرہ سے نكل كرشرك اور قبر ريست نہ بن مائيں اور ا ب ک قبرمبارک بت کی مینیت مذاختیار کرمائے ، وہ مجھتے تھے کہ آپ کی قبرمبارک شعا ترالله اورمشا عرج کی حیثیت نہیں رکھتی، جبحہ مشا حرج کوعبا دت کے ساتھ خاص کردیاگی سبے ریقینُاان مشا حرکی تعظیم ا ور و پل ماصّری دسینے سسے ایمان میں اصّا فہ سوتاب، سيكن پونكه استرام رسول النُرصل النُرعلية وسلم تمام أمكنه مين مساوى سهاس لتے اس میں فرق روار کھنا شرعًا مِا نزنہیں۔ پس مِرشِّحص آپ کی فرِرشربیف پرمامنر ہوکر آپ کنعظیم زیاده کررما ہے۔ اس کالاز می نتیجہ سنگے گاکہ وہ اسپنے شہر میں آلخصنتِ کنعظیم میں کوتا ہی کر را بہے۔اس کا بطرز عمل آپ کی ظلمت وسیادت کے منا فی سے صحابہ کرام میں سے صرف عبداللہ بن عمر متفرد میں کدوہ آپ کی قبر مبارک پرمامنر ہو تے ، سلام مولوٰۃ کا ہدیہ بھیجتے ۔ دیگرمحا برکرام کاعمل ان کے ضلاف سیے ۔ بہاں تک ان کے والدفحرم حفرت عمريضى الترعنة ان كے مخالف میں ـ كون نہیں مانا كرمضرت عمر رضى التّرعة اسبے بیٹے عام تر بن مرسے کہیں زیادہ حقوق مصطفے کی نگہداشت کرنے والے ہیں ادر تدیّن وتقدس میں اونجا

درم رکھتے ہیں اورجب لوگول کو دیکھا کہ وہ قصدُ ااس مقام پرنماز پڑھنے کے لئے آتے ہیں، جہاں آلخفنرت نے اتفاقا نمازا دا فرمائی، توآپ لوگوں کو وہاں مانے سے روکتے بي اور شجره بيعت الرضوان كوبيخ وبن سے اكھا الوسيتے بي تاكه و مملكا كا كي شبت س اختباركرماستے۔

زیارت قبور کن تقاصد کے تحت میشر^{وع} ہے

يه امرتوفيصله شده سبے كرقبرول كرزيارت كے ليتے سفركرنا مائز نہيں السبعة بلاسفر قبرول کی زیارت کرناما متوا ورستحب سبے ۔ زیارت کرنے سے مقعد متیت کے لیتے مُغفرت کی کو ماکر ناحصول ٹواب اورعبرت ماصل کر ناسیے ۔

انبیار کی قبروں کی زیا رت کرتے وقت زائرین کامنواضع ہوناا وران کی خلست کا تعتوركمرك استسلام وانقباوكا والهانه اظهاركرنا سرنگوں بمونااوران سے ماہ دحلال کے يبش نظران سيصهول بركت كى تمناكرنااس خطره كى فمّا دى كرّاسيه كهبير اس سي شرك *كے عمیق گڑھے* میں رنگر حابئیں ۔ البتہ بعض اوقات زائرما حب قبرسے زیادہ خطرے ^االا مِوتا بعص مبيها كه رسول التُدميل الشرعليه وسلم ابلِ بقيع شهداً أحدا ورابني والده سعة زياد ° عظمت والبے تھے، بیکن ان کی قبرول کی ڈیارت فرماتے اوربعض صورتوں میں زائر کا مقام صاحب قبرسے کم ہزا ہے ۔میجمسلم میں سے کصحا برکرام سابقین محامہ ہوکہ ان سے يقينًا افعنل عقد، ان كي قرول كي زيارت مزمات اوركهة ،

مومنوںمسلما اوٰں کی ان آبا و اوں پر التلام عليكم احل الديار من المعومنين والمسلمين واناانشاؤلله مكم للاحقون نستال الله لناولكم

العانسية-

سلام ہومِشتیتِ ایزدی کے تحت ہم بھی ان سے ملاقات کرنے والے ہیں بہم الٹرپاک ان كصلت اوراسينے لتے عافيّت كاسوال

1-

دوسری مدیث میں سبے کہ اللہ پاک ہمارے متقدین اور متاخرین پررحم فرائے ایک روایت میں بدالفاظ ہیں کہ لیے اللہ توہم کو ان کے اجرسے محروم نہ فرمانا اور ہمیں ان کے بعد فتنے میں مبتلا نہ کرنا اور بعض او قات صاحب جنازہ افعنل ہوتا ہے جمیسا کہ بنی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم تمام مخلوق سے افعنل ہیں۔ آپ جب فوت ہوستے توصحا برکوام نے مختلف اولیوں میں آپ کا جنازہ اداکیا۔ اسی طرح ابو بیر، عمر صنی اللہ عنہما ان صحابہ کرام سے افعنل منے حنبوں نے ان کا جنازہ اداکیا۔

رُوضة رسول کی زیارت کامکم

عام سلمان قبرون کی زیارت کے وقت زائرین کے دلوں میں اہل قبور کے لئے مغرت کی دعائی رفبت زیادہ موجاتی ہے، اس لئے عام قبروں کی زیارت کی مبائے لیکن قبر نبوی کی عظمت درفعت ہج دی جہت زیادہ سے کرنیارت کرنے سے زائرین کے دلوں میں زیادہ عظمت رونما ہو، اس لئے آپ کی قبر کی زیارت کومشروع قرارنہیں دیا اورائمۃ کا اس براتفاق ہے کہ آپ کے رومنہ مبارکہ پرنما زبنازہ دادا کی مبائے، جب عام قبروں پرنما زبنازہ اداکرنے کی شروعیت کے بارے میں انٹم کا اختلاف ہے لیکن چرخفس آپ کی قبرشرایف کی زیارت اس لئے کرتا ہے کہ وہ آپ کوالٹہ پاک کے موال میں التجابی کرتا ہے۔ وہ تحفص لیقیناً مشرک ما جت روا مجمعتا ہے اور آپ کی بارگاہ میں التجابی کرتا ہے۔ وہ تحفص لیقیناً مشرک ماج یہ بہنا ہے کہ کو چھوڑ کر آپ کے معاصف دست سوال دراز کیا ۔ اس نے اللّٰہ پاک کوچھوڑ کر آپ کے معاصف دست سوال دراز کیا ۔ اس نے اللّٰہ پاک کوچھوڑ کر آپ کے معاصف دست سوال دراز کیا ۔ اس نے اللّٰہ پاک کوچھوڑ کر آپ کے معاصف دست سوال دراز کیا ۔ اس نے اللّٰہ پاک کوچھوڑ کر آپ کے معاصف دست سوال دراز کیا ۔ اس نے اللّٰہ پاک کوچھوڑ کر آپ کے معاصف دست سوال دراز کیا ۔ اس نے اللّٰہ پاک کوچھوڑ کر آپ کے معاصف دست سوال دراز کیا ۔ اس نے اللّٰہ پاک کوچھوڑ کر آپ کے معاصف دست سوال دراز کیا ۔ اس نے اللّٰہ پاک کوچھوڑ کر آپ کے معاصف دست سوال دراز کیا ۔ اس نے اللّٰہ پاک کوچھوڑ کر آپ کے معاصف دست سوال دراز کیا ۔ اس نے اللّٰہ پاک کوپھوڑ کر آپ کے معاصف درانہ ہوں اس نے اللّٰہ پاک کوپھوڑ کر آپ کے معاصف درانہ ہوں کا داکھوڑ کر آپ کے معاصف درانہ ہوں کیا کہ کوپھوڑ کر آپ کی معاصف در ہے ہوں کہ کا خلاصات کیا کہ کوپھوڑ کر آپ کوپھوڑ کر آپ کے معاصف درانہ ہوں کیا کہ کوپھوڑ کر آپ کے معاصف کی کوپھوڑ کر آپ کر کوپھوڑ کر آپ کوپھوڑ کر آپ کیا کیا کیا کوپھوڑ کر آپ کر کوپھوڑ کر آپ کر کوپھوڑ کر آپ کوپھوڑ کر آپ کر کوپھوڑ کر آپ کوپھوڑ کر آپ کوپھوڑ کر آپ کر کوپھوڑ کر آپ کوپھوڑ کر آپ کر کوپھوڑ کر آپ کر کوپھوڑ کر آپ کر کوپھوڑ کر آپ کر کوپھوڑ کر آپ کر

ما احد اصبر على اذى يسمعه الترسعة زياده كسى تكليف كى بات سنن

بركوئن تنحف زياده مسبركريني والانهين سبخ لوگ الند کے ساتھ شریک عمراتے ہیں۔

ده دیعا خیهم و بوزنهم -پچریمی النّد پاک لوگوں کو تندرستی عطا کر تاسیے اور انہیں رزق م پنچا تاسیے -رسول اکرم مسلی الٹدعلیہ وسلم کی عظمت ذیل کی و آیتوں سے فل ہر ہور ہی ہے، مبکن اس عظمت کا تقاصنه پهنهیں ہے که آب کوخداسمچه لیامباستے۔ ارشادِ خدا دندی ہے:

نعداا دراس کے فرشتے ہیمبر پر دُروہیجے آنَ الله وملتُكت يصلُّون على ہیں۔مومنو ہتم بھی پیغمبر رور و دا ورسلام البنى ياايتهاالذين أسنواصلوا بجيجا كرد-عليه وسلموا تسليما ـ راحزاب)٥٦

نبية فرمايا،

من الله يجعلون لمه يَمَّأُ وشُوبِيكا

بے شک وہ لوگ جوالٹدا وراس کے ول اتّ الـذين يُؤذون الله ورسوله كوا يذايه بجاتے ہي، ان بردنيا اور آخرت لعنهم الله فحالدّ نيا وا لأخولا-میںالٹرکی لعنت ہے۔

اہل برعت کا حال

ابل برعت المداوس ك رسول صلى الترعليدوسلم كوا يدابه بارسي بين اورعقوق مصطف میں کو تا ہی کررہے ہیں۔ اس کے با وجودو مجھتے ہیں کہ م تنظیم کرتے ہیں مبیالحہ عيساني ميسح عليدالسلام كم تعظيم مين غلوا فتنيار كركے كمراه بوگئے - اسى طرح ابل بدون مجى آپ كافظيم مين مرشرع سے متجاوز مركرسدسے را مسى بعثك فيح بين دهم يعسكون اخهم بعسدنون صنعااسی طرح وه لوگ جوانبیار ادرادلیسار کی فبرول کا چ کرتے ہیں اور مزارات بہتائج کران کی عبارت کرتے ہیں اورالٹندیاک سے دعا ما نگھنے کی طرح ان سے فریا درسی کرتے ہیں اور اپنی ماجتیں ان کے سامنے بیش کرتے ہیں۔ ان کومشرکین کی محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ فہرست میں شمارکیا مائے رجب یہ لوگ وعویٰ کرتے ہیں کہ مہیں ان نیک لوگوں کے ساتھ التُدباک ساتھ میں کہ مہیں ان کے ساتھ التُدباک کی طرح محبّت کا اظہار کر سہے ہیں، مالانکہ ان کے لئے ضروری تھا کہ وہ ان نیک لوگوں

کے ساتھ رضائے المی سے معمول سے بیش نظ مجتب کرتے۔ ارشادِ مداوندی ہے : وسن اصل مین یدعو سن دون اور اس شخص سے بڑھ کرکون گمراہ ہو الله من لایستجیب له الی بوم سکتا ہے ہوایسے کو پکارے ہوتیامت تک

المقيلة وهم على المنافية المنافية ومن المنافية ومن المنافية المرال كوال ك

(احقات) ۵ پیس النّد یاک کی رضا اورنوشنودی ماصل کرنے کی محبّت کامقصد بریمونا میاسیتے

کر بالذات الله باک مبوب سے اورا نبیار اولیاء مالین سے اس سے مبت رکھا سے کہ اللہ باک ان سے مبت کرنا سے اوران کے ساتھ مبت کی علامت اور نشان

بہے ان کی متابعت کی مائے۔ ارشا دِ خدا دندی ہے :

قل ان کنتر بخبتون الله فا تبعونی رائے میغربوگوں سے کہدو کر اگرتم فدا بعببہ الله وآل عسوان) ۳۱

یحببهٔ الله و ال عسوان) ۳۱ مجی تهین دوست رکھے گا۔

پس بوتخص رسول النُّرصل النُّرعليه وسلم كى اثباع كرتاسيد وه النُّركام مجوب سبيد اور بوتخص آنخفرت كے سامتہ محبّت كا دعوىٰ كرتاسيد اور مبالغركى مدىك آپ كوالنُّر كاشركيد بناديتاسيد، ليكن آپ كى اتباع نہيں كرتا، وه انسان النُّركا مجوب نہيں سے

اعدائهم وهم لا یظلمون احقاف)وا ان کے مطابق سب کے دُرہے ہول گے

محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

دغرض بیسیے ، کدان کو ان کے اعمال کا پورا بدلہ دے اور ان کا نقصان مذکمیا حاستے -بنانچة تبرون کی زیارت کی مشروعیت نماز جنازه کی مشروعیت کے مثل سے الهٰ ا ميتت كے سامنے خصوع اور تواضع كرناز يارت كے مستنبيات سے نہيں ہے۔ اس *لئے کرسی صاحب قبر کی زیارت کسی نثر*ف و منز نست کی بنیاد ہوتی **ت**وکسی کا فرکی قبر کی زیارت مجی ما تردم ہوتی، مالا نکے موت کے نوفناک منظر کے پیش نظر کا فرکی قبر کی زیار مھی ما تزہے، اگرمیے لفنط ذیارت کا استعمال اکثرمتا خرین کے نزدیک مومن کی قبر کی زیارت میستعمل سے لیکن متقد میں کے ہاں معنی متعارف نہیں ایس لفظ زیارت کا ا لملا ق عمومًا ا نبیاراولیا وصالحین کی قبروں کی زیارت بر مؤتاہیے۔ زا ترین کے دلوں میں اصحاب القبور کی عظمت ، در علوم رتبت ان کوزیارت پرآما دہ کرتی ہے مبیرا كم عيساني ان لوگوں كى قبروں كى زيارت كرتے ہي، جن كوو چظيم المرتبت مجھتے ہيں -اوران کے فولڈ کوبھی اپنی توجہات کا مرکز اورسفارٹی مجھتے ہیں کیعض برقتی اس فلط ویم میں متخرق رسمتے میں کیشہر کے باشندوں کی فتح ولفرت اکشائش رزق اوموں کی تلونی اورمصاتب سيستحفظ صرف الخطيم ستيول كيطفيل ميتسرب يهجواس شهريس مدفون بیں اوربر ملا دعویٰ کرتے ہیں کہ فلال ولی اس شہر کا رکھو الااور محافظ سے جیسا کہ قامرہ كے لوگ ستبرہ نفيسہ كواس شهر كا نجات دسند مجھتے ہيں على بذالقياس وشق، حران بغداد اور دیگرشهروں کے باست ندسے اس شہرییں مدفون صالحین کوفریا درسس

صحابه کرام کی قبری نجات دمهند نهیس

حیرت بے کربعض شہروں میں صحافہ البعین کی قبریں و وجد ہیں، لیکن وہاں کے باشندے ان سے ادن مرتبروا لے مدفون انسان کو ا بہنے مصاتب کا مجات دمندہ محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

سمجھتے ہیں پیکھے قابی میں ماہ کرام اور تابعین عظام کی قبرین بھی ہیں ہیں وہال محیات سمجھتے ہیں پیکن وہال محیات ا معابداد یا بعین کو اپنا ملجا و ماوی نہیں گروا نتے - ان کے مقابلہ میں سنے نفیسہ کو ترجیح دیتے ہیں ، مالانک معابدا ور تابعین یقیناً سستے رہ نفیسہ سے زیادہ ففیلت اللہ میں ، اسی طرح دمشق میں معیاب اور تابعین سے رابعہ لبصریہ رسلانی ترکمانی اور ور گربی ا اہل الڈرکوزیا دہ ففیلت عطا کرتے ہوئے انہیں اپنا فریا درس سمجھتے ہیں ۔ ان کھ قرال کود عادّ اس کی قبولتیت کا ما دی سمجھتے ہیں اور وہال زائرین کا آنا نا بندھا رہتا ہے ۔

ايك واقعير

چنا بخدایک بار دشق شهر برای کافر دشمن ممله ور سواتو شیطان اس شهر کایک ملی شکل میں نمو وار بوکراس کو چیرطی سے مارتا ہے اور کہتا ہے کہ تم میرے اس شہر سے داپس لوٹ جا و ؟ بنا بخد کا فرحمله ور اس کے کہنے پر واپس لوٹ جا تا ہے۔ اس شخ کی عقیدت میں مبتلا ہوجاتے ہیں اور اس واقعہ سے دمشق کے باشندے اس شخ کی عقیدت میں مبتلا ہوجاتے ہیں اور یقین کرلیتے ہیں کہ اس بزرگ کی روحانی قوت سے ہمیں نخبات ملی ہے ، حالا نخداس شهر میں کر رفت کے ساتھ ایسے نیک انسان مدفون ہیں جو یقیناً صاحب واقع شخ سے زیادہ فضیلت والے ہیں ۔ اس فسم کے گراہ کن واقعات صحابہ اور تابعین کے دور کے بعداس تسم کے کشیطانی جسم کا نزوں سے طہور بذیر نہیں ہوئے ، البقہ ان کے دور کے بعداس تسم کے شیطانی جسم کا نزوں سے سامہ اور جسم میں میں میں میں میں سامہ اور ح مسلمان گراہ ہوئے سہے ہیں۔

دوسراوا قعه

ایک مہت پُرانا واقعہ جس کو الوعبدالرحمٰن کمی کہنے بیان کیاکہ میں سنے احمد برعباس سے سنا۔ اس نے کہا کہ میں بغدا دسے بام زکل کر بھا گا مار ما تھا کہ اجا تک میری ملاقا

ا کیب ایسے انسان سے ہوئی جس کے چہرے پرعبا دت کے آثار نمایاں نظرآرسے تھے۔ اس نے مجھ سے سوال کیا۔ آپ کہاں سے آرہے ہیں ؟ میں سنے ہوا ب دیا بغدادسے آر ما سوں اور اس منے شہر کوچیو ار کر مھا گا جار ما ہوں کہ شہر کے باستعند سے فتنۂ و فساد ہیں مبتلامیں ۔ مجھے خطرہ وامنگ_{یر بی}وا کر کہیں ا*س شہر کے باست ندسے عذاب ا*لہٰی میں گرفتا ر ہوکرزمین میں دھنسا نہ دیستے جایتی - اس سنے کہا خوفزدہ ہونے کی صرورت نہیں واپس لوٹ مبابیتے ۔اس شہریں چار ولی الٹرمدفون ہیں۔ان کی *برکت سے وہ شہرم*صاتب سے معفوظ سيكرمين سفه چها ده ميار ولي الدكون بين ؟ اس مفتح إب مين ا مام احمد بن منبلُ معزت معروف كرخى محصرت بشربن مارث مانى محضرت منصورين عماروا مخط كانام ليا-بعنائجه اسسه متا ترتهوكرميس والبس تنهرى طرف لوثا بهيريس نيتنهركوممفوظ ممجماا وركبعي وال سے تکلنے کا ارا وہ نہ کیا ،لیکن اس واقعہ میں جس تحف کے کہنے پر وہ شہر میں والیس آیا، وهمهول الذات ہے۔ اس کا مجھ علم نہیں۔البذا اس وا قعہ سے استدلال نہیں کیا ماسکتا۔ اس سم مح مجبول لوگ مجمی جن اورکھی انسان ہوتے ہیں۔ اکثر دہمیشتر جن انسانی شکل -مین نودار موکرجنگل میں اکیلے سفرکرنے والے انسان کے سامنے اسپنے آپ کو حذت تفریق اليس بكى ولى اوريشن كانام كم كمششش كا باعث بفته بين ا درلوگول كو كمراه كرست بين اس فسم كي بيشارد اقعات موسود بب

> کیا وفات کے بعد نبی صلی الدعلیہ وسلم دنیا میں پہلے کی طرح موجو درستے ہیں؟ اہل بدعت اہل تبورلوگ ---

(۱*) بیرنگ* (بیروی میماکان الله کیبعذ بهم واشت

آپ ان میں موجود ہیں۔

ا درنہیں ہے الٹرکمان کو عذاب نے حبکہ

نيهم.

. وجاكان الله معذبهم وهم يستغفرون (اورالتُدانكومذاب بين مبتلاكرسف والا نہیں جبکہ دہ استغفار کرتے ہیں ، جیس آیت سے استدلال کرتے ہوتے وفات کے بعد آب کو پہلے کی طرح عالم دنیا میں موزد مجھتے ہیں، ان کا برخیال غلط سے ترمذی شرلیف میں ہے ،

ہم کوسفیان بن دکیع نے بتایا ان کو حدثنا سغیان بن وکیع تثنا ابن إبن نميران كواسماعيل ان كوعبا دبن يو نہیوعن اسماعیل بن ابراھیم ان كوالوبرده ان كو الوموسى سنه بتا ياكرول بن معاجرعن عباد بن **ی**وسف^ین التدصلى التدعليه وسلم ليضغرابا التدليقيري ابی برده بن ابیموسیٰ عن ا بسیه اتست پردوامن نازل فرماست ایک امن تَالَ قَالَ مُرْسُولُ اللَّهُ مُسلَى اللَّهُ عَلَيْهِ ير کرمب به که آپ ان میں ہیں وہ عذاب وسلّم انزل الله امانين لا متى وما میں مبتلانہیں ہوںگے۔ دوسراامن بیکہ كان الله ليعذبهم ذانت نيهم وما جب تک وہ استعفار کرتے رہیں سکے، کان الله معذبهم وهم پستخسفرُن الندانبين عذاب مين گرفتارنبين كرسطكا فاذا مضيت تركت نسيكم الاستغفار البية جب بين دُنياست رخصت مهوما وّن كا، تواستغفاركرناتم كوامن كابيغام عطاكريكا-

ِ قیام امن کے دوسبب

اس مدریث کی روشنی میں قیام ا من کوآپ کی زندگی کے معامقومعلّق کیا گیاہے۔ ۔ وفات کے بعد قیام امن کانسخداستغفار قرار دیا گیاسے معلوم مواکدا نبیار اولیا کی قرص وقات سے بست ہے ۔ کا وجود قیام امن کی ضمانت نہیں ہے۔ صبح مسلم میں سبے: مسلم الاشعری عن النبی الجوموسی اشعری روایت کرتے ہیں کم

نبى سى الدعليه وسلم في فرما يا كرأسمان ك صلى الله عليه وسلم انه قال النجوم

محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

أوليار كى قبرين صول امن كى ضمانت نبين

اس نظرید کی وضاحت اس امرسے بخوبی ہوری سے کہ بہت المقدس کے ماحولیں

ایک تول کے مطابق ایک مزارا نبیار کی قبریں ہیں، لیکن اس کے باوجود بنی اسرائیل

کے امن کے بربا دہونے کا نقشہ ذیل کی آبت سے واضح ہور باہے - النّہ باک فراتے ہیں فراتے ہیں وقضینا الی بنی اسوائیل فی الکتاب اور ہم نے کتاب میں بنی اسرائیل سے متفسد دن فی الارض میں تین وتعلن کبردیا تھا کرتم زین میں دووفعہ ضاو علق کہ دیا تھا کرتم زین میں دووفعہ ضاو علق کہ دیا تا در بڑی سرمشی کروگے ۔ لین ب علق کے اور بڑی سرمشی کروگے ۔ لین ب جھٹنا علی کم عباد النا اولی باس سے بیہ دوعدے ، کا وقت آیا تو ہم نے لینے بعث خدننا علی کم عباد النا اولی باس سے بیہ دوعدے ، کا وقت آیا تو ہم نے لینے

شدید فعباسواخلل الدیارد سخت لؤاتی لؤنے والے بندے تم پرسکط کان وعد اسفعولا شم نددنا کم می کردیتے اور وہ وعدہ لجرا ہم کردیتے اور وہ وعدہ لجرا ہم کردیتے اور وہ وعدہ لجرا ہم کردیا اور الکرة علیهم وامد دناکم با موال میں مردی بارتم کوان پرغلب دیا اور مردی و بنین وجعلنا کم اکثر نفیران مال اور بیٹول سے تم اری مردکی اور تم کو

جماعت کثیر بنا دیا ۔ اگر نم سنسی کوشگ تواپنی مجا اوں کے لئے کر دگے اور اگرانما برکردگے ، توران کا) وبال بھی تمہاری اوں پر ہوگا ، بھرجب دوسرے دوعد سے ، کا وقت آیاد توہم نے بھراپنے بندسے بھیجے ،

احسنتم احسنتم لانفسيكم وان اساً تم فلها فاذاجاء وعدالاخ يسوًا وجوهكم وليدخلواالسعد كما دخلوة اول مرّة وبستبسّروا

ماعلوا شتبيرًا - (بخاس اللي آيت ٧ - ١)

تاكه تهارسے چېرون كوركا طي اور حبس طرح بمبلى د نعه سعيد بيت المقدس ميں واخل بمسكّ تفاسى طرح بيراس بر داخل مهومايت اور جس چيز رغلبه پايئر امسے تباه كردين-

ان آیات سےمعلوم ہواکہ جب بنی اسراتیلیوں نے فساد مجایا ا ورعجُب اختیار کیا توالٹر باک نے ان کے گنامہوں کی وجہسے انہیں سخت عذاب میں گرفتا رکردیا اور ان پرالیسے دشمنوں کو غالب کر دیا جوان کے گھروں میں داخل ہو گئتے مسحدول کوٹیان

ان کو دشمن کی گرفت سے بجا نہ سکا حقیقت تو ہہ ہے کہ جب لوگ نا فرمانیوں کی وجہ سے عذاب اللّٰی میں گرفتار سوماتے ہیں، آنو بھیران کا التّٰرکے سویٰ کو تی مدد گارتہیں سکتا

اس اعتقاد كو بخية كرسنے كى شديد ضرورت بينے كم الله پاك كے علاوہ مركو تى رزق بينيا سكتاب اور نربى كوئى فريادرسى كے لائق سے - ارشاد خداوندى سے د

سکتاسیے اور نہی کوئی فریا درسی سے لائق سبے ۔ ارشادِ خداوندی سبے ؛ اُسّن ہدالسذی ہو جند مکم مسلم کھلا ایساکون سبے ہوتمہارہ

بينصوكمرمن دكون الهملن

ان الکفن مین الآ فی غومدا کسن هذاالمذی پرذشکم ان امسک

ددقه بل لجواني عتوو نفود-

رس ، پو۔ آیت ۲۰ - ۲۱)

ہے ہو باہ مور در میں ہے۔ بعلا ایساکون سے ہج تہاری فرج ہو خداکے سواتہاری مدد کرسکے۔ کافر تو دھکے میں ہیں۔ بھلااگروہ اپنارزق بندکر لے تو کون سیے جوتم کورزق وسے ، لیکن برہکش اورنفرت میں تعیشے ہوئے ہیں۔

يزالنديك فرمات بي:

(بنی اسرائیل ۵۸)

وان من قرمية الآنن مهلكو^{ها} قبل يوم الفتيئهة اومعذ بوحيا عذابا شديدكان ذالك فخث الكئاب مسطورا -

میں لکھا ما جبکاہے۔

ا در کفرکرنے والوں کی کو تی بستی نہیں'

مگر قیامت کے دن سے پہلے ہم اسے

ملاک کردیں گے پاسخت عذاب سسے

معذب كري كے يك بركا بريعى تفري

معلوم مواکہ رسولوں کے بھیجنے کے با وجود اگرکوئی قوم گنا ہوں کو ترک نہیں تن تواس قوم كوملاك كرديا ما ماسي وا اسب شديد عذاب مين مبتلا كرديا ما ما سب ارشاد خدا وندی سہے ،

ا ورسم سفے کوئی بستی ہلاک نہیں کی مگراں کے لئے تقبیحت کرنے والے پہلے بھیج دیتے عظے د ناکہ بفیعت دکرے، اوریم ظالم نہیں ہن

وما ا هلكنا من قوية ا لاكها منذدون ذكرئ ومآكنا أكلسين رانشعراء / ۲۰۸ - ۲۰۹

مدسیت منورہ کی خوشحال کے اسباب

مدبينة الرسول عهدرسالت ادرخلافت راشده كيعهدمين اردكردكي تمام شهروں سے زیا دہ نوشمال اور پُرامن تعا · ان پر الغاماب خداوندی کی بارش ہور ہی تھی،اس کنے کہ وہ اللہ ادراس سے رسول میں اللہ علیہ وسلم کے احکامات کی بازیری كرتے اور دين اسلام كى عظمت كے ق ل تھے ۔ آپكى وفات كے بعد خلفا إراشدين مھی امست محمدید کومنہاج بوت پرعمل ہیا ہونے ک مقین کرتے رسیے ا ورمعانزہ کو اسلامی اصولوں کے مطابق بنانے میں صروحبد کرتے رہیے ناآ بھی ماغیوں انتظرت عثمان رمنی النّدعهٔ کوشهپدکردٔ ۱ لا . تو اسلای معاشره میں بیگاڑ پیدا ہوگیا - مالات میں

محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

تبدیل آگئی۔ خوف اور ذلت نے ان کے دامن کو پر لیا، یہاں یک کوسلمان آپس ہیں اور قتل و غارت کا بازار گرم ہے جب برانسوس ناک واقعات اسلامی تاریخ کے تاریک باب کا مواد فراہم کررہے تھے تو اس وقت رسول الڈ صلی الڈ علیہ وسلم ستیدہ عائشہ کے چرو میں مدفون تھے، لیکن آپ کی قبرمبارک ان افنوسناک واقعات کے وقوع کو خروک سکی اس لئے کہ تو اہل قبور کا ایک خلا و ہم سے وگر نزار شادات بنوی کی جمد تفصیلات کا آپطالعہ کریں تو کہیں جبی اس کا ذکر نہیں ہے کہ میری قبریا انبیا اولیا کی قبرین جن شہریل موجود ہیں، ان سے دہاں کے ذکر نہیں ہے کہ میری قبریا انبیا اولیا کی قبرین جن شہریل موجود ہیں، ان سے دہاں کے باشندوں کو شکلات و مصائب سے ضمانت ماصل ہو تی ہیں، ان سے دہاں کی اطاعت ہے۔ ان کی قبرین کسی مصیبت سے بجانے کا وسیلہ املی مناز ہیں ہو خص ان کی نا فرمانی کرتا ہے، وہ دنیا اور آخرت کی سعاد توں سے مکنار رہتا ہے اور وشخص ان کی نا فرمانی کرتا ہے، اس کو عذا ہا اہی سے انبیار اولیا سی قبرین نہیں بچاسکتیں ۔ ارشا و خداوندی سے ۔

وضوب الله مشلا قدية كا نت اورفدا ايك بستى كى شال بيان فرأتا امسنة مطمئنة يا تيما دنوتها دغدا است كرد مُرطره امن مين سعلبتى تقى رمن كل مكان فكفوت بالعم الله طون سعد زق با فراخت چلاآ آتما كر من كل مكان فكفوت بالعم الله فاذا تباالله لباس الجوع والحوت ان لوگول في فداكي فعتول كى ناشكرى كى بما كا نويصنعون - دالنحل) 111

بھوک اورخوٹ کالباس پہنا کر د ٹانشکری کا) مزہ چکھا دیا۔

ابن ابی ماتم حفرت حفصه سے روایت لاسٹے ہیں بسلیم بن عفیر بسیان کرتے ہیں کہ حفصہ امّ المومنین ایک بار مکہ مکرمہ سے مدینتہ الرسول کی طرف جارہ تھیں میں بھی ان کے ساتھ تھا۔ اس و وران پی آئیس اطلاع ملی کہ حضرت عثمان رمنی اللّہ عنہ

شہید موگتے ہیں توحضرت حفصہ فروا نے لگیں کداب میں مدینة الرسول نہیں جاؤں گی، اس ملتے کہ مدینیتہ الرسول اس وقتیت امن واطبینان کا گہوارہ تھا،جب تک کروہاں سے باشندے اللہ اوراس کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم کے امھا مات سے مطابق زندگی سر کرتے منضے اور جب انہوں نے الٹرکے اسکامات کی نا فرمانی کی اور باعنی بن سکتے توالله لے مدینتہ ارسول کے امن کوختم کردیا اب اس کی مبکر برخون بے جینی نے ويرا وال لياب مبساكه مذكورة الصدر آيت كالمعنمون اس كشها وت في لمست اس تشریح کامللب بینہیں ہے کواس آیت میں بس قریر کا ذکر ہے ، اس سے مرا دصرف مدينة الرسول ہے، بلكه قربي كالغط عام ہے تمثيلاً مدينة الرسول كا ذكر ہے۔ غور كيجة المل مكرس وقت تك مصاتب لمن كرفنا ررسے بعب تك وہ اللہ پاک کی نا فرمانیا کرتے رہے ہجب وہ ایمان کی دولت سے مالا مال ہو گئے، تو ان کا خود ختم ہوگیاا وروہ لوگ سکون واطمینان کی دولت سے مالا مال ہو گئے اسی طرح بغدادیں اگرمیہ مزاروں اولیار الله مدفون ہیں ، لیکن ان قبروں کی موجودگی نے انہیں کچھ فائدہ ند بہنجایا جب وہ اسلام کے اصولوں سے خرف ہوگئے اور ترک و مدعت کی سماری میں مبتلا ہوگئے

معلوم ہوتا ہے کہ وہ لوگ ہو قبروں والوں سے نفع یا نعصان کی امیدر کھتے ہیں اور ان لوگوں میں کچھ فرق نہیں ہو جا ہتے ہیں اور ان لوگوں میں کچھ فرق نہیں ہو جا ہتے ہیں دور میں بتوں کو اپنا فعل انتے ہوئے وہ ملائے تھے اور ان سے نفع نیقصان کی توقع رکھتے تھے ؛ چنا پخہ قوم عا دنے ہو وہلائے اللہ سے کہا۔ اللہ پاک فروا تے ہیں ا

ان نقول الااعتواك بعمن آلهتنا بسوء قال انّ اشهدالله واشهد واانی بدئ تا تشركون

ہم تو سیمجھتے ہیں کہ مہا کے کسی عبود نے تمہیں آسیب پہنچا دکرد بواندکر، دیاہے انہوں سنے کہا کہ میں خداکوگوا ہ کڑا ہوں ا درتم بھی گواہ رہو کہ جن کوتم دخدا کا انتر بنگستے ہو، اس سے بیزار ہوں دلعنی بن کی، خدا کے سوا (عبادت کرتے ہو) تو تم سب

مل کرمیرے بارے میں دموی تدبیر ذکر نی جا ہو ، کرلوا ور مجھے مہلت مذوو۔ حضرت ایراہیم علیدالسی مرکے واقعہ میں الٹریاک فرماتے ہیں ؛

صفرت ابراسیم علیدالسام کے واقعہ میں النّد پاک فرماتے ہیں :
وحاجہ خوسہ خال اتحاجو ف اوران کی قوم ان سے مجٹ کرنے
فی اللّه و قد حد ان ولااخان ما میں توانہوں سے کہا کہ مجے فدا
مشد کو دن ہے الاان پشاء دبی کے بارسے میں دکیا، بحث کرتے ہو۔ اس
شیراً وسع دبی کل شیئی علما نے تو مجے سیدھا راکستہ وکھا ویا ہے
افلا تستذکر و دن - دالافعام ، ۱۸ اورجن جیزوں کوتم اس کا نتر کی بناتے کو
میں ان سے نہیں ڈرتا کی جو میرا پروردگار کچر جا ہے ۔ میرا پروردگار اسے علم سے برچیز
پرا ماطہ کئے ہوئے ہے ، کیا تم خیال نہیں کرنے ۔

اورمشرکین کو مناطب کرنے کے بعد اللہ باک محضرت محد مصطفے صل الدولیہ والم سے اللہ اللہ معلم اللہ ملک ال

(مشرکو) جن کوتم خد اکے سواپیکائے ہو، کتہا ری طرح کے بندے ہی ہیں ، داہقا ، تم ان کوپکارد ، اگرسچے ہوتوجاہیے کہ دہ تم کوجواب بھی دیں ۔

ان المذین تدعون من ددل الله عباد امثا لکمر فاد عو همم فلیستجیبوالکم ان کنت مرصادقین-دالاعواف) ۱۹۴

من دونه فكيد و نی جسيعا شتر

(هور- ۱۵-۵۵)

لاتنظر ون-

مکرمکرمہ میں شرک کی ابتدا

خزاعة قبیله کامردار عمرو بن لی ہے جس نے بلقاء نا می شہر میں لوگوں کو توں ک

پوماکستے ہوئے دیکھا، تو وہاں سے چند بتوں کو لاکر کمعبہ مرّمہ کے اردگرد کھڑاکر یا۔ رسول اكرم صلى المندعليه وسلم في عمروين لمى كم تتعلّق فرما ياكه ميں نے عمروبن لمى كوجبنم میں دیکھاکہ وہ اپنی انسٹرلول کو گھسیٹ رہاہے۔ برمزااسے اس جرم میں دی جاری ہے کہ وہ عرب کا پہلا انسان سے جس نے ابراہیم علیا اسلام کے خدم ب میں تحرافیت کا سلسله مباری کیا، اسی طرح وه اوگ جوسفر کرے انبیار اولی رحوام انسالول کی قبرول زبارت كومشرف مجتها باتين سجدول كعلاوكمي سعرى طرف سعرافتيا ركرك زیارت کرتے ہیں، وہ بھی دین میں تولیف کردہے ہیں۔ اس میں کچے شبہ ہیں کہ قبرول كى زيارت كرنا باعثِ نذاب اورعرت سعه،ليكن أكرشارع على السّلام مطلعًا قَجْرِل کی زیارت سے لوگوں کو روک دیتے ہیں مبیسا کہ شروع اسلام میں روک ویا گیا مقا انت بحبى اس ميں اہل فتور کے ساتھ دشمنی اور عداوت کا پہلوموج دنہیں تھا۔ اسی طرح دہ لوگ ہوتین سجدوں کے ماسوئ مساحد کی زیارت کے لئے سفرکرنے کوجائز قراردیتے ہیں، وہ می دینِ اسلام کے احکام میں فریف کے مرتک ہورہے ہیں۔ اگر وہسلام تما مساحد كاتعظيم كاحكم دتياسيه اورمسا مدكا استخفاف حائز نهيس نه بمكسى تحف كوسبحد یں عبادت اور ذمحرکرنے سے روکا مباسکتا ہے ، بلکہ وشخص جمسعبری آبادی میں کا وط ولا النّاسيے اور لوگوں كو ذكرا ذكار اور لؤافل ا داكر سفست دوكتاسيے ، وہ انسان مبت برا ظالم ادر کا فرہے۔ ارشا دِخداوندی ہے:

ومن اظلم من منع مساجد الله ان بذكر نيه اسمه وسعی في خوابها اولئك ساكان لحمر ان بد خلوها الآخا تُعنين لهم في الدنياخن ي ولهم في الآخة

اوراس سے بڑھ کرظالم کو ن ہے جوخلاکی مسجدوں میں خدا کے نام کا ذکر کئے جانے کومنع کرسے اور ان کی ویرانی میں ساع ہو ان لوگوں کو کچھریتی نہیں کہ ان میں داخل ہوں مگر ڈرتے ہوتے ان کے لئے ونیا میں سوائی عذاب عظيم والبقوة ١١٧) سماور أخرت مين بهت بطرا مذاب.

www.KitaboSynnat.com غیرشرعی زیارت کے ساتھ شرک کرنا

ابل بدعت توانبیام اولیار کی قرون کو بنیر شرعی زیارت کے ارتباب کے ساتھ ساتھ ان سے اپنے موائج پوراکرنے کی دمایتر کرتے ہیں اور ان کے احبل او استرام کو پیش نظرر کھنے ہوستے ان کی حبا دت بالکل اسی طرح کرتے ہیں ، جس طرح مومدین النُّد بأك كي عباوت بين انكماري اورعا جزي كا اظهار كرت بي، مالانكد شرع نيارت بلاسفرصرف اس فدرسه كرابل قبركے بن ميں مغفرت كى د ماكى جاستے مركه بيت الله کے چج کی طرح ان قبوں کا چج کیا مبائے ، جیسا کہ میسانی ان گریج ں سمے جج کے لیے جاتے بين جهال عليه ي عليه السلام اور ديگر صلحار كي تنتيلين موجد بين ، حصوصًا بيت المح كرما جہا ن سیح علیہ السلام پیدا ہوئے اور وہ گرماجس کو حضر میں علیہ السلام کی قبر روانعول اہل نفاریٰ کردہ مسلیب پرلٹائے گئے ، تعمیرکیا گیا سے اس کے جج کے لئے استمام محتے ، بیں ، بلکہ جس انسان کوبھی مقدس ا ورمعظم ماسنتے ہیں ، مبیسا کہ حرجیس را ہمیب و مغیرہ ہیں، ان کی قبروں پرعمارتیں بنا رکھتی ہیں اوران کی جج اورتعظیم کے لیتے وُور دراز سے سفركر كم يبيغية ببيء يوك حضرت محد مصطفا صلى الشرعليد وسلم كم ارشاد كع مطابق ملعون ہیں ؛ بینا بخم المحفرت نے اپنی اُمت کوڈراتے ہوتے فزمایا ،

بلاشبتم سعه پیلے لوگ قبروں کوستار بناتے تھے، فبردارتم نے قبرول كوسجديں نہیں بنانا ہے۔ میں شدّت کے سانھ ہم

کواس فعل سے روکتا ہوں۔

ان من کان قبلکم کانوا پتخذص القبورمساجسات الافلانتخاذوا الفنورمساجد فانى انهساكسر عن ذالك . رواه مسلم .

بيت لتد كتابية بل فريكر بن كدفس اورمعبه خالول كاحشر

بئیت الله کی عظمت اورا حرام کوما سدانه نگا ہوں سے دیجھتے ہوئے ہیں کھے
اُبر مہذا ہی بادشاہ نے بئیت اللّہ کے مقابد میں ایک گرما تعمیر کیا تاکہ اہل عرب بہت اللّہ
کی بجائے اس کے چے کے لئے آئیں اور جب کسی عرب انسان نے اس گرج میں پاخانہ
کر دیا، تو ابر مہدنے نا راض ہوکر بہت اللّہ کے گرانے کے لئے نشکر کشی کی اس پراللّہ
پاک کا غیظ و فعت ب جوشس میں آتا ہے، تو ابابیل پرندوں سے لشکر کوموت کی نیند
سلادیا ما تا ہے اور ان کو صفح یہ سے مطاویا ما تا ہے۔

یمن کے اس گرہےکے علاوہ بھی جزیرۃ العرب میں بیسیوں بُت خانے اور معب^ک یوچ دی<u>تھ</u>ے۔

لأت ثبت خانه كا ذكر

چنا پخہ طا تعن شہریں لات نامی بُت خانہ موج د تھا جس کے ج کے سکے لوگ استے مبات نقے اور اسمیہ بن ابی العسات کوجب ایک را بہ نے بتایا کہ عنقریب ایک بنی کا ظہور ہونے والا ہے تو اس تے سمجا کہ شاید مجھے ہی اس اعزاز سے نوازا مبات گا، لیکن را بہ سے کہا کہ اس نبی کا ظہور کہ کمر مرسے ہوگا، جہاں بیت اللہ ہے جس کا لوگ ج کوتے ہیں ۔ اس بیرا میتہ بن ابی العدات کہتا ہے کہ قبیلہ تقیق میں بھی اس کے ج کے لئے آتے ہیں اور وہ معبد خان لات کھا جس کا تذکرہ قرآن ہاک میں موج دہے :

اخوء بستعداللات والعن على ميملاتم لوگول في البت اورعزى كوكيكا ومناة الثالثة الاخوى دالغى واسه اورتبيرك مناة كود كميربت كهين فدا

ہوسکتے ہیں ،

طالف اور كمر كاتذكره مجى قرآن پاك ميں سبے ،

لولانذل هذا لفرآن على حبل اور ديمي كيف للك كري قرآن ان

من القديتين عظب م «الذفر) الريس وو**لول بستيول ديعني سكة اور لم**ا تقن ،

ىيىسى كى مۇلىسە آ دى پركيول ئازل نەكياگيا-

اس پرراہب نے کہا کہ وہ پیغمبر قریش سے ہے، تم سے نہیں ہے اوراس گھرسے مراد ہیت الدیسے ۔ دسول اکرم صلی الڈ علیہ وسلم طالف کی جنگ کے بیت کے بیٹے سکے لئے نشکر تیار فرماتے ہیں۔ جنگ کرنے کے بغیر بی

لمائف والےمسلمان مومالے ہیں ، البقہ وہ لات معبد خاند کو گرانے سے انکار کھتے ہیں البقہ وہ لات معبد خاند کو گرانے سے انکار کھتے ہیں اور ایکے معبد خاند کو ہلت ندوی اور ایکے معبد خاند کو پیوند خاک کرکے وہاں مجد کی تعمیر کا حکم دسے دیا۔

عزیٰ اور مناۃ کا ذکر

177

کانذرا مذبیش محرتے اور اپنے بتول کے لئے جالوروں کو وقعت کرتے اورا حترا مًا ان ما نوروں کی سواری سے گریز کرتے ،اسی طرح قبر پرست لوگ قبروں کواپنا نجات دہنڈ سمجت بن اوراب مقامدى كاميابى كم الت مختلف سم ك نزران مدية عقيدت کرتے ہیں، ملوان کرتے ہیں، عرسس مناتے ہیں، شیرین تفت یم ہوتی ہے اورسماع اور قوال كم محفلين منعقد كى ما ق بين محبّث ، تعظيم ا ورخشوع وخِصْلوع سحصا تع قبول كى زیارت کرتے ہی، بلکرص طرح صاحب قبر کی زندگی میں اس کی ملاقات کے لئے شدت المتیان اوروفور مذبات كوملحوظ ر كھتے موتے سفر كرتے تھے .اس كى موت كے بعداس كى قبرااس كي تصوير كے مشامره كے ليے اس محبت اور سرشاري كا اظهار كرستے ہيں اور جب طرح شأق اسیے معشوقوں کی قبروں کو دیکھیتے ہی راحت و اطبینان کی لڈت سے ہمکنار موتے ہیں' اسی طرح اہل برعت قبروں پہنچ کراکیب خاص شم کا کیف اورانسیت ' محسوس کرتے ہیں البقه کسی دوست اور قریبی روشد وار کی قبر کی زیارت کے وقت محبّت والفت کے جوجذبات امندا نے ہیں، انہیں غیرشرعی قرار دینا درست نہیں، اس کا نام شرایعت محدير كى اصطلاح ميں ديني حبت انوت اور تعظيم ہے ، كيا آپ نہيں ديجھتے كا ايك انسان بومہت افضل ہے، اس کی قبر کی زیارت سے وقت محبت وسرشاری کی وہ فضائو^دار نہیں ہوتی جوکہ ایک دوست اور قریبی رشتہ دار کی قبر کے پاس پنیج کر پیدا ہوت ہے بلكه ويجعف مين آياسيه كدانبيا عليهم العسلوة والسلام بلكة صفرت محد مسطف ملى التعطير وسلم كقرمبارك كن زيارت كمدن لي بعض لوك وه رفقت منهي بات بين بوكه انبيل اس وقت فیرشعوری طور برماصل موتی سهئے مبہر وہ اسپنے اساتذہ اورائمہ کی قبروں کے منا ہدہ میں مسوس کرتے ہیں معلوم ہواکہ اس کیف کاسبب معاصب قبر کی فنلیت كانتيج بصح كمان سے دلول ميں ان ابل فتور كے ساتھ والبستہ سے جن كى زيارت

کے لئے وہ ماتے ہیں اگرم ن نفسہ وہ اس بات کا اہل بھی نہیں ہے۔ انتہاتوبیہ كدلعض وقت استشم كى محبّت كااظهار مضرك اوركمّابى مدنو الحج سائه بمبي كيام أسيئ مبساكه بتول سكع پجارئى النُدكى مجتت كى مانندان سے مجتب كرنے ہيں ا ورمبيسا كم · پھوٹے کی عبا دت کرلنے والے اس کی محبّعت میں مُستغرق دکھا تی دسیتے ہیں۔ الترياك فردات مبيركه ان كے ولوں میں مجھے اسے كی مجتب سرايت كر حيى ہے برہ حتى كريوكي علياسهم نحان كى مبتت كوفتم كرنے كے سلتے بجيارے كومبلاديا اور اكسس كو بولين

سفیان بن عینیہ سے اہل برعت کے بارے میں ایک شنفتاہ

چنانچرسفیان بن میدنیدسے سوال کیا گیا کہ اہل بدعت اپنے مشاتع سے جومبّت رکھتے ہیں انٹرمًا اس کی مینیّت کیا ہے - انہوں نے جواب میں فرمایا کہ ادرشا دِ

خدا وندی سبے

ا دربعن لوگ ایسے ہیں ج فیر خداکو ومِن الناس من يتخذ مِسن شرکیب (**ندا**) بناتے اور ان سے دون الله اندادا يمبّونهــم فداك ي مبتت كرتے ہيں ، ليكن جوايمان وا كعب آلله والمسذين المنوااش ہیں، وہ تو خدا ہی کے سب سے زیادہ حبا لله - ربقه ۱۲۵ (۱۲۵ ووستدار بین۔

اوران کے کفر کے مبب بچیٹرارگویا ، ان مح

الخزارشا وخدا وندی:

واشريوا في قلوبهم العجل . القر

دلوں میں رُپع گیا تھا۔ ان لوگوں کے حق میں وار وسیے بچنا کی الٹر باک نے جہال اس بات کا فرکیا سے کم مشرك ابنے نداؤں اور بتوں سے نحبّت ركھتے ہي وہاں اس بات كا نذكرہ بھي موہو دسېم کربین لوگ اپنی خوام شات کو اپنا خدا مجھتے ہیں اور اس کی عباوت کرتے ہیں اور ان کی عبادت کسی روشنی اور علم کی بنیا دہر نہیں سہے ، بلکہ اندھی تقیدت کا کوشمہ سبے جیسا کہ قات مرف ایک معشوق کی مجتب میں گرفتار نہیں رہتا ، بلکہ بسا اوفات پہلے معشوق کو چھوٹو کر دومرسے سے ساتھ محبّت کارشتہ استوار کر لیتا ہے ۔ ظاہر سبے کہ اس مجنت میں علم و بھیرت کی مبلوہ آراتی کا نشان کے مجی نہیں ہوتا ۔ النّدیاک فرما ما ہے :

اً دَء بِت مَن ا تَخِذ الْهِ حَوالاً مَّ كَياتُمَ لِنَ اسْتَحْفُ كُودِكِهَا بَسِ فَوَالْمُ الْمُ الْمُ الْمُ ا ا فا نت تكون عليه وكبيلا ١١ لفوان ٢٢ فنس كومعبود بنا ركما سبح الوكياتم اس بركمبان المناها عليه وكبير من الما ا

بھلائم ہی تخص کو دیجما جس نے اپنی خواہش کو معبود بنار کھاہیے اور یا وجود جاننے بور ہاسے توخدا نے بھی) اس کو گھراہ کردیا اور ان کے کا اول اور ل کرم را گادی اور اس کی تنظیوں پر دی ہ دال میں ، ذکر ای تو نیس کا میں ہے ۔ میں اور اس کی تنظیوں پر دی ہ دال میں ، ذکر ای تو نیس کا میں ہے ۔

ا فرویت من انتخان الله هواهٔ واصله الله علی علم وختم علی سعم وقلبه وجعل علی بصوه غشاوة فهن یهد دیر من بعد الله افلا تذکی وی - (الجاشیه) ۲۳

دیا۔اب مداکےسوااس کوکون راہ پرلاسکتا ہے، توکیا کم تفیصت نہیں پھڑتے۔

این ان طلحة عبدالله بن عباس سے اس کی تعسیر نقل فرماتے ہیں کہ اس آست کا مدلول وہ کا فرانسان مصحص سے علم و آگہی کے در پچوں کو دانہ کیا ا در اپنی زندگ کا نفسب العین اپنا سنے میں اللہ باک کی رہنمائی سے فائدہ بذا مطایا سعید بن جبرفرما سے ہیں کہ مشرکین کا وطیرہ تقاکہ وہ ایک بی فیم کرتے ہیں سے بہترکوئ بیتھ باہتے تر پیلے ہیں کہ مشرکین کا وطیرہ تقاکہ وہ ایک بیتے ہی جا کرتے ہیں اس سے بہترکوئ بیتے بار سے بہترکوئ بیتے اور اس سنے بہتھ کی فی جا کرتے ہیں۔

ت حسن بصری فرماتے ہیں کہ اس کا مدلول وہ منافق انسان ہے جواپنی خوامشا کواپنانسب العین اورخدا قرار دیتا ہے۔ قادہ کا قول ہے کہ اس کا مدلول وہ نسا ہے ہوا پنی خواہ شات پر سوار رہتا ہے اور نفس آمارہ کے تعامنوں پرعمل پیرار ساہے اور کوئی بھی وعظ دفعیت کی باتیں اس کوروک نہیں سکتیں۔ بیتمام اقوال این ابن ماتم میں موجود ہیں۔ نیز ارشا د خدا دندی ہے :

اورسبب کی ہے ؟ کس چیز خدا کا نام لیا جائے تم اسے نکھاؤ، حالا نکہ ج چیز میں اس نے تہارہے لئے حرام طمبرادی ہیں۔ وہ ایک ایک بیان کری میں دہیشک ان کونہیں کھانا چاہیئے، مگراس صورت میں کہ ان کے د کھانے کے ، لئے لاچار

ومالكم ان لاتاكلوامثتا ذكو اسم الله عليه وقل مصل تكم ما حرّم عليكم الآمد، صطورتم الليد مرآن كشيرًا ليستلون بأهوا هم بغير علم ان ربك هو اعلم بالمصندين-دانغام ، ۱۱۹)

ہوماؤا در بہت سے لوگ بسی تھے ہوجھے اپنے نفس کی نوا ہشوں سے لوگوں کو ہمارہے ہیں۔ کچھ شک نبیں کہ ایسے لوگوں کو موزور ای مقرر کی ہوئی مدسے با ہرن کل جاتے ہیں۔ تہا را پر ور د کار خوب مان آسہے۔ نیب نہ فرایا ،

کہر دوکہ اگر پچتے ہوتو تم خدا کے پاس سے کوتی اور کتاب سے آتہ جود ونوں دکتابوں ، سے بڑھ کر مدایت کرنے والی ہو تاکیں قل فأتوابكتاب من عند الله مواهدى منهما البعد ال كنتمر صادقين (القصص) ۲۹

میں اس کی پیروی کروں۔

اُورمشركين كے بارسے ميں فرمايا ؛

ا فلم ید برواالقول ام جاءهم ما لم یات ا'باء هم الاولین ام لم یع، نوارسولم فهم له مشکوون۔

کیاانہوں نے اس کلام میں غوزہیں کیا یاان کے پاس کوئی الیسی چیزائی سے جوان کے انکلے باپ وا دا کے پاسٹہیں آئی تھی

رالموسون) ۲۸- ۹۴

لوكان فيعاالهة الاالله لنسكمًا نسبخن الله وب العرش عمايصفون

(زُنبیاء) ۲۲

یا پر اینے پغیر کو جانتے بہجائتے نہیں اس کر کم سے ان کونہیں مائٹے اگراسمان اور زمین میں خدا کے سوا اور معبود ہوتے تو زمین و آسمان درہم ہم ہوجاتے ہو باتیں یہ لوگ بتاتے ہیں خدلئے مالک محمش ان سے پاک ہیں -

قبوريتين ا*ورئبت پرستول مين مماثلث*

یس وہ لوگ جو قبروں کا ج کرتے ہیں ان لوگوں کے مساوی ہیں ہو بتوں کے جے کے لئے مباتے ہیں۔ کمامرب کے مشرکین الٹرکے سامتہ دیگرخدا وّل کومھی پکالتے ہیں، لیکن موحدین صرفِ الدُّر کوخدا مانتے ہیں۔ اس کےسا تھ کسی کوشر بِ نہیں مہراتے؛ نه التُدك عيريسي سوال كرت بين، مذان سے كيرطلب كرت بين، مذان كوال محيكران کی عبادت کرتے ہیں مذانہیں پکارتے ہیں اور قبودین قبروں والوں سے بمت پیرتوں کی طرح مانتکتے ہیں ا وران کا حج کرتے ہیں، بلکہ بعض لوگ مساحب قبر کی تصویر کے ساخة اس محبّت ا ورعقیدت کا اظهار کرتے ہیں ہوا صل وجود کے ساتھ کیا کرتے تھے، اورىزمرت انبيار اولياء كى تصويرول كوفابل احترام كروانت بين بلكرد يحفاكيا سب کر برکر دالوگوں کی تصویر وں کوہمی خداسم پر کران کی بوم اکی حاتی ہے۔ نیز اکٹرو بچھاگیا ہے کہ جس سے اردگر دحقیدت مندول کا جمگھٹا اس بنیا دہرہے کہ وہسی نبی یا والا تہے گرده قبرجلی بوتی سیے، بلکہ بعض وفعہ و باں قبر کا وج ذبک نیبن جمّا ادربعض وفعہ کسی کا فرک قبركوزبارت كاه بنالياما كاسبع مبيداكم شركين ابلكتاب اوردي كركمراه لوكول كايري طير اور طرزعمل رہاہے۔

محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

بسس شرعًا قبروں کی زیارت اگرم مائزے، لیکن جب زیارت کرنے والاانسان

صاحب قبرسے اپنی امیرول کی برآدی کی وعائیں کرتا ہے تواہیی زیارت نشرعًا ظائز

ايممثال

شرعًا سورج کے طلوع اور عزوب کے وقت نما داواکرنا ممنوع ہے ناکہ سورج کی بہتش کی عباوت کرنے والے لوگوں سے مشاہبت نہ ہو ہواں اوقات میں سورج کی بہتش کرنے ہیں۔اگرچہ سلمان کا مقصد وحد مرف المدّ کی عباوت ہوتا سہے بچھر بھی مشابہت اور شارکت کی بنیاد پر اس کونا ما تزقر اردیا اور اگرکسی کا مقصد سورج کی بہتش ہی کرنا ہے تو اس کے کا فرہونے میں کچھ شبہیں۔

دُ وسری مثال

کچھ شبہ نہیں کہ غبرالٹرکو بکا رہنے والا ا در قبروں کا جج کرنے والامشرک اور کا فرہے میساکہ تا تاری جب اسلام کے دائرہ میں واض موستے تواسلام لانے کے بعد بھی وہ توں کاندیم کرتے اوران کا تقرب حاصل کرتے ، آگ کو متقرب گردائتے - دراصل ان کوملم ہی مقاکد شرع ان کوملم ہی مقاکد شرع ان کومتر کر سمجھنا حرام ہے ، جیسا کہ در کیما گیا ہے کہ وہ لوگ ہواسلام لاتے بین ان شرک کی الواع وا قسام سے بے قبر ہوتے ہیں ، اس قسم کے انسالوں کو گرابول کی فہرت میں شمار کیا جائے گا اور ان کے نشر کیے احمال پراس وقت بحک منزا واجب نہیں جب بک کر انہیں ان تمام کی حرمت سے با خبر نہ کیا حاسے - ارشا دِ خدا و ندی ہے :

فلا تجعلو اللہ اندا ڈافرانت می سے باخر نہ کیا حاسے - ارشا دِ خدا و ندی ہے :

فلا تجعلو اللہ اندا ڈافرانت می سے باخر ان کے ساتھ شرکے ساتھ در ایک انہاں کو اس کے ساتھ شرکے ساتھ شرکے ساتھ در کیا میں میں تم اللہ کے ساتھ شرکے ساتھ در کیا میں میں تم اللہ کے ساتھ شرکے ساتھ در کیا کہ در انہاں کو اس کے ساتھ سے کہ در انہاں کو اس کے ساتھ در کیا کہ در انہاں کو انہاں کو انہا کہ در انہاں کو انہاں کے انہاں کو انہاں کو انہاں کو انہاں کو انہاں کے انہاں کو انہاں کیا کہ کو انہاں کو انہاں کو انہاں کو انہاں کو انہاں کو انہاں کی حرب کا میا کہ کو انہاں کو انہاں کو انہاں کو انہاں کو انہاں کی حرب کو انہاں کا کو انہاں کو انہا

پس تم الٹرکے ساخد شریک نہ بنا وَ اس مال میں کرتم عِلم رکھتے ہو۔

> میحماین ابی ماتم میں سیے : عن النبی صلی الله علیه وسسلم اند قال النتوٹ فی حذہ الامت انعل

. تعلمون.

من د بيب النسل فقال البرمكورين الله عند با دسول الله كيف ننجومنه'

قال قل اللهم انّ اعود بك ان النوك بك والما ا علمدوا ستغفىك لمالًا

إعلمة

بنى ملى التّدعليه وسلّم في فرما يا اسالمت ين فترك چيونش كے چيلين كى آ بعث سي جي زيادہ محفی ہوگاء اس پر حضرت الوبجر سن عرض كيا يارسول الله! بم كس طرح اس سے نجات عاصل كرمكيں گے . فرما يا بولم الله! كين يترب ساتھ بناہ طلب كرتا ہوں كريں تيرب ساتھ بناك كروں جبحہ مين علم ركھوں تيرب ساتھ بناكر كروں جبحہ مين علم ركھوں

اورجس بيزكا مجهدهم نهين اس كے لئے ميں تجرسے بنسنس مانكا موں -

پئس وہ لوگ جواسلام کے زمرہ میں داخل ہونے کے بعد عدم علم کی بنا پر عقیدہ رکھتے ہیں کہ آتھ اور مشاکخ کی قبروں کا چ کرنا بیت اللہ کے چ کی مثل یا افضل ہے، اگر میر بیلوگ نشرعًا کمراہ ہیں، لیکن عدم ملم کی وجہسے عقوبت خدا وندی کے مستوجب نہیں ہیں۔

موجوده مشرکین قبور پین جوقرول والوں سے التہائیں کرتے ہیں ، انہیں اللہ کا ضریک اور شیس جنیں تا ہے گا ور شیس جنیں تان کوسفارش قرار دیتے ہوئے ان سے اپنی امیدیں وائست کستے ہیں اور جو لوگ ان کوستے ہیں اور جو لوگ ان کو اس سے بازر کھنے کی تلقین کرتے ہیں اور ایک اللہ کی عبا دت کرنے کی طرف بلاتے ہیں ان کو انہیا مواد لیا می کا قیمن ان کو بے اور ایک اللہ کی حربے والا قرار دیتے ہیں اور دی مشرکین ہو بتوں کی بو باکر نے متے اور ان سے التجا بی کرتے اور ان سے اپنی مقیدت مشرکین ہو بتوں کی بو باکر نے متے اور ان سے اپنی مقیدت وابستہ رکھتے اور وہ کسی نفع نقصان کا مالک نہیں ہوسے علیہ السلام کو اللہ کا بندہ قرار دیتا ہیں۔

عبادالرحمٰن كون ميں

بوانبیاری تعلیمات کے مطابق ایک الٹری عبادت کرتے ہیں۔ ترک نہیں کرتے تمام انبیار علیم السلام سے مجتب اور عقیرت رکھتے ہیں اور ان کی عزت اور تعظیم میں کوتا ہی نہیں کرتے نصوصًا خاتم الرسل صلی الٹرعلیہ وسلم کومقد اتسلیم کرتے ہیں اور اس کی مبت کودیگر تمام تعلق داروں سے زیادہ فائق سمجھتے ہیں۔ نبی صلی الٹرعلیہ وسلم کا ارشاف محبوبین میں سے ا

انس سے روایت کرتے ہیں رسول اللہ صلی النوطلیدوسلم نے فرمایا کرتم میں سے کو ق مومن نہیں ہوسکتا جب تک کر مجھلینی اولاد اور والداورتمام لوگوں سے زیادہ مجھ

عن انش عن كبي مثل بله عليه وسلم انش قال لايو من احدكم حتّى اكون احب اليه من ولده ووالله

والمناس اجمعين مستجع. يم قم ا'

بخارى شريف بين الومريره نبى أكرم صلى السُّعلية مسيّان كميست بين:

والدذی نفسی بسیدہ لایو سن اس فراک تم جس کے استھیں ہری ان احد کم حتی کیکون حوالا تبعال استے کو تی ادبی اس وقت تک مومن نہیں ،

جئت بېر .

جب تک کراس کی نواہش اس شریعت سمے تا بع مرہوجس کومیں لایا ہوں۔

عبالله بن بشام کہتے ہیں کہم نبی کوم

مرن طاب و با هربيرا مواها و مربن طا فعرض كيا يارسول الترآب مجه ميركنفس كه ملا ده تمام جيزون سهزياده محبوب بين

اس پر بنی سلی الترملیہ ویلم نے فروایا اس نعرا کوشم جس کے قبضتہ قدرت میں میری جان

ہے جب کک کرمیں تیرے نفس سے بھی زیادہ محبوب مذہوں، اس دقیت تو مومی نہیں

بن سکنا،اس پرتفرت مرکنے لگے اب بخدا آپ مجھ میرے نفس سے بھی زیادہ محبوب

ہیں۔ آپ نے فرمایا اسے مراب تیراایا^ن

میحیح سیسے

انس رضی السُّرِیمنهٔ بیان کرتے ہیں بنی علیدالصّلاۃ وانسّلام سنے فرطایا تین خصلتیں بخارى شريف بين مو بجورس الله عن عبد الله بن هشام دهى الله عن عبد الله بن هشام دهى الله عليه عسم وهو أخذ بيد عمر بن الخطاب - فقال له عمد ديادسول الله لانت احب الى من كل شيئى الآ وسلم لاوالدى نفسى ميد لاحتى وسلم لاوالدى نفسى ميد لاحتى اكون احب اليك من نفسك فقال له عمد فان الآن والله لانت احب الى من نفسى فقال المنبى صلى الله عليه وسلم الآن يا عمر صلى الله عليه وسلم الآن يا عمر صلى الله عليه وسلم الآن يا عمر

محیحین میں سئے ا

عن انس عن المنبي صلى الله عليه وسلم قال ثلاث من كن فيه

جس میں مبول گی' وہ ان کی ومبسے ایمان وخِل بهن علاوة الإيمان مس ك جاشن محسوس كرسه كا ديبل خصيت بس کان الله ودسولدا حب المیه حت شخص کے ول میں اللہ اوراس کے رسول سوا هماومن كان يحب الموء لا کی مجتت باتی تمام سے زیادہ ہے رومری يحتبرالالله ومن كان يكويه ان خصلت، میخف کسی السان سیعمرف اللّٰد يعود في الكفريعد ا ذ المقتذ لا الله کی دھناکے پیش نظرمحبّت رکھ تاہے۔ مسنزكعاكان يكوط النطيقئ في المستاد ونی بعض طرق ا لبخاری لایمداحد رئیسری خصلت) مختمی کھرسے نجات بإنف كيعدود باره كا فريننے كو كروُمانا حلاوية الإيمان حتى يحب السوء ہے جیساکوہ اس بات کومکروہ مبانآہے لايحب الالله

کرده جبتم بی گرایا جائے۔ بخاری کے بعض طرق میں ہے کہ کوئی شخص ایمان کی لات سے شادکام بہیں ہوسکا ، جب تک کہ وہ صرف الند کی رضا کے لئے کسی سے مجت نہ کرے۔
ان امادیث کی تصدیق قرآن پاک سے بھی ہور ہی ہے۔ النہ پاک فرماتے ہیں اور بیٹے اور قل ان کان آباؤ کم وا بناؤ کم و ابناؤ کم و عشیر تکم واموالی قتونتہ و مجانی اور تور تیں اور خانمان کے آدی اور و تبارة تنعشون کسادھا دساکن توضی احرالی می مال ہوئم کملتے ہواور تجارت بس کے بندنے من الله و دسو لم و جہاد نی سیله من الله و دسو لم و جہاد نی سیله خوالدراس کے دسول سے اور فراکی راہیں نیوبوں کو تقویم کا لایمدی القوم الفاسقین رالتوبہ ۲۲ جہاد کرنے سے تبین زیادہ عزیز ہوں کو لایمدی القوم الفاسقین رالتوبہ ۲۲ جہاد کرنے سے تبین زیادہ عزیز ہوں کو لایمدی القوم الفاسقین رالتوبہ ۲۲ جہاد کرنے سے تبین زیادہ عزیز ہوں کو

معلوم بہواکہ الندكے رسول سے محبت كرنا سبے اور الندكے رسول كے ساتھ بالد

مشبرت مدوه يبال تك كدخدا ايا حكم دلعن عذاب بيعجا ورخدا نافروان توكول كومايت

نہیں ویا کرتا۔

ک محبّت ان لوگوں کی محبّت سے کہیں برام کر ہوتی ہے جوالڈرکے بغیرسے عبت کرتے ہیں۔ بین کووه خداگرد اسنتے ہیں ، ایمان ان لوگوں کا ہی مضبوط سیے بچومسریٹ مضاستےالی کے لئے مجتت اور شمنی رکھتے ہیں۔ مدیث شریف میں سبے الله کی محبّت کے برابر کمی سے مجتب کرنا مٹرک ہے جس کے سلے معا نی نہیں ہے۔ ہاں اس کی رمنا کے لئے مجتت كرنا درست سبے ابس الٹركى رمنا جوتى كے لئے الله كے دمول ا درا يما نداوں سے محبت کی وابست کی کسی متعام یا ان کی قبروں کے ساتھ خاص کرنا درست نہیں، ملکہ مروقت ا در برمنعام میں ان کے حقوق واحترامات کو سیمال ملحوظ رکھا ما ستے اوران کی محبّت میں کو تاہی کورُ وا نہ رکھا مباستے ۔ اسی طرح رسول النّْرْصلی النّٰروليہ وسلم پرمسلوۃ و سلام کا مجیجنا بھی کسی مقام کے سامقرخا میں ہیں۔ اگر کو تی شخص روضہ نبوی پرما ضری کے وقت صلوٰۃ وسلام بھینے میں بنسبت اپنے گھراور شہرکے زیادہ مجت والفت کا ا کمہا *رکر*تا ہے ، تووہ النسان 'اقعی ایمان والا سیے اس تفاوت کی وجہسے اس تھے درمات بیر کمی ہوگ ۔ مشریعیت اسلامیہ تمام ایمان داروں کواس بات کا حکم دیتی ہے كرآب كے روضة مشرلیف كے علاوہ اسپنے ملكوں ا ورشهروں میں آپ كی تعظیم عبت احترام میں سرمون فرق نہیں آنا جا ہیئے۔ اگر فرق آنا ہے، تواس کا مطلب یہ ہواکہ آپ کی قركوميلي كي مينيت دى كى مالا الحراب في التستندية كي ساخ منع فرايا اورآب نے اللہ پاک سے دُعافرا تی کرمیری قبرکو بُت مر بنانا۔

انبیار کادمن کون ہے ؟

بولوگ بمیں انبیار کا دشمن قرار ویتے ہیں ، انہیں سوچنا میا ہیے کہ انبیار کا دشمن ہو شخص سیسجوان کے اوامرک مخالفت کرنا ہے اور منہیات سے احتناب نہیں کرتا اور فرشتوں انبیار اولیا مرسورج میاند مورتیوں کو خدا کا نثر کیس کٹھ ہراتا ہے اورانبیا جلیہم

الصلحة والسلام لنے جن میبی امورعرش، صفاتِ المنیجنت فووذخ اور فرشتوں وغیرو کے بارے میں ہو اطلاعات مہم بہنجاتی ہیں ، ان کی تنیزیب کرتا ہے۔ یقیناً ایسے لوگ در حقیقت انبیار کے دشمن بیں اور جولوگ ان کی مخالفت کرناگنا م محصتے بیں اوران ك احكامات ك سامن راسيم م كريية بي وايس الله الدك ولي بي اوران کے مومن سولنے میں کچھ مٹک نہیں اس تمہیدی روشنی میں غورو فکوسکے بعداس نتيجه پرمينيا كيمشكل نهين كداگرا بنيارعليهم العلوة والسلام سن قرول كمسلق سفركي امازت دی ہے اوران سے حوالج ضرور پرکی طلب کوروا رکھ اسے ان کی قبروں کے

ج كوستىس قرار دياسى، نوسمير ان كى مخالفت كرنا جا تزنهير، كين اگركتاب دسنت كام الله المانت نبين ديته بن ، بلكه شدت ك سائم قرول كازيارت كعسك سفركوممنوع قراردياب توانبيار مليم الصلوة كى مخالفت كرناان كى بات

نرمانناان کے ساتھ دہمنی کرنے کے متراد ف سیلے۔ ارشادر بانی سے ، ومن بشًا مّق الوسول من بعد

ا در بوتخف مسيرها راسة معلوم سونے · کے بعد پینمبری مخالفت کرسے اورومنوں ما تبین لیه الهدئ و بیتغ غیر

سبيل المؤمنين نؤله سالولئ كى داستركے سوا اور داعقىر يىلے، تو مدهروه چلتاسیم اسے ادھرہی میلنے ونصله جهنم وساءن مصايرا

ویں گے اور دقیامت کے دن جبتم دالمشاء، ١١٥ میں داخل کریں سکے اور وہ بڑی مبکاسیے

أتخصرت صلى الشعليه وسلم سفان ميس سعكسى بات كومبائز تبين فرما ياجس مم بنن مقدس مسا مدرك علاوه كسي سجدك طرف سفركهك مالن ست معي منع فرماديا اسي

طرح قبرول پرمسحدیں بناسنے والول کو ملعول کہا توان ارشا داست کی روشنی میں قبرول کا جج اور امحاب القبورسے و عائیں کرنا کیسے درست بوسکتاسیے ۔الٹریاک سکے

علاده سي مخلوق معضماً بين كراف ين انبيار عليهم السلام ك تعليمات كي مخالفت سبع ديس و لوگ جوا نبیا راو با دسلحار کی فرونی زیار رے اورات دیادیا تکتے ہی کہیں زیادہ تعنت خداد ندی کے مشحی ہیں مرنسبت ان لوگوں کے جو قبروں پرممار تیں تمی*ر کرنے بی*ں اور آپ کے ارشادا كى مخالفت كرتے بوتے تفرف التّرباك اوراس كے مبيب محد صلى التّٰدعليه وسلم کے دشمن میں ، بلکہ وہ نیک نوگ ہوالٹدا ور اس کے رسول کے اوامر کی اطاعت کو ابِنا شعا یَبْنَاسِ کَی ان کے مساتھ ہی ان کی دشمنی اظہر مِن اشعس سے اور عدا وت میں اس *عد* بك منجا وزموجيح بين كه وه موحدين كوية مرف كا فربلكه اس فتولى كابر ماركرت بين كه ان کوقش کرنا ان کے مساتھ لوا ئی رکھنا عین اوّاب سیے اور برگروہ اولیارالٹر کا دشمن ج محر در حتینت میمی ده لوگ بین جوا نبیار کے احکام کی نافرمانی ک وجرسے انبیا رکے بیمن ہیں اور حزب الله کی عداوت میں ان کی سرگرمیا المحفی بہیں ہیں۔بیساس بنیاد پروہ اس قابل ہیں کہ ان سے جہا دکیا جائے اور ان کی باغنیا نہ سرگرمیوں کو بدب تنقید بنایا مائے اس لئے کہ یہ لوگ شریب محدریکے مما فطیاب لام کے اساسی اصولوں کے مبلّغین کوسفتہ مستی سے مٹا دینا مباہتے ہیں۔

رُوافضُ نُوارج كے اوبام باطله

اسی انداز برا بل برصت اپنی رسول وشمنی کا مظاہرہ کررہ ہے ہیں۔ دیدہ دلبری اور شوخ بیشی کے ساتھ بدعات کا انتساب انبیار علیم الصالحة والتدام کی طرف کر ہے ہیں۔ اہل السنت کے ساتھ ان کی وشمنی کا پیمانہ لبریز ہو جیجا ہے۔ یہی مال روافض کا بیمانہ لبریز ہو جیجا ہے۔ یہی مال روافض کا ہیں۔ اہل السنت کے ساتھ ان کی وشمنی کا بیمانہ لبریز ہو جیجا ہوں ور سیتے ہیں اور کا ہو جو مہا جرین انصارِ صحابہ کورسول الٹرصلی الٹرعلیہ وسلم کا دشمن قرار دیتے ہیں اور ان کے انداد کا لعرہ بلند کرتے ہیں۔ نوارج بھی ان سے جدکم نہیں جن کے فطریات اللہ کا متعدد مہیں۔ حضرت عنمان حضرت علی رضی الٹرعنہ ما وران کے ساتھیوں کو کے ساتھ متعدادم ہیں۔ حضرت عنمان حضرت علی رضی الٹرعنہ ما وران کے ساتھیوں کو

قرآن پاک کی روشی میں کا فرقرار دیتے ہیں، بلکدان کا اعوم اچ اس نقطہ تک بہنے چکا سپے کہ وہ مسلمالوں سکے خونوں کے ساتھ ہو کی کھیلنے کور واسمجھتے ہیں۔ ان بنیا دی ا در اساسی اختلافات کی وجہسے رسول الٹر صلی الٹرعلیہ وسلم نے ان کے ساتھ جنگ کرنے کافتوی میا در فرمایا۔ نیزان کے متعلق پہشین گوتیاں حدیث کی متدا ول کتب میں تواتر کی مد کافتوی میں در فرمایا۔ نیزان کے متعلق پہشین گوتیاں حدیث کی متدا ول کتب میں تواتر کی مد

یعقد احد کم صلات مع صلاتهم می مناز بروزه تلاوت قرآن و منابه مین تم اینی نماز بروزه تلاوت قرآن و صیامه مع صیامهم و قداء مت مع قدائتهم یقوء و دن القد ان لا یجاد فی قرآن بیک کی تلاوت کریں گے ترکین اس کا اثری معدد و دن الد مید این اس کا ان کے ملقوں سے بنچے نہیں بہنچے گا۔ وہ مید دن السیم من الو مید این مین اسلام سے اس طرح نمارج بین جس طرح المین میں اسلام سے اس طرح نمارج بین جس طرح المین میں اسلام سے اس طرح نمارج بین جس طرح المین میں اسلام سے اس طرح نمارج بین جس طرح المین میں اسلام سے اس طرح نمارج بین جس المین میں اسلام سے اس طرح نمارج بین جس المین ال

لئن ادر کنتهم لافتانهم قتل عاد- اگر مجھے ان کاسامنا ہوا، تو میں انہیں عاد قوم کی طرح صفح میں میں منابع ہوا، تو میں انہیں عاد قوم کی طرح صفح میں میں سے نیست و نابود کر دوں گا۔

نوارج کی کلفیراوران کے خلاف محرکات جہاد کی مدیثیں کثرت کے سا مقدموج د ہیں - ان کاعظیم گناہ یہ سپے کہ وہ ملت شمہ کہ کا افراگردا نتے ہیں ، ان کی عزّت وناموس کو گراناان کی جائیدادول کو تلف کرنا بلکہ ان کے خون بھر کو گرانا تسخس اور لائق ستاکش قرار دیتے ہیں ، وگررز اگر اتنی ننگی مبارحیت کا حملہ ملتب اسلامیہ کے فرزندوں بران کا مشن مزہوتا ، تو اسلام میں ان جیسے بیسیوں گراہ اور برعات کا فروغ وینے والے فرقے موجود بیں ، ہم ان کے خلاف اس فدر تہدید آ میز کلمات ورط پخریمیں نہ لاتے -

قبرول كالحج كرنے وللے اور نوارج

اسلام کے ابتدائی دُور میں کتاب وسنت کے خلات جن بدعات کاظہور مواحقیقت بین نگاہوں سے اگران کا مائزہ لیا ماہتے ، تو وہ بدعات بعد کے دُور کی بدعات سے یقینًا اسلام کی مخالفت میں کم درمبر کھتی ہیں۔ روافض اور نوارج کی برعات کو صحافبتا بعین کے دور میں فردع مامل تھا۔ بظامر کتاب وسنت کے سامتھ تمسک ادر والبستائي كے مدعى تقعے بعض اوقات سنت كى نشان دى ان كى نظروں سے او جبل سونے کے باعث بھی وہ برمات کا رتکاب کرتے۔ اگرمِدان میں کچھلوگ لیسے بھی تقے ہوملی بددین منافق قتم سکے انسان عقے ؛ تاہم خوارج کی اکثریّت الحاد اور مد دین کارچ امرانے سے کنارہ کمٹی تھی۔ بنطام ِ اتباع قرآن کی رہ لگاتے۔ لیکن فہم قرآن سے عاری تنصیح ملیا کم آنخمفرت ملی الندعلیہ وسلم لنے ان کے بارے میں فرمایا کہ یہ لوگ فرآن نبمی سے کوسوں دور ہیں، لیکن خیرالقرون کے دورے بعد شرک وبدعات کا ایک سیلاب اللہ آیا۔ تحل جُوں زما نڈگزرتاگیا،جہالت *کے مہیب* بادل فعنا*ستے سیط ک*ڈاریک بنا تے *م*یساور عِلم کی شعافیں مرهم ہوتی گئیں۔فنتوں اور گھراہیوں کے دروازے کھل کیئے۔الانٹراک بالله اور عنرالله كى عباوت معاشره كے رسم ورواج كا جرد لامينفك بن كيدا بل توميد کونشا مذظلم وستم بنایاگیا- ا بل سنت کود برعکس نام نهندز دنگی کافور، دشمن دسول کے لعب سے شہور کیاگیا ، قبروں کے ج کی ترغیب و ترلیس میں جھوٹی من گھرت مدیثوں کو رواج بخثا كيا فبرون رمارتين ، قبة اور سجدي تعمير بوئين وظا سرب كفيرالقرون كے دور ميں مذ نسى قبركاج بوتامقا مذكمسي شهدكوزيارت كالأكري فيتت علم لأثنائه نبرول يرميلول تحفيلول كالنتظام والفسام بهوّا تنفا يُرس معلوم بهواكه اس دُدركے مبتدمين ١ بل قبور

كاب دسنت كى مخالفت اور بدعات كے فروع ميں خوارج وروا فف سے كہيں آگے نعل بیکے ہیں بنوارج کی بدعات کی مذمت میں اما دیث صحیحہ کثرت کے ساتھ مو بور ہیں۔ مزيد برآل صحاب كرام كا اجماع بهي ان كے مذموم ہوسنے پرتفوتیت كجنش رباسہے۔ امام احمد رجمت التُرعلية فروان من وارج كي مزمت والى مديث تقريبًا وسطرق سع مردى سے جنیں الم ملم بح مسلم میں لاتے بدل در محیے بخاری میں بھی کھی مسلم میں ورسے، فيكن مشرك بدختي فلتذبر دازاتني خرأت مذكر سيحة كمه وه خيرالقرون مين شرك وبدعت كوفرفغ دسینے کی مسامی ہے فائدہ میں شغول رہتے اس سلئے کہ برلوگ صریح اسلام کی تعلیمات کے مخالف ہیں، جبجہ نوا رج اورروا فض بنظا سرقر آن پاکساوراسلامی تعلیمات کاسہارا لیتے ہیں ، لیکن ساطن الحا دا ور بدوین کے بھیلانے میں کم بتت باندھے ہوتے ہیں سنت رسول ا درا ہل سنت کے ساتھ مخالفت سے پیش نظر فیدا کے باعیوں اور نافر ہانو ایکے ساتحدميل جول ركھتے ہيں مگر د لاكل قطعيه ان كى مجروانہ سرگرميوں كو لمشت ازبام كريسے ہيں اورجن مدعات کو اواب کی نیت سے اواکرتے ہیں بجائے اواب سے عمار خدا وندی كمستى بين مراطرت قيم سي عمل في بي الم مرت يكم آخرت مين نادم اوليتمان ہوں گے ، ملکہ دنیا میں بھی ذکت ان کامقدر بن میں سے ، سبے اطبینا ن ، کم تمبّی ان کے فدوخال سے آشکاراہے، رسلیم کرنا ہوگا کہ اللہ باک اپنی مخلوق کے ساتھ انصاف کا بُرْمَا وَ فَرَا تِهِ بِينِ - ان كَيْمُلا بِ سُنت مِتْ كَنْدُون كا تقامنا يبي محقا الله پأكسي يِظلم نهين كرًا سبحا دروتعال عمّا يعتول إنظا لمدون علوًّا كبيرا ولمه الحمد في الاولى والأخوة ولمدا لحكم والمسيه توجعون -

ادّله شرعبير كاماخذ

ا حکام سرّمیه وا جب ، مباح مستحب، حرام ، مکروه کی اصطلامات اوله شرحیه کما

ومنتست اجماع اعتباركى بنيا دبروصنع كأكتيل - ادّل شرعبه كا ما خذرسول التُّصل السُّطليرسلم ہیں ۔ بیس اس تہبیدی روشنی میں تمام مکتب فکرکے اہلِ علم کو اس بات سے مفرنہیں بلکہ اس داستے بردز صرف اہل سنتت ملکہ اٰہلِ برطت بھی اتفاق رکھتے ہیں کہ انحصرت صلی الٹّر علیہ دسلم میا کیان لانا ضروری سیے۔ آپ نے جس شریعت کوپیش فرمایا سیے، اسس کی اتباع كرنا مروري سبيئ جس بچيز كو آپ لينحلال قرار ديا ، وه حلال سبيه اورجس چيز كو آب نے حرام مقمرا یا ، اسے حرام مجامات ۔ پس اگر آنخصرت میں النُدعلیہ وسلم کے علاق كوتى يمى انسان آپ كى حلال كرده پييز كوحرام بنا ماسى يا حرام كوحلال اورمباح كرداناً ہے تویقیناً تمام مکتب فکر کے علما رکے اتفاق کے ساتھ اس انسان کواسلام سے باہر معجاما ستے گا- اسلام کے دائرہ میں داخل موسفے کے بعد قرآن وسنت سے استدل کرنا مغروری سیے - بإل اگرکوتی انسا ل کسی مدمیث کو اس سلنے ردکر تاسیے کہ وہ مدمیث محد تنین کے اصول وصنوالط کی روشنی میں محت کے معیارسے گرم پی ہے یااس کا حکم منسوخ موس كاستدمتنازع فيرمين اس سے استدلال واضح نهيں تواس تواس كنسيم مكرنا عين الماعت رسول - تفصيلًا اس كاتذكره رفع الملام عن لاِئمة الاعلى میں ملاحظ فرایک بس جب را وصواب متعین موجیکا ہے تو مجرحقوق الدادر حقوق الرسول ميركتاب وسنت كى تقريحات سے الخراف مرا طمستقيم سے الخراف ہے۔ اس نظربيكى بنياد بريمبين بغمبرون كامخالف اوردشمن محجناكسي طرح كميمي دريست نهيين اأكرميه تېم نعفن اوقات اجتها دًا کسی سند میں بالفرض را ه صواب سے بھیک بھی مبائیں ناماہر سبي كيمارا الأوه أتخصرت صلى الترعليه وسلم كي معاذ التُدمينا لفت نبيس نه بي آپ كي شانٍ اقدس کو گھٹاناسیے، ادنی درمبر کا مالب علم مجی اس بات کو مجھ سکتا ہے۔

کیانماز میں نبی صلی التّرعلیہ وسلم پردرُرود بھیجنا ضروریہے

مسلک جمھور : جمہور محدثین کہتے ہیں کرنساز میں آپ پردر دد بھینا فرض ہیں یعنی ہوشخص نماز میں آپ پر در دد نہیں بھیجنا، وہ نہ تو آپ کی شان میں گت خی کام تِحب ہو رہا ہے اور مذہبی اسے عداوتِ رسول کے لقب سے موسوم کیا مبائے گا۔

بعض علمارنما زستے خارج آپ پرصلوٰۃ بھیجنے کو واجب قرار دسیتے ہیں جبیر بعض علمارکسی مالت میں بھی آپ پر در و دبھیجنے کو واجب نہیں سجھتے۔ قرآن پاک مُتعلّقہ آبت میں امرکوا جماع کی روشنی میں استحباب پرخمول کرتے ہیں ۔

امام شافعی رحمهالتُر کا قول

امام شافعی جمبور و تنین سے الگ نظر بیبیش کرتے ہیں کہ جوشخص نماز کے تشہد
کے آخر میں سلام سے قبل درود نہیں پڑھتا اس کی نماز فاسد ہے ، لیکن قامنی عیاض
اس فول کو صندیف فرار دیتے ہوئے امام طبری اور طیا وی کے قول کے ہوالہ سے متقدین
اور مناخرین علما سرکا اجماع نقل کرتے ہیں کہ تشہد میں آپ پرور و د جیجنا واجب نہیں نیزامام شافعی کی تائید میں کوئی وقیع رائے موجود نہیں ، بلکہ امام طبری ، قشیری اور دیگر ائمۃ اس مسلک کا انکار کرتے ہیں بلکہ متقدمین دیگر ائمۃ اس مسلک کا انکار کرتے ہیں بلکہ متقدمین کی منالفت کی وجہ سے ال کے مذہب کولا تی تحسین نہیں سمجھتے۔

ابوبکر بن منذر کا قول ہے کہ نماز میں آپ پردر و دمھیے بنامتحب ہے اگر کوئی شخص دروونہیں جھیجتا تو امام مالک' اہل مدینہ ، اہل کو فہ ، امام توری اور دیگر اہلِ علم کے مذہب کے مطابق اس کی نماز درست ہے ۔ امام مالک ، سفیان توری

سے منقول ہے کہ اُ خری تشہد میں معلوۃ بجینا مستحب ہے اور جو تحف ورود نہیں بھیجنا ' وہ گنا بہ کار ہے۔ مرف اکیلے امام شافعی اس طرف گئے بیں کہ جو شخص وروی بیں بہت اس کونماز کا اعادہ کرنا ہوگا۔ امام بحاق فرماتے بیں کہ بحول کی مورت میں بجد حرج نہیں ' البقہ جو شخص مبان او جھ کر درود نہیں پڑھتا ہ اس کونماز کا اعادہ کرنا ہوگا۔ امام احمد سے تین روایات مروی ہیں۔ محمد بن مواز نے امام شافعی کے قول کے مطابق بھی ان کا ایک قول نقل کیا ہے۔ امام خطابی فرماتے ہیں کہ امام شافعی کے علاوہ فقبا می تین درود بھیجنے کو دا جب نہیں کہتے ،لیکن امام شافعی کی موافقت ان سے بیلے دُور میں موجو خیس

امم محرّبا قركا قول

اگرمین نماذمیں درود نترلیف مذہر حسکوں تو میں مجھتا ہوں میری نماز کمل نہیں۔
قاضی حیاض فرماتے ہیں کہ آپ پر درود بھیخا فی الحجملہ فرض سبے۔ احا دیٹ میں اسس کی
رضیت ولائی کمتی سبے اس کے لئے کسی وقت کا تعیق نہیں گرموں انتہ کوام وجب پراجا کا
رکھتے ہیں بہ بجہ الجرجعفر طبری درود کی آیت کے ممل کوستوب قرار دیتے ہیں اوراس پر
اجماع کے مدعی پڑ دمی ہم مسلم میں علمام اورائمۃ دین کے اقوال اوراجماع کے کہایات
مختلف ہیں کین اس بات پرتمام اکمۃ متفق ہیں کہ جو شخص آنحصرت صلی اللہ علیہ وسلم پُروُو
میں قرار دیا جائے گا اور مذہبی وہ آپ کی شان میں کسی گستانی کا از کا اس کو آپ کا
منگہ تمام انٹر دین ایک ہی مقصد رکھتے ہیں اور وہ برسے کہ جملہ امور میں آنحضرے ہالی تھے۔
علیہ وہ تم کی متا بعت کی ماسے۔

مالور ذبح كرك كوقت آپ برصلوة بعيمنا كيساسه

اس مسئلہ میں ہمی ائمۃ دین مختلف آرائیٹ کرستے ہیں۔ امام مالک امام احد ذہرے کے وقت آب پر در دو مجیجے کو مکر وہ قرار دیتے ہیں۔ قامنی عیامن ابن مبیب کی دلتے ذکر کرتے ہیں کہ وہ فرات ہیں اسی طرح ترکز رق ہیں کہ دوہ قرار دیتے ہیں ہا مرفون آپ پر در دو مجیجے کو مکر وہ قرار دیتے ہیں بکر زلاتے ہیک ترکز رق بھیجے کو مکر وہ قرار دیتے ہیں بکر زلاتے ہیک ترکز ترکز میں امام سحنون آپ پر در ود مجیجے کو مکر وہ قرار دیتے ہیں بکر زلاتے ہیک ترکز ترکز میں امام سحنون آپ پر در ود مجیجے امار سے ۔

امام اصبغ امام ابن القاسم سے ذکر کرتے بین کہ ذبح اور چینگئے کے وقت مرف اللہ کا نام لیا جائے ۔ محمدرسول اللہ نہ بڑھا جائے ، لیکن اگر کوئی شخص اللہ کے ذکر کے بعد محمدرسول اللہ کے ساتھ تسمیدا واکر تا سبے تو یہ بھی مکروہ تمہیں ہے ۔ امام اشہب فرماتے بین کہ ذبح کے وقت نبی اکرم صلی اللہ علیہ کہ مروہ دبر صفے کو سنت نہیں قرار دیا جاسکتا امام شافعی آب پر ورود بھیجنے کو نہ مرف یہ کہ کمروہ نہیں کہتے ، بلکہ ایمان کا جر محجتے بیں۔ امام احد کے الم ندہ میں سے ابواسیات بن شاقلاً اور دیگر تلاخدہ کا یہی مسلک سبے ۔ امام احد کے تلاخدہ میں سے ابواسیات بن شاقلاً اور دیگر تلاخدہ کا یہی مسلک سبے ۔

فرشتول اورنبيون كي قتم كها نا

فرشتوں کے نام کی متم کے نا مبائز ہونے پرتمام ائٹر دیں متفق ہیں اورجب کوئی شخص ان کی شم اٹھا نا مبائز ہونے پرتمام اٹٹر دیں شغتی ہیں اورجب کوئی شخص ان کی شم اٹھا نا جا تزنہیں ۔ ائترار بعد کا بہوں کے بارسے ہیں بھی بہی نظریہ رکھتے ہیں کہ ان کی شم اٹھا نا جا تزنہیں ۔ ائترار بعد کا مذہب بھی بہی ہیں ہے ؛ البقہ امام احمدسے ایک روایت اس مفہوم کی موجود ہے کہ مون ان مفہوم کی موجود ہے کہ مون آئے من کی منعقد میں تھیں ہے ۔ امام احمد کے تلا مذہ میں سے ابویعلیٰ اور دیگر ائر تہ بھی اس طرف کے ہیں ، ابن عقیل تمام انبیار کے ناموں کی سم المول کی سم المول کی سم المول کی سم کے اس کو درست کہتے ہیں میں جو قول جمہور ائر تم کا سے کہ کسی مخلوق و نواہ انبیار ہوں ، کے نام کے ساتھ قسم اٹھا نے کوم ائر نہیں جھتے ، ان کور تو انبیار علیم السلام کا دشمن اور ندان کا

100

مخالف ا درنہ ہی اسے گستاخ سمجا مانے گا، بلک مقیقت توبہ سبے کہ الڈ پاک کخصوصیا کوذات پاک سے الگ کرکے فرشتوں اور نبیوں کو بخش دینا توصید کے منافی ہے۔ توحید کا نقاضا توبیسیے کر مذتوفرشتوں اور ببیول کی عبادت کی مباستے ندان کے سامنے سحبہ ہ کیا حباہتے، مذان سکے سلتے نما زیں ادا کی حبایتی اور مذہبی الڈیکے ماسوا کو بھارا حاجم يس اليسےلوگوں کو پيغمبروں اور ببيوں کا دشمن قرار دينا کسي صورت ميں مجميستحسن نہيں اللہ ياك فرواتے ہيں۔ كسى آدمى كوشايان نهيل كرفدا تواس ماکان بشران یونید الٹامکتا كناب اورصحومت اورنبوت عطا فرطنة اور والحكمروالنبوة ثم يقول للناس وہ لوگوں سے کے کہ خدا کو چھوٹ کر میرے بندے کونواعبادًالی مین دُو ن الله ولکن بوما قر، بلکهٔ اس کوکهنا سزاواریب که اسے كونؤ دبانيبتين بمأكنت تعلمون ابل كتاب تم دعلماً، ربان موجاة مكينكم تم الكمَّا فِي كَنتمرتِه وسون- دآ ل عهوان كتاب دخدا، برطفتے پڑھاتے رہتے ہو۔ پس جب وہ لوگ ہوفرشتوں اور نہیوں کو خدانہیں کہتے ، وہ ان کھے وتٹمن نہین تووه لوگ بحوان کوالنُد کے منَّد سے مجھتے ہیں اور مسے علیہ السلام کو بھی نعدا کا بندہ تصویر تھے ہیں موحدین کا گروہ ہیں اور ال کے مومن بولے میں کچے شبہیں الله یاک فرماتے ہیں ، يااهل انكتاب لا تغلوا في دينكم الے اہل کتاب اپنے دیں دکی بات ہیں ولاتقولوا على الله الا إلحق انتسا مدسے نہ برطھوا ورخدا کے بارے بیں حی کے سوا کچھے نہ کہوئیج ربعنی،مریم کے المسيح عيسى ابن مريم ريول الله وكلمنة القلها الحام يم ودوح مند بليط ميسيٰ رنه خدا تقے نہ خدا کے بیٹے بلکہ نىدا كے رسول اوران^م كلمه (بشارت₎ فامنطايله ورسله ولانقوبواثلثة

محافته هلال فهريا لكيها الميالله المنوع ليصعفر

موضي في يواس شفره بخفي المواس

مبعنهٔ ای یکوی له و دولهٔ ما ف کی طرف سے ایک روح تھے تو خداا وراس استحداث دما فی الارض و کفی کے رسولوں پرایمان لاؤاور دیں، نہ کہورکہ بالله وکید - دالنساء، ۱۱ م فدا، تین بین بین اس اعتقاد سے، بازآ و کریم تمہا رہے تو بریم تہا رہے کہ اس کی اولاد کریم تمہا رہے تو بریم تہا رہے کہ اس کی اولاد بوج کچہ آسمانوں اور جو کچہ زبین میں سے، سب اسی کا سے اور خدا ہی کارساز کانی ہے۔ مفسرین بیان کرتے ہیں کہ نجال کے عیسائی انخفرت صلی الله علیہ وسلم کے باس کہ آتے اور کہا کہ تو ہما رہے بین کا بیان بیا تاہد اسلام کی شان میں گستا خان کل ان بال براتا ہے۔ آپ نے فرمایا عیسیٰ علیہ السلام کو بندہ ہم جھنا ان کے اور اس کو اللہ کا نبدہ کہا ہے۔ آپ نے فرمایا عیسیٰ علیہ السلام کو نبذہ ہم جھنا ان کے لئے با صفی عارنہیں، فورا ذیل کی آیت نازل ہوتی :

لن يستنكف المسبح ان يكون مسيح اس بات سے عارنهيں ركھتے عبد الله ولا الملائكة المقرمون و كنداكے بندے ہوں اور بن تفر فریشتے من يستنكف عن عبا دقه ويستكبر (عادر كھتے ہيں) اور بن عن فداكا بند ہونے فسي الله عبيد (الله أنه الله عبد الله أنه الله كو وب عار شجها ورمرش كرے تو فدا سب كواسينے باكس جمع كرے كا

مومدین کے عقائد

النُّد کے ماسوا فرستوں اور نبیوں سے حوائج مانگٹا عقیدۃ تومیر کے منافی ہے۔ ظاہرے کہ وہ توایک ذرّہ کے بھی مالک نہیں ہیں۔ النُّد باک فرما تے ہیں۔

لا يملكون مثقال ذرة في المسمولة وه أسمالون اورزمين مين وره بجرييز ولا في الأسمولة ولا أسمولة ول

دماله منهم من طهيد ولانتنفع شركت سے اور مذان ميں سے كوتى فداكا الشفاعة عند لا الالمن اذن له - مددگارسے اور فداكے بال ركسي محلت،

دانسدا، ۲۲-۲۳ سفارش فائده ندوسے گی، گراس کے گئے۔ جس کے بارسے میں وہ امبازت بخشے۔

معلوم ہوا کرکسی نبی اور فرشتے کی سفایش النّہ باک کے اذن سے بغیرِ فائدہ نہیں مجنش سکتی ارمث و خدا وندی سے ،

من ذاله في يشفع عند ١٤ الآ كون سے كماس كى اجازت كے لغير

با ذخه - د بقرة) ۲۵۵ اس سے دکسی کی سفارکش کرسکے۔

الله پاک فرماننے ہیں :

بأذن الله لمن يشاء ويوضى - مكراس وقت كرفدا بس ك سن جلب

۱۱ المجنسم ، ۲۷ المجنسة اورسفارش كيسند كرسے . اس آيت كام صنمون أگرم فرشتول كى سفارش كو كالعدم قرار دسے رہا ہيے ،

اس آیت کا مقدون اگرمیر فرشدول فی سفار میش کو کالعدم قرار دے رہا ہے، تاہم اس سے ان کی شان میں تنقیص کا کچھ شائم نہیں اور فرشتے تو ان لوگوں کو اپنا

شمی قرار دیتے ہیں جوان کو اللہ پاک کا شر یک مھمرا ہاہے اور موحدین کے ساتھ مجتت ر کھتے ہیں بوان کوان کے حطا کردہ مقام سے اونچا نہیں مجھتے اپس وہ ان کے فلواور در تثرک سے بری ہیں ، ارشا دِ خدا و ندی ہے ،

ا ورص دن وہ ان سب کوجمع کرے گا، پچرفرشتوں سے فرمائے گا۔کیا لِوگ تہاری پوم کرتے تھے۔ وہ کہیں گے تو یاکہ توہی سماراد دست سے ندیر بلکہ بیجنات کی بیماکرتے تھے اوراکٹران ہی کوانتے

ا درحس دن دخدا، ان کوا درا ل کو جنهين يه خدا كح سوالوينية بن جمع كرسطاتو فوانظ كيائم ني ميرسان بندول كوكمراه كيا تھایا بیخود کھراہ ہوگئے تھے، وہ کہیں گے

توپاک ہے ہمیں یہ بات شایان ندمقی کہ تیرسے سوااوروں کودوست بناتے،

لیکن تونے ہی ان کوا ور ان کے پ دا دا کوبرشنے کونعمتیں دیں، یہاں تک کہ وہ تیری یا د کوبھول گئے اور یہ بلا کیج نوا

وہ لوگ ہےشبہ کا فرہیں *جرکہتے* ہیں

لملائكة ألمؤلاء اياكمم كالمؤا مبدون قالوا سيمائك انت ولينا

وبوم يحشرهم جميعا شهينول

ن دونهم بلکانوا گیبد ورن لجن اکسٹڑھم بھم مؤسنون۔

دالسبل ۹ ۳۰۰۰ نیزالندپاک فراتے ہیں:

ويوم نيمننوهم وما يعبدون ن دون الله فيبقول اءنتماضلتم

بادی هنوُلاء ام هم ضلواالسبیل نواسبحان**ت** ماکان پنبغی لنا ان تخذ من دونٿ س اولياءِ وککن

تنعتهم والباعهم حتى كسواللذكر کا نواقومًا بورا - زالفن قان)۱-۱۸

نىيىزالىر كال فرات بى : المتدكفرالدنين فالوا النالله

کرمریم کے بیلے دعینی مسیح فدا ہیں ؟ مالانکمسے بہودسے برکہاکرتے تھے کہ اے بنی اسرائیل فدا ہی کی عبادت کرد جومراہی پروردگارسے اور تہا را بھی راو مِبان کھو کہوشخص فدا کے ساتھ شرکی کرے گا، فدانس پر بہشت کوحرام کردے گااواس هوالمسيح بن مريم وقال السيحيا بنى اسرائيل ا حبد ولالله دبى ورمكم انه من يشوك بالله فقد حرم الله عليه الجنته وماوله الناد وما للظالمين من الضار

کا منکانا دوزخ سیصاورظا لمول کاکونی بدد گا نِنبین <u>.</u>

معلوم ہواکہ مسیح علیہ السلام اور دوسری مخلوق نفع ، نقصان کی مالک نہیں ہے ، اس سے کب لائم آ اسے کہ رجب مسیح علیہ السلام اور تمام مخلوق النز پاک کے سامنے ہے بس ہیں ، س میں ان کی الجنت کا پہلون کماتا ہے یا اس سے ان کی شان میں کمی واقع ہور ہی سے ۔ کس فدر دافنج الفاظ میں سیدالرسل آ کھفرت سی الاعلیہ والم

اپی بے جارگ اور واماندگ کا اظهار فرمارہ ہیں۔ اللہ باک فرماتے ہیں ،

که دوکه میں لینے فائد سے اور نقصالی کا پھی میں اختیار نہیں رکھتا، گر محضورا میا ہے اگر میں فیدس سے اگر میں فیدس کے ہاتیں مانتا ہوتا تو ہہت سے فائد سے جمعے کر لیتا اور محرکوکوئی تکلیف ند بہنچی، میں تو مومنول کو ڈرا ور توشخری سانے والا ہوں۔

قل لا املك لنفسى نفعا ولا ضوا الاّ ماشاء الله ولوكنت علم الغيب لاستكثرت من الخيروما مسنى السوء ان آنا الا خذ پرور بشريرلقوم پومنون - دالاعران) ۸۸

نیزارهاد خدا وندی سید،

قل اً فی لا املک تکم ضُواو لا دِشْدًّا قِل ا بی بی پیریی من الله

برنجبی کهه دو که مین نمها سے حق میقصان اور نفع کا کچھا ختیار مہیں رکھتا پر بھی کہہ و دکھ خدا دیکے عذاب₎ سے مجھے کو تی پنانہیں دے سکتا اور میں اس کے سواکمیں جاتے بنا^ہ ثبين ديجست

احد ولن اجد بن دُو سُه مُلتحدا . د المجن ۲۱

نیزالٹدیک فراتے ہیں :

کہہ دوکہ میں تم سے رینہیں کیا کہمیرے

قل ۱۷ قول لکم عندی خزائن الله ولااعلم الغيب ولاا قول لكم

پاس الله لنعالي كے خزانے بي اور مزدير كم، مين خيب ما نتا موں اور برتم سے يركها

ا نى ملك ان اتبع الاما يُوحىٰ ال قل **مل يس**توى الاعملي والسمير

ہوں کہ میں فرشنہ ہوں میں توصرت اس کم ہر چلتا ہوں جومجھے (خدا کی طرف سے) آتا ہے

افلا تشفكرّون. (الإلغام) ٥٠

كه دو بجلااندها اور انتهون والابرا بر موت بین تو بهرتم عور دكبون نهین كرتے -تموقرآن پاک میں موجود ہیں۔ارشا دخداوندی ج

اسمصمون کی آیات کرت کے سا ومالی لا اعبدالذی فطرنی و الميه ترجعون ءَأتخذ من دوندالهتر

ا ورمجھے کیا ہے کہ میں اس کی پرستنشن کروں جس نے محصے پیداکیا اور اس کی طر ثم کولوٹ کرجا ناہیے ، کیا میں ان کو تھیوٹر کر اوروں کومعبو د بناؤں ۔ اگر خدامیرے حق

ان يردن ا لوحلن بضر لا تغن عنى شفاعتهم شيئا ولات بينقلاون-

يبن نقصان كرنا جابييتے توان كى سفارش تجھے کچھ بھی فائڈ ہ نہ دیے سکتے اور مذوہ مجھے چیٹرا ہی کیں ۔

(یشین) ۲۲-۲۲)

نیزارشاد خداوندی سے ،

کیا خداایینے بندے کو کانی نہیں اور بہ تم کوان لوگوں سے جواس کے سواہی لعنی غیرضداسے ڈراتے ہیں ادرجس کوخداگاہ

اليسءالله بكات عبدلاونجوفو بالذين من دونه ومن يضلل

الله فماله من هاد-رزمن ۳۲

14.

كرمے تو اسے كوئى ہدايت دينے والانہيں۔ نيزالٹرياك فرماتے ہيں ،

ولاندع من دون الله مسالا

يننفعك ولا يضرك فان فعلت

فانك اذا من الظالمين ـ ديوننــ (١٠٩)

تہارا کھ تعبلا کرسکے اور نہ کھ مگاڑ سکے اگرا یساکر دگے تونا لموں میں سے ہوما ذگے۔

ا ورخداکو چیواژگرالسی چیزکون پکارنا بود

عصمت انبيار

اس شم کی آیات سے قرآن مجرار اسے مقصود یہ ہے کہ و تحف علم کامثلاثی ہے وہ مانتاہے کیامورات ،منہیات ،واجبات ،محرمات ، مکرو ہات کے نقامنوں کے مطابق اگرکسم سجدیاکسی نبئ ولی کی قبر کی طرف سفرکرنے کو د لائل کی روشنی بیں اجازیجیتا سبے نواس کو گمڈ اِرنیلیوں کا شمن و غیرہ نہیں پمجھا مباستے گا ، بلکہ اگرا بنیا معلیہم العساج وال كى مقىمىت كى مسئل ميں ان سے صدوركن و كے حواز كے مسلك كورجى ديا سے تو اس سے بھی نبیوں کی شان میں کمی واقع نہیں ہوگی۔اسی طرح کجت الانبیار کے الفاظ کے ساتھ د ما کرنے کوامام الومنیف کے مسلک کے مطابق نام انزگر دانیا ہے تواس سے تھی ببیوں کا گستاخ نہیں کہلائے گا۔ قامنی عیاض دیوکہ مستلہ معمیتِ انبیار میں مبالعة آران كى مديك آكے نكل كتے بيں ، نے ان امورًا وركية تاكه ما بل لوگ ان لوگ كوبيه ادب اورگستاخ ليمجعين بومتا بعت رسول النّرصلي النّرعليه وسلم سحيميش نظر ولأنل شرعبه كى روشنى مين اس كو ناما ترسم صحت بين ، بلكه جهال المطبقة بجرا ندحي تقييرت کے بیش نظربلا سویے مجھے آنخصرت صلی الڈعلبہوسلم کے مامورات کی می الفت کرر ہا ہے اورآپ کی طرف من گھرات باتوں کومنسوب کرلئے سے نہیں بیجکیا تا ۔ آپ کی

ننان کوکم دکھار ہاہے اور ان کی تیمنی کسی دلیل کی متناج منبیں سبے۔ قامنی عیاض کی وضاحت

کون سے امور کی نسبت آپ کی طرف کرنا جائز یا مختلف فیرسیے ؟ اور بشری فنو کے مطابق آپ سے جوافعال مرزد ہوئے کیاان کو عام مخلوں میں بیان کرنا درست ہے اور چرمبدان جہا دمیں آپ نے جومصاتب جیلے اور چرمبدان کے وارسے اور زخی ہوئے ' نتوت سے ابتدائی سالوں میں آپ کوجن مشکلات کا سامنا کرنا پڑاا ورمعاشی طور پرنقر واقع آپ کا دامن گیرر ہا۔ ان کے بیان کرلے میں آپ کی تحقیر لازم نہیں آتی ۔ کوئی واعظ

جب ان روایات کا تذکره کرتا سبح تونه اس کا انداز استهزائی به و تاسیما ورنه وه فی گفیتت آپ کی شان کا استفاف کرر با بهوناسید، بلکه مذاکر هملمیر کے انداز کے مطابق انبیار کی عصمت کے بیش نظر استم کے واقعات بیان کرنے سے سامیین کواصل مقصد کی طر سربر میں بر

لے مبانے کی کوششش کر ناہیے۔ معا ذالٹر آپ کی شان میں کمی کرنااس کے ذہن سے کوسوں وُور پیو ناہیے۔ ہاں اگرسامعین عقل وفہم سے عاری ہوں اور اندلیشہ بہو کہ وہلط ''

ا ویلات نکال کر تخرلین کے مرتکب ہوں گے، تو بھر ان کے بیان سے ام بتناب ضروری ہے۔ اس کئے بعض سلف صالحین عور تول کوسورۃ پوسٹ کی تعلیم سے روسکتے ہیں بخطرہے کہ مسورۃ پوسٹ کے واقعات سے کہیں وہ فتنے میں مبتلا مذہوما میں فظام رہے کڑوتوں میں منقل دمعرفت کی کمی ہوتی ہے اور ان کا ادراک بھی کمزور ہوتا ہیں۔

لانخصرت صلى الشرعلييه وسلم كالبحريان جُرانا

خیال کیجئے آپ ایپنے متعلق جب اس خبر کا انکشاف فرماتے ہیں کہ میں ابتدا میں بحریاں چرا متفاا در میر بنی سفے بحریاں چرانے کامشغلہ کیا ہے۔ چنا نچرموسی ملیہ الت لام کے بجریاں چرانے کا واقعہ اللّٰہ پاک نے قرآن پاک میں فرمایا تواس واقعہ كيبيان كرف مين بظامرآب كالتخفاف نبين بي بلكهاس مين محمد مضمرب كرجس طرح آج ابتدا میں آپ کوبجریاں چرانا سے ان کی دیجہ بھال رکھنا ہے ان کو مجتمع ر کھنا سبے ۔ اسی طرح کسی وقت آپ سے انسانوں کی دیجہ بجال اور ان کی اصلاح کا کام ليا مائے گا۔ ليكن اگركوتى شخص اس وا قعدكو حقارت اميز الجرسے بيان كرتاسيے اوراپ كى تحقىركے مپلوكوا ماگركور اسبے ، تواس كواس بات كى قطعاً اما زىت نہيں دى ماسكتى -بہرصال اس وا قعہ کومورومدرے پرمحمول کرنا ضروری سبے ، بالسکل اسی طرح النّٰہ پاکسنے آب کی تیبی کا تذکره بصورت انحرام وا عزاز فرمایا ہے، لیکن اگر کوتی واعظاس آندا ز سے بات کرنا ہے جس سے آپ کی ظمیت میں فرق آ تا ہے تواس انداز کو کمی برداشت نہیں کیا ماسکتا ۔ حقیقت توبیہ ہے کہ وہ انسان جرباب کے بعد بجین ہی میں ماں کے سہارے سے محروم ہوما تا سے - اس کوالٹرنے وہ مقام بلندم طافرمایا کہ ایک دن عرب سیاست دانول اورلیڈروں کواس کے سواکوئی مارہ کارندریا کہ دہ اس کوہی اپنا سردارا ورمقترات کیم کریں اور عرب کی قیاوت کی باگ ڈوراس کے سپرد کردیں۔ رفتہ رفتہ عرب سے ماسور دوسرے ممالک بھی اس کے سامنے *دنگوں ہو*تے گئے متبعین مایش طیم كانتيجه بيهوتاسي كمفرشق بمى ان كى مدد كے لئے آسمان سے اُتر برائے ہيں . تصرت اللي کے اس کرشمے کودیکھ کرونیا مج میرت ہوماتی ہے ،لیکن کسی کہ بھی تعبّب لاحق نہ ہوتا۔ اگر آپ بادشاہ زادے ہوتے یا آپ آباؤ ا مدا دسے منبوط پارٹی کے کمانڈر موتے تواس وقت آپ کا غلیبر،تفوق ،باعث حیرا نی نہوتا۔ کیا آپ نہیں دسکھتے کرمُرقل ہاد شاہ نے جب ابوسنبان بن حرب سے پوجھا کہ کیااس کے آبا ڈا جدا دمیں سے کسی کوبادشاہت مى فيسب يقى، توالوسفيان نے برملاكها مقاكه بالكل نهيں - مرقل نے كها اگراس كے اللا مین میلے کوئ باوشاہ موتا توسمجھاما الکریشخص ابنے باپ کی باوشامت کا طالب ہے، اورمچپر صفرت محمد صلی النه علیہ وسلم کا تذکرہ مہلی سما وی کتب میں بھی بیتی کی صفت پرشتل سے کتاب ارمیا میں اس صفت کا ذکر سے اورابن فری برن نے عبرالمطلب کے ساتھ گفتگو کمتے مہوسے اور ایمب انے ابوطالب کو نوشخبری سناتے ہوسئے کہا متھا کہ آخرالنمان میغمبر بیتی سکے ساتھ موصورت ہوگا۔

الخضرت صلى الدعلييرولم كاأمي بهونا

المنخصن ملى النُعِلية ولم كے علاوہ اگر كورى شخص أمى بسے نواس كاأتى ہونااس کے گئتے باعث عارسیے بہالت وغباوت کا مہوائی سے الیکن جب آپ کے بارے بیں یکها جانا سید که کیسنے کسی کے سامنے زانوتے تلمذ تبہ بہیں کتے ندکسی سے علم ماصل کیا اورية آپ بوط هنالكهنا مانن تقد اسك با وجود آب معارف وعلوم كى ايك الدي تاوز پیش فرواتے ہیں کہ جس کا مقابلہ کرنے کی سکت بڑے مراسے علماً اورفضال بھی نہ کرسکے، اور ان کی حیرانی کی انتہا ندر ہی۔ جب انہوں نے دیجھاکہ ایک اُتی انسان اس تعم کی علیما كامر ويشمه سبع، توده آپ كے نعنائل كے كرويده ہوگتے اور آپ كى تعربيف كے ساتھ سابھاپ کی اعجازی قوت کے قائل ہوگئے اور اعتراف کرنے کے بغیر میارہ ہذر کا کہ ہم نے آلات واساب کے توسط اور کمآلوں کے مطالعہ سے ملم ومعرفت کے جوہر کو ماصل کیا، لیکن بشخص اسباب کے توسّط کے بغیرمطلوب ومقصود سسے بہرہ ورہے اور ملومتر کاایک ایساسورج سے جس کے سامنے ہما رہے علم کی چمک دمک ناپیدسے۔ پس الٹر پاک کی بی خاص نعمت سیسے کہ اُئی ہونا ہوآ پ کے عیر کے لئے باعث مارسے مرورا پ کے

الخفنرت صلى الته عليه وسلم كاشق صدر

لنتة باعث عرّوافتخارسے۔

مدیث کی کا بوں میں آپ کے شق صدر کے بارے میں کثرت کے ساتھ روایات موحود ہیں کہ آپ کااپریشن کیا گیا اور زائدمصر چیز کو بامپرنکال دیا گیا اور آپ کے قلب کو آب زمزم كے ساتھ دھوكر محكمت وايمان سے عفرد باكيا-اس ايريش سے آب كى روحانى زندگی میں مزید قوت ا ماگر ہوتی ہے۔انشراح میدرا وراطبینان قلب مبسی دولت سے مالا مال ہونے ہیں، کیکن آپ کے علاوہ اگرکسی کے دل کا اید میشن کیا حاستے تو اس سے اس کی موت واقع ہونا قطعی ہے اور دوبارہ زندگی ملنا فیرمکن ہے۔ علی بزالقیاس بہت سے امور میں آپ دوسرے لوگول سے ممتا دفظر آنے ہیں۔ شلا آپ متواصع امنک المزاج تھے۔ گھر کا کام خود اپنے با تعول کرلیتے۔ نواکہ مطعومات ،مشروبات، مبوسات کا استعمال کثریت کے ساتھ مذفرہ تے ۔ گاڑھے کا لباس پیننے اور کھانے پیپنے کا حال پر تنها که ایک ایک ماه گھرمیں آگ نہیں ملتی تھی ۔ وُنیاسے بے رغبنی رکھتے اور دنبا کا مال اورادن پیزوں کو بلی ظفا ہونے کے مساوی سمجھتے ہم سمجھتے ہیں کریسب چیزس آب کے فعنائل ومیا مدکوروشن کررہی ہیں ،لیکن اگرکوئ شخص آب کے اُتی ہونے بر . تواضع اورمسکنت کی زندگی کو بیان کرتا ہوا شرمناک اورگستانیا مذالفا ظادر إلاسپئے تواس کی دربیره دمنی کسی لحاظ سے بھی قابلِ برواشت نہیں ۔

سلخصرت صلى التعطيبه وسلم كى متا بعت ---

می کفیرت میں الٹرعلیہ وسلم کی غیبی خبروں کی تصدیق اور آپ کے اوامری اتباع مرمسلمان کے سلتے منروری سیسے ، مومن کی شان یہ ہوکہ اللہ باک اور اس کے رسول میں اللہ علیہ وسلم اس کو اینے نفس اہل وعیال مال ودولت سے بھی زیاوہ مجبوب ہوں ہمیشہ اتباع رسول کا نوگرر سیسے ۔ اللہ باک کی عباوت اس کے بتا تے ہوئے طریقوں کے مطابق مرانخ ام دیتا رہے ۔ عباوت کے منع مئن گھڑت را سنتے اگر جدان میں اللہ

بإك اوردسول النُّدميل للرُّعليه وسلم كَي تغليم ملحظ موء تب يجى ان سع كنار كمشس رسب أورآب كالعظيم مين اس قسم كاغلوا ختيار مذكميا مائے جن تشم كافلو كاار تكاب عيساتيون مسيح عليه السّلام كى ذات مين كيايا جيساكه ان لوگوں نے اپنے علماً اورصوفيا كو التُدكي لسوا ندا بنالیا یا فرشتوٰل اور پینمبروں کونداسمجھ لیا پسراسرگرا ہی ہے مقیقت تو ہے *کرشتے* اورانبیا ، تواسی راستے کولسند فرماتے ہیں ، موالٹریک کالیسند کردہ ہے اور اس را ہ پر جلنے والوں کو محبوب مجھتے ہیں اور ان لوگوں کو مجالٹر کے ساتھ کسی کوشر کے معمراتے ہیں ، ان کو دشمن مجمعتے ہیں ، اگر کوئی مشرک کسی پیمبریا نیک انسان کی تعظیم میں فلواختیار كرتاب اوراس كوالله ياك كرابهم عبتاب ادراس كى محبت مين مرشارب المرجبتا ہے كرجب بھى يە النسان ميرى سفارش كرسے كا، توالله ياك كى ا مازت كے بغيري سفارش بوسك كى اوراس كى مبا دى خىلك قرب كا ذرىيرس توالىد السالان كوكم فائدہ ما صل نہیں ، بلکہ ان کی شرکا حالت ان کے لیتے باعثِ ضرر اور نقصان ہیں۔ کیا آپ ويجيفته بسي كم صحابرام كوالخفزت صلى الدعليه وسلم سك ساخة شديد مجتت بحتى فصوصيت سنح مساتمه ابوبجرصة يق اورغمر فاروق رضى النهونها آپ كى مجتت ميں مرفه رست يخفے ليكن نہوں نے آلخفنرے مسلی الٹرعلیہ وسلم کے بتائے ہوئے طریقوں کے مطابق زندگیاں گزاریں اور اس سے سرمُوانحراف نہیں کیا ' بیکن مخلوق کو اللّٰہ کا نَثر کیب بنا نا اس کی عبادت کرنا مشکل نہ طورطرلیقے ہیں۔ ارشا دِخدا وندی ہے :

اور ہر دلوگ ، خدا کے سواالیں چیزوں ک پرشنش کرتے ہیں ہوندان کا کچھ بٹکا ڈسی سکتی ہیں اور ان کا کچھ فائدہ کرسکتی ہیں اور کہتے ہیں کہ پیغدا کے پاس ہماری فائش کرموالے ہیں مجہد دو کیا تم خداکوالیسی چیز ہنارتے ہوجس کا وجود اسے نداسمانوں ہیں

ويعبدون من دون الله سالا يعنرهم ولاينتعهم ويقولون هؤلام شفعا وُنا عندالله قل ا تنبُون الله بمالايعلم في السموات ولا في الارض مُسجئذوتعالى عتمايشركون (بونس)١٨ معلوم موّنا ہے اور نہ زمین میں وہ پاک ہے ا ور داس کی شان) ان کے شرک کرنے سے بہت

نیزالندیک فراتے ہیں ،

الاللهالدين الخالص والذين

اتخلاوا من دون، اوليا ء مالغبرهم

الالسقر بونا الى الله دلفي ان الله يعكم بينهم فيما هم فيه يختلفون (نالله

لایهد ی من هوکاذ ب کفار رزم، ۲

نزالنرياك فرات بي ا

ومن الناس من يتخذ من دون

الله الندادًا يجتونهم كحب الله والمذين آمنوا شد حبًّا لله دبقرٌ) ١٦٥

بین، ده تو ندایی کے سُب سے زیادہ دوست دار ہیں .

نیزاللہ ماک فرمانے ہیں ،

ولِقد احلكنا ما حولكم من القرئى

وصوفنا الايات لعلهم يرمعون.

الإحقاف) ۲۲

صحیحین میں الومرری وفنی النه عندسے روایت سے:

قام دسول الله صلى الله عليريسلم حين انزل الله عليه وا سنذ ر

دیکھوفالص عبادت فداہی کے لئے زنبا

ب اورجن لوگول فے اس کے سواا وروث

بنائے ہیں دوہ کہتے ہیں کہ ہم ان کواس لئے

پوجت بین کیم کو ندالهامقرب بنادین توجن باتول میں یہ اختلات کرتے ہیں خداان میں ان

کافیصلہ کردے گا ، لیے شک مدا استخف کو جوجوٹا، ناشکراہے، ہدایت نہیں دیتا۔

أوربعض توگ البسے بیں جوفیرضدا کو

شریب دخدا، بناتے ہیں اوران سے نملا

ک می مجتب کرتے ہیں، لیکن جوالیان والے

اورتمهارے ارد کرد کی بتیوں کوہمنے ملاک کرویا اور بار بار دانی ، نشانیان **فا**هر

كردين باكه وه رجيع كرير.

جب رسول التُرصلىالتُّرعليه ويتم پرٍ و

ائذر عشیرتك ا لا قربین *آی<mark>ت ا</mark>زل*

ہونی، تواٹ نے کورے بوکر فرمایا لے قبیلیر قريش تم ليضنفسون كوالنُّد پاكست بجانع كا سوداكرلؤ ميتمهي الترك عذاب سعنهيل بجإسكتاا ورال بنعدمنات المس بهمي كؤن فائدة ببي دسے سكتا الله كالدركے رسول كى

بھوتھے صفیہ الحجھے بھی ہیں الٹرکے مداب سے نهين بجاسكتاء ليفاطمه فمصلي التدعلير وسلم کی بیٹی ایجھے بھی میں اللہ کے عذاب سے بجانے

بنی صلی الله عِلیه وستم نے منسر مایا: مجهة سعے كوئى آ دمى ميدان مشريس اسى الت

میں منطے کہ اس سنے گرون برا وسٹ اٹھا یا ہوا بهوا وروه آ وازكرريل بهو يا كاست اوريجري

امھاتے موستے ہو اوروہ آ واز کرمی ہو، ياكبرس انشات موت وكت كررب يول

وہ مجھے ُبلائے کہ بارسول التٰدمیری فریاورسی کرو، لیکن میں کہوں گاکہ میں نترہے لیتے کچھٰ ہیں

روصنه رسول مسل الدعلب والمستقبل سحدنبوى كيفوق مقدم بين

قاصنی اخنائی عام قبور کی زبارت ا ورر وصنهٔ نبوی کی زیارت میں مساوات کا قا کی سیح

هشيرتك الاقربين فقال يامعشر قريش اشتزوا انفسكم من الله لا

ا عنی عنکم من الله نشیاً یا بنی عبد منا لاا غنى عنكم من الله شيأ يا صفية

عمة مسول الله لااغنى عنك

من الله شيئاً ما فاطمة بنت محمد لا

ا غنى عنك من الله شيًّا سليني من مالی ماشئت -

كى طاقت نهيں ركھتا، إل جتنا جاہو مال ليسكتي ہو۔ محمین میں مروی ہے:

قال النبى صلى الله علىبروسلم لا

الفين احدكم ياتى يوم اكفسيمةعل رقبته بعيركه رغاء اوبقرة لها

خوار اوشاة تبيع اورقاع تخفن يقول يارسول الله اغثني فا قول

لااملك لك من الله شيئًا قد البغتك.

كرسكتا، ميں نے تجديك بينجا ديا مقا۔

ا ورہم برالزام لگاماً ہے کہ ہم جب عام قبروں اور قبر صطفے نسلی الندمدیہ وسلم کی زیارت کے لتے سفر کرنے کو حرام قرار دبتے ہیں تو گویا ہم سجد نبوی کی زیارت کے لئے سفر کرنے کو حرام كيت بين بالشبر فاصى افعائ مهمارى طرف فلط نظريه كا انتساب كرر إسب يم برملا كيت بي كر وملها دبنول قامنی اخناق زیارت روضة نبوی سے بنتے سفرکوستیب بمجھتے ہیں۔ ان کما واصح مطلب یہ سے کہ وہ اس سے مرا دمسجہ نِبوی سے دسے ہیں، اس سلتے کہ مِمسافرا ور زائر جب مسجد بوی کے مدود میں وافعل ہوتا ہے تو بالاتفاق اس کینے دونفل واکر نے مشرع ہیں اس لیے کہ ہما سے مخالفین بھی اوّلاً نوافل، ثانیاً آپ بھِسلوۃ وسلام بھیجنے کی ترتیب کے قائل مِي ؛ بينا پخدا مام احمد اور امام مالك رحمهما الترسے نصاً يد بات ثابت سبع ؛ البتر ا مام مالک نوا فل کے لیتے بُرا نے سنون کے متفام کو دیہاں آپ نماز پڑھتے سختے مجتمعین فرواتے ہیں اور فراتفن مما مت کے ساتھ صف بندی میں اداکتے ما بیں اور باس سے آنے والے لوگوں کے لئے معجد نبوی میں نوافل ا داکر نابہتر سے جبکہ مدیبۂ منوّرہ میں سے والے بوگوں کے لیتے گھروں میں بزا فل پڑھنا بہترہے۔

والے وکوں کے لئے کھروں میں نوافل پڑھنا بہترہے۔
اند اربعہ اور دیگر متقد میں اور متا خرین اسی نظریہ کے ما مل ہیں کہ زائر سجر نہوی کے حقوق اولاً اور دیگر متقد میں اور متا خرین اسی نظریہ کے ما مل ہیں کہ زائر سجر نہوی میں اختلاف ذکر کرنے کے بعد لکھتے ہیں کہ جولوگ حقوق سجد کی تقدیم کے قائل ہیں، وہ دلیل پہنیں کوتے ہیں کہ زائر آئے نفزت میں الٹر علیہ وسلم کی ملاقات سے قبل مسجد کم لاقات سے قبل مسجد کے نظر ف سے متنشر ف سوتا ہے۔ اہذا اسے آواب میں زندگی میں مسجد میں داخل ہوتے ہوئے اور کوئے آپ کی فاقت اور کا تعیقہ اسی طرح آپ کی فاقت کا شرف حاصل کرتے ، اسی طرح آپ کی فاقت کے بعد بھی آپ کی زیارت سے پہلے حقوق مسجد کو اولین جی نیٹ ت دی جائے نیز آپ کے فاقت اصلاحی ہی ہوئے نیز آپ کے دائے اور کا می کی اقتدا کا لاقا صابحی ہی ہے۔

اوریہ قول کرزیارت مسطفے کے حقوق کو تقدم ماصل بے کسی شہورا ہل کا قول نہیں ہے، بلکہ شریعت بخریہ سے ناوا قف انسان کا قول معلوم ہوتا ہے جبکہ وہ اسس کی تعلیل بیان کرتے ہوئے وقی طراز ہے کہ سیر نبوی میں داخل ہونا زیارت مصطفے کے سنے معلوم مورہ ہے کہ سیرنبوی میں داخل ہونا نما نریش متواترہ اوراجماع سے معلوم مورہ ہے کہ سیرنبوی میں داخل ہونا نما نریس کی ادائین کے لئے ہے۔ کمیا عہد پر نبوت اور خلافت را شدہ کے دور میں سیرنبوت کی ادائین کی کے لئے ہے۔ کمیا عہد بر اس کا جواب یقیناً نفی میں ہے تواس بات کے مدود میں آپ کی قبر شرایف تقی ؟ جب اس کا جواب یقیناً نفی میں ہے تواس بات کے فلط موسے میں کچھ شنہ نہ رہا۔

اور پیراس سے لازم آ ناسے کہ جیسا کہ سجد نبوی کے لئے شدد مال مشروع ہے اسی طرح زیارت من اند سے لئے جی شدر مال مشروع ہو، مالا منکہ مدیث متواتر ہیں تا ہو کی طرف شدر مال کو جائز قرار دسے رہی ہیں۔ پس دہ النمان ہوآ کخفرت میں الشرطیہ ولا کی طرف شدر مال کو جائز قرار دسے رہی ہیں۔ پس دہ النمان ہوآ کخفرت میں الشرطیہ ولا کے وفیدی زیارت کے لیے شار میں الشرطیہ ولا کے مسلم کے وجماع کوفتم کرنا جا ہتا ہے ۔ آلے ملا النمان اس لا تق ہے کہ اس کوموت کے گھا آل دیا جا ہے۔ اسلام کے اجماع کوفتم کرنا جا ہتا ہے ۔ آلے النہ مالی الشرطیہ والے مسلم کے دوخہ کے تا میں الشرطیہ والے مہم الشرطیہ والسلام کے دوخہ کے میں سفر مشروع سفر سی برنبوی کے ایک دوخہ کرتے ہیں۔ ان ترسلف کا یہی نظریہ ہیں۔ ان ترسلف کا یہی نظریہ ہیں۔ میں میں دیا ہوں کے اور الب

ناترا قرالاً مسجد بنوی منی واخل ہونے کے بعد لوافل اداکرے بھرمسی میں سے

سی آپ برسلاہ وسلام پڑھتارہے اورآپ کی تعراف واست اور توقیر کے کلمات پین خول ہی آپ برسلاہ وسلام پڑھتارہے اورآپ کی تعراف وقوصیف اور توقیر کے کلمات پین خول ہو مبائے اوران احسانات کا تذکرہ کورے ہوالٹر پاک کی طرف سے آپ برہوئے باآپ کی وجہت امت محدید بر ہوئے ، مجمو عائشہ صدیقہ یا آپ کی قبر مبارک مک بہنچا رہومکن سبے اور نہ ہی شرعًا اس کا حتم دیاگیا ہے ، جبحہ دوسری عام قبروں کی زیارت مخفرت کی مُعا

ا ور مبرت کے لئے مشروع ہے۔ بس معلوم ہوا کہ آب کی قبرتر لیٹ کی زیارت کے لئے سفر كرانے كامطلب در اصل معدنبوى كى زيارت كے لئے سبے اور مام قروں كى زيادت اورروضة نبوى كى زيارت كومسا وى قرار دينا شريعيتِ محديد كى روشنى ميں بالسك غلطب چنا پخدیم سنے نابت کرد یا کررومنڈ نبوی کی زبارت کے سلتے سفرکرنا درا صل سجیزوی كى زيارت كے سلنے سفر كرنا بيدا وربيسفرنساً اور اجما عًامستحب سب اليكن عام قبرول كى زيارت كمصلة سفرمحرنا نعثاا دراجما عاستحب نهيس بهيد ليكن قاهنى اخناتي كفال ونول کومساوی قرار دسے دیاہیے، توقاهنی صاحب نص اور اجماع کی ممالفت کررسے ہیں۔

مشرمع زیارت مسجد نبوی کی زیارت سبھے

اس مستلدریتمام مسلمانوں کااتّفاق سیے کہ آپ کی قبرمبارک کی زیارت دراصل مسجرِ نبوی کی زیارت سکے نمن میں ہے ، اس لیتے کہ آپ کی قبرٹریف مجوب ہیے ۔ بیس زا ترمیحہ بنوی میں داخل موکر نوافل اداکرنے کے بعد سحبرکے مدودسے می آپ برصالحة وسلام کا مدىيىچە گا، قېرترىغنى ئىكىمېنچنامىكىنىدىن جېرىمام سىمانون كى قېرىي <u>كىلە</u>مىدان مىرى بىي جب ان کی زیارت کے کہتے قبرشان کا ڈخ کرے توان کی قبروں برکھڑا ہوکر د ماستے مغفرت کرے كا-اگرميسفركرك مام قرول كى زيارت كرنامجى جائز نبيس مبساكه نبى اكرم صلى الترعلب وسلم کی قرمترلیف کے لئے سفر کرنا جا تزنہیں ۱۰ بل مدینہ کے لئے مکروہ مانا گیاسہے کہ جب بھی وه سیدنیوی میں داخل مہوں، تو آپ کی قبرمبارک پرتھبی حاصری دیں۔اگر میسجد نبوی میں آنے اور نماز پڑھنے کے لئے کوئی مدبندی نہیں ۔ وہ بہب جا ہیں سجد نبوی میں داخل بهوسيحة بيب؛البية ابلٍ مرميزسيعة پ نے ضرمایا كه فرض نماز كے علاقه نوافل كا زباد ه تواب گھرا داکرنے میں ہے۔ ہاں جولوگ دُور دراز سے سجد نبوی کی زیارت کے لئے آئے ہوتے ہیں، ان کے لئے نوافل کانسج نبوی میں اداکر ناانفسل ہے۔ قائنی اخنا تی ہمارے

خلاف بیغوغا آرائی توکر کیے ہیں کہ ہم عام قبروں بلکہ آنخفٹرت مسلی اللہ علیہ وسلم کی قبرمبارک کی زیارت کے لئے سفرکر سے کو ناجا ترسیجتے ہیں کیکن اس بات کا ذکر نہیں کرنے کم زیارت میہ معنی معبد نہوی کی زیارت کے استحباب کے قاتل ہیں۔

قبرون کی زیارت میں اختلاف

بخاری شریب کی شرح بیں ابن بطال نے ذکر کیا ہے کہ بعض علمار مطلعًا قروں کی زیارت کونہی کی اما دین کی روشنی میں مکروہ قرار دیتے ہیں۔ امام شعبی کا قول ہے کہ اگر نبی صلی النّدعلیہ وسلم سنے قبروں کی زیارت سے فردو کا ہوتا تو میں اپنے بیٹے کی قبری زیارت کرنا۔ ابراہیم نحعی کا قول ہے کہ علمار قبروں کی زیارت کو مکروہ مباستے ہیں ۔ ابن سیرین سے بھی استیسم کا ایک قول مروی سے علی بن زیاد کا بیان سے کہ امام ماںک سے قبل کی زیارت کو متعلق پوچھاگیا، قوانہوں نے فرایا شروع اسلام میں آپ نے زیارت قبو سے روک دیا تھا، بھر آپ نے امازت فرما نی ۔ پس اگر کوئی شخص قبروں کی زیارت قبو سے روک دیا تھا، بھر آپ نے امازت فرما نی ۔ پس اگر کوئی شخص قبروں کی زیارت کے مام لوگوں کا عمل اس کے خلاف سے معلوم ہوا کہ امام مالک بھی زیارت کو متحب نہیں عام لوگوں کا عمل اس کے خلاف سے معلوم ہوا کہ امام مالک بھی زیارت کو متحب نہیں سمجھتے ۔ پس قامنی انسانی بوکہ امام مالک کے اس قول کا مذکر کرتے ہیں ان کے خلاف کوئی فتوی صادر کرتے ہیں۔ لیکن امام مالک کے اس قول کا مذکر کرتے ہیں ان کے خلاف کوئی فتوی صادر کرتے ہیں۔ لیکن امام مالک کے اس قول کا مذکر کرتے ہیں ان کے خلاف کوئی فتوی صادر کرتے ہیں۔ لیکن امام مالک کے اس قول کا مذکر کرتے ہوں کی ان کے خلاف کوئی فتوی صادر کرتے ہیں۔ لیکن امام مالک کے اس قول کا مذکر کرتے ہوں کی ان کے خلاف کوئی فتوی صادر کرتے ہیں۔ لیکن امام مالک کے اس قول کا مذکر کرتے ہیں۔ کا میں کوئی کوئی کی مداد کرتے ہوں۔ لیکن امام مالک کے اس قول کا مذکر کرتے ہوں کوئی کوئی کوئی کوئیلوں کوئی کوئی کوئیلوں ک

قبول كى زيارت كى شروعيت مين وارد بهوي والمديثون كالجزير

ا کولاً: اما ویث کے الفاظ برخور وفکر کرنے کے بعد کہنا پڑتا ہے کہ ان مدینوں سے قطعًا یہ بات مترش نہیں ہوتی کہ ال قطعًا یہ بات مترش نہیں ہوتی کہ نبی صلی النّہ علیہ وسلم کی قبر شربیف یا عام مسلمانوں کی قبروں کی زیارت کے استباب کا حکم دیا گیا ہے۔ دو دُوالقبود کا حکم قرول کی زیارت کے لئے سعز کرنے کوستحب یا مباع کا عقفی نہیں ہے جبیبا کہ یہ مکم ان لوگوں کو قبروں کی زیارت سے روک رہا ہے جولوگ وہاں نشرکیے افغال کے مرتیجب ہوتے ہیں یا قبروں پر پنچ کر نوم نوانی نالۂ وثبیون آ ہ وبھا اُ ور فعنول وا ویلا کا بازار گرم کر دیتے ہیں اورصا حب قبرکوا پنی ماجتوں کا طجا بھے ہوئے اس سے التجائیں کرتے ہیں اور دیگر نہی افعال اور بدھات کا ارتکاب کوتے ہیں۔

پعندامت له

مِيساكه د مُصيام ثلطُه ايّام، ويَخِصْ قربانى مُربِدِك كَى طاقت نهيس ركمتا، وهنين روزے ایام ج میں اور ماتی سات روزہے گھروالیس آکرر کھے، بیٹم عورت کونہیں ہے جبحه وه مائفنه سے اور اسى طرح يوكم عبدالفطر حد الاصلى كے داوں كومتنا ول نہيں سے-اس طرح رسول اكرم صلى التُرعليه وسلم كى حديث ياك صلواة الحدجل في مسجدة تفعنل على صافرية في بسيته وسوقه بحنس وعشوبيث ددجه (كمرايك مسلمال كأسجه میں نمازا داکرنا گھراور بازار میں نمازا دا کرنے سے کچتیں گنا زیادہ تواب کا مامل سہے) اس بات کی متقاصی نہیں ہے کہ سجد میں نما زا واکرنے کے لئے سفراضتیارکرے، بلکھائبا مديث كامنشاريه سيحكدوه البيئ كمعراور قريب مبكهس بلاسفر مسجدمين ببنجيا سعس اسى المرت رسول پاک صلی الڈعلیہ وسلم کا ارشاو لا خسنعوا ۱ ماء اللّٰہ مساجد داللّٰدی بنربول کومسجر سے زروکو) نیزوادا ستاذنت احدیم ا موء نذ آلی المسجد فلا مینعها دجیکے کی ورت اسینے فا وندسیے میں رمبانے کی امبازت الملب کرشے تو لسے روکنانہیں چا ہیتے ، اس بات کامتقاضی نہیں رعورت ما وندیا محرم کی رفاقت کے بغیر *سفر کرسکتی ہے* یا اگر عورت کسی مسجه کی طرف مسفر کوسنے کا ارا دہ رکھتی سہے، تووہ اس کوا مبازت عمطا کرسے ملکہ مدیث کا منشا برسهے کہ اگر عورت حج کرنے کا ارا دہ رکھتی ہے، تومنا ونداس کو اپنی زفاقت محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

میں یا محرم کی رفاقت میں جانے کی احبازت عطائحرے یا اگر بلاسفرسحد میں جانا جاہتے ہے توجی اس کو اجازت دسے دی حبائے۔

سُوال: اما دیث مذکورہ سے واضح طور پرمعلوم ہور ہاہے کہ سجد میں اُنے کا مطلب گھرسے سجد میں آنا ہے اور سفر کر سے مسجد میں آنے کوشا مل نہیں ۔ عرف عام میں یہی معتی مراد لیا جاتا ہے ۔

یری سی مرددیا جانا ہے۔ پیھلد جواب، قروں کی زیارت کے متعلق بھی عرف عام کا خیال رکھا مائے گامی مارکوام مدینہ متورہ سے باہر قبروں کی زیارت کے لئے جائے تھے، لیکن اتنامعلم نہیں موسکا کو کسی صحابی نے کسی قبر کی زیارت کے لئے سفرا فتیار کیا ہو۔

وه لوگ اتباع جنازه کے مفہوم کو مجھتے تھے۔ کوئی مسلمان فوت ہوتا انوه اپنے گھرسے تھے جس طرح کم وہ لوگ اتباع جنازه کے مفہوم کو مجھتے تھے۔ کوئی مسلمان فوت ہوتا انوه اپنے گھرسے تھے، جنازه پر طبعتے، قبروں کی تربیتان جاتے، دفن کو کے واپس لوط آتے، اسی طرح اپنے گھروں سے تطلقے اور قبروں کی زیارت کرتے یا اگر سفر میں کہیں قبرستان برسے گزر ہوگیا بس اسی کانام زیارت تھا۔ احمد بن قاسم بیان کرتے ہیں امام احمد بن صنبل سے لوجھا گیا کہ نیک سلمان تھا تی کی قبر کی زیارت کرتے ہیں ہم جی عبداللہ نیارت کرتے ہیں ہم جی عبداللہ بن مبادک کی قبر کی قبرائد کی منبارک کی قبر کی زیارت کے سف کے ت

سنیسند و میان فرماتے ہیں کہ ابوعبدالتّدسے قبروں کی زیارت کے سکتی اللہ مواتوانہوں نے فرمایی کہ اللہ میں کہ ابوعبدالتّدسے قبروں کی زیارت کے سکتانی اللہ مال باپ قریبی رشتہ داروں کی قبروں کی زیارت کرناا وران کے لئے دُعاکرنا استعفار کونا درست سے علی بن سعید ہجتے ہیں کہ میں نے امام احمد بن صنبل سے پوچھا کہ قبروں کی زیارت منبل سے باسی گئے بی کہ میں اللہ علیہ وسلم افعنل ہے ،اسی گئے بی میں اللہ علیہ وسلم افعنل ہے ،اسی گئے بی مارسے تھے کے ابنی والدہ کی قبری زیارت فرمای تربیب آپ فتے مکہ کے لئے مکہ کی طرف مارسے تھے کے ابنی والدہ کی قبری زیارت فرمای تربیب آپ فتے مکہ کے لئے مکہ کی طرف مارسے تھے کے ابنی والدہ کی قبری زیارت فرمای تربیب آپ فتے مکہ کے لئے مکہ کی طرف مارسے تھے ک

استاذنت دبی نی ان ازور تسبر میں کے ایسے رب سے اپنی والدہ کی

ای فاذن لی واستاذ نعت فی ان تعفی تعفی قری زیارت کرنے کی امازت طلب ک تو

غلم یؤدن لی ۔ سریر مرب میں نے اپنی الڈ

کے استغفار کی اجازت طلب کی توجیے اس کی اجازت مذملی۔

تلیسوا جواب ؛ اس دوسرے بواب کے منمن میں تبیسرا بواب میں معلوم ہور السے میت کر رسول النّر معلی النّر علیہ وسلم کو زیارت قبور کی اجازت اس سلتے دی گئی کہ اس سے میّت کو فائدہ حاصل ہوگا۔ زائر اس کے سلتے مغفزت کی و عاکر سے گا۔ موت کا خوفناک منظر قلب میں رقت پیدا کرے گا، وگرد زیارت کا یہ مطلب توقط ما نہیں کہ مساحب قبر سے زائر کو کچھ فائڈہ ماصل ہوگا اور اس کی برکات سے اس کو بھی کچھ مقد سطے گایا صاحب قبراس کی سفارش کرسے یا اس کے سلتے و عاکرے۔ نال ہر سبے کہ جب بنی مسلی النّر علیہ وسلم

نے بقیع الغرقد قبرستان اور شہدار کی قبروں کی زیارت فرمائی اقداب کامقعدان سے نہ تواستمدا دمتھا اور نہ ہی انہیں وسیلہ بنانا مقا اور جوشخص بہ بات کہتاہے ، وہ مرصن یہ کررسول النّد مسل النَّر پر حموط با ندھ رہا ہے ، بلکہ وہ آپ کی جیثیت کو نیچا دکھا رہا ہے کہ آپ اسٹ می بنار ہے ہیں ان سے فراد رہا ہے کہ آپ اسٹ می ایک سے فراد در ہے ہیں اینا سفارشی بنار ہے ہیں ان سے فراد دری کررہ ہو ہی اور ان سے دھا میں مانگ رہے ہیں کیسی سلمان سے اس باست کی توقع نہیں کی جاسکتی ۔ توقع نہیں کی جاسکتی ۔

ر وایت کرتے ہیں ۔

رسول الندصلي الندعليه وسلم صحاب كرام كو تعليم ديت كرقرستان مين بينح كرايما ندارول اورسلمالون كوسلام كهيب، ينزيه كريم بحلي نشألوته تمبارے ساتھ آملیں کے ہم الٹر پاک سے لینے اور تہا رہے لئے مافیت کاسوال کرتے بین - اس روایت میں ابوم رہ_ےہ سے م^وی سبيحكه دسول النُرْصِل النُّدْعِليد وسلم قبرِسّان مباتے تو فرماتے اسے ایما ندار دتم رہام مو انشار الندم مجى تبارك سائقة ملي گے۔ایک طویل *مدیث میں مفر*ت عاکشہ^{سے} روایت ہے کہ آپ نے فرما یا کہمیرے ہاس جريل آياس في كهاكم النَّد باك آپ كوتبيع ترستان مانے کا حکم فرمارہے ہیں۔ آ*ب* وبالان كحالت استغفاركري جعزت

صحيحمسلم ميں بريدہ بن حصيب كان دسول الله صلى الله علييه يتلمييلم اذا خرجواالى المقابر ان يقول قائلهم السلام على احل الديا س المومِنين والمسلمين وإنا انشاء الله كم للاحقون نسئال الله لنا ولكم العا فية وفديه ابيضًا عن ابى هربيرة ان رسول الله صلى الله عليه وستمخوج المالمقبوة فقال السلام عليكم دادقوم مومنين والماانشاءالله بكم لاحقون وفيه ايضًا عن عائشة نى مديت طويل تال ان جبريل اتَّانی فقال ان بِیكِ بامركِ انْتَأْتی الهاللبقيع فتستغفر لهم فالت قلت يارسول؛ لله كيف ا قوُل قال قولي

عاكشهف استفساركيا بارسول التدولال كياكها مات فرمايانم مسلمانون مومنون بر سلام کہنے کے بعد مہلوں اور کچھلوں کے لئة رطنت كى دعا فرواقه نيز كديم مجبى ا^{نتا} الله تم سے آملیں گے بیشن ابن احبر میں صرب عالَمتْ كى اس حديث مين حفرت عالَشْه بیان فراق ہیں کہ میں آپ کو ڈھونڈلے کل تواپ بقیع قبرستان میں تھے ان پر سلام کے بعد آپ نے فروایا کرتم پہلے بمنے گئے ہم مجی آب کو طنے والے ہیں۔ اسے النہ توہم کوان کے تواب سے فروم نہ كرناا ورندان كع بلع جانے كے بعدكسى فتندمين مبتلاكرناا درتبمين ادران كومعاف فرمانا بمسنداحمدا درترمنري بين فبالتربن مباس سے مردی ہے رسول پاکس مسلي التدعليه وسلم مدسيز كع قبرستان ميسلم كضي بعدفروات بين الله ياك بمب

التبلام عليكم اهل البديادين المسلمين والهُوسنين يرحمانله المستقدمين مت ومسكم والمستاخرين واناانشاعالله *بکملاح*قون و فی سنن ا بن ماجہ فى حذ الحديث عن عالمُشْتَمْ قالت فقدته فاداهو بالبيقيع فقال السّلام عليكم دارقوم مومنين انتم لنا فوط وبخن بكملاحقون اللهممّ لا تعرمنا اجرهم ولا تفتنا بعدهم ولغفولنا ولهمونى المسندوالترمذ عن ابن عباس رضی الله عنهمًا قال وكسول الله صلى الله عليه وسلم بقبورا لمديينة فاقتبل عليهم يوجبر فقال السلام عليكم بإا صل القبور يغفرالله لناوتكم انتهم سلف لنا ونحن بالانترفال المترسذى حديث سن غريب -

کومعاف فرمانتے تم ہم سے پہلے یہاں آگئے ہو، ہم بھی تمہا رکے بیجھے بیجھے آرہے ہیں۔ امام ترمذی نے اس مدیث کوسن عزیب کہاہیے۔

عام فبروں پرنمازِ جنازہ پڑھنا عائز ہے

فبروں کی زیارت مشرعی جہاں بالاطلاق ان کے لئے دعاکر نے کوشا بی سے وہاں خاص طور پر نماز جنازہ اور اکر سے کئے صفیں باندھ نا انگیرات کہنا ، تکمیر تحریر اور سیام کمنا بھی بت بجائی سے بجنائی سے بحین بیں وار دہ ہے کہ نبی اکرم میں الٹرعلیہ وسلم نے شہدار امد کا نماز جنازہ آئم سال کے لبد بڑھا جنائی الوبکر بن مند کہتے ہیں کہ قبروں کی زیارت کرنا اہل قبود کے سع معفرت ک دعا کر ناجا ترجے ، اس لئے کہ قبروں کی زیارت سے مومن آوری سے ول پر قت طاری ہوتی اور ایک خوال اور ایک ما می نما بال ہوجا تا ہے ؟ جنا نم تی آ ہے اوال اور ایک ما می نما بال ہوجا تا ہے ؟ جنا نم تی آ ہے اوال اور ایک ما میں کا مسئوں سے ۔

الخصرت صلى لترمليه ولم كقراطهر ريبنا زه برهنا نابت نبي

نبى مل الدُولايه وسلم كى قبراطهر كاحكم دوسري فغروب سنصالگ سبے اس كيتے كه عام سلما بول كى قبرين كمعلے مبيران ميں ہو ئى ہيں، كىكن اپ كو صفريت عائشروض التُّدعِنها كے جره میں دفن كياگيا تاكم كوئى شخف آپ ك فبرتك نديني سيح، اس سلتے آپ سنے فرماديا غاكه تم بهال كهي سيري مجدر ملأة سلام كابديه ارسال كردسكر، وم مجهر بنيتارس كا-اس لنه که الله باک نے مجد فرمشنوں کومنعیان فرما ویاسے ہوز میں کے المراف واکنامت کا بچرا کاتے رہنتے ہیں اور زمین کے جس گوشہ سے تھی آپ پرکوئی صلوہ وسلام کا ہد بہم جتا ب الزوه فرشته اس كوني باك سلى الترعليروسلم ك بينجا دينه بير اس ك سائق سائق الترام ن الترباك سعد دُعا فرمانى كها الترميري فركوو فن ندبنانا، ان لوگول برالتُد باك شديد غصنب نازل ہو سجنوں سے اسپے پیغمبروں کی قبروں پرسجدیں تعمیر مروالیں نیز فرمایا کہ میری فبرومسلیه گاه نه بنانا- پس ان ادایک روشنی میں ا باعلم سے نزد کیب آپ کی قبرِاطهریہ نماز جنازہ کی ادائنیگی ما تزنہیں اور نہ ہی کسی انسان نے آب کی قبراِ ملبرمینماز حبازہ بڑھی ہے۔ جبحه امام شافعی سے ایک تول اورامام احمد بن صنبل کے نزد کیک سلمانوں کی فبروں پرمیشیاز

جنازه پڑھنے کی اجازے ہے ، لین آپ کی قراطم رینازجنازہ کی عدم مشروعیت پراجماع موجکا ہے ۔ اس لیے کم عصود کسی قبرکی زیارت سے معاصب قبر کے لیے و ماکرہ ابنوا سے ا وراکٹھنرت صل الدولليوسلم في ابن امّت كولهم دياب كروه جهال كهيں رہتے ہي، وہيں سے آپ كے لتے صلوة وسلام كالمريم محيعة رباي اوراكب كصلفة وسيلمى دعما مين كرت رباي فالرب كراس سے آلخسرے صلی الٹرملیہ وسلم کا مقام کس قدرار فع دیمل سے کہ عام فبروں بہنچ کر دُعاکی حاست مازِجنازه اداكيا حائع اليكن آپ كې عبت اوتعظيم ايمانداروں كے دلوں ميں اس . قدرمو حزن موکهآپ کی تعظیم میں اس وفٹ مجی کچیمی دا قع نامو، جبکر وہ دُورسے آپ پر درود مجيجين اور بوكيفيّت احرام وتعظيم زاررك دل مين اس وقت بو،جب وه رومنة رسول برما منرموكر درود بيهيج ربالسبو وسي كيفتيت مرحبكه برباقي رمني مياسية اوراس میں مرمو فرق مز آنا جا ہیئے اور اگرزائر بوقت زیا رہ جس جوش وخروش کے ساتھ درود تجميجتاب ادروه بوسش وخردش وُور دراز ملك سے درود بھینے میں موجو دنہیں تو تمجولینا حيا بيتے كروه الخصنرت صلى الله عليه وسلم كے حقوق واسترامات ميں كمى وكھلار باسبے جبكہ دورى طرف وه أب كى قبراطهر كوميله كي حيثيّت يجشس راجه بيس اس مفسده كے پيش للر آپ کی قبراطهر مرجنازه براهنا درست نهیں اور مذہی آپ کی قبراطهر میسحد تعمیر کرناجائز سے۔ لیکن اہل برست توک ابنیار اولیار مسلحار کی قبروں کی زیارت اس سلتے نہیں کرتے کر ان کے لتے دُعاکم نااستففار مانگنامطلوب ہوتا ہے۔ ملکہ ان سے دعابیّں کروانا اوران كوسفارشى بنانامقصو د مبو تاسبع، اسىمشركا نه نظر يركي ساخدوه ان قبرو ں كا رُخ كرتے ہيں ادران برممار میں تعمیر کرتے ہیں ہمیلوں کا العقاد ہوتاً ہے ، مالانکدا ما دیث صحیحہ میں اتنام کاموں سے منع کیا گیا سہے۔ . فاهنی اخنانی اوراس جیسے دومرے علما مفلط قبی میں منبلا میں کرم قبرول کی زیار

محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

كوناما تزقرارد بيتيهن بهمارامسلك عق والضاف كاسائفه ديناسب يجب النُّرياك

نے کا فروں کے سائڈ عدل والف ان قائم کرنے کا حکم دیا ہے توہم اپنے مسلمان بھائیل کے ساتھ حق والف ان کو کیسے قابل عمل شمجیس گے۔ ارشا دِخداوندی سے ،

کو دوا قوا سین الله شهدا عدد است ایمان والومداک لئے النساف کی بالقسط ولادی منکم شنان قوم گوابی وسینے کے لئے کھڑے ہو جایا کروا ور علیٰ ان لا تعدد دوا اعدد دوا هو لوگوں کی دشمن آم کواس بات برآمادہ نرکرے کم اقرب للتقوی وا تقواالله ان انسان چھوڑ دوالفان کیا کرو کری پیزا کی الله خبید بما تعمدون دالمائد می بات سے اور فدا سے ڈرتے رہو، کچھ الله خبید بما تعمدون دالمائد می بات سے اور فدا سے ڈرتے رہو، کچھ شک نہیں کہ فدا تہمارے سب اعمال سے خردا رہے۔

التُّدْ باكتم سب كومعاف فروائے اور میجھ بات كہنے اور سيدھے راہ پر چلنے كى تونيق عطب فروائے ۔

نهى كے بعیصیغهٔ امرفہوبیامتقانسی نہیں

کنت شهیتیکم من زیارة الفنور فرورد ها ریمن تم کوتبروں کی زیارت سے دکتا را اور الله را الفنول را الفنول را الفنول بایس تم قبروں کی زیارت کرسکتے ہو) فیض روایات میں و لا تفولوا هجرًا (افرنول بایس نکرو) کا امنا فرسے اس روایت میں امرکانسیغہ و بوب یا استجاب کا متقامیٰ ہیں بلکز بارت کے بواز کا متقامی ہے کا لفین کا استعمال کرنمی کے بعدوار د ہونے والا الم کا مین فروب کا فائد ہ بخت بتا ہے ، قرآنی استعمال کے منافی ہے ۔ اقرید ملف سے مردی سے کہ کسی حکم سے منع کر استعمال کے منافی ہے ۔ اکر سامت کے حکم کو ثابت کو تا ہے۔ چندامت کے معمل کو ثابت کو تا ہے۔ چندامت کے مسلم کو ثابت کو تا ہے۔

م<u>ثال اوّل</u>

میں تم کورتنوں میں بمیفرتیار کرنے سے
روکتا رہا اب تم کوان میں بمینہ بنالنے ک
اجازت دیتا مہوں الیکن نشراً ورنبینہ کا
استعمال نہ کرواور میں تم کو قربانی کے

كنت نهيتكم عن الانتباذ في الاوحية فا نتبذ في الاوحية فا نتبذ وا ولا تشولوا مسكراً وكنت نهيتكم عن لحوم الاضاحي فا دخووا ما بد الكم-

گوشت کا ذخیرہ کرلے سے روک رہا اب تم صب ضرورت ذخیرہ رکھسکتے ہو۔ صحیح مسلم میں بریدہ بن صیب رصنی الٹیونہ سے مردی سبے ،

قال دسول الله صلى الله عليه وسلم نهيتكم عن زيارة المقبود فزورو ها و منهيتكم عن لحو مر الاضاحى فا مسكوا ما سبد الكمو منهتبكم عن الانتباذالا فى سقاء فا شربوا فى الاوعيته كلها ولا تشربوا مسكوًا -

رسول فداصل الترعليه وسلم فرمات بي كرمين نے تم كو قروں كى زيارت سے منع كيا اب تم كو زيارت كى امازت ديتا موں اور ميں نے تم كو قربانى كے گوشت كا ذخيرہ كرنے سے منع كيا اب تم حسب ضرورت محفوظ كرسكتے ہوا ور ميں نے تم كومشكيز ہے علادہ باتى بر تنول بيں تم كومشكيز ہے علادہ باتى بر تنول بيں

نبیز بنانے کا استعمال کرسکتے ہو؛ البتہ نشہ آور نبید کا استعمال نہیں کرسکتے،
سی المہ کا اتفان ہے کاس خصت بعد مرتب سے برتنوں میں نبیذ تیار کرنا اور قربانی
سے گوشت کا سٹور کرنا مسب صرورت مبا ترسید ۔ استحباب اور دبوب کا کوئی جی تل
نہیں ۔ اسی طرح قبرول کی زیارت سے منع کرنے کے بعد زیارت کی اباحث نہ لؤ
استحباب کی متعاصٰی سیے اور نہیں زیارت سکے لئے سفر کرنے کی امبا زت کا حکم
صادر کرتی سیے جس طرح عام مسکم تبری زیارت سکے لئے سفر کرنا جا تر نہیں۔

مثال ثانی

فاذ العللم فاصطاده ادمانده ۲۰ ۱۰ ورجب احرام آثار دولو بھراختیار سیے کم منگارور مالت احرام میں شکار کرنا مائز نہیں ، لیکن ملال ہونے کے بعد شکار کڑا وہب نہیں ، صیغة امرح إز کا فاتد ہ کجنش رہاہیے ۔

مثا<u>ل</u> ثالث

ارشادِ خدا وندی ہے:

ولاتقربوه چنایعهدن فاذ ا تطهدن فأتوهن من حیث ا موکم الله دلقری ۲۲۲

اور مب کک پاک مذہوباً میں ان سے مقارب مذکر وہاں جب پاک ہومائیں تو جس طریق سے خدانے تمہیں ارشاد فرمایا سے: ان کے یاس ماقز۔

مالتِ بیمن میں مجامعت سے منع کیا گیا ہے، پاک ہونے کی مورت میں اگرم مجامعت کے لئے صیغۃ امر کا کستعمال مواہبے اکیکن وہ اباحث کا فائدہ دسے رباسہے -

مثال رابع

ارشاد خدا وندی ہے:

فاذا تطيت الصلولا فانتشروا

في الارض و الجمعي ١٠

اس آیت میں می نمازسے فارخ ہونے کے بعد سبدسے باہر جانا لاز می نہیں سبے۔

كاففنل تلاش كرور

مثاليفامس

علم الله 1 نكم كنتم تختانون انفشكم

مداکومعلوم ہے کہتم (ان کے باس انے

تبحير حبب نماز سوميح توابني ابني را هاواور ضا

سے)اپنے حق میں خیانت کستے تھے مواس ماستغواما كتب الله لكم دلقوة) ١٨ منتم يرم بانى اورتها رس حركات سفركد

فروانی اب دئم کو اختیار سے کم) ان سے مباشرت کر وا ور خدانے جو چیز تمہا رسے لئے لکورکھی ہے دیعنی اولاً در)س کوضراسے، طلب کرو۔

فثاب عليكم وعفاعنكم فالآن باشروس

س آیت می صیغتر امراقیام صیام مین ندند کے بعد مجامعت اور اکل و شرب کی احازت مرتمت فرما ركسي وجوب كامتقاسى ننيس سيد

مثال سادس

جبءزت كحرميني كذرحايين تومشكون

فاذانسلخ الاشهرا لحرامرفاقتلوا المشركيين (التوجة) ١٥

كوجهان بإؤ قتل كروو-

اس میں بھی حرمت والیے مہینوں کے ختم ہونے کے بعد مشرکوں کا قتل فرطن نہیں ملکہ ابا صت کامتقاصی سے ، کیکن الله مایک کاارشاد ولکن ۱۵۱ دعیتم فاد خلوافا ۱۵ طعمتم فاد خلوافا ۱۵ طعمتم فانتشر وامین موار فانتشر وامین و این کا ما ازت سید اس کوداجب نہیں قرار دیا اور کھانا تناول کرلینے کے بعد گھرسے بام رمانا مزوری ہے۔

محرم مل الدرره ردايت كرت بن،

بنى سلى السُّعلب وسلم ا بنى والده كى تبركى زادالنبی صلیّ ان<mark>له</mark> علیه وستم قبرا مه زیارت کرنے گئے تو ٹودیجی روپڑسے اور فبكأواكمئ من دولة فقال استأذنت آپ کے گر دمحار کرام بی روسے لگے ۔آپ ربی ان استغفرلها فلم یأذن لی و في فرما ياكهي في اين برور د كارس والده استاً ذنته فی ا ن ازورحا فا ذن کمپ

خذور المقبور خاخما تذکراله وت سکے لئے مغفرت طلب کرنے کا مازی امازی اللہ کرنے کی امازی اللہ کرنے کی امازت ہائی تو کی کیکن مجھے امازت نہ مل سمی مجھریں نے والدہ کی قبر کی زیادت کرنے کی امبازت ہے آپڑ قبروں شخصے امازت سے آپڑ قبروں کی زیادت موت کے منظر کو آنکھوں کے سامنے ہیٹش کر دیتی ہے ۔

معلوم مواآ نخفرت میلی النّعِلیرو تم نے اپنی والدہ کی قبر کی زیارت کی اباحت کا اس متعامی مطالبہ کیا تھا، توآپ کواجازت عطاکر دی گئی دور دھا صیغرُا مرا باحث کا ابی متعامی ہے بین سلمانوں کو جہال کا فرقریبی رشترواروں کی قبروں کی زیارت کی اجازت ہے دہاں ان کے لئے دُعا استغفار کرنے کی اجازت نہیں، جبحہ انخفرت میں النّدعلیہ وسلم اور آپ کے محابر کرام احد کے شہیدوں دیگر مسلمانوں کی قبروں اور لیتیج قبرستان میں فون مسلمانوں کی قبروں اور لیتیج قبرستان میں فون مسلمانوں کی قبروں اور استغفار کرتے و مسلمانوں کی قبروں کی زیارت کو مستحب محبیقے۔ نیز ان کے لئے دُعا اور استغفار کرتے و مسلمانوں کی قبروں کی زیارت موت کا بولناک منظر پیش کرتی ہے ، لیکن اگر قبروں کی زیارت میں مفد فالب خصوصاً اس لئے بھی کہ ان کی زیارت میں مفد فالب کے دیا ہے ، اس لئے زیارت کی اجازت سلب ہوجائے گی۔

پسمسلمانوں کی قبروں کی زیارت مستحب سے مبیباکہ ان کی بمیار پرسی کرنا اوران کا جنازہ اداکرنا صروری ہے "

البقہ ذنی کی بیماریسی کو بوجراس کے ذمی ہونے کے مہا ح گروا ناماسکتا ہے۔ جبحاس کے جنا زے بین سلمانوں کو سوار ہو کوا در جنا ندے سے آگے ہو نامیا ہیے ؟ چنا نی حسرت عمر دنی التٰدور سے اسی طرح منقول ہے اور مغیرہ بن شعبہ کی صدیث بھی اس پر دال ہے کہ سلمان کے جنا ذرے میں ترکی لوگ اگر سواری پر ہیں، تو جنا ذرے سے بیچے بیچے ہے ہے جلیں اور بیا دہ بالوگوں پر کچیج بابدی نہیں ، وہ جنا ذرے سے آگے بھی ہوسکتے ہیں ۔ ترمذی کی صدیث میں ہے کہ بوخص سوار ہے ، اس کو آگے نہیں سو نامیا ہیئے ۔ اگروہ جنا نے کے کی صدیث میں ہے کہ بوخص سوار ہے ، اس کو آگے نہیں سو نامیا ہیئے ۔ اگروہ جنا نے کے

المكم موكا، تو إن كوجنا زے ميں تر يم نميں تحجا بات كا.

زيارت قبور كے لئے سفركرنا

قبوں کی زیارت کے وجوب کاکوئی بھی امام قائن ہیں ؛ البتہ بعض علی سفر کورنے کو ناجا نز کہتے ہیں ، جبکہ دو سر سے بعض علی سفر کے استحباب کے قائل ہیں۔ ادّ لہ ترخیر برخور فکر کے بعد آسانی کے ساتھ یہ بات ذہن میں آتی ہے کہ انہیا ما اور صالحین کی قبروں کی زیار کے لئے سفر کرنے والے لوگوں کا مقصود ان کے لئے دُعا اور استغفار کرنا مقصود ہیں ہوتا، بلکہ ان کا منتہائے مقصود ان سے اپنے لئے دُعا کروانا اور ان کی قرجہات کو اپنی فر مبذول کراتا ہے اور جولوگ ان کے لئے دُعا استغفار کرتے ہیں ، ان کو یہ کم کرروک ہیا جاتا ہے کہ ان کو یہ کم کرروک ہیا جاتا ہے کہ ان برسلام کہنے کی مفرورت ہیں ہوتا ، بلکہ وہ التہم زائم بن کے لئے سلامتی کا یا حت بیں ظامرہ کے کہ اس نظر ہے کہ ان ان کو ایک وہ دہ ان کا ان کو ان کرون کی خرورت نہیں ہے اور نہ ہی ان کو وہ دہ کا لائٹریک کی فرورت نہیں ہے ۔ در ق علاکر نا دلوں کوروش کی شامرہ کے دات ایسی ہے جو دعا وں کو رش خوا تھ رس ہے ۔ ار شاد فعدا و ندی سے ، ار شاد فعدا و ندی سے ، ار شاد فعدا و ندی سے ۔ ار شاد فعدا و ندی سے ، اس کو کہ نا اس کے قبض تقررت ہیں ہے ۔ ار شاد فعدا و ندی سے ، اس کو کہ نا اس کے تعمل کر نا دلوں کو روشنی بیشا کو معا ف کو نا اس کے تعمل کر نا ہوں کو معا ف کو نا اس کے تعمل کر نا ہوں کو معا ف کو نا اس کے تعمل کر نا ہیں ہوں کو معا ف کو نا اس کی کے تعمل کر نا ہوں کو معا ف کو نا اس کے تعمل کر نا ہوں کو معا ف کو نا اس کے تعمل کر نا ہوں کو معا ف کو نا اس کے تعمل کو تعمل کے تعمل کر نا ہوں کو معا ف کو نا اس کو تعمل کر نا ہوں کو تعمل کر نا اس کے تعمل کر نا ہوں کو تعمل کر نا ہوں کو تعمل کر نا اس کے تعمل کر نا ہوں کو تعمل کر نا ہوں کے تعمل کر نا ہوں کو تعمل کر نا ہوں کے تعمل کر نا ہوں کو تعمل کر نا ہوں کے تعمل کی خوات کو تعمل کر نا ہوں کے تعمل کر نا ہوں کو تعمل کر نا ہوں کے تعمل کر نا ہوں کو تعمل کر نا ہوں کو تعمل کر نا ہوں کے تعمل کر نا ہوں کے تعمل کر نا ہوں کر نا ہوں کو تعمل کر نا ہوں کی کو تعمل کر نا ہوں کے تعمل کر نا ہوں کو تعمل کر نا ہوں کر نا ہوں کے تعمل کو تعمل کر نا ہوں کر نا ہوں کی کو تعمل کر نا ہوں کے تعمل کر نا ہوں کی کو تعمل کر نا ہوں کر نے تعمل کر نا ہوں کر نے تعمل کر نا ہوں کر نے تعمل کر

سبے - ارشا دِصرا و مدی سبے ،
اور ضما کے سواگن ہ کخش کھی کون سکن ،
اور ضما کے سواگن ہ کخش کھی کون سکن ،
میں رزق کون دیتا سے یا دہم ارسے ، کانوں
اور آنکھوں کا مالک کون ہے اور ب عبان
سے ماندار کون پیدا کرتا ہے اور دنیا کے کوئ
کے انتظام کون کرتا ہے ، جھٹ کہ دیں گے کہ

ومن يعنفوالذ الله الاالمتمال المراه المامل المراه المراه المراه المراه المراه المراه المراه المراه المراه المر من السماء والاد من المسبع والابساد ومن يخرج الحي من المبيت و يجرج المبيت من الحي و من يدبرالامو فيقولون الله فقيل افلا تنتقون -(يونش) الله كروكه مشركو، جن لوكول كينسبت تمبين رمعبو

مونے کا) گمان ہے ان کو بادیجمووہ تمسے

تكليف كے دُوركرنے ياسكے برل نينے

کا کچھی اختیار نہیں رکھتے، یہ لوگ جن کو

(ندراکےسوا) بیکارتے ہیں،وہ نوراپینے

پروردگارکے ال ذراج لقرب ہ الاش کے تے

فداتوكبوكه مجرتم دفعاسه درت كيول نهين

یرفرها تا ادعوال در منهم من دونه فلایملکون کشف العترعنکم ولاتحویلا اولدک الدین یک عویت

يبتغون المرجم الوسيلة اللم اقرب وبيجون ددمتة ويخانون عذاب

ان عذاب ربك كان عذورا-

ربنی اسولیس ۱ م ۱۰۵۰ م مستح بین کرکون ان بین دخداکا) زیاد مقر دموتا) ہے اوراس کی دیمت کے امّد دار رہتے ہیں اور اس کے عذاب سے خوت رکھتے ہیں ، بے شک تمہار سے بیدردگار کا عذاب ڈر سے کی چیز ہے ۔

ان آیات کا ملخص بہ سے کہ النّد باک کے علاوہ من کو بھی پکارا جا آہے وہ می پکار خوا ان آیات کا ملخص بہ سے کہ النّد باک کے علاوہ من کو بھی پکارا جا آہے وہ می پکار خوا اسکیول خوا بین میں موجود ہے ۔ عبدالنّد بن سعود فرائے ہیں کہ مجولاگ جنوں کی گفسیروں میں یہ دخا حت موجود ہے ۔ عبدالنّد بن سعود فرائے ہیں کہ مجولاگ جنوں کی حیاوت کرتے تھے ۔ جنوں کے مسلمان ہونے برمغا لطرکے خورشہ کو وگور فرائے کے لئے آیات نازل فرایتی مشہور مفسر قرآن عبداللّہ بن عباس سین قول ہے کہ ان سے مراد مفرت عربی علیہ السلام اور مفترت عربی لیالیما کی عبادت کے ساتھ ساتھ ان کی عبادت کر ناشوع کردئ توزیل کی آیات نازل ہوئیں :

یہ لوگ من کو دخداکے سوا، پکارتے ہیں ۔ وہ نود اسپنے پرورد کارکے ہاں ذریع ِ اتفر،

ا وُللتك المدين بدعون يبتغون الدين المدين الدين و

آلاش کرتے رہتے ہیں کہ کون ال میں دخداکا، زیادہ مقرب (ہوتاہیے) اوراس کی رمت سے

الميد دار رمتے ہيں اور اس كے عذاب سے

خوف رکھتے ہیں ، بے شک تمہارہے پروردگار کا عذاب ڈریٹے کی جیزے ۔

اوراس کو بیمبی نهیں کہنا میاسینے کتم فرشتوں مدینغی میں کہنیا خالہ وجود جس تیمسلاں

ا در پغیروں کو ضرا بنالو ، جبلا جب تم مسلمان ہوجیجے توکیا اسے زیابے کتہیں کافریمنے کہے

وسبعے تو گیا استے زیا ہے انہیں فرسے اور ہے۔ کمہ دوکر جن کوم خدا کے سوا (معبود خیال

به مورمر بی و استیات می ایر به بیریدی کرتیم به ان کوملاؤ وه اسمالوں اور زماین وره محر چیز کے بھی مالک نبیں ہیں اور زان

وره جر پیرف بی دان میں اور در ان میں سے کوئی میں ان کی شرکت ہے اور نہ ان میں سے کوئی

خداکا مددگا ہیے اورخدا کے ہاں دکسی کھیلتے ، سفارش فائدہ نہ وے گی . گراس سے لئے

سعاری فائدہ نہ وسے لی، کراش کے گئے جس کے بارے میں وہ امازت بخشے یمان

، مل سے ہار سے ہیں وہ اہا رت بھے یہاں ہے۔ کرجب ان کے دلول سے انسطراب دُور

كرويا مائے كا، توكيس كے كرتها رسے يرورد كارنے كيا فرمايا سبے (فرشق، كميس كے كر

مِقَ دِنواِیاسیے) ور وہ عالی تِبرا ورگرا می قدرسے۔ مِقَ دِنواِیاسیے) اور وہ عالی تِبرا ورگرا می قدرسیے۔

معلوم سواکرالٹر پاک کے علاوہ ص کوتھی کیا رامائے وہ کسی پیز کا مالک نہیں' سے روٹ کے سے (ویر نامیں ملدیز کریں جاصل سے اور نرسی وہ معاونت کرنے

ا در نہی اس کوالٹر ما کے کے تعترفات میں شرکت حاصل ہے اور نہ ہی وہ معاونت کرنے کی اہلیّت رکھتاہے؛ البیّة سفارش کاا مرکان ہے ، لیکن الٹُدیاک سے اذن کے بغیرکو تی بھی

سفارش محرف كى بمت نبيل ركسا ، ارشاد رباني به :

یوجون رحست و پخاخون عذاب ان ۱۰۰۰ - ۱۶۰۰ مارد ۱۰۰۰ ع

عذاب دبِّكُ كان محذودًا-

ربنی اسوائیل) > ۵

نیزفرهایا: والایامدکم ان تتخذی وا الملئکنة والنبیش ادبابا ایاموکم بالکنو بعدا ذ اشتم مسلمون دال حموان ۲۰۰

نيز فرايا: قل ادعوال ذين زعمتم من دون الله لايملكون مثقال ذرّة فى السموات ولانى الادمن دما لهم فيهماس شرك وماله منهم من ظهير ولا تتنفح الشفاعة عندة الآلمس اذن له حتى اذا فذع عن قتلوبهم

العلق الكبيودرسيا) ۲۳-۲۳

کون ہے جواس سے ہاں سفادش کے۔ گراس کی اجا زن کے ساتھ۔

من ذالمذى يشفع عند لا الاباذن. دلقرة) ه ٥

اولین شفاعت کا اعزاز مرف صرت محرستال تعلیه ولم کولسل

صحیحین میں ہے کو محتبر کے میدان میں تمام مخلوق کھٹی ہوگی اوّلاً مصرت آ دم علیالسلام اس كے بعدد يكرا والعزم پغمرون حفرت اوج الحفرت الراسم الحضرت موسى حفرت عيسى ٔ علیهم الصّلوة والنسلیماً کی خدمت میں ماصری دیں گے،لیکن برتمام او**لوالعزم پیغم**بر سفادات كرف سےمعذرت كريں سكے بعضرت مسيح علىدالسّلام ان سےمعذرت لحرق کے بعد کمیں گے کہ شغاعت سے لئتے تمہیں مصریت محمصلی الٹرعلیہ وسلم کی بارگاہ میں بینجنا ہوگا وہ السد مرکزیدہ آخری نبی بر جس کے اللہ پاک نے تمام گناہ معاف کرویتے ہیں ؛ چنا کیم آپ ان کی درخواست برعمل در آ مركرتے موسئ بارگا و البی میں بہنے كرمشا برة فعدا دندى كى عظیم نعمت کے حصول کے فوڑا بعدا وّلا سفارش نہیں کریں گے، بلّکہ تحدہ رہز ہوکرالٹّہ ماک ك حمدوثنا رمين وتعريفي كلمات زبان برلائين كه - ان كاالقااسي وقت الله ياك كيطرف سے آلخصرت کے قلب اطہرر پر ہوگا۔ خدا وند قدوس فرما بیں گے لیے محدصلی النّہ علیہ وسلم سجده سے اپنا سراٹھائے مہیتے آپ کی بات کوقبول کیا باستے گا ، آپ کی در نواست کو قبول کیا مائے گا اور آب کی سفارش کوشرفِ قبولیت عطاکیا مائے گا ؛ چنانچہ آپ ک سفارش سے ایک محدود تعداد کوجنت کا واضلہ طے گا،اسی طرح تین بارآب سفایش فر مائیں مگے اور آپ کی سفارش بر محدود تعداد کوجنت میں بھیجا مائے گا بمتب مدیث میں متعدّد طرق سے یہ حدیث موجود ہے۔

الخضرت صلى التعليه ولم كاابني والدكي فبركي زيارت فرمانا

رسول التُدصلي التُرعليه وملم كالمُدكي شهيدوں اورا بني والده كي قبرك زيارت كرنا امادیث محید میں موبود ہے قامنی اضائ اور اس سے رفقار کاہم براتہام ہے کہم مطلقًا ریارت قبورو مرام مصحت بین الشبهم مسلما نول کی قبرول کی زیارت استغفار کے لئے اور كا فرقريبي رشته دارول كى قبرول كى زيارت عبرت ومؤخلت سمے لئے كرتے ہيں ؛ البتة ز بارت سمے لئے سفرنہیں فروایا۔ آپ نے فتح کم کے لئے جب سفر فروا یا توراستے میں الوأمقام برحبال آپ کی والده ک قبرہے انزول فرمایا اورزیارت فرمانی نہ تو زیارت كصلتة أب كومل كرات الإا ورمزى اس ك لفة أب سف مفرا فتبار فرمايا ورمير إبكا سنبهدا برا صد کی قبرول کی زیارت اور والده کی قبر کی زیارت نااس انداز سے نہیں ہے جس اندازسے لوگ انبیار اورصالحین کی قبروں کی زیارت کے لیتے سفراختیار کویتے ہیں، ان كامقصة حسول بركت ودُعاا ورالملب شفاحت بوناسب ، مالا نحة شريعت إسلام يربيلس كاكونى جواز نهيس كياكوتى تتحفس بومسلمان سيءاس داستة كااظهماد كرنسكرة سبعه كهني عماليتر علیبروسلم نے (معاذاللہ) اپنی والدہ کی قرکی زیارت حصول برکت ا ورطلب متفاعت کے لتحفروا نُ محلي - كلا ثمُّ كلاّ -

زيارت رُوضهُ رُسو ل النّصلي النّعليه ولم

قاصنی اخنائی کہتے ہیں کہ المخصرت صلی الٹرطلیہ وستم کی قبراطم کی زیارت کے استحباب برکٹرت کے ساتھ میچے اور بیٹرمیچے مدینیں وارد ہیں، جن سے استدلال کرنامیجے ہیں۔ جواب اقبل ، ہم المخصرت میں الٹرعلیہ وسلم کی قبر اطم کی زیارت کو جائز مجھتے ہیں۔ ہماراافتلات مرف اس بات میں ہے کہ آب کے روضت اطم کی زیارت کے لئے سفار ختیا بمارک آنا شرعًا تا بت نہیں۔ اگراس برکوئ کفس موجود ہے توقاعنی افغائی اسے بہینے فرائین ۔ کیکن دھر ربے نفس بہیٹ کو نے سے عاجز ہیں۔ جواب ثانی :اگرتسلیم کرلیا مبائے کہ التحصرت میں الدُعلیہ وہ کم کے مزارِا قدس
کی زیارت ہوجے مدیثیں موجود ہیں، تواس کاصاف صاف مطلب ہے ہے کہ بولوگ مسجد نبوی میں بنچ کرآپ برصلوہ وسلام کائم یہ
کی زیارت کے لئے سفر اختیار کرتے ہیں، وہ سجہ نبوی میں بنچ کرآپ برصلوہ وسلام کائم یہ
بیجیں۔ ظامر ہے کہ صلوہ وسلام کا ہر بیجیے والاس عرست ہی مدیجی سکتا ہے۔ آپ
کی قراط ہر کے کینج نیا تو ممکن نبیں، اس لئے کہ آپ کی قراط ہرکے گرد جار داواری قائم ہے۔
پس زیارت کرد صند اطہر کی یہ ایسی صورت ہے جس میں کچھ نزاع نبیں ہم بھی اس سے قائل
ہیں، جبکہ سفر کا اہتمام مسجد نبوی کی زیارت کے لئے ہے۔

جواب ثالث ، قاضى اخانى كادّما دكر روعت اطهرى زيارت كم بارك مير ميح مدیثین موجود بین بلادلیل سے فزوروها دلین قبرول کی زیارت کروی سے یاآب کا ا بل بقیع اور شهدار امد کی قبرول کی زیارت سے بیکب لازم آناسے کروہ عام حکم آلحفر کے روصنہ اُطہر کو بھی شا مل ہے۔ ئیس وعویٰ بلا دلیل اس قا بٰل نہیں کراس برکا اُن کھی مراماً جواب را بع ، قامنی اخنانی کادو کا الکل باطل ہے - امادیث کی معرفت رکھنے والعلماكية بن كرنام طورر الخصرت كى قبراطبرى زبارت كے لئے كوئى مديث ميج سند كرسانحة ابت نهيس صحاح ادرسنن صرب كي فابل اعتبار كما لول مين اسم صمون كى كو فى مديث موجود نهيل ، يهال يك كرمسند احمد عوط اهام مالك مسند شافعي بين يجريك السيم ييث کا مراغ ننبیں ملتا، میہ مبائنگے تجاری وسلم ، الودا ؤ د ، تر مذی اور کنسا تی میں یہ مدیث مٰرکور ہو،اسی طرح ائمة اربعه آب کی قبرا لمهرکی ز^ایارت پرکوئی *صحع مدیث بیش تہیں فر*اتے ہیں۔ پس بغول قامنی اخنائی ده کون سمیح مدیثیں بیں جن کوملیل القدرائمة اور محترثین نہیں مانتے ہیں۔ دراصل قامنی اخناتی اوراس کے رفقار علم مدیث سے ناوا قف ہیں ؟ لبُذا ان كابلادليل سى مديث كوميح كمدينا قابل توجر مي نهيس-

جواب خامس ؛ قاصنی انهٰا ئی کاید دنوی کر کچیونی *چیج حدیثین بنی موج*د میں بعن

سے شرعی احکام کو ثابت کیا جاسکتا ہے اور ترجیح دی جاسکتی ہیں ؛ الکل میح نہیں امام ترمذی اور دو سرمے متافزین مدمیث کو تین قسموں دسیح ،حسن ہنعیت ، پر ننقسم کرتے ہیں اور منعی عن بعض دفعہ موضوع ہوتی ہے ؛ البتہ میحے ،حسن مدیث قابل استدلال ہے ، لیکن قاصلی اخیا تی نے توسوف دعویٰ کیا ہے ۔ اگروہ کوتی صدیب بیش سے کرتے ، توہم اس پر حرح کرتے ۔

جواب سادس بم پورے و توق کے ساتھ اعلان کرتے بیں کہ انحضرت صلی الٹرعلیہ وسلم کی قراطہر کی زیارت سے بارسے بین حس قدر مدیثیں مروی ہیں ۔ وہ تما مديثين ندمرف كمزور بكرموضوع بي تفصيلاً سالقدا وراق ميں ان كا ذكر موج كاسے اور ائمة فن كي تنقيد كي سامته ان كوسا قط الاعتبار ثابت كياجا چكام بسكيم تواس بات مح کھنے میں بھی کوئی جمبحک محسوس نہیں کرتے کہ ایک صحابی سے بھی اس اس کا جملہ سننے میں نہیں آیا کیس سے آپ کے رون اطہر کی زیارت کامفہوم نگل ہو، معلوم بوالب كه عام قبرول كن زيارت كيمسنونيت سے توسحاً به كرام متعارف ليقے - قرآن پاك ميل اثار فراوندى ب الهاكم التكا توحى درتم المقابر وكثرت مال مين مفاخرت في م غا فل کردیا یہاں ک*ک کتم موت سے مباسلے*، عام قبروں کی زیارت کی ترکیب کے استعمال کا بوازع طاکرتا ہے ، اگرمیم عسترین کے نزدیک والسفایس کامعنی موت کا ہے اورمعض مفتترين كانظريه رسي كم فخزومبا بإت كے ميدان ميں مرسے سوست انسانوں کے کارناموں کو ذکر کوتے ہوئے قبروں کی زیارت کرتے ہو . . فريق مخالف بيغلبرماصل كرت بواكيكن الخصرت صلى الدمليه وسلم ك روس اطهری زیارت کی ترکیب و آپ سے اور آپ سے سحاب سے قطعاً منقول نہیں ۔ معلوم موتا سے کروہ اس صدید محاورہ سے استعمال سے بالکن اَ شَا تھے۔ اِسی بنیا دیر ا مام مالک اس زکمیب کوز مان پرلا نے کو مکروہ گرد انتے ہیں۔ اس ملتے ک^{وا} سمعنمون ک محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مَشتمل مفت آن لائن مکتبہ

تمام مديثين موضوع من گعطرت ببير.

جواب سَالِع ، مام احمدُ مالك، البودا قد ابن جبيب المركزام أنحفرت

مل الترمليد وسلم کے تجرؤ مقد سرکے نزدیک عبداللہ بن عمر کے فعل سے استدلال کرتے ہوئے صلوٰۃ دسلام کے مدید بھیجنے کومستحب قرار دہبتے ہیں۔ نیز ابو واؤ د میں مصنبوط سند

کے ساتھ ابوہرمرہ سے مرنوعًا روا بیت ہے ۔ اسخفرت مسلی النُرعلیہ وسلم نے فرمایا : ما من دجل بیسلم علی الاددالله جب کوئ انسان مجدربسلام کہتا ہے ، تو

على معدى عنى أرد عليه المسلام - النُّر باك ميرى رُوح كووابس بي ويية على معدى عنى أرد عليه المسلام - النُّر باك ميرى رُوح كووابس بي وسية

ہیں، یہاں مک کرمیں اس کے سلام کا جواب دے دیتا ہوں۔ ا

نیکن غورکرنے کا مقام ہے کہ کسی سنن اور مُسندگا ب بیں قبری کا لفظ وارد نہیں ہوا ، لیکن عرب کے استعمال کوغلبہ ویتے ہوئے اس کو ترجے وی عابق ہے ۔ اگرچ اس معنی کی روشنی میں بریمنا بالسل درست ہے کہ جولوگ بشرقاً غرباً نما زوں میں یا عام مالات میں اکففرت مسلی الٹرعلیہ وسلم پرمسلوۃ وسلام جیجے ہیں ان کے مسلوۃ وسلام کا جواب آپ کی طرف سے نہیں دیا جا تا، لیکن اس معنی کی روشنی میں مدیث سے اسند لال کرنا کہ حجرہ شریفیہ ہی مسلوۃ وسلام کے لئے خاص ہے قوکسی صورت میں مدیث قابل استدلال نہیں رستی ۔ عام علمار کا لفظ نظر برہے کہ آپ کی قبر اطہر پر آکر سلام کہا جائے قواس پرسوال وار و ہو تا ہے کہ کی وہ خص جو جمرۃ عائشہ سے با ہر کھڑا ہے ، وہ آپ کی قبراطہر مرکھ طریب یا مسحب نہوی میں کھڑا ہے ۔ بعن علما مرکہتے ہیں کہ تھرت عائشہ کی حیات میں جس طرے لوگ جح ہ منر لیفر میں داخل موکر سلام کہتے ہیں کہ تھرت عائشہ کی

حیات میں جس طرح لوگ حجرہ تشرکیفہ میں داخل موکرسلام عہتے تھے۔ آب کی قبراطہر پرسلام کہنے سے مراد ریکیفیتن ہے کہ لوگ آپ کی قبراطہر ریسلام کہتے تھے اور آپ ان کے سلام کا ہواب دیتے تھے ،لیکن اس میں تو آلخفزت صلی الڈ علیہ وسلم کی کچھونمیت

نہیں، جبکہ عام ایمان داروں کے بارے میں مدیث میں موجودہے:

بوشفس كسى متعارف انسان كى قبرك یاس سے گزرتے ہوتے اس کوسلام کہا ہے توالٹریاک اس کی رُوح کو اس سحے

مامن دجل يمدبت برا لوحل كان يعرفدنى الدّنيا فيسلم عليه الادد اللَّهُ علب دوحدحتى برد عليدا لسلامره

جسم پیں واپس بھیج دیتے ہیں تاکہ وہ اس کے سلام کا بواب وسے منکھے ۔ اور یہات ِ بالکل و اصح سے کمسجد نبوی میں کھڑے ہوکرسلام کہنے وا لاانسان آپ کی قبراطبر رتونهیں کھڑا سے، تواس انسان میں اور وہ انسان بوسیر میں داخل موتے وقت اورنطلتے وقت لبم اللہ والعثلوۃ والسّلام علٰ رسول السّٰدكبّاسیے یانمازیں آپ پر سلام بيت سي كيد فرق نهي سب - الله باك كاار شاو (مَلواعليه وَمَلَمُواسَلِماً) ان سب صور توں کو شامل ہے۔ حدیث میں سبے کہ مجتمعی آپ برایک بار در دیجیجہا ہے، اللہ پاک اس پر دس بار رحمت کا نزول فرماتے ہیں۔ بیمدیث کثیرطرق سے مروی ہے۔ بعض طرق میچے کتب میں مروی ہیں ؛ چنا بچہ صیحے مسلم میں عبراللہ بن عمروم وفزعاً روایت کرتے ہیں ،

قال ا ذا سعتم الهؤذ ن فقولوا مثل ما يقول ثعرصلواعلى فا مته من صلَّىٰ على مرَّدٌ صلى الله بهاعليد عشرًا ثمّ سلواالله لى الوسيلة فانها درجة فى الجنة لا تنبغى الا لعب من عباد الله وارجوان اكون ا شا رزالك العبد فهن سأل الله لحب الوسَيَّلَة علَّت عليه شَفَا عَتْم .

ولا السال كے كلمات كا بواب و كيمة ، اذان سمے بعد محبوبر در در بھیجیئے جوشخص مجھ پرایک بارور در در جیجنا ہے اللہ یاک اس پردس بارورود تھیتے ہیں بھرسرے لئے وسيرطلب كرور يرجنت ميس السامقام جومرت کسی ایک بندہ سے لئے تفوق ہے۔ مجھے امدہے کہ دہ مجھے عطاکیا جائے گا بس بیخف میرے لئے وسیلہ کی اللب کرے گا ،اس کے لئے میراسفارش کرنا آیا ہت ہوئیا۔ یر مُدیث علار بن عبدالرحمٰن عن ابیعن ابی مُرِیرة کے طریق سے بھی مردی ہے اور سلام بھیجنے کے بارسے میں کثیر حدیثیں موجود ہیں۔ زیادہ مشہور مدیث عبداللہ بن مبارک کی ہے جس میں ابوطلحہ رسول اللہ علیہ وسلم سے بیان فرماتے ہیں :

اکشرطرق میں مطلقاً بلا عدد مجی واردسے کر جرشخص آب پر صلوۃ وسلام کا بر بیجیجتا رہے گا میں اس پر صلوٰۃ وسلام بھیجوں گا، سیکن مشہویة قاعدہ کی بنیاد پر ہرایک نیکی کابلر دس گنا دیا ما تاہے اس مطلق مدیرے کو بھی مقید پر مجول کیا ماستے گا۔

دس گنا دیا جا با ہے اسے اس مس ملات وجی عید بریموں ایا جاسے گا۔

تا خاصی عیاض، عبدالر عمل بن عوف، الوہر بریرہ ، مالک بن اوس بن مدتان عبداللہ بن ابی طلحہ سے اس معنموں کی روایات لاستے بیں جن کی تفصل آیند آسئے گی۔ آنحفر صلی النّدعلیہ وسلم برمساؤہ وسلام بھیجنا بالکل اسی طرح دُور دراز سے آب برسلام بھیجنا کی دُعاکر ناہے اور بہ آپ کی ضعوصیت سے ، اگر جباللّہ باک کے تمام نیک بندوں پرسلام بھیجنا بھی عمومًا مشروع ہے ، البتر بعض علما را بنیا برکے علاوہ عام بیک انسانوں پرمساؤہ جلیجنے کو عمومًا نو بین اور بعض علما ربنی اکرم مسلی النّد علیہ وسلم کے علاوہ کمنی بغیم بریمی مساؤہ مسیحنے کو مکردہ گروانے ہیں اور بعض علما ربنی اکرم مسلی النّد علیہ وسلم کے علاوہ کمنی بغیم بریمی مساؤہ جسیجنے کو مکروہ قرار دیتے ہیں الیکن اس کوغلوسے تعبیر کیا جائے گا۔ حکوم طربی یہ سے کہ آپ

مستحے فیرپرسلام تجیجنا مائز ہے، جبحہ صلوۃ کے بارسے میں اختلاف یا یا ما آسہ ۔ امل ا ممد بن منبل اورد وسرسے اتمہ حواز کے قائل ہیں۔ ابوطلح مرفوعًا روابیت محر ستے ہیں: رسول النُّرْمِسلى السُّعِلىية وسلم بسنة فراياك جب محبر برسلام بمبيجة توأور سولول برتھی سلام کہو، اس کتے کہ میں بھی سولول کے زمرہ میں شامل ہوں۔

قال دسول الله صلى الله عليه وسلمّ اذا سلّمتم على نستِّموا على الموسلين فائتما انا رسول من المرسلين -

ینالخیرالله وک فروات میں ، قل الحيل لله وسلام على عباده السذين اصطفئ أطله خبوا مايشوكوك رالمل) وه www.KitaboSunnat.com

كبرد وكرسب تعربيف ضرامي كودمزاوان سے اوراس کے بندوں برسلام سے جن كواس نے منتخب فرمایا۔ بھلامداً بہترہے

یا وه جن کور داکس کا، شریک بناتے ہیں۔

ا در بیغمبرون پرسک لام سب طرح کی تعربیت خدائے دت العالمین كودمزا دار، ہے۔

والحدديثة زبّ العالسين -رالطفت اء١٠١٨ نبر حضور ابراسيم موسى ارون الياسين عليهم كا ذكر كرت بوست فرمايا:

. نیزفرهای وشلامطی الموسلین

ا در پیجیجه اسنے دالوں میں ان کا ذکر وتزكناعليه فى الخاخوين سلام دجميل باقى جھوارد يا دىينىتمام جېسا ك على نؤح في العالسمين (العُلَقْت) ١٥-٥١

میں دکم کوح پرسلام ہو۔ اور بیجیدائے والوں میں ابراہیم کا ر ذکر نیمرباتی، مجموار دیا که ابراسیم پر

فيزفروايا: وتركناعليه فى الآخوس سلام علی ابراهیم را لعنفت ، ۱۰۸ ۱۰۰۹

اور بیجیے آنے والوں میں ان کا ذکر يْزِوْلِيْوِتْرَكْنَا عَلِيهِمَا فَى الدَّحْرِينِ سلامر د خيرباقي، مجيوط و ما كروسي ادريارون پرسالم-اوران کا ذکر د نیر کیمپلوں میں دیا تی ،

على موسلى وهادون والصفت)١١٠-١١١ يولأوتركناعليه فى الآخوين سلامرعلىٰ الياسيق- دالصفنت) ١٢٩ - ١٢٠

سین - دا لعنفٹت) ۱۲۹ - ۱۲۰ چھوڑ دیاکہ الیاسین پرسسال م چنا کچہ مذکورہ سلام وہی سیے جس کاکہن عمو گا او فیصومیا نما زمین کا داکرنے والے محصلتے مشروع سے اور نمازاد اکرنے والے انسان سلام محییتے ہوئے کہتے ہیں

(السّلا مُرْعِلينًا وعلى عبادالله المسّالحين) دم يرا ورالتُركَ نيك بندول يرسالم بي، اس كا ذكرتشهد كى صديتوں ميں موحو دسبے جوعبدالتّٰد بن مسعود سے تحييين ميں اور الجوموسیٰ ابن عباس سے مسلم میں عبدالتد بن غمر عائشہ ، جا بروغیرہ سے کتب سنن ، و مسانید

میں مُردی ہیں بیسلام توایما نداروں کی طرف سے ایما نداروں سکے گئے دعاا واستعفا کی صورت سے بس کے کہنے سے وہ لوگ اللہ باک سے اجرو اواب کے حق دار ہو ب مج

لهذاجس برسلام تمبيما ماسئة واس كوحواب دينا صرورى نهين وبال سلام تحييّة وجركض واجماع کی روشنیٰ میں مسلمانوں سکے حقوق العباد میں داخل *سبے ، ضروری س*ہے کہ*س کو*

سلام کہا جائے، وہ سلام کا جواب دے۔ اگر میرسلام کہنے والا غیرمسلم بھی کہوں نہ ہوئے دل اُ انصاف کا تقامنا یہی ہے اسی لئے رسول النموسل الشرعليہ والم کے پاس جب بہودی تقے

ا درسلام کہتے ، تو ہ ہب ان کے بواب میں صرف علیب کم کا نفظ فرماتے۔

ادرکیسی معین انسان کوجب آب سلام کمیں تواس کے ملئے سلام کا جواب صروری ہے اوراگرجماعت سے توکیااس کا سجاب تمام بر فرمن ہے یا اگرا کی شخص سلام کا جواب دیتاہے، تو کا نی رہے گا، اس میں ا ہلِ علم کے ووشہور قول ہی، جب ملاقات کے وقت ابتداءً سلام كهنا سننت بمؤكده سبع، واجب كهنه مين علما رك دوقول بين ورقبركي زيار کرنے دلیے انسان کیے تی میں بھی سُلام کہنا سنسّت مَوَکدہ سے ، اس لیے مدیث ہیں م^وی

ب كرميت مطلق سلام كالجاب لوال ق ب -

پس آپ پرسی بنوی یا دیگر مساحدا ورعام اکمنہ سے سلام بھیجنا کتاب وسنت اور انجماع کے ساتھ مشروع سے ؛ المبقہ آپ کی قبراطہر کے بیاس سلام کہنا کوسلام کہنے والا حجرہ سرلیفہ میں داخل موکرسلام کہے ، اس کواس وقت تومشروع کہا جاسکا سبع بحب کہ مجرہ مبارکہ میں داخل مونا ممکن کی بین معنوت عائشہ کی وفات کے بعد جب مجرہ میں اخل مونا ممکن کی بین معنوب کے قریب جگہ سے سلام کہنے ہیں علمار کے تین گروہ ہیں ، گو وہ اول ذائر مسجد نبوی میں داخل موت وقت آپ پرسلوۃ وسلام مسیع ، نمازسے فراغت کے بعد عجرہ کے قریب جائے اور آپ پرسلوۃ وسلام ارسال کوے بیقول امام مالک، ننا فعی ، احمد کے اصحاب سے منقول سے ۔

دوسوا گروہ : زار تجرہ ترلیف کے باس ماکرسلام کا بدیدارسال کردہے۔
تیسسوا گروہ : زار تجرہ ترلیف کے باس ماکرسلام کا بدیدارسال کردہے۔
تیسسوا گروہ : ان کا نقطۃ نظریہ ہے کہ سمبہ نبوی میں داخل ہوتے وقت بسسم اللہ
آپ پیسلاۃ وسلام بمینا کا نی ہے میسا کہ عام مساجد میں داخل ہوتے وقت بسسم اللہ
والقلاۃ والسلام علی رسول اللہ کہنا جا ہیں۔ اہل مدینہ اور دبیگر با ہرسے آنے والے
انسالوں کے لئے ایک ہی حکم ہے۔

ابن مبيب كاقول

ابل مدین کے علاوہ دور سے لوگ مسیر نہوی میں داخل ہوتے وقت رکھات رہیں تا بسم الله وسلام علیٰ دسول الله مالی اللہ کے ساتھ اور رسول اللہ اللہ اللہ مالی ملین اس میں اللہ اللہ اللہ مالی ملائک تد علی محسد الله ما مفولی رب کی جانب سے سلام ہوا ور اللہ اور دنو ہی دافنتے کی دانوا مب دحمت ہے اس کے فرشتے محد سل الله علیہ وسلم ہر وہ ت

وجنتك وجنبنى من الشيطان المرجم بيح بين ال الترميرك كنا ومعان فرمان وجنبنى من الشيطان المرجم ورواز كور والمردود ومجم التيطان مردود وسع مفوظ فرما و مجمع التيطان مردود وسع محفوظ فرما .

مجرد دستری در کوت اداکرے سے اور قبراطم رپر وقوف کرنے سے بہلے قبراور منبر کے درمیان دور کعت اداکر سے جس میں اللہ پاک کی حمد د تنا رکے ساتھ ساتھ اس سے معاونت ادراتمام کی دُعاکرے۔ اگراس مقام کے علاوہ سجد میں کہدن و کوعت اداکر سے بھر بھری کا فی ہے، جبحہ قبراطم ادر منبر کے درمیان اداکر نا افضل ہے، اس کے کہ کرنی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم سے فرمایا کہ میری قبرا در میرے منبر کے درمیان والا ٹکرا جنت کا بھروں میں سے ایک نہر بر رکھا عبائے گا۔ اس کے بعد قبر بر تواضع کے ماتھ کھڑا ہو جائے اور آپ بیصلوۃ وسلام کا مدید ارسال کرے اور آپ بیصلوۃ وسلام کا مدید ارسال کرے اور آپ کی تعریق الور کی مقرونی اللہ حنہا پرسلام کی میں مدحد کلیا ت کے۔ بعد ازاں حضرت ابوب کو، عمر رضی اللہ حنہا پرسلام کے اور ایک میں مدحد کی ماتھ در ود بیل مقالیہ نہر بردی میں دات دن کثرت کے ساتھ در ود بیل مقالیہ نہر دروں کی زیارت بھی کرے۔

ميرانظريي

منبراورقبراطهر کے درمیان روضت المبنتہ میں دورکعت اداکرنے کا استحباب الم احمد بن منبل سے مناسک بروزی میں منقول ہے الیکن المام مالک بنی صلی الشرطید وسلم کے نما زیڑھنے کی جگر پردودکعت اداکرنے کوستحب کہتے ہیں بعض ائمتہ کا نظر پر برجمی کم مسحد نبوی میں جہاں جاسکنا ؟ البتہ فرض مسحد نبوی میں جہاں جاسکنا ؟ البتہ فرض نماز بلا شبرصف اقل میں امام کے ساتھ ہی اداکرنا مناسب ہے مفت سلمتہ بن اکوری کی روایت میں ہے ۔ ۔ ۔ ۔ ۔ کہ رسول الشرصلی الشرعلید وسلم نماز کے لئے ستون

کا تصدکرتے تھے ۔ ظامر ہے کہ وہاں نماز اداکر ناافضل سبے خصوصًا جبکہ فرض نماز بیں بیں ، من کے فرائض سرانجام دسے رہا ہو۔ مناسب یہ ہے کہ امام می رکے درجا بیں لوگوں سے آگے ہو۔ اب جبکہ مسی ہے صدود میں توسیع مرجکی ہے توا مام توسیع شدہ مقام میں کھڑا ہو۔ مسند الولیع لی کی دوایت :

علی بن مین نے ایک آدمی کونبی اکم م صلی النّرعلیہ وسلم کی قبر کے باس ایک کھڑی کے قریب بار بار آتے دیجھا تومنع فرطتے مہوئے کہا کہ میں تجھے رسول النَّر صلی لانتظیہ دسلم کی ایک مدیث سانا ہوں۔ آپ نے فرمایا کومیرے اس گھر کومیلہ نہ بنا نا اور نہ اپنے گھروں میں قبریں بنانا تمہا راسلام نرم کھرسے مجہ نک بہنچ ارسے گا۔ نرم کھرسے مجہ نک بہنچ ارسے گا۔

معلاً يجيئ الى فرجتركانت عند قيبوالنبى صلى الله علي وسلم فيدل فيها فنهاء فقال الا احدثكم حلايث سمعترمن ابى عن جدى عن دسول الله صلى الله علي وسلم قال لا متخذوا بيتى عيد ا ولابيوتكم فبودًا فان تسليم كم يبلغنى ابنى كنشرة

عن على بن الحسين انهُ رائي

اس مدین کوما فظ مقدسی نے میحین پرزا مُرتبد مدینوں کی فہرست میں شما کرتے ہوئے کہا سبے کہ یہ مدین کا کرتے ہوئے کہا سبے کہ یہ مدین امام ماکم کی میح مدینوں سے زیادہ مقام دالی ہے۔ قریب کی مار کا مرکب کے میں اورامام الوما کم بستی کے تقییمے کہنے کے متراد من سبے ، بلکہ امام ماکم کی مار کہ کی میں اوران کا دُرمبیمی اما دیث سبے فرو تر ہے ، لیکن برمدیث میمی امادیث سبے فرو تر ہے ، لیکن برمدیث میمی امادیث سبے دورت سے فروتر ہے ، لیکن برمدیث میمی امادیث سبے فرویت سے فروتر ہے ، لیکن برمدیث میمی امادیث سے دورت سے دونے میں شمار موتی ہے۔

على برحسين زين العابدين كامقام

سب مبلیل القدر عالم متدیّن تابعی گزرے ہیں۔ امام زمری کہتے ہیں کہ میں نے کسی تمی کوان کے مثل نہیں بایا، وہ اس حدمیث کے را دی ہیں۔ صدمیث کا تقاضا یہ ہے کہ آپ

کے مجرہ کومیلگا، بنایا مائے ، بعنی صلوۃ وسلام کہنے کے لئے آپ کے مجرہ کا گرخ مذکیا مائے ، مسلوۃ وسلام کے میں مسلوۃ وسلام کے سے ۔ مسلوۃ وسلام کے سنے جرہ شرلینہ کی فسیص شرع امورے سے ۔ مسنن افووا و دمیں الو سررہ سے مرفوعاً روایت ہے :

قال دسول الله صلى الله عليه رسول الدس التعليم فرات بي وسلم لانجعلوا بيوتكم تبود ولا مرى فرون و توقري بنانا اور نهى تجعلوا تبدى عيدًا دصلوا على ميرى قركوم يرانا اور مجيد دوم مجية ربهنا الله عيدًا دصلوا على المنتم مجدير المنان صلا تكم تبلغن حيث ماكنتم ميري في المنتم ميديم المنتم الم

مذکورہ مدیث حسن ہےا دراس کے رواہ تنقیمشہور ہیں ۔عبدالتّدین نا فیع صا تیخ میں کمیزوری کا ہو نا استدلال کے لئے ما نیے نہیں ہے ،اس لئے کرنجیلی بن معین سفے اس کو تنقہ قرار دیائی بن معین کی تو ثبت ہی اس کی ثبقہ ست پیر کا فی دیسیل ہے۔

کو تفر قرار دیا این معین کی تو ثبت بی اس کی تق ست بر کافی دسیل ہے۔

ان کے علا دھ الوزرمہ کہتے ہیں اس بیں کچھ حرج نہیں۔ ما فظالوم کم

رازی کہتے ہیں اس بی کچھ کر دری باک جانی ہا دورہ معروف ومنکرفسم کی روایتیں بیان کوتا

مقا اگر میہ اس تم کے راوی سے ملطی کا امکان سے ایکن جب اس کی بیان کردہ مدیث
کے شوا مرموج د موں ، تو بھراس مدیث کو تحفوظ کہا جائے گا۔ اس مدیث کے متعدد

ے وہ ہر و ہو وہ ہوں ، و چیزا کی طریق و صوط ہا جائے ہے ، اس کا دیا ہے ۔ شواہر مو جو دہیں۔ سنن سعید بن منفدور میں سند کے ساتھ مذکو رہے : عن ۱ بی سعید ، مولی المبھی ی

قال قال دسول الله صلى الله عليه وسلم لا تتخدوا بيتى عيدا ولاسيتكم قبورًا وصلوا على حيثتما كنتم فان ملؤ تكم تبلغني.

الدّ ملیہ دِہم نے فرمایا کہ میرسے حجرسے کومیگاہ اور اپنے گھروں کو قبرستان کی حیثیّت مزدینا اور مجمد پردر و دھیجیتے رمہنا، تنہارا درود مجم تک مہنچیا رسمے گا۔

سہیل بن ابیسہیل بیان کوتے ہیں كمجيح حسن بن حسن بن على بن ا بي طالب نے آنحفرت صلی النه علیہ وسلم کی قراط ہر کے پاس دیکھا تواس نے مجھے اُ وازدی أوركها آييئ ميرب ساتقر شام كي كلف میں شرکی ہوجائے۔ میں نے جوا با کہا كم مجعے كھانے كى طلب نہيں ہے بچراس نےکہاکہ قبرا لمبرکے پاس تجھے کیا کام ہے میں نے کہا کہ انخصرت صلی النرمليرولم پرسلام کہنے کی نیتت سے آگیا سول اس نے کہا کرمسجد نبوی میں داخل موسنے قت آب بیصلاة وسلام كها مباست اس لئ كررسول الترصلى الترصليد وسلم بن فروايا كتم ميري حجره كوميلها ورابينه كمعرول كو قرستان نربنانا بهود پرالتر كى لعنت

وُوبرى روايت ا متال سمعيل بن ابى سمعيل دانى الحسن بن الحسن بن على.

بن ا بي طالب عند الشير فناداني وهو في بيت فاطمة بتعشى فقال هلم الى العشاء فقلت لا اديدة فقال مالى دائيتك عند الشير فقال مالى دائيتك عند الشير مقلت سلّمت على البني صلى الله عليروسلم فقال اذا دخلت المسعد فعلى دالله عليروسلم قال ان دسول الله ملى دالله عليروسلم قال الانتخذوا بيتى عيداً ولابيتم تبورا بعن الله اليهو النهو النهاء هم مساجد وسلوا الله على ان صلا تكم تبلغنى ويشاكنتم

ما اختم و من بالاندلس الاسواء - قبرستان نربنانا بهود پرالترکی لعنت مورج نهول نیم و برالترکی لعنت مورج نهول نیم و القالم کی قبرون برسجد یو تعمیر کردیں ۔ مجد برجهان کمیں سے بھی ورود بھیج کے بہنچ مباستے گا بیس اس میں تم اور اندلس میں رسینے والے لوگ برابر ہیں ۔ برابر ہیں ۔ اسماعہ اسماعہ اسماعہ اسماعہ اسماعہ اسماعہ المساحہ المسا

اس مدیث کوقاحنی اسماعیل بن اسحاق دنعشل المصلواۃ علی المنبی علیہ وستم ، میں لاتے ہیں ہلین حا اختم وسن بالاندلس مندا لاسواء کے تملہ کوذکر نہیں کیا۔ غالبًا اس لینے کردہ اس بات کے قائل ہیں کرسفر کے لیتے روانہ ہونے وللے

اورسفرسے واپس لوٹنے والے انسانوں کوروختہ اطہر ریاضر ہوکرسلام کہنا افضل ہے،
لہذاان کواندنس میں رہنے والے انسانوں پرفیسلت ماصل ہے، لیکن حسن اہل مدینہ اور بامرسے آنے والے لوگوں کے درمیان کچھ فرق نہیں کرتے ؛ چنانچہ سلف صالحین میں حسن ہر حسن کے ملاوہ علی بن حسین بھی اسی نظریہ کے ما ماضے کرمسی نبوی میں واضل ہوتے وقت مسلوۃ وسلام کا مدیم بیجنا کافی ہے ۔

معفرت حسن بن علی کی روایت ۱

عن النبى صَلَى اللَّهُ عليه وسلمة المسلمة المستحديث المراصل التُعطيه ولمّ حيثما كنتفر فصلوا على فان صلاتكم سعي بيان كرتے بير آپ نے فرما يا جهال تبلغنى مجمع بير پېنجيا اينگا

ا حضرت من فرمات من كرمسجد من داخل مونے دقت بنی صلی الله علیہ وسلم برسلام الله علیہ وسلم برسلام الله کا اللہ علیہ وسلم نے فرماما:-

کُوُّاِسَ کِیے کررسُول انتُرْصلی التُدعلیہ وسلم نے فرط یا :-لا تتخذوا بیتی حید اُولابینیم س

تبورا وصلوا على حشيماكنم فاك اورابين كعرون كوفرستان نابنانا ور

مدنگم تبلغی حیشما کستم۔ محبر پردرود بھیجے رمنا جہال کہیںسے تم مجر پردرود بھیجوگے متہارا درود مجبرتک بینجت سرائل۔

مسجد مین اخل او تے وقت آب برصاوة وسلام محین

آکفنرت صلی الٹرعلیہ وسلم اکٹر صحابہ کوام ادرتا بعین سے مسعبر میں داخل ہوتے دقت آپ پرصلوٰۃ وسلام کہنا منقول سے؛ چنا پنے مسئوسنن ترمذی وابن ماجر میں فاطمہ بہنت رسول الٹرصلی الٹرعلیہ وسلم سے روایت سے کہ آپ جب مسحبر نبوی میں داخل ہوتے واب غفری خذبی وافتح لی داخل ہوتے آپ برصلوٰۃ وسلام سجیجے اور درب اغفری خذبی وافتح لی

ابواب دخستك ، بڑست اور حب مسيرسے با برنطنے تو بھی اسی طرح صلق وسال) اور دُما فرماتے بعف طرق میں یہ بات زیادہ سے کہ آپ نے لوگوں کو اکس کے کرنے کا محم دیا۔

سنن الوداؤ و بیں اوا سیریا الوحمیہ سے روایت سے رسول النّم النّر ملیہ ولم میں اللّم کے مقامات کا شمار کرتے ہیں ، وسلام کے مقامات کا شمار کرتے ہیں ، وسلام کے مقامات کا شمار کرتے ہیں ، اللّم میں داخل ہوتے وقت اللّم میں داخل ہوتے وقت آپ پرصلواۃ وسلام میں ما جا سے اللّم میں کم میں میں داخل ہوتے وقت آپ پرصلواۃ وسلام میں ما میں داخل ہوتے وقت آپ پرصلواۃ وسلام میں ما فیری دا دیر دائلہ میں اللہ میں ترحم کی دُھاکی ما سے اور اللهم المفول داؤی وا فیری دا اللہ میں الراب حدمت کے ملمات کے کلمات کے۔

عمر مبنار کا قول

ارشاد خدا وندی خاذا دخلتم اورجب این گرول میں جایا کردتو آپنے

بیع تا فسلموا علیٰ الفست مردنی ا است کردنی ا حکم والوں کو سُلام کیا کرو۔

کنفیری صرت عروفرات بین اگر گھر میں واضل ہوتے وقت کوئی السّان کھریس موہو دنہ ہوتو

داخل ہونے والاانسال السّلا مرعلینا و علی عباد الله الصالحین السلام علی

احل البیت ودحمة الله و برکانترکے کلمات کے عبالتّ بن عباس ہوت سے

مساح دمرا دلیتے ہیں۔

مساح دمرا دلیتے ہیں۔

امام تخعى كاقول

---------اگرمسجد میں کوئی انسان نہیں تو داخل ہونے والا التلام علیٰ رسول التُرکِ اوراگرگھر میں کوئی موجود نه سوتو داخل مونے والاالسان السلا مرعلینا و علی عبادالله الصّالحين كمِے۔

علقمه اور تعب حبار كاقول

مسحرمين وافل موت بوت اور تكلته موست دانسلام عليث ايمها المبتى ورحمة الله وبركات صلى الله وملائكت على محسد صلى الله علي وسلم، كم كلمات كم محدد عمروب والسياس السياس منقول سد محد بن سيرين سعمنقول سي كراوك مسجدين داخل اورنيكلته وقت ذيل كے كلمات برط صاكرتے مصفے عملى الله أو ملد مُكت على محسد السلامرعليك ايها اكنبى ودحسة الله وبركانته بسم الله وخلسنا ا ور شکلتے وقت بسم الله خرجنا وعلى الله تو كذنا رسنن الوداوّ ومين مرفوعًا رُايت

مروی سے ،

انه؛ يقال عند دخول المسجد اللهمان استلك خيرالمولج يخير العفوج بسمائله ولجنأ وبسمالله خوجنا وعلى الله توكلنا -

الالله میں تحبیب بہتر داخل موسے کی جگها وربهترن<u>تک</u>لنے کی جگه کا سوال کرتا ہون ہم النّد کے نام کے ساتھ داخل ہوتے ہیں اورالٹرکے نام کے ساتھ نکل رسمے ہیں اور الٹر پاک پرسمارا تھروسہہے۔

ابن ابي ماتم فاذا دخلتم سيرتا ضلهوا على الفسكم يخيتة ً من عندالله سادكية لميبتردنوب ١١ كتفير ميام بالمتنق فرائيس كرهريس داخل مهوت وقت الرهريس كوئ فروكو بود نبين كو السّلا مرعلينا وعلى عباد الله الصّا لحين كما ماست اومسجدين الركولي فرونه مؤتّر

ا درجب گھروں میں مایا کروتوا ہے دگھروالوں) کوسلام کیا کرودیہ، ضراکی طرف سے مبارک اور باکیزہ تحفہ ہے۔

مسجدين داخل موتےوقت كما مائے

الشلام على رسول الله صلى الله علي وسلم كبا ماست اور كريس وأل بوت وقت مبحرو بال مكروال موجود مول اتوالشلام عليكم كبا ماست.

سلام تحيتة اورصلوة مين فرق

سلعن صالحین ان دونوں میں فرق کرتے ہیں ۔سلام تحیّیۃ کا جواب دینا منر دریہے اگرج بسلام مبنے والا كا فربى كيوں ندمو، اسك طرح كسى مينت كوآپ سلام كمرر سے بي او و مستمھی اس کا بواب سید درجی سے۔ بنابریں فلفا راشدین کے عدد فلانت مين معابر كرام تومد ميذمنوره مين رست تقع مسجد مين نماز اعتيان تبعليم وتعلم ذكرالي؛ دُما وخيره كصلقة جب داخل موت توان كامعمو ل ينهب مقاكه وه فراطهر كي طرف زيار کے لئے جاتے ہوں یا حجرہ عالت رکے اندر داخل موستے ہوں یا اس کے بامر ہی قون كرتے ہوں مقصدیہ سے كہ مربہ منورہ میں دسنے واسلے عاب كرام انخصرت صلى المعلى جا کی قبراطہر کی زیارت نہ تجرہ سے با مرسحبر کی حدود میں ا درنہ ہی تجرہ کے اندر پہنچ *کر کرتے* تھے اور نہ کی اپنے گھروں سے صرف آپ کی قراط رکی زیارت کے قصدرسے نگلتے تھے ' بلكهاس قصد سے نكلنا مدعات دين ميں شمار سوتا تھا. - اتمة دين اورسلف صالحين اس انسان سے عمل کومنکرا در بدعات سے شمار کرتے ہیں ہو گھرسے نمازا درآپ کی قبرا طهررسلام کی غرض سے نکلتا ہے۔ مبسوط بیں ام مالک سے وضاحت سے سامته منعقول سے كسلى مالحين سے اس شمكى زيارت نابت نبيں دنيزان كے شاگردول اورمعتقدین میں سے ابوالولید باجی قاٰصنی عیامن اور دبیگرعلما ربھی اس نظرر کے مامل ہیں۔

کیک سوال ، امام مالک سے پوچھا گیاکہ مریز میں آباد لوگوں میں سے کچھواس قسم کے لوگ مجمی میں کرجب انہوں نے سفرر با نا مہویا جب وہ سفرسے واپس

ہ تے بین تو قبراطہر پرمان پوکرسلام کہتے ہیں۔ نیز مفرت الوبکر، عمر منی الڈعنما کے لئے دعاکرتے ہیں۔ ایک دن میں ایک بارسے زیادہ دفتہ بھی لبعض لوگوں کامعول ہے۔ تو اس کے متعلق آپ کا کیا فران ہے ؟

جواب : امام مالک نے فروایا مجھے اپنے شہر کے فقہارسے اس کے جواز مرکوئی دلیل نبیں بینی ؛ الندااس کوندگر نازیادہ مناسب سے ۔ امت کے آخری لوگوں کی صلاح اسى طرح مون ما بيئ جس طرح امت كے بيلے لوگوں كى اصلاح كى كمى اورا مت كے عيلے علمار سے اس کے بارے کچھ اطلاعات ماصل نہیں ہیں کدو بھی آپ کی قبرا لمبر ترفیری دیتے تنے ، ہاں جب کو نی شخص سفرسے واپس آتے یا سفر کا ارادہ رکھتا ہو، تواس کے لئے کو است نہیں ہے، لیکن اہل مدینہ اگر بقیع قبرستان یا شہدار احد کی زیارت کے لئے مائیں، توجس طرح دو *سرسے شہرو*ں میں رہنے والے لوگوں کے لئے عام قبروں کی زیار کی اما زست ہے ،اسی طرح اہل مدینہ کو مجھی ا ما زست سیے مبیسا کہ انخفزت مسلی للمعلیہ وسلم مجی بقیع قرستان کی زیارت ... کے بیے ... تشریف کے مباتے تھے ؛ البقہ أتخصرت مسلى التدملسيه وسلم كى قبراطهر كى زيارت كرنا شرعًا اور مساً ممنوع سبع - حساً اس لئے کہ آپ جمر و عاتشہ میں مدفون میں اور حجرو کی حیار دلیاری کی و مبسے لوگ آب ک قبراطهر تک نهیں بینے سکتے، یہی مکت تھی کہ آپ کو تجرہ میں دفن کیا گیا، در مذحس طرح مام قبری کملی فضامین بین اور زارتین ان کی زیارت کرسکتے ہیں اس ملتے عام قبروں کی ^نیار^ت کی امبازت سے۔ بخلاف آپ کی قبراطمبرسے کداس کی زیارت کرنا جائز نہیں۔ ظاہر بے کدزائر آپ کی قبریک پہنے ہی نہیں سکتا۔ یہ نہمجا مائے کہاس طرح عام قبروں کو سې کې قراطه رړېزې اورفغيلت موگ، يه ايسا غلط فنځرېږ کسې عام سلمان کې زمان سے ریکلمہ نہیں نکل سکتا ، حیرجا ئیکھ صحابہ کوام، العین عظام اور مدمینہ متوّٰرہ کے علمامہ اورائمة دين آپ كے متعلِّق اس تسم كے الفًا ظابنی زبان برلا ميں مِعْيقت تو يہ ہے كەللىرىيك لىنەتىپ كوملومرتبىت ا درشرف مخطىم سى لذا زاسىيە - بىبى دىرسىپ كەسلۈة

وسلام ك لت قبر اطهري أنا صرورى نهيس، بلكه بركيساك برماوة وسلام كالديميج البير. الى مغالطى، كسى قبرى زيارت كرناسا حب قبرى تعظيم احرام کی متقامنی ہے یہ عام قبروں کی زیارت کوستحب قرار دینا اور آپ کی قبراط_{یر}کی زیارت كومستحب رسمحهناآب كى توفير تعظيم كے منافی ہے؛ مالا نكتمام لوگوں سے التحفر مَن الله عليه صلم زيا دمستحق بي كمان كالعظيم و تو قير مين كوتى د فتيقه فروگذاشت ندكيا جائتے -جُوابِ : مغالطه مين ج دعوىٰ كياكياسِ وه منت اجماع امّنت كے بخالعت ہے؛ لہٰذا اس کوتسیم نہیں کیا ماسکتا۔ آپ کی قبراطم رکوعام قبروں برقباس کرنا فاسدہے۔ عام قبروں کی زیارت مشروع سے ورزا تراگرمها حب قبر کے کہتے وُعاکرنا ماہم ہا ہے تو قبرسے جتنا قریب سونا ما سے سوسکتا سے اور اگر کوئی برقتی انسان صاحب قبرسے دُعا کرتا ہے۔ تواس کے لئے زیادہ مؤثر صورت یمی ہے کہ وہ فبر کے متنا قرمیب سوگا اتنا ہی الززياده بوگا،ليكن آب كى قبرا طركے قريب جا نامكن سى تنبي ، نيزعام قبروں يرمن إ جنازہ پر منا درست سبے، نیکن آب کے متعلق کہیں موجود نہیں کر آپ کی وفات کے وقت جوصحا سركرام مدىيذمنوره مين موجود مذتحظ وه جب پہنچے توانہوں سنے آپ كى قبرا طهر ر جنازه پارهام دالزا عام قبرول کی زیارت احا دیث صحیحه کی روشنی میں مشروع سبے اور آپ کی قبرِاطهرکی زیارت نفس اوراجماع کی روشنی میں غیر*مشر ورع سے* نیزحشامم آیج قجر المهركى زيارت مكن نهيس؛ للذا ان كاقياس درست نهيس ب -

قیاس فاسدی چیمامت له

مثال اقدل بمشركین سلمانوں پراعترامن كرتے مقے كوس جانوركوم قت ل كرديتے ہو، اسے ملال مجدكر كھاليتے ہواور جس جانوركو الله باك مارد نتاہے اس كو مرام مجستے ہو ان كامقصد بير تفاكه ذہبے پر قياس كرتے ہوئے ميت كوكھى ملال مجماحات۔

ان الشیاطین لیوحون الی اولیاهم الد باک نے ذیل کی آیت نازل فرمائی:

وان الشیاطین لیوحون الی اولیاهم ادر شیطان دلوگ الین رفیقوں کے لیجاد لوکم وان اطعتموهم الکم لسشرکو و دلوں میں یہ بات ڈالتے ہیں کرتم سے جمکوا دیا الانعام ۱۲۲)

دالانعام ۱۲۲)

مثالی ثانی ، جب الله باک نے اعلان فرمادیا کہ بتوں کی عباد ت کرنے الے اوران کے معبود مہم کا ایندھن ہیں، توابن الزبعری رجوابھی کک دائرہ اسلام میں داخل نہیں ہواتھا) اوراس کے ساتھیوں نے قیاس کرتے ہوئے کہا کہ عیسیٰ علیالسلام کی بھی عبا دت ہوتے کہا کہ عیسیٰ علیالسلام کی بھی عبا دت ہوتے سے قودہ بھی جہتم میں جائے گا۔ الله پاک سے ان کا جواب دیتے ہوئے فرمایا:

نیزان کے قیاس کوفا سد قرار دیتے ہوئے فرمایا : ان المدین سبقت بھم مناالحسن جن لوگوں کے لیتے ہماری طرف سے پہلے اگد للنگ عنما مبعد وں لایسمعون مجلاقی مقرر ہوکی ہے ، وہ اس سے دُور کھے حسيسها وهم فى ما اشتعت انغسهم خُلدون ـ والانبياء) ١٠٢

مائیں گے دیہاں کے کہ داس کی اواز بھی تونہیں سنیں گے، در جر مجھان کاجی جا۔

گا،اس میں دلعنی برطرح کے عیش اورللف میں ہمیشہ رہی گے۔

تفسيلاً بيان فرماد ياكر وشخص محى الله ياك كا فرما نبردارسيم منواه وه نبى ناهمي مهو اس کوجہتم کے مذاب سے محفوظ رکھا مباستے اس کئے کہ انسس نے ان سے مثرک سے برات كااظهاركيا؛ البقه بيقرول كولبطوراً يندهن جهتم مين داخل كياجات كالبعض إعمم كبته بي كمان سعمرا وومي بيقربين جن كيمتعلّق فرمايا وقود حا الناس والحجادة . یز فرایا: وا ما القا سطون اور جرگذگار بوست وه دوزخ کا

فكانوا لجمعتم حطبًا والجن ١٥ ايندهن سنة -

خلفا مراشدین، صحاب کرام مدینمنوره کے علما وحقوق الندا در حقوق الرسول ملی الٹرطلیہ وسلم کو خوب مجھتے تھے۔ دہ سنت کے دلد دہ تھے ،اس کے باوٹرانہو^ں نے قراطم کی زیارت کو ترک سے رکھا، جبح عام قروں کی زیارت کو ترک نہیں گیا۔ اس مين كيح شبنهي كدان كى محبت الترك رسول مل التدعليه وسلم كم ساته كهين زیاد ہتی لبس انہوں نے سنت رسول کے تحفظ کے ساتھ ساتھ ٹرک کے پوشیڈ راستوں سے گریز کیا - توحیہ معداوندی کی اشا عت فرمانی - الٹرکے حقوق ا مرینج ممالٹلہ علیہ وسلم کے حقوق کے احترام میں کچے کوتا ہی نری محیمین میں معا ذہن جبل سے مرفوعًا

روایت سے :

قال النبى صلى الله عليه ويسلم ويد خل فى العبادة جميع خصائص

الوب فلاينتقى غيرة ولايخا ف غيريه ولا يتوكل ملى غيريه ولائدعى

بنى مىلى التُدعليد وسلم نے فرما يا التُدكى عبادت میں اس کی تمام خصوصیات بھی شامل ہیں بیس نرتواس کے غیر سے خوف ركقا مائة اورمذاس كيحفر برتوكل كيا

مائے اور مذہی اس کے غیرسے و ماک مباستے ، دنما زیڑھی مباستے نہ روزہ کھا ماستے منصدقہ کیا جائے اور نربیت اللہ کے علا وہ کسی دوسرے گھر کا جج کیا ماہتے۔

ا ور مِرْخُص خدااوراس کے رسول کی

فرما نبرداری کرے گاا وراس سے ڈیے

گا تواليسے بى لوگ مرا دكو كېنچينے والے بىل .

غيره ولايصلي لغيره ولايصامر ىغىرە ولايىتصدّق الا لەولايىچ الا الى بىيىتە ـ

ارشا دِخدا دندی سے ،

ومن يطع الله ودسولة ويخش الله وينتقد فا و لمئن هم الفائزون.

دالنوّر، ۵۲

ا طاعت توالنّٰدا دراس کے رسول دولوں کی صروری ہے، لیکن خشیت اور تقویٰ مرف الثرياك كى ذات كے سائق فاص سعے - نيز فرمايا ،

ا دراگرده اس رِنوشْ رسِتے بوخدا اور دلوانهم رضوا ماأنا هم الله اس کےرسول نے ان کو دیا مقااور کہتے ودسولمه وقا لوحسبناالله سيؤتينا كتمبين ضراكاني سبعاور نداابيني ففنل س اللَّهُ مَن فَصْلَهُ وَرَسُولُهُ الْمَالَىٰ اللَّهُ ا وراس کے پینمبردا پی مہر بانی سے ہمیں

راعِبُون - رالتوَّبة) ۵۹

مچردے دیں گے اور ہمیں توخدا ہی کی ٹوامش ہے دقوان سے حق میں ہمبر ہوتا ، اس آمیت میں احکام عطا فرمانے والے الله باک اور رسول الدّ صلى الله عليہ ولم

میں ؛ چنا بخیرارشا در آبی سے ،

ومأأتاكم الوسول فغذوه وما مَهَاكُم عنه و فا مُتهموا واتْمَوَّالِلَّهُ ان الله شديد العقاب-

والحشى >

سوجو بيزتم كوپيغمبروين وه ليےلوا ورمب سےمنع کریں داس سے، بازرہوا ورخدا سے ڈرتے رمہ، بے ٹٹک فداسخت مذاب دینے والاہے۔

ایک دوسری آیت میں فرمایا کدمرٹ الٹر پاک پر تو کل کرد اورمرٹ اس کی طرف رخبت محرو-

فاذا فرغت فا نفس والى دبك توجب فارغ مواكرد تو دعبادت ميم، فادغ و دغت كاكروا ورا پين پرود دكار كی لمون فادغب و دكار كی لمون فادغب و دكار كی لمون مثومة مهوما یا كرود

نیزفرمایا؛ لا بختنده ا معبود و بی ایک ب تو توجی سے دُر سے بہ و دنباوً الله واحد معبود و بی ایک ب تو تجی سے دُر سے بہ و فات مانی السلم اللہ من اللہ من و له اللہ النہ اللہ تعتقوں - دالنمل) ۱۵ - ۱۵ کیول ور تے ہو۔

اللّٰه تعتقوں - دالنمل) ۱۵ - ۱۵ کیول ور تے ہو۔

کیول ور تے ہو۔

نیزفرهایی: ولانتخشواالت س تم لوگوں سے مست ڈرنا اور تھی سے واخشونی - دالمائدہ ، ۴۲ گرتے رہنیا۔

نیز فرما یا ، قل ا دعواال این ذعستم من در منه خلا بسملکون کشف الفتر رمعبود مونے کا ، گمان سبے بلاو کیمود کم سر ماد من از ازار ماد سے تکلیف کے دُورکر سنے بالس کے میل

عنکمر دلائتحدیلا دہنی اسوائیل، ۵۱ سے تکلیف کے دُورکرنے یااس کے مبل دینے کارکھیمی اختیار نہیں رکھتے۔ سر رہے ہوتات سے سر مہم

وسيط المجتمدي المتاربين رسط المتحري المتياربين رسط المتحري المتياربين رسط المتحري المتياربين رسط المتحري المت

ان کی سرکت ہے۔ اگریتے محقواس سے سپلے کی کوئی کتاب میرے پاس لاؤیا علم

كبردوكرجن كوتم خدا كمصوا دعبود

خيال كرتي موءان كوبلاؤوه أسمالون

اورزمین میں ذرّہ تجر چیزکے بھی مالک

نہیں ہیں اور نہان میں ان کی مشرکت ہے

ا ورندان میں سے کوئی خدا کا مدد گارہے۔

من علم ۱ن کنند مدد قبی ۔ زاحقاف ۲۲

د انبیار میں ،سے کچھ دمنعول ، جلاآ تا ہو رتواسے بیش کرو۔

نیزفروایا: قل اد عوالسلاین زعمتم من دون الله لا يملكون مشقا ل ذرة فی الستموات ولانی الارض وما

لهم فيهما من شرك ومالة منهم

من ظهنيد- رسبا، ۲۲

اسم مفنون کی کرت آیات قرآن پاک میں موجود ہیں۔ مدیث پاک بی ہے۔ کہ آنخفرت صلی اللہ علیہ وسلم سے عبداللہ بن عباس سے فرما با :-

ا اذاساً لت فاساً ل الله و ا ذا

استعنت فاستعن بالله -

بگسسسے فرما ہا۔ جب بھی تجھے سوال کرنا ہو توالٹد مصرف مالر

یاک سے سوال کرد اور جب بھی تھے مدر

مانگنا ہوتو الندسے مدد کا سوال کرو۔ سمیحین میں مردی سے کہ رسول اکرم صلی الند علیہ وستم سے سوال سوا کہ وہ کن

ا دمان کے مالک ہوں گے ہومنت ہیں بلا صاب داخل ہوسکیں گے۔ اس پرآپ نے فرمایا جرکسی انسان سے دُم دوخرہ کا بھی سوال نہیں کرتے اور اسپنے پروردگار

مسروی بر می اسان سے دم سویرہ میں دوں ہیں مرت اور ہے ہیں ہوگا ہے۔ پر ممل طور پرا متماد کرتے ہیں الیکن بملات اس کے آپ کی قبرا طبرسے دُعاکی درخواست ک^ا

قبرگومیله بهناناه مُت خامهٔ کی طرح اپنی تمنّا دَل اور دُماوّل کی قبولیتَت کا مرکز سمجمنا مده انگناهٔ پناه مالگذا سعده کرناه طواف کرنا اور ج کمنا پیسب ا فعال مشرکانه میں - ان سب امور پناه مالگذا سعده کرناه طواف کرنا اور ج کمنا پیسب ا دخیال مشرکانه میں - ان سب امور

کا تعلق خدادند کریم سے بعد ان میں کسی معلوق کو شرکی بن نا قور فی الوم تیت کے منا فی بعد اگر خور کیا ما ستے تومعلوم ہوگا کہ ان مشر کا ندکا موں سے بازر کھنے کے لئے آپ

کو حجره مها رکه بیں دفن کیا گیا تاکہ لوگ آپ کی قبراطہر کامشامدہ مرکمسکیں اور نہا ہونا اور زیارت کولنے کے لیے کسی لیے تابی کا اظہار کرسکیں بٹوق ومذب اورمستی کی تمام کیفیا کے لئے اللہ یاک کی وحد این کور قرار رکھتے ہوئے اس کے آسانے خصائف سے ہیں جس کاکوئی سرنیب اور تانی نہیں بیباں تک کرتمام خصوصیات اور احرامات کے با دجود حضرت محمصلی التُرعلیه وسلم کومجی التُد پاک کا شرکیب کھیرانا اخلاص و توحید کے منا فی ہے' اِسی طرح ابل بقیع کی قبردل اور مام ایما ندارول کی قبروں کی زیارت اگرمیہ مائز سیخ لیکن ان سے استمدا یاطلب حوالج کرنا اوہاں اعتبات نبیطنا مشرکا ہزرسوم سے ہے اور جب اس شم کے مشر کا مرکا م کسی قبر رہر انجام یا ئیں · تو ان کو ان مشر کا ندکا موں سے روکن صروری سبے اوراگرفتندکی مرکوبی اورٹرکیہ اُڈوں کے مٹانے کے لئے اس کے سواكوئى جاره كارند بوكر قبركوفتم كرويا حاست ، مثاً ديا ماست قواس كومنا ناتجى شرعًا ما تزسید، میساکه محابر کرام نے حضرت عمر دمنی الله صند کے صنح سے وا نیال پینمبر کی قبر كى بېيان كوختم كروياتها -

قبراطهر صلى لته عليه ولم كى زيارت كى عُدم مشروعيت وجوبات

عام قروں کی زیارت سے مقصودان کے لئتے وکا اور استعفار کرنا ہوتا ہے،
لین اگر مسلما نوں کو قراطم کی زیارت اور آپ کے لئتے وکا گرنے کی اعبازت بخش
دی مہاتی توعام نائرین مقیدت اور تعظیم کے بہش نظر آپ کو افضل الرسل عظیم الرت کا اور شفیع المذنبین سمجھتے ہوئے آپ سے ہی ماجیس ما نگنا نثر و ع کر دیتے ؛ حالانا کمام طرور توں کا سوال اللہ باک سے کرنا چاہیے اور آپ کی ذات پر صلوہ وسلام کا بدیر سمجھینے اور وکا کرنے کی بجائے خود مجلی دور توں کو بھی دعوت وینے لگ مباتے کہ آپ محصینے اور وکا کروانا سے میساکر عام طور پر

وگ الد پاک کی عظیم مجی اپنی ضرور توں کے پیش نظر کرتے ہیں اور جب مرور تی لوری سروم اتی ہیں، و تعظیم و نتویم کا وہ بہلا دا حیہ موجو دنہیں رہتا ؛ البقہ جو لوگ ایمان کی دُونت سے مالامال ہیں ، وہ سرحال میں اللہ پاک کی تعظیم میں کوئی و قیقہ فروگذاشت نہیں کرتے۔ . ارشا دِخدا وندی ہے :

اورجب السان كوتكليف مبخيتى شيئ واذا سس الانسان ا لضو دعانا توليثاا ورببيشاا وركفرا دمرحال مين بهبين لجنبه آوقاعدًااوقا ثُمَّا فلسَّاكشفنا پارتاہے، مچرجب ہم اس کلیف کواس عنة ضمع مركاك لم بيد عنا الحاضر سے دور کردیتے ہیں تودیے لحاظ موماتا مسه كـذالك ذين للمسرفين ماكانوا اور ، اس طرح گذرجا باسبے که گو یاکست خلیف بعملون د بونس) ۱۲ پہنچنے رپہیں کہی پکارا ہی مذتھا، اسی طرح صدیسے نکل مبانے والول کوان کے اعمال ، اراسة كركے دكھائے گئے ہيں ·

نیزفرهایا وادا مسکما لىضىز في البحرضل من تدعون الدامًا لا فلمّا يجاكم الى المبوا عوضتم وكان الانشا ن كفورًا - دبنى اسرائيل، ٢٠ بجا كرخشى كى طرف لے ما ماہے، توتم مُنه بھيرليتے ہوا ور انسان سے ہى ناسشكرا -

نيزفرايا؛ واذا حس ا لا نسان ضردعادبه منيبًا الميه شتراذ ا خوله لغمة منه نسى ماكان يدعو اليه من قبل وجعل الله اندادًا ليبضلعن سبيلة قل تمتع بكفرك

أورجب تم كودُر يا مين تكليف مبني يس رليني ودسين كاخوف بوتاكي توجن كوتم بيكارا کرتے ہواسب اس درور دگار کے سوا کم سوماتے بیں، مجرجب وہتم کوڈ و بنے سے)

ا ورحبب النسان كوت كليف بهجني سبخ تو اپنے پرور د گار کو بچارتا دا در، اس کی فر دل *سے رحوع کر* تاہ*ے، پیرجب* وہ اس *کو* ابينطرف سے كوئى نغمت دیتا سے توجس كام تم لن يبله اس كوبكارتاب، لي قلیلڈ انٹ من اصلب المنار ۔ میمکول مبا آہے اور نمدا کا نثر کیے بنانے دالمذمدے ۸ دلستے سے

گراه کههه دو که دله کافرنعمت) این ناشنحری سه مقور اسا فائنره اشهاله بهر تو د وزخیول میں مہو گا۔

اس مضمون کی آیات کثرت کے ساتھ وار دہیں بیس معلوم ہواکہ اکٹرلوگ (الآ ما شاء النَّد) النَّدياك كنَّعظيم وتكريم إبنى صرورتون ا ورا عراض كي بيشٍ نظركرت بي اورجب مغرورتیں لوری مومالی ہیں وحقوق النّد کا کھ احترام منہیں کرتے اور نہ بُعظیم بجالاتے ہیںاور زہی الماعت و وفاشعاری کا مظاہرہ کرتے ہیں نہی عبا دت میں معروف نظارت بن ، توجب بندول کا اینے مندا کے ساتھ یہ روبہہ توبندوں کا ایک بنده کی تعظیم کے بارے میں کیار ورّ ہوگا۔ یقینا ابنیار اولیار کی اس مدن کستظیم ٔ بو تی رہے گی جب تک مزورتیں بوری نہیں ہوتیں ا ورجب مزورتیں پوری ہوما میں گُ ، توان کی تعظیم موکدا غرامن رمینی تقی فتم موکرره حائے گی بیس اگرر دھنہ رسول کی زبارت ك ا مبازت دى ما تى ، تولوگ ألىخىغرت مىلى التّرعلى وسلم كے احرام كے بيش نظر نبير، بلكراسينے مغاصد كي تحيل كے لئتے زبارت كرتے، دما يك ما ننتئے ، ما لا نكرا تحصرت صل النہ علىبوللم كے احترامات سے ميكرة ب برصلاة وسلام بميجا مائے مذيركرة بكومانوں کی برآری کا ملجانمجعا مباستے ،مبیسا کرھیسا یُوں سنے مسیح ملیہ انسالام کی شان میں غلوکیتے بهوت اس كو ندان اختيارات تفويف كرويية ، رسالت كے تعاضوں كامطلب يرتما كراس كے بيان كروه احكام يرعمل بيرا بوتے ذيكران سےكنا روكشى كرتے بوت عديى عليه السلام كوخد المجتنة اوراس سنه حوائج لملب كرتے . پس اگركوتی تخص بيمجه تا " كرروضة اطبركے قریب حاكرصلوٰة وسلام بھیجنا ا در آپ کے لئے دُعاكرنا و وسرمے تعالم کی برنسبت افضل سبے، تومطلب برہ اکرروضة المبرکے پاس کوٹرے ہوکرہوا حرام اور

خصنوع موج دموتا سے۔ دورمونے کے صورت پیں وہ جذر بمغقود سوجا آسے اور مسلوۃ و سلام کے جیسے کی و مخلصا نہ کیفیت باتی نہیں رہتی۔ ظاہر ہے کہ افغنل مقامات بی شائی کی جو کیفیت رونما ہوتی ہے۔ خیر افغنل مقامات میں اس کا عشر حشیر بھی موج دنہیں رہتا ؛ مالا دی رسول الشمسل الشرعلیہ وسلم کے صفوق و احترامات کا ہر مگر میں ساویا دنیال رکھنا فروری ہے۔ اگر کوئی شخص قراط ہے دور ہو سنے کی صورت میں آپ کی محبت و عقیدت میں کی محبوس کا ہے، تو ایسے ہی لوگوں کے لئے آپ نے فرماویا تھا ؛ معنی میں کی محبوس کا است میں کی محبوب کی اس موادیا ہو اس موری ترکومیل دنہ بانا اور جہاں بھی علی حیث کندھ مدفان صلوا تکم تبلغنی ۔ تم ہو، وہیں سے مجموب در ود جمیر و تم اور اور و

ابنداتمام سلمانوں کے لئے مشروع قراردے دیاگیا کہ وہ جہاں کہیں ہوئ آپ پر مسلمانوں کے لئے مشروع قراردے دیاگیا کہ وہ جہاں کہیں ہوں اور افران کے بعد آپ کے لئے وسید کا سوال کرتے ہیں اور ہر نمازیں آپ برصلوۃ وسلام ہجی ہیں، بلکہ جب بھی مسجد ہیں داخل ہوں یا مسجدے با برکلیں تراپ کے حقوق اور احترامات کے تقاضوں کو طحوظ رکھتے ہوئے آپ پرصلوۃ وسلام بھیجامات کے لئے صرف رومنہ اطہر کو خاص کر دیا جاتا ؛ مالا کہ ایسانہیں کیا گیا ، بلکہ جس طرح مقوق اللہ کا تقاضا ہے سے کہ اس کے ساتھ تعتق مجت اور اطاعت کے جذبہ کو بدار کھا جائے اس طرح صقوق کر دسالم کے ساتھ تعتق مجت اور اطاعت کے جذبہ کو بدار در کھا جائے اس طرح صقوق کر دسالم کے ساتھ تعتق مجت اور اطاعت کے جذبہ کو بدار کھا جائے ماص کیا جائے مان سے کہ آپ کی قبراطہر کو صلاۃ وسلام کے سکے خاص کیا جائے۔ کیا جائے باکہ آپ کی مجت اطاعت اور تعتق کا نقا منا ہے کہ تمام مقامات میں کیساں طور پر آپ کی تعظیم بجالا سنے کہ آواب کا خیال رکھا ماسے ۔

الجل مبر عدت کا طرز عمل الیا کہ خیال رکھا ماسے ۔

الجل مبر عدت کا طرز عمل الیا کہ خیال میں ماسے کہ تو اللہ کا جو سالم کا طرز عمل الیا کے ۔

ابل برعت خیمشروع ا ورمنهی عندا فعال کے ارتکاب میں غلفراستد اختیار

کریں ہے ہیں بھا ہرام تابین عظام کی خالفت کرنے سے ترم محسوس نہیں کرتے ہی ہے کرام سے جن کا مول کو کمروہ قرار دیا یا جن کا مول سے منع فرمایا ، یہ لوگ ان کا مول کو مستحب سمجھتے ہیں ۔ در حقیقت بہلوگ عیسا بیوں کے مشاہ ہیں اور جس انہاک کے ساتھ بدعات کے فروغ میں دلچہ ہی سے رہے ہیں ۔ اسی نسبت کے ساتھ سنت رسول سے موکروانی کے بارط اواکر نے میں مسابقت کر رہے ہیں ۔ حالانکر کسی سنت کے احیا کہیں ان تمام لوگوں کا اجرو قواب اس انسان کے نامۂ اعمال میں تبت کر دیا مباسے گائی حس نے سنت کا احیا رکیا۔ ارشا دنبوی ہے ؛

من دعا الی هدی کان له سن جونخف سنت کی طرف دموت دیت الاجر منثل اجود من ابتعد من فیر سیم، اس کوتمام اتباع کرنے ولیا الا الاجر منثل اجود هم نشیئ ۔ کے تواب سے نواز امبائے گا ۔ اگر میان کے نامۃ اعمال سے بھی تواب کی کمی نہیں ہوگی ۔ نامۃ اعمال سے بھی تواب کی کمی نہیں ہوگی ۔

جوشخص اچقاطرلبقه مباری کردیتا ہے، اس کو مذصرف اسپنے ممل کا تواب ملے گا' بلکہ قیامت تک جولوگ اس کے مطابق ممل

ارتنا ونبوی سیے ، من سن سنة حسنة کان له اجرها وا جومن عمل بمها الی یوم القیلم ت

كريں گئے ، سب كانواب اس كے نامة اعمال ميں دُرج موكا۔

اور وه کام جن کوشارع علیه السلام نے مشروع نہیں فرمایا ، ان کواز نو دُشرُع قرار وینا برعت کو گھو گئے۔ قرار وینا برعت و اگر صاحب بدعت مقرار وینا برعت و اگر صاحب بدعت کسی وجہ سے معذور ہے تواس کو کھراہ کہیں گے اور اس کے قمل کا کچھ تواب نہیں ہوگا اور اس کے قمل کا کچھ تواب نہیں ہوگا اور اس کے قمل کا کچھ تو دہ انسان عذاب اگر شارع کی طرف سے اس کے فیرشروع ہونے پر دلائل موجود بیں ، تو دہ انسان عذاب خدا دندی کا مستحق کھ کھرے گا۔ ارشاد نبوی ہے ،

لا تطود نی کیدا اطوت المنصادی میری مدح وثناریس مبالغه آراتی ند

عیسی ابن مو یم انشا انا عبد فقولوا کرنا جس طرح عیسایول نے عیسی بن میم میم عید الله و دسوله و دسوله و استان می فات بین فلوکیا و بین الله کابنده بول و استان می فات بین فلوکیا و بین الله کابنده بول و استان می فات بین فلوکیا و بین الله کابنده بول و استان می فات بین الله کابنده بین کابنده بین الله کابنده بین کابند بیان کابنده بین کابنده بین کابنده بین کابنده بین کابنده بین ک

. اس لنتے مجھے النّٰد کا بندہ اوراس کا رسول سمجنا۔

ایک مسوال، وہ لوگ ہوآ کخضرت صلی الٹرطِلیہ وسلم کے روضتہ اطبر کی زبارت کوعام قروں کی زیارت سے مسا دی گردانتے ہیں ادر ہتے ہیں درہتے ہیں درجہ احترام کے بیش نظر لوگوں کو تجرؤ کے اغدر واخل موسف سے روک دیا گیا البیجرہ کے بامربصورتِ تخاطب آپ پرصلوٰۃ وسلام بھیجا جائے۔

جواب ، آنخفرت صلی الترعلیہ وسلم کی قبراطم کی زیارت کرنے والاانسان اگر آپ کے لئے طلب دعاکرنا چا ہتا ہے ، نؤاس کے لئے زیادہ مناسب بہی ہے کہ وہ جرہ شریعہ کے فئے طلب دعاکرنا چا ہتا ہے ، نؤاس کے لئے زیادہ مناسب بہی ہے کہ وہ جرہ شریعہ کے فئریب بہنچنے کی کوشش کرسے اورا گرزائر کامقعود وہی ہے ہوا بالٹر کی اورا بل صفالالت کامقعو وہ ہوتا ہے کہ آپ کا زیادہ سے زیادہ قرب ماصل کیا جائے اور آپ سے ہوائج کی دعائی جائے توانس اورا جماع کی روشنی میں بیغنل مشرکانہ ہے اوراس تی مقدود شرک و مرحت کے مفسدہ کور وار کھنا ہے یا و بال بہنج کرنوصہ وماتم کا العقاوم کرنا ہے ، تواس کو بھی نا جائز قرار دیا جائے گا اورالیسی زیارت پر بابندی عائد کردی مائے گا۔

قبراطہر کی زیارت کی مشروعیت کیونکرمکن ہے!

قراطہ کی زیارت کی مشر وعیت کے لئے ضروری مقاکہ قبر اطہ کو کھلے میدان میں بنایا مانا ، لیکن جب آپ کی قبراطہ کو عائشہ صدیقہ کے حجرہ میں بنایا گیا ہے قوزیار کے لئے صروری مقاکہ حجرہ کے ایک طرف ذائرین کے داخل موسے کے لئے در وازہ

موتا اورقر المركے نزديك زائرين كے مطبرنے كے لينة مناسب مكد كا نتفام موتاكدولال ذار بن میشرسکت اور اگر در داره بھی نہیں تو کم از کم دیواریں ایک کوئی کا انتظام کیا جاتا تاکه زار بن گزرتے موستے کمٹری سے قبراطم ریفظر ڈال سکتے اور دُعاکرسکتے ، لیکن آپ مانتے ہیں کم تبراطبری زیارت سے سلتے کوئی سہولت موجو دنہیں اورکوئی ایسا راستہ نہیں ہے كجس كے ذريعے قباطبر كى بينيا ماسكے، منى دہ مجروص ميں آپ مدفون بي كوتى ومیع رقبه کا حامل سیے اور مرسی تجرہ کی کسی دیوار پر کوئی کھر کی موجود ہے۔ زیادہ سے زیاوه اگرکه ن شخص قبراطهرکے قریب بنج سکتا ہے تو وہ سجد نبوی میں پنج مباتے اس ک ایک مبانب پرمجرو مانشه میں آپ کی قبرا طهرموجود ہے ۔ اب بوشخص بھی قبرا طهرکی زیارت کرنا ما بہتا ہے۔ اس کے لیتے اس کے سواکو نی میارہ کاربی نہیں کہ وہ سی نبوی میں آئے اگرآپ کی قبراطہمسی سے انگ کسی دوسرے مقام بربنا تی مواس میں بهست زياده قباحتول كالندليشه تعارا كيشخس زبان سي منزار باركي كرمين قراطهر ک زیارت کے ملتے سفر *کررہا* ہوں ، تواس شخص کا کہنا مشاہرہ کے بالکل فلاف ہے ، اس کنے کہ قبراطہر دمجرہ شریعیر میں موسنے کی ومرسے ، کی زیارت ممکن نہیں ۔اسی قا مدہ کی بنیاد پرسلف مالیین نے اس کا م کے کہنے سے امتناب کی ، کبونکہ قر اَ اُم ہرکی زیا^ت ممکن نہیں اور شایدیہی ومبہے کہ مجرؤ عائشہ پرنہ قند لمیں روشن کی مباتی ہیں ا در نہی ملا چرامعایا جاتا ہے ،جبکرمسحد بوی کی زینت اور آرائش کے لئے اس میں رنگ بزنگ فقعے ا ورفا نوس لٹک زہے ہیں ،اسی طرح آپ کی قبراطہر کوکسی نومشبو کے ساتھ معطر کرنا بھی ممكن نہیں اور مذہی وہ لوگ ہو عام اولیا رالٹر کی قبروں کے التے مختلف قتم کی چیزوں کی نذرماننے ہیں اورعملاً ان قبروں پر پہنے کر نذریں بوری کرتے ہیں۔ آپ کی فبرا طبر پر کسی نذر کے بوراکرنے کی گنجائش نہیں۔ اگرم بعبن لوگ جرو پشرافیے کی دیوار کے برون معتد كونوست بولكاتے ہيں يا رنگين خلاف چڑھاتے ہيں ، ليكن أب كى قبراطهر

ان کے اس فعل سے محفوظ ہے مسید کی دیوار کوٹوشبو لگانا یا اس پرغلاف بھڑھانا
الگ جینٹیت کا ما مل ہے ۔ مجروشر لیفنہ کے اندرون قبراطبر کے پاس مباناممکن ہی
نہیں رہا ۔ یون معلوم ہوتا ہے کہ الٹر پاک نے ٹی اکرم معلی الٹرملیہ وسلم کی دھاکوشر
قبولیّت بخشا ہے کہ اے الٹرمیری تربت کوئبت فا مذہ بناناکہ اس کی پوجاشر وع ہوجا۔
اگر میر اکثریّت ال جابل السالؤں کی ہے جوآپ کی قبراطبرکوئیت فا دبنانے ک
فکریں ہیں اورآپ کی تعظیم وعقیدت میں اس قدر فلوکی مدیک بہنی میک بنانی ان
کے فاسدا نہ خیالات کی تکمیل مکن نہیں اور آپ کی قبراطبر کے علاوہ کسی ولی الٹرکی فبر
کوئبت فار بنانے سے اس و لی الٹرم کچھ گناہ نہیں، میسا کم سے علیہ السلام پر کچھ گناہ
نہیں، مالانکہ لوگوں نے ان کو الٹرکا شریب شمہرایا ۔ ارشاد فدا وندی ہے ،

اور داس وقت کوهمی یا درکھو ، جب فرافر مائے گاکہ اے میسئی بن مریم اکیاتم نے لوگوں سے کہا مقا کہ فدا کے سوا مجے اور میری والدہ کو معبود مقریر رو ؟ دہ کہیں گرو یا کہ سے مجھے کب شایاں مقاکہ یں ایسی بات کہا جس کا مجھے کچھ جی نہیں ۔ اگر در جی رہے اور جی رہے ہوگا اسے میانا ہے اور جی رہے میں ہے کھے اور جی رہے میں ہے کھے اور جی میں ہے کہے کے اور جی رہے کے میں کہا بجر اس کے جس کا تو نے مجھے میں کہا بجر اس کے جس کا تو نے مجھے میں کہا جر اس کے جس کا تو نے مجھے میں کہا جر اس کے جس کا تو نے مجھے میں کہا بجر اس کے جس کا تو نے مجھے میں کہا جر اس کے جس کا تو نے مجھے میں کہا بجر اس کے جس کا تو نے مجھے میں کہا بجر اس کے جس کا تو نے مجھے میں کہا بجر اس کے جس کا تو نے مجھے میں کہا بجر اس کے جس کا تو نے مجھے میں کہا بجر اس کے جس کا تو نے مجھے میں کہا بجر اس کے جس کا تو نے مجھے میں کہا بجر اس کے جس کا تو نے مجھے میں کہا بجر اس کے جس کا تو نے مجھے میں کہا بجر اس کے جس کا تو نے مجھے میں کہا بجر اس کے جس کا تو نے میں کہا بھر اس کے جس کا تو نے مجھے میں کہا بھر اس کے جس کا تو نے مجھے میں کہا بھر اس کے جس کا تو نے مجھے میں کہا ہے در جس کے جس کا تو نے مجھے میں کہا ہے در جس کے جس کا تو نے مجھے میں کہا ہے در جس کے در اس کے جس کے در کے

واذقال الله یا عیسی ابن مریم مانت قلت للناس ا تخذو نی و مامی المهین من دون الله شال سیمانك مایکون لی ان افزل ما لیس لی بحق ان کنت قلت فقلمه المن نفسی ولا اعلم مانی نفست تعلم الغیوب ما قلت نهم الآما امرینی مبارع مبدوالله دبی وربکم وکنت علیهم شهید ا ما دمت فیهم فلم افزیت علیهم شهید ا ما الرقیب علیهم وانت علی کل شیئی الرقیب علیهم وانت علی کل شیئی شهسید-د الماشده و ۱۱۲ - ۱۱۱

سبع، وه برکدتم خداکی عبادت کرو، جومیراا ورتبهاراسب کا پرور د گارسیدا ور بوب تک میں ان میں رہاٰن دکے مالات، کی خبرر کھتا رہا ، جب تو نے مجھے دُنیا سے اس الیا توتوان كالنشران تها اور توسر چيزست خبردارب -

لقدكفوالـذين قالواان الله هو

المسيح ابن مويم وقال المسيح يا مبی اسداشک اعبد والله ربی ودیکم ان من يشرك بالله فقدحوم الله

عليه الجسنة وماؤه النا روسا

للظالمين من انصار دما تُده ٢٢٥

ارشا وخدا وندی ہے:

ويومة يحشرهم ومايعبد وديمن

دون الله فيبقول ءَانتم اضللتمعباد هؤلاء ام هم صلوا لسبيل

قالواسبعنك ماكان ينبغي لنا أن

·**نتخ**ذ من دونك من اولياء وككن

متعتمم والباءهمعتى نسواالــذكر

ويا خوانتُوبًا بورًا ﴿ اَلْعَرْقَانَ ۗ الْعُرْقَانَ ۗ الْعُرْقَانَ ۗ الْعُرْقَانَ ۗ الْعُرْقَانَ ۗ الْعُرْقَانَ الْعُلَاقَانَ الْعُلَاقَانَ الْعُلَاقَانَ الْعُلْمُ الْعِلْمُ الْعِلْمُ لِلْعُلْمُ الْعِلْمُ لِلْعُلْمُ الْعِلْمُ لِلْعُلْمُ لِلْعُلْمُ الْعِلْمُ لِلْعُلْمُ الْعِلْمُ الْعِلْمُ لِلْعُلْمُ الْعِلْمُ لِلْعُلْمُ الْعِلْمُ لِلْعُلْمُ الْعِلْمُ لِلْعُلْمُ الْعِلْمُ لِلْعِلْمُ لِلْعُلْمُ لِلْعُلْمُ لِلْعُلْمُ لِلْعِلْمُ لِلْعِلْمُ لِلْعِلْمُ لِلْعِلْمُ لِلْعِلْمُ لِلْعُلْمُ لِلْعُلْمُ لِلْعِلْمُ لِلْعِلْمُ لِلْعِلْمُ لِلْعُلِمُ لِلْعُلْمُ الْعِلْمُ لِلْعُلْمُ لِلْعِلْمُ لِلْعِلْمُ لِلْعِلْمُ لِلْعُلْمُ لِلْعُلْمُ لِلْعِلْمُ لِلْعِلْمُ لِلْعِلْمُ لِلْعِلْمُ لِلْعُلْمُ لِلْعِلْمُ لِلْعِلْمُ لِلْعِلْمُ لِلْعِلْمُ لْعِلْمُ لِلْعِلْمُ لِلْعِلْمُ لِلْعِلِمِلْعِلِمِ لِلْعِلْمِلْعِلْعِلِمِ لِلْعِلْمِ لِلْعِلْمِ لِلْعِلْمِ لِلْعِلْمُ لِلْعِلْمُ لْ

کوبہ تنے کو نعمتیں دیں بہال یک کہ وہ نیری یاد کو بھٹول گئے اور بر ملاک ہونے والے

ارمث ادِ خدا و ندی سے : وہ لوگ بےشہ کا فریں ہو کہتے ہیں

كممريم كم بيليط دعيسي مسيح ندابين حالاتك مسیح یہودسے برکہاکرتے تھے کہلے بی اسرائيل خداسي كى عبا دت كمه و يوميرانجي

برور و گارسیے ا درتمہا رائمھی دا ورجان رکھو

کہ چنخص خدا کے ساتھ مٹرک کرے گا، خدا اس پرمبشت کوحرام کر دیے گا ا دراس کا مشکا نا د وزخ ہے اورظا لموں کاکوتی میگازیں

اُورجس دن دخدا ، ان کو ا در ان کو جہنیں یہ خداکے سوالو ہتے ہیں جمع کرے گا

توفروائے گاکیاتم لئے میرسے ان مبندوں کو گراه کیامتها پایپۈدگراه موسکتے تقے، وہ

کہیں گے تویاک ہے مہیں یہ بات شایان

نرتقى كمترسه سواا درول كود دست بناتح لیکن توسنے ہی ان کو اور ان کے باپ دادا

محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

پس دہ لوگ جن کی عبا دیت 'ورہی سے ، خوا ہ وہ فرششتے ہوں با ابدیا ر وا ولیاؤہ

ا بینے بجار اوں سے برأت كا ظہاركري كے اوران كى موالات سے دست كس و بايس كم الكن بيان كرنام قصود يرسيف كرامت محدريه كوضوس الغامات سعانوازاكياب ورانهين محم دياگيا سے كه ده النّد يك كي توحيدا وراس كى عبادت كى طرف مسلسل وعوت رشاد کا سلسلہ مباری رکھیں۔ اعلاء کلمۃ الندکے سنتے بھر لور مبروجید کا منظام رہ کرتے رہی اور دین حق کی تعلیمات کو عام کرنے کے لئے مکن ذرا کئ اختیار کریں اور آپ ل قبراطبر ومباركاه بنن سے بچائے كے لئے مستعدر بي - اہل كاب كى كرا كا اسل مبب یہی تفاکر انہول نے اپنے پنج بروں کی قبروں کومسیریں بنالیا تھا۔ ان پرلعنت ر ماتے ہوتے آب ابنی امت کو ڈرانا چاہتے ہیں کہیں تم بھی ان کے نقش قرم پر بل كر كرام وربعنت كاستحق نه بن مانا اليقينًا اليسالوك تمام مخلوق سے زياده صحابركرام بدعات سع محفوظ تق

صنی برگرام برعات سے محقوظ تھے ۔ پینکوسی برعات سے محقوظ تھے ۔ پینکوسی برگرام برعات سے مہرہ در مقصا در سی مقیدت کے ساتھ کے مذہ سے مرشار تھے ، اس سئے قرول کے مصرت سی اللّہ علیہ وسلم کی اطاعت کے مذبہ سے مرشار تھے ، اس سئے قرول کے ملسلہ کی جوبرعات عہد صحابہ میں بعدر ونما سونا نشروع ہوئیں ۔ دور صحابہ میں ان کا مع ونشان مجمی موجود نہ تھا ، اگر چی بعض صحابہ بشری تقاصوں سے گنا ہوں کے لڑگا ۔ سے محفوظ مذرہ سکے ؛ تاہم ان میں کوئی السا انسان نہ تھا جور ہول السُّر صلی السُّر علیہ واللہ معنی انہ برخوارج ، روافض اور مرج بیرو غیرہ فرقوں کی ایجاد کردہ برعات سے مجمی انہیں سخت نفرت تھی ، ان کا منتہا ہے مقصود صرف کتا ب السُّر اور سنت رسول السُّر صلی السُّر علیہ وسلم کا نظریہ سول السُّر علیہ وسلم سے احتماع کا نظریہ رسول السُّر علیہ وسلم سے استناد تھا ۔ نیز رسال غیب کے احتماع کا نظریہ

انبيا عليهم القلوة والسلام كاصحابكرام اوراوليام الترسي بحالت ببداري ان س ملاقات کرنا اوبعین کومرفات کی طرف اٹھا کر ہے جانا جیسے فرسودہ نظریات جعوام کی گرای کا بعث تھے اور وہ لوگ ساوہ اوجی سے مجتبے تھے کہ اس میں النہ یاک کے ہاں ان کی عزّت افزا ل ہے، حالانکہ سرائر گراہی کے راستے تھے اورسٹ یا طین مایوس تھے کے صحابر ام کو اس تسم سے گھراہ راستوں پر ڈال مکیں گے ، اس لیئے کہ صمابر کرام وہ سمحت تخير كمريرتمام شيطانون كے كرشے ہيں اور رجال غيب بھی درحقیقت جن بل ج اپنی دمنع تبدیل کے رجال فیب کی مورت میں جلو اگر ہوتے ہیں۔

ارشا دِ خدا وندی ہے ؛

أورير كربعض بني آدم لعف حنّات کی پناہ پکڑاکوتے تھے داس سے ان

وانه کان دجال من الانس پیوژی برجال من الجن فزادوهم رحقيًا-

کی نگرشی اور برگھگی تھی ۔

ا ہل قبور کے مثرک سے صحاب کرام محفوظ خیان اپنی پوری کوشنش کے با وجوڈ نہیں شرکے مبیبی مہلک بیما ری میں مبتلا نہ کرسکا صحابہ کرام کے دُور میں کسی قبر کے بارسے شا بھی

نبین ملنی کرصحا مرکوام می سرکی زیارت سے لیے سفر کسیا ہو یا تحصیل مرکت اور شفا كم التراس كا قصد تحريب ابو ، بلكه افضل الخلق خاتم الرسل حفرت محده بي التعطير ولم

کی قبراطہری زیارت کا قصد سسی ہو، تابعین عظام اورائم کرام تھی محابر رام کے طرلقه کے مطابق قبراطم کوزیارت گاہ بنانے سے گرمزکرتے رہے۔

قبراطهر يمدد عاكرنا

قبراً طهر برکھرے موکرآپ کے لئے دعا کرنے کوبعض علمائنے نام از قرار دیا ہے عداب برسام بیج کیا و دو در محر منوع قرار دیتے ہیں الیکن وفات کے بعدا ب سے دعا

کروانا ا ورآپ سیے خفرت اوٹرخا میٹ کی درخواست کرنا اتمہ ا بعہ کے علاوہ بھی کسی امل ا دریہ لوگ جب اسپنے حق میں ظلم کر جیھے تھے اگر تمبارے باس آنے اور فداسے كخشنش للب كستے تومٰداكومعا ف كرنے والااورمهربان باستعد

سے کس کا جوازمنقول نہیں ہسنون وُ عابیّن میں اسے خالی ہیں اور نہ ہی قاطہرِ يركع لمست ببوكر ولوانيعم ا ذ ظلمواغشهم حاءوك فاستغفراالله واستغفركهم الرسول لوجب والأثم توامإ دحيميار

دانشاع، ۱۲

آبت کی آلاوت کرے۔

مناسک مروزی میں سبے زائر بی سجد نبوی میں دا مل ہوئے کے بعد قبراطبراور منبرکے درمیان لوافل ا داکریں ا درصب خواہش مسنون دعائیں کریں بھیرقبراطبرکے نزويك بينح كرالسّلام عليك باوسول الله ودحدة الله وبوكانة السّلام عليك يا عمل بن عبدالله الشمعد ان لا اله إلا الله و الشعد انك رسول الله ك کلمات پرسی بس ندکی مباستے ، بلکہ ذیل مے کلمات سے آپ کوخراج تعیین پیش کیامائے۔ میں شہا دت ویتا ہوں کہ آپ سے اپنے برُوردگاركي بيغامات كو د الكم وكاست، بہنچا دیا اورابنی امت کے سامھ خیرواس فرائئ رأه فعدامين مخمت اورموعظ مسن كے ساتھ جہا و فرمایا۔النّد کی عبودیّت میں مورسے بہال مک کر محصے اس سے بہت بہتر بدلہ مطافر مائے جرکسی بنی کواس ک امت ک طرف سے ملت اسے واللہ ماک تبرك بلندورمات كومزيد اومخاكرك

اشمعدانك بلغت دسالة دبك ولضمت لامتك وجاهدت فخب سببيل الله بالعكمة والموعظية الحسنة وعبدت الله حتى اتاك الميقين فجزاك الله افضل ماجزئ نبيًا عن امّنترود فع درجتك العليا وُتَعْبِل شَفاعِتِكَ الكبرِئ وَاعطاك سثولث نى الاخرة والاولى كماتعبّل من ابراهيم اللهم احشرنا في زمرته

ا در تجھے شفاعت عظمیٰ کی قبولیّت سکے شرف سے لوازے - دنیا وا خرت میں نیری مرادو کو رُلائے جس طرح حضرت ابراسیم للیسلام

وتوفناعلی سندو وردنا حوضه واسقنا بکاسه شرب لانظماً بعده ابدًا-

کوشرہ قبولیّت سے لؤاز ا-اسے النّہ ہمیں آنخصرت صلی النّہ علیہ وسلم کے زمرہ سے کوشرہ قبولیّت سے اور ا-اسے النّہ ہمیں آنخصرت صلی النّہ علیہ وسلم کے زمرہ سے

اٹھانا اوراس کی سنّت پرنوت فرمانا ، حوض کوٹر پڑآپ کے ہاستوں چھِلگتے ہوئے جاموں سے ہمیں اتنا سبراب فرمانا کہ مچرکھی جم پیاس سے دومیا رند ہوں ۔

کتب مدیث میں ان ثنائر کھمات کا تذکرہ نہیں ملاً۔ پس خیر شروع کھمات کا تذکرہ نہیں ملاً۔ پس خیر شروع کھمات کا آپ کی قبراطہرکے ہاں مذاکرہ کرنامشہور صدیث کے مفہوم کے مخالف ہے کہ ہری قبر کو مبیلے کی چیٹیت نہ دینا پس قبراطہر رکھڑ سے ہوکر آپ سے لئے دُ عاکر نا درست نہیں جیرجا تیکھ وہاں آپ کے عیر کے لئے دُ عاکر نا جائز اور درست سے اور آپ کے حق میں ممائ اللہ علیہ وسلم کے لئے دیگر سرمتام ہر دُ عاکر نا جائز اور درست سے اور آپ کے حق میں دعائر کھم اسے ان ملم سمانوں کی قبروں پر کھڑ سے ہوکران کے لئے وعاما وگئا تا بت ہے ۔ حدیث ہیں ہے کہ آپ جب کی قبروں پر کھڑ سے ہوکران کے لئے وعاما وگئا تا بت ہے ۔ حدیث ہیں ہے کہ آپ جب قبرستان پہنچے تو فرماتے :

بر کلمات قرول پر تو کہے جاسکتے ہیں ، لیکن دیگرمقامات ہیں ان کلمات کے کہنے کاکوئی جواز نہیں ملتا ۔ ڈراصل حقیقت میہ ہے کہ انخصرت صلی الڈولیسلم

کی فبراطبرا ورعام قبروں کے احکا مات میں فرق بایاجا تا ہے اوراگرعام قبرول کی زبار کی مانندا نخفزت صلی الٹرملیہ وسلم کے روضتہ اطہری زیارت کرنے سے صحابہ کرام رو کھتے ہے تواس میں بھی آپ سے فیفیائل می کو ملموظ رکھ اگیاہیں اورامت میسلم کو النعامات سے نوازاگیا ہے۔سلف معالحین متعنق ہیں کہ آپ کی قبراطہر کی زیارت کرنے والاانسان نآب سے تشیم کاسوال کرسکتا ہے اور منہی قیامت کے روز شفا عت کرنے اور اتفظ كاسوال كرسك سهه ؛ البيته اس بات مين اختلا ف سهد كميار ومنة اطهر رسلام كبين ك بعداب کے لئے دُعاکرسکا سے بانبیں بعض علما مرفع اکوسلام میں واضل کرنے ہمئے اس كوما نزفراردسيت مين وبكربعف ديگرعلمااس كوفيمستحب كيت بين اس للت كره اس کوسلام میں داخل نہیں مجھتے۔ نیزاب برسلام تھیجنے کا بوصکم قرآن پاک ہیں دار د سے صلوٰۃ کے ساتھ اس کا ذکرسے اور بیصلوٰۃ وسلام وہ نہیں جس کا آپ کی طرف سے جواب دباجاتها وربهاس سلام سے يقينًا افضا المحس كے جواب دينے كے متعلق *عدیث وار دہیںکہ تو تخص آپ پر*صلوۃ وسلام بھیجنا ہے، میں اس کے سلام کا مجاب بهيجتا ہوں افضليت كى وحبر برسبے كروتنخص أب پرصلوة وسلام كابر برجيجتا سبے اللّٰہ پاک اس پر ہجا با صلوٰۃ وسلام بھیجتے ہیں اور حس سلام کا جواب آپ کی طرف سے دیا ما تا ہے اس کے متعلق وضاحت سیے کہ وہ مسلمان کا من ہے۔

ارشا و فدا وندی سے : مداد اور حب تم کوکوئی دعاوے تو (جوب مرب مرب کا کوکوئی دعاوے تو (جوب مرب کا کوکوئی دعاوے تو (جوب مرب کا میں مناما میں مناما میں مناما میں مناما میں مناما کے مادویا انہیں لفظوں سے وُعا دو۔ الدر و حدا دیا انہیں لفظوں سے وُعا دو۔ اس کے سلام اس کے سلام کے اس کے سلام کے مادویا اس کے سلام

اسی سے اب برب ریرہ سے وائروی ہ فرطن م بہ بہب بھی ہی ہی سے ملما کا جواب دسیتے اور پہود جب آپ پرغلط اندا زسے سلام کا تلفظ کرتے ۔ لام کومندن کرکے اللّ م کالفظ استعمال کرتے جس کامعنی لاکت وبرباوی کا ہے تو آپ ہوا باُس^ن

علیکم کا لفظ کہتے اورا مّعتِمُسلمہ کویمی اسی اندا زسے جماب دیبنے کا حکم فراتے ۔ ینز فرواتے کہ ممارسے حق میں ان کی بددعا ئیں قبول نہیں ہو سکتیں، لیکن ان کے بارے سمارى دعا نين قبول ہوتی ہیں اور جب ہیرد کے جواب میں صفرت عالنتہ نے کہا علیکم السّام واللعنة توآپ نے فرمایا لیے عاتشہ وک مباؤ، بے ٹنک الٹر باک رقم کرنے والاسے وہ تمام معاملات میں نری اور رحم دلی کو پیندکر تا ہے کیا تم نے مبرے جوابيكلمات نبيل سنے ميں نے مرف عليكم كے الفاظ كيري، لبذا ان كے جواب میں یہی کلم کبر دینا کا فی ہے، اس سے تجا وزکرنا مناسب نہیں ہے، لیکن جب معلوم ہو حاستة كرانهون سنة السلام كالفظميم كهاسيد توبيرانهين عليكم كير ماتفر جاب داديا جائے، اس ملتے کواس مورث میں معنی بر ہو گا کربس تم برہی سلام ہوہم بریز ہو۔ لیس ذرست يسبي جواب بين وعليكم كالغظ استعمال كيا ماست جس كامعنى يربهو كاكرتم عجرام و سلامتی کی زندگی بسرکرد؛ اسی طرح بختف بحی کسی پرسلام کهتاسیے - وہ اجما لّا اس کی سلامتی کے لئے دعاکرر باسے اور یہ نامکنات سے بے کم سرسلام کھنے والے کے جواب میں آپ آ*س سکے لیئے د*نیاا *در آخریت کے عذاب سے سلامتیٰ* کی وُعا فرماتے ہوں بھر نبو^ت میں منافق آب پرسلام کہتے آپ ان کے سلام کا جواب دیتے اسی طرح گنام گارسلمانو^ں کے سلام کا جواب بھی دیتے، چونکہ سلام کالفظ امن دسکون کامتقاضی ہے، اسی لئے كسى كا فرحر بي كوسلام كهن مين ابتدا ندكى ماست ، بلكه جب ألخفزت من الته عليد ولم فقيصرروم كوخط تحرير فرماياكديمكتوب محدرسول التدصل الترعليه وسلم كي طرف سس بادشاه تيمرك طرف بمجوايا مبارياسيد سلام كاحقدار وهنخف سصع بدأيت كي اتباع کرزناسیے ۔ اسی طرح کے الفاظ موسیٰ ملیہ السلام سنے فرعون کے سام_قے مرکا لمہ میں ستم^ا فرائے عظے مراحثاً ایک مدیث میں آب سے بہودیوں کو پہلے سالام کہنے سے منع فرمايا ب يعض علماء اس مديث سي كالموميت برجمول كرت بين ورانعف علمار كا

خبال سبيے كداگركسى سلمان كوان سنے كچھ كام نكالنا مقصود ہوتوانہيں بہلے سلام كہا ما سکتاسے۔ بہودی میسائی آپکسلام تختبت کہتے اور آپ ان کے سلام کا جواب دسینے ؛ البیتة مطلق سلام کامعا مل_ه آپ پرصُلوٰة مبیراسیے امہت *محددیا پیراوٰوُوسلام کا* ىدىيىجىجىتى رىىتى سېدىكىن يېودونسادى آپ پرمىلاة وسلام كايدىي نېيىن مىيجىتە - يال جب آب سائنے آجاتے ، توآپ برسلام کہتے تھے ۔ بیں افضل بر مہواکہ ندمرف آب کی قبراطهر ریککه جهان کهیں بھی ہم موبود ہوں۔ آپ پرمسلوۃ وسلام کامدیہ برابر بھیجتے دہیں وگرمہ آپ کودیجے کر توہیود ولفداری بھی آپ پرسلام کہتے؛ لہٰذا قبراطبرکوسلام کے ساتھ خاص کرنا کمیں میں افضل صورت سے بیگان نکردے اور یہ کہنامی درست نہیں ككفاركے سلام تحية كے بواب بيں الله ياك ان ميردس بارسلام كہتا ہے، بلك بواب کی معودمت بالکلٰ اس طرح سیے حبیساکہ آپ کسی کا فرکے قرمن کی ا دائیگی کریسے ہوں ۔ بس ایما نداروں کے ساتھ موصلوۃ وسلام خاص کیا گیا ہے کتاب وسنت اوراجماع کی روشنی میں اسے سی مقام کے ساتھ مختص کرنا ورست نہیں۔ قبراطہر ر کھڑسے ہو کم سلام کینے والے انسان اور سزاروں میلوںسے سلام کا بربیجیجنے والے لوگوں کے رمیا كجحفرق نهيں اور ايك بارصالوة وسلام كے مدار ميں النّٰد باك اس انسان بروس بارساؤة وسلام مبیجتا سے اور قبراطہر مرکھ طرے موکرسلام کہنے کے بارسے میں محاربا ور تا لبعین بومدينته الرسول مين قيام پزير عقد ان كامعمول يه نه تفاكر جب بهي د مسير نبوي مين دا مل بهول یامسجینبوی سے با مرتکلیں توآپ کی قبراطهر ریماکرسلام کمیں اور اگراس سلام كاصحم اس سلام كى طرح موتا حس كوآپ كى زندگى بيرصحاب كوام آپ پر كہتے تھے توليقيناً صحابه كأام مسجدتني داخل موت اور نسكلته وقت ضرورو مال بمني كرسلام كتي مبيساكتب آپ بقیدِحیات بھے اورمسحد میں تشریفِ فرما ہوائے توصحا برکرام کو مکم تھا کہ دہ آپ ِ برسلام کهیں بلکہ چتحض مسجد میں داخل ہوا درمسجد میں کچھ لوگ موجود ہوں تواس *سے للتے* ان پرسلام کهنا نسنون سبے ،اسی طرح مسیرسے نیکھتے وقت سلام کہنا بھی سنون ہے' بلكه ايك مديث مين مراحت موجود به كربها سلام دوسر سالم سے زياده ينتيت كامامل نهيں بيدا دراس فتم كے سلام كوفبرا طهركے پاس مشروع قرار دينا امماع امت کے خلاف سیے بنرمحا برکام کی عادت معروفہ کے بھی مخالف سے۔ اگر حجرة مانشہ کے بالبرسلام تحيدكها مستحب بونا، تواس كااستعباب عام مونا بيي ومرسه كماكثراسلات اس مسلومیں عمومیت سمے قائل ہیں ۔ اہل مدیمۂ اور دیگر لوگوں کے درمیان فرق کے قاتل نہیں ہیں اور مذہبی مالت سفرا ورغیر سفرین کچھ فرق کا سوال بیدا ہوتا ہے اس للت كدابل مدمية كے ليت مكروبهيت كاحكم اورفيركے ليت استحباب كاحكم دليل تثرعي کا محاج سے جبکہ اس فرق سے لئے کوئی دلیل شرعی موبودنہیں سے ۔ کوئی محقق ثابت نہیں کوپکاکرنبی اکرم صلی الٹرعلیہ وسلم نے اہل مدینہ سے لیے مشروع قرار دیا ہوکہ مدینہ " سے الوداع ہوتے وقت قباطهريا فارى دياكريں ياسفرسے واليى بفراطهر كافرى كوحرورى فزار ديامو ادرنهي مدمينة الرسول سنه بامررسينه والول كومتم سبه كرجب مجمى سجدين واخل مول يامسجد سعن كلين توان سمع لئة قبراطمر ريعا عزى وينامستحب ہو؛ البقة عبداللد بن مرصنی اللّه عنه كے متعلق منقول سے كہجب ده سفرسے آتے او تبراطهر برجاكرسلام كهت عبرالتدبن عرسه بمذبة اتباع دسول كيبيش فطرابه ديگرتفزدات بهي منفول بي جيمبور صحاب كرام كے تعامل كے خلاف بي، مثلاً عبدالله بن عمر سمیشرکوشاں رہتے کہ جہاں جہاں نبی مسلی التّدعلیہ وسلم دوران سفراترے ہیں، و با ل اتراکرتے اور مہاں آپ نے نماز ا وا فروائی ، و بال انز کرنما زا واکیا کرستے ، بلکہ جس راسة سے آپ گزرتے اسی راسسند کو اختیار کرتے ، لیکن ان کے والد مطرت عمر انہیں اسی تشدّدسے باز رکھنے کی کوشش کرتے۔ سنن سعيد بنمنصور ميں بط الاعمش الم عرور بن موید تقرعمر رمنی الندعنه مقول ہے

محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

المعود فسرائے ہیں کہ ج کے سفر
میں ہم صرت عمر کے ساتھ تھے۔ آپ
نے فجری نمازی بہاں رکعت میں سورہ فیل
اورد وسری میں سورہ ایا ن تلاوت
فرائی۔ جب آپ جے سے واپس لوٹے
توآپ نے دیچھاکہ لوگ نماز پڑھنے کہائے
اس جگہ کا قصد کررہ ہے ہیں جہال آپ نے
نماز اوا فرمائی تھی ۔ آپ سے فرمایا کہ بہ
طریقہ اہل کتاب کا ہے۔ انہوں نے لینے
انبیار کے آٹار کوفیا ون خالوں میں تبدیل
کردیا۔ یا در کھوکہ اگرا یسے مقام برنماز کا

خوجنا معد في جديما فقر وبنا في صلواة الفجر الم تركيف فعل دبك باصحاب الفيل ولا مي الحص قد لشي في الثانبية فلما رجع من فقال ما هذا فقالوا مسجد صلى في الله عليه وسلم فقال هذا ملة اهل الكتاب تبكم فقال هذا ملة اهل الكتاب تبكم الله عليه وسلم عرضت له ومن لم تعوض له فليمض في الصلولة فليصل ومن لم تعوض له فليمض

وقت ہما ہے تونما زاد اکرنے میں رکاوط نہیں ہے اور نماز کا وقت نہ سیو توقع اللہ میں اور نماز کا وقت نہ سیو توقع اللہ منا زکے گئے ایسے متعام کی طرف جانا درست نہیں۔

عبدالله بن مرسمیت تمام صحابه کوام متفق ہیں کہ اہل مدینہ کے لئے مستحب نہیں سپے کہ جب بھی وہ مسجد نبوی میں واخل ہول یا نسکانے لگیں توسلام کہنے سے لئے قبراطهر پر و توف کریں بلکہ اس طرز عمل کو مکروہ سمجھتے تھے۔

معلوم ہواکہ جوملمار اس حدیث سے استدلال کرتے ہوئے (کر ہوشخص مجھ پرسلام کہتا ہے تو مجھ میں ہمبری روح کو والیس کیا جا تا ہے اور یں لیے سلام کا جواب دیتا ہول، اس کے جواز کے قائل ہیں ،ان کا استدلال صنعیف ہے۔ اگراس حدیث سے سلام کا استعاب نیا بت ہونا، توصی ابر کرام کا اس کے ترک پرا جماع نہ ہوتا بلکہ اگر پیمل جاتز ہمی ہوتا توکسی ایک صحابی سے تو اس کا تعامل منقول ہوتا معلوم ہواکہ وہ اس فیعل کو نا مائز مجت تھے۔ اما دیث مجیم بھی اس سے نامائز مونے بھراتاً دلالت کردہی ہیں۔

مامِن اُحديسَلم على الخديث كے جوابات

پہلا ہوا ہے۔ دومریث صنعیعٹ سیسے جیسا کربھن کانبال ہے۔ دومرا جااب پیے کہ اگراس حدیث کومیج تبدیم کیاجائے تواس سے مخفرت کی فضیلت نابت ہوتی ہے۔ اس استیف کی فضیلت کا بجرتوں نہیں جواب برسلام كهدر ماسي يتيسر اجواب بيسيه كديدسلام ا ورجواب وراصل جزاا ور مکافات کی ایک صورت سے۔نیک فاحرفاست سجی شم کے انسانوں کے لتے سلام کہنامٹروع ہے ۔ پوتھا جواب برہے کہ اگراس کا دائرہ محدود کردیا ماسئے تواس کا جب بك تعيق ندكي ماتے كاربات واضح دروسكے كى ؛ لهذاكهنا يرسے كاكداس كا مطلب یہ ہے کہ دوگ جمرہ نٹرلیے میں دامل ہوکرآپ پرسلام کہتے ہیں۔ مدیث کا حتم ان کے لیے تخصوص ہے۔ بانچواں جواب بہہے کہ اس مدمیث میں سلام کہنے والے انسان کی مرح و تومسیف کا ذکرنہیں سبے اور نہی ترخیب و تحربیں سے الفاظ موجود بین ا درنه بیکسی اجرولواب کےعطبیہ کا تذکرہ ملاسے، جیساکہ ایک درسری مدین میں مذکورہے کر بی خص مجھ رہا ہے ہار در و دیمیتا ہے اللہ باک اس بر دس ترتیں نازل فرماتے ہیں اور ویخف مجررایک بارسلام مجیمتا ہے الٹر ایک اس پر دس بار سُلام مَا زل فرما تأسيب واس انداز سے صلوۃ وسلام کینے کا حکم دیا گیاسیے اور پوشخص ٹرمیت كے حكم كے مطابق عمل كرتا ہے ، وہ قابلِ تعربیت ہوتا ہے ۔ مندالنداس شكے احرواز اب كامستحتى بموتيا اوراس كيفمل كوقدرومنزلت كي نطاموں سيمجى ديكھا ما آسيء لیکن زیر کجنت مدین کسی فغیلت پر دال نہیں ہے ۔ مروث سلام کہنے والے کے جواب پرمشتمل ہے مبیںاکہ قرآن ہاک میں ہے *کرجب تم پر*سلام کہا جائے تو تم اس سے بہتر أنداز مين كسلام كمين والمل كحامثل الغاظ كحرسا تمرجواب ووا ورعدل والفياف

كالمجى يمي تقاضات

مثال: مدیث میں ہے کہ توشف ہم سے سوال کرے گا، ہم اس کے سوال کو پورا کریں گا، ہم اس کے سوال کو پورا کریں گے اور فرخف سوال ذکر ہے تناعت اختیار کورے، وہ ہمیں زیادہ محبوب ہے۔ اس مدیث کے الفاظر پور کھیے، کیا اس مدیث میں سوال کرنے کی ترفیب معلوم ہورہی ہے، ہرگز نہیں۔ بس مدیث میں سائل کو عطیۃ دینے کا ذکر ہے۔ بس سلام وال مدیث میں سلام کو کی نفظ الیسانہیں ہے بودلالت کر را ہو بھی جب اہل مدیث میں سلام کھنی ترفیب برکوئی نفظ الیسانہیں ہے بودلالت کر را ہو بھی جب اہل مدیث میں سے قومعلوم ہوا کہ مدیث میں بھی اس کی رفید نبین لا قرائی ہے۔ مدیث میں بھی اس کی رفید نبین لا قرائی ہے۔

مسجد بنوى كي خصوصيّت

تمام مساحد عبادات ، ذکرا عتکان تعلیم دعتم رسول اکرم مسلی الندهلید کلم بیساؤه و سلام سیجنے دغیرہ احکام بیں مشترک ہیں کسی سی کوکسی فاص عبادت کے لئے مخصوص نہیں کیا جا سالگا ؛ البقہ مسی حرام میں طواف کرنا ، تجراسود کا بوسد لینا و عیرہ مسی حرام کی خصوصیات میں سے ہے ، لیکن سی بنوی صلوة و سلام کے لئے خاص ہے سرگز نہیں ۔ تضوصیات میں سے ہے ، لیکن سی بنوی صلوة و سلام کا کر برجیجنے میں تمام سی بریساوی ہیں ؛ البقہ مسی مبنوئ مسی بریت المندس میں برنسبت دوسری مسا مبلے نماز کا تواب زیادہ سوتا ہے اور تواب کے المندس میں برنسبت دوسری مسا مبلے نماز کا تواب زیادہ سوتا ہے اور تواب کے زیادہ صاب سے دومتری مسا مبلے دومتری نہیں ہیں۔

زيارت قبرنبوي كاجواز

کسی کیے صحابی سے منقول نہیں ہے کہ اس نے قبر نبوی کی زیا رہ سے جد کو کستعمال کیا ہوا ور مذہبی زیارت کے لئے ترخیب ولاتی ہو معلوم ہوتا ہے کہ زیارت کے لفظ کی

كجه حقيفت نبيي اسى ليئة علما رسنه مطلقااس لفظ كوكمروه حاناسبے ائمة اربعها ورويگرائمة سسے لفظ زیارت و فیرہ کامنقول نہیں ہے۔ زیادہ سے زیادہ حضرت ابن ممر کے غل سے استدلال کرتے ہیں کہ وہ رومنہ نبوی پرسلام کہتے، لیکن اس میں بھی توسلام کہنے كاذكرسيء زبارت كالفظ نهيس بير مديث ووفة كى تمام كما بيل ملاصظ كر ليجير كمي میں بھی آپ کو بدلفظ نبیں ملے گا، اسی طرح جمہور علمار کی اکثر تصنیفات میں مدینہ میسہ کی فضیلت ادر سجد نبوی میں نماز پڑھنے کی فضیلت کا ذکر تو ملیّا ہے۔ لیکن رومند نبوی کی زار '' کا مذکرہ نہیں ملتا تھے عین سن^ن ،مسانید کتب مدیث میں سلام کہنے کا ذکر ہے۔ زیا^ت یااس کے ہم معنی لفظ تک کاکمیں نام ونشان وکھائی نہیں دیتا معلوم ہوااگرآپ کے روصنه کی زیارت امّدیمسلمه کے نزدیک ثابت ہوتی تومحابر، نابعین امّہ کرام سے اس كا ذكر صرور ملنا الاسلام كمين كا ذكر ملتاسيديمي وجرب كرجب روضة نبوى كى زيارت کے قاملین نے اسپنے مخالفین سے اس مسلم رمناظرے کئے تو انہیں اسبنے مری کے **ا ثبات میں کمزور مومنوع مدینوں ک**ا سہارا لینا بڑا ،لیکن وہ کسی صحابی بھی تابعی کاالیسا 🗽 قول میش د کرسکے بص میں روضہ نبو ی کے لئے مفرکرنے کومستحب کہا گیا ہو یاد گر انبیار، مالحین کی قبروں کی زیارت کے لتے سفرکومستخب گردان گیا ہو۔

سُوال ،جس طُرح عام قروں کی زیارت مسنون سبے ، اسی طرح رُومندُنہوی ک زیارت کوکیو ن سنون نہیں کہاجا تا اورلیف اوقات اس سیجھی ان کادمکن نہیں کہ عام قرول کی زیارت سمے سلتے مفرکر ناپڑتا سبے توکیا ومرسبے کہ دومنۂ نبوی کی زیارت کے لئے سفرکومستحب دجانا مباسئے ۔

سے سرو سب ، مدینہ منورہ سے در وررسینے والے لوگوں سے سکتے تو روضہ بنوی کی زیار حجوا جب ، مدینہ منورہ سے در وررسینے والے لوگوں کو اس مقصد کے لئے سفر کورنے کی نٹرعًا کے لئے لازماً سفرکرنا ہوگا - اس بنا پران لوگوں کو اس مقصد کے سلتے سفرکرنامستحب سبے مسجد نبوی اما زرت نہیں ہے ؛ البنتہ مسحد نبوی کی زیارت سکے لئے سفرکرنامستحب سبے مسجد نبوی ک زیارت کے خمن میں روضہ بنوی کی زیارت کا بوجانا اس بات کا متقافتی تہیں کرسفر
محض روضہ بنوی کی زیارت کے لئے کیا گیا ہے می ابہ کرام سف اس سلامیں ہو تقیقی
راستہ اختیارکیا ہے وہ معبر بنوی کی زیارت سبے اور سی بنوی میں آپ پرصلوۃ وسلام
کا بھیجنا سبے اب تو اقعاق کے ماہ وہ ال وضہ نبوی ہے۔ اگر نرجی ہونا تو بھی سی دنہوی میں
آپ پر معلوۃ وسلام کا ہر ہر جھیجا جا آیا اور آپ کی تعرفیف کی جاتی ۔ اور جہنوں نے کہ در ر
اور موضوع روایا سے کی بنار پر زیارت قربنوی کو متحب کہ اسے تریبا کل غلط ہے ۔ اُبھہ کرای
سے یہ تول قطعاً منقول بنیں ۔ اس سلسلہ ہیں صرف دوقول منقول ہیں بنی اور اباحت ۔ اور اگر
اسے تبلیم کیا جائے تو یہ اس مسلم ہیں تعرف دریں صورت اس متنازعہ فیرا قوال میں
اسے دریں صورت اس متنازعہ فیرا قوال موکا ۔ دریں صورت اس متنازعہ فیرا قوال میں
متاب و سنت کی طرف رجوع کیا جائے گا جدیا کہ ارشاد خدادندی ہے۔

مومنو؛ خدا ادراس کے رسول کی فرما نبرواری کرد اور چرم میں سے صاحب حکومت ہیں، ان کی بھی اور اگر کسی بات میں تم میں اختلاف واقع ہوتو اگر خداا در روز آخرت برایان رکھتے ہوتو اس بی خداا وراس کے رسول دکے تکمی کی طرف

الله واطبعوا لوسول واولى الامر منكم فان تنازعتم فى شيئ فردود الى الله والرسول ان كنتم تومنون بالله واليوم الاخد ذالك خير و احسن تاويلا دالشاء، ٥٩

باابتها اتبذين أمنوا لميعوا

رجرع کرویر بهت اچی بات سے اور اسس کا انجام بھی ایتھاہے۔
مگر کی معتبر دوایت نے بنیوی کی زبارت کے سفر کا است ب نابت نہیں ہوتا۔
رہی میر صدیث کہ جوشنص مجھ برسلام کہا ہے ، میں اس کے سلام کا جواب ویتا ہون
نہ تو ان لوگوں کے لئے خاص ہے جو مدینی منورہ میں تھیم ہیں اور مذصرت ان لوگوں کے
لئے ہے جو مدینہ سے با مرسے آتے ہیں اور مذہبی جب جرق عائث کا دروازہ کھلاتھا
توجولوگ جرو ہیں داخل موکر سلام کہتے تھے، ان کے ساتھ خاص ہے کہ آب ان کے
ساتھ خاص ہے کہ آب ان کے سلام کا جواب دیتے ہیں اس سے
سلام کا جواب دیتے ہیں، لیکن آب ان کے سلام کا جواب دیتے ہیں اس سے
معدم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتب

یہ لازم نہیں آ تا کہ ان کا سلام کہنا مستحب ہے۔ اگر سلام کہنا مستحب ہوتا توجب بھی کا ہہ کرام مسجد میں واخل ہوتے یا مسجد سے نصلے تو آپ پر سلام کہنے مالا بحدان سے بہ فعل نا بت نہیں، بلک مسحاب، تا بعین کا اجماع اس کے خلات پر ہے۔ اگر رومنہ نبوی کی زیارت کے آ داب میں اس کوشا مل کرلیا جائے کہ مسجد نبوی میں داخل ہوتے اور نظلتے وقت رومنہ نبوی پر سلام کہا جائے تو کیا بلا دلیل اس کی مشاہبت بہت النّہ کے ساتھ نہ ہوگی جس طرح بیت النّہ کے آداب میں داخل ہے کہ اس کی را رہ نہ نا میں داخل ہوئے کے ساتھ نہ ہوگی جس طرح بیت النّہ کے آداب میں داخل ہے کہ اس کی زیارت نے والا طواف و داع کرے نظام رہے تا لیت کو سے میں بلا دلیل کسی کم کو داخل کرنا کہ بسے جا تز ہوسکت ہے۔ اس پراجماع ہو چکا ہے کہ جمرہ عاقشہ کا طواف کرنا جا تر نہیں اور نہ ہی اس کی طرف منہ کر سے نماز پڑھنا ما از موسل کی طرف منہ کر سے نماز پڑھنا ما از موسل میں ہے ؛

حضرت الومر تدخنوی بیان کرتے میں کدرسول الشرصل الشدملیہ و کم لئے فرمایا منم قبرول پر بیٹھوا ور ندان کی مباب مندکر کے نمساز بڑھو۔ عن ابی مر نثل اکعنوی امنانال قال دسول الله صلی الله علیه وسلم لا تجلسواعلیالقبورولاتصلو السما .

السابل مدین اور عیرال مدین کے لئے قبر نبوی پروفوف کرنا ابت نبین

قبرنبوى بُرامُحْدَ بَعِيرِنا

سر المسلم المدین الله المحی المحی الم المدین معنبل سے دیا اسی طرح قبر بنوی پر ما تفدیج پیرنا محمی است نہیں ۔ امام احمد بن معنبل سے دیا کیا گئی قبر نبوی پر ما تقدیم پیرنا محمی باتھ بھیر سے کا ذکر منقول ہے ۔ نیزامام مالک منبر نبوی بن معید الف ری جب عراق جانے لگے تو انہوں سے منبر کو باتھ لگایا اور

دعاکی نیزا مام احمدین صنبل فرواتے ہیں اگرچ بعض لوگ اپناجسم قربنوی کے ساتھ ملاتے ہیں، جبحہ اہل علم ہاتھ نہیں لگاتے، ایک جانب کھوٹے ہوکر و ماکرتے ہیں عبداللہ بن عمر مجی اسی طرح کرتے سکتے اگر قبر نبوی کو ہاتھ لگانا تا بت ہوتا، تو اس کے اثبات برکوئی شرعی دلیل ہوتی ۔ چندلوگوں کا فعل سی صحم کوثا بت نہیں کرسکتا جبکہ جہور صحابہ کرام کاعمل اس کے خلاف سہے ۔

رسو ل اكدم صلى الله على يسلم كى اطاعت فرض سب

اس میں پھرشہ نہیں کہ امت محدید کے لئے ضروری ہے کہ وہ آپ پرایمان لائیں ،آپ کی الحاصت کریں جن چیزوں کو آپ سنے واجب قرار دیا ہے ان کو واجب سمجیں اور جن چیزوں کو آپ سنے حرام بھٹم ایا ہے ان کو حرام جانیں آپ کی آباع میں ہوا بیت مصنمر سے اور آپ کی نا فرمانی میں گراہی ہی گراہی ہے ؛ چنا کی دیول کوم مسلی الترعلیہ وسلم کے متعلق خود الترکویم گواہی دیتے ہیں کہ وہ لوگوں کو سبدھے راستہ کی طرف دعوت دیتے ہیں اور رسول اکرم مسلی الترعلیہ وسلم کی الحاصت کرنا الترکی گات کرنا ہے ۔ ارشاد خدا وندی سبے ؛

ومن يطع الوّسول فقدالماع الله را لنساء) ٨٠

نيزفر**ايا:** وما ادسلنا من رسول الآ ليسطاع با ذن الله دالمنساء ٢٣

ہوشخص رسول کی فرما نبرداری کرے گا تو بیشک اس نے خداک فرما نبرداری کی۔ اور ہم نے جو پیٹم بھی جا سے اس کئے

مجیجا ہے کہ خدا کے فرمان کے مطابق اسس کا حکم مانا مباستے۔

پئر ننبات اخروی کا دار ومدار آپ کی اطاعت برسبے بمشرکے میدان ہیں بھی سُوال ہوگا کم آخرالز مان پنجمبر برایمان رکھتے تھے ،تم نے اس کی بیروی کی تھی، قبریس معی آپ کی ا مل عنت کے بارے سُوال ہوگا۔

التُدكريم فروات بين ا

فلنسأ لن المذين العسل اليهم ولنسأ لن الموسلين والاعراف ،

توجن لوگوں کی فزیغیر بھیجے گئے ہم ان سے بھی پیش کریں گے اور پنجبر کر سے بھی دیجیا کے

ا ب كى رسالت برانبياء سے عهد لينا

التُدكريم في حفرات انبيا رعليهم السلام سي فهد ليا كه اگرتهارى بوردگي مين حفر محم مسلى التُدكريم في حفرات انبيا رعليهم السلام سي فهد ليا كوكان ان كي تعدلي كرنا بوگان الله عليهم السلام كوشكم و باكيا كه وه اپنى اپنى امتول سي عبدلين كه اگران ك نيز انبيار عليهم الصالحة و والسّلام كوشكم و باكيا كه وه اپنى اپنى امتول سي عبدلين كه اگران ك زندگى مين حفرت محمصل الشّعليه و اس تشريعت سي آسي توانهين اس كى الها عت كرنا موگى و اس برايمان لا في سي انبين اخروى نجات حاصل بوسك گى اور وه جنت بين داخل موسكين گي و ارشاو خدا وندى ہيں و

ومن يطع الله ورسولديُدخلهُ

جئتِ تجوى من تحتها الانعلى. خالدين فيها وذالك الفول

العظيم - دالنساء) ١٣

اور جرشخس خداا دراس کے بینمبرک فرما نبرداری کرے گا خدااس کو بہشتوں میں داخل کرے گاجن میں نہرس برہی ہیں وہ ال میں جمیشہ رہیں گےا ور بربری کمیا ہے

دنبا ورآخرت میں سُعاد تول کا صحول آپ کی فرمانبرداری کے ساتھ معلّق ہے اور دہ لوگ وونوں جہانوں میں بدبخت ہیں جوآپ کی اطاعت سے دست کش ہو گئے آپ کی اطاعت کرنے والے ہی اللہ کے اولیام ہیں ہوتشوٰ ی کے ساتھ موصوف ہیں اور کامیاب ہیں ؛ البقہ آپ کی اطاعت سے سمرموا کڑا ت کرنے والے اللّٰد کے دشمن ہیں، المبیس کے ساتھی ہیں۔ ارشا دِخدا وہدی ہے : اورجس دن (ناعاقبت اندنش، فالم اسپنے لم تعرکاٹ کاٹ کھائے گاادر کے گااسے کاش میں نے بیٹیبر کے ساتھ راستہ اختیار کیا ہوتا۔ البتے شامت کاش میں نے فلاش خوکو ابنا دوست مذبنایا ہوتا ، اس نے مجہ کو دکتاب ، نصیحت کے ممیرے انسان کو وقت پر دفا دسینے والا سے ۔

جس دن ان کے مذآک میں الّائے جائیں گے ،کہیں گے لے کاش ہم خداکی فرما نبرواری کرتے اور رسول خداکا حکم مانتے اور کہیں گے کہ لے مہلے پروردگار ہم نے اپیغ مروارد ل اور بڑے لوگوں کا کہا مانا توانہوں نے ہم کوراسترسے گراہ کڑیا۔ لیے ہما ہے پروردگار، ان کو ڈگنا مذاب مسے اور ان پر بڑی لعنت کر مسے اور ان پر بڑی لعنت کر کہہ دو کہ خدا اور اس کے رسول کا کم مانو، اگر نہ مانیں تو خدا بھی کا منسروں کو

دوست نہیں رکھنا۔ تہارے پروردگار کی تم برلوگ جب یک اپنے تنا زعات میں تمہیں منصف نہ نربنا تیں اور جونیصلہ تم کردو، اس سے وبوم يعض الظالم على يديه يقول يا ليتنى انخذت مع الوسول سبية عا ويلتى ليتنى لم اتخذ فلانا خلية لقد اضتى لم اتخذ فلانا خليلة لقد اضتى عن الذكوبعد اذجاء فى وكان الشيطان للانسان خذولة والغرقان) ٢٠- ٢٩

فيزفرايا: يوم تقلب دبوهم في النّاديةولون باليتنا اطيناالله والمعنا الوسولاقا لوا دبنا انا المعنا ساد تنا وكبراءنا فاضلونا السبيلا دبنا التهم عذ أبًا ضعفً من الناروا لعنهم لعن كبيرًا-(الاحزاب) ۲۷-۲۲

نيزفرها عند المستعوالله و الرسول فان تولوا فان الله لا يحب الكفرين - دال عموان ٣٢٠ فيزفرها في فلا وربك لايؤمنون حتى يحكم وك فيما شجوم بينهم ثم لا يجدوانى انفسهم حرجًا مسّا تفنيت

ويُسلّموا تسليما دالنساء ٢٥

نيزفروايا؛ فليعذرالذ يب يخالفون عن امرة إن تصيبهم فتنة اويعيبهم عذاب السيم. والنوّد الموران الم مرمن يبطع الله وإلرسول فالميك

مع الـذين العُم الله عليهم من النبيّين والصديتين والشمسدأوالصالحين

وحسن اولمئك رفيقا دالنسأ، ٦٩

ا*لنُّدُومِ سِنَّ فرائا*؛ وما ارسلن

من رسول الدّ ليطاع ما ذن الله-

والمشاء به

ویقےرہے اور اپنی اطاعت کا اعلان فرانے رہے مبیں کدارشا و مداوندی سہے ، ومن يطع اللهُ ورسوله ويخشى الله ويبتقه فاولشك همالغائزون

لالنوّد) ۵۲

اسینے د ل میں تنگ نهروں بلکداس کونوشی سیستاہ ن لیں، تب یک مومن نہیں ہول مٹھے توج ہوگ ان سے حکم کی مخالعنت کرتے

ېپ، ان کوڅرنا مياسينځ که داليسا نه سوکر،ان يركوني أفت يرطم أئ يأتكليف وينفوالا عذاب نازل ہو۔

اور جولوگ مندا اوراس کے رسول کی ا لماعت کرتے ہیں وہ دقیامت

کے روز، ان لوگوں کے ساتھ ہوں گے، جن برندانے برا وخنس کیا دیعنی انبیار اورصدیق ا ورست مهیداورنیک ا وران لوگوں کی رفاقت بہت ہی خوب ہے ۔

تمام انبیار نے لوگوں سے کہ کرالٹر کا حکم ہے کہ تم انبیاری تالبعداری کروا چنا نچہ اورم نے جہ یغمبر بھیجا ہے ال لئے

بيجاب كمغداك فردان كيمطابق المكاحكم مانا ماستے۔

نمام ا نبیار ایک الندکی مبادت کامنم دیتے رہے۔ تقوی اختیار کرنے برتر فیب

ا در چیخف مداا دراس کے رسول کی فرا نبرداری کرے گا اور اس سے

د رکے گا توالیسے ہی لوگ مراد کو پہنینے

واستعاش

انوح عليه السلام فرمات بين:

ان اعبد وااللهواتقو، والحبيعون دنوح،٣

علی بدالقیاس تمام پیغیرول نے لوگول کوالٹدکی عبادت کی طرف بھایا، وہ نوب مباخت محصے کرتمام لوگ برجگہ مروقت رات دن طام را باطناً سفرحصر انفراد اللہ اجتماعاً کھانے بینے اور سانس لینے سے استے محتاج نہیں بنتنے کہ وہ پیغیروں پرایمان کلانے اور ان کی الماعت کرنے محتاج ہیں اور جولوگ پیغیروں کی تکذیب کریں گے اور ان کی الماعت کرنے کے محتاج ہیں اور جولوگ پیغیروں کی تکذیب کریں گے اور ان کی الماعت سے سرتا بی کریں گے ، ان کابدلہ جہتم ہے ۔ ارشا و معدا و مذی ہے ، اور ان کی الماعت سے سرتا بی کریں گے ، ان کابدلہ جہتم ہے ۔ ارشا و معدا و مذی سے ، فا فلاد دیکھ مراد ا تلق لا بیصلها تو میں نے آپ کو بھولکتی آگ سے منتر بنا فلاد دیکھ مراد ا تلق لا بیصلها تو میں نے آپ کو بھولکتی آگ سے منتر بنا فلاد دیکھ مراد ا تلق لا بیصلها تو میں نے آپ کو بھولکتی آگ سے منتر بنا

الدّالاشقيّال ذيكرب وتولّي. دالليل، ۱۲۰۱۰

نیزفرایا ؛ خلا صُدّ ق ولا صلّیٰ ولکن کمذب وتولّیٔ - دالمقیلة) ۳۱

نیزفرهای: انا ادسلنا الیکم دسولاً شاهدًا علیکم کما ادسلنا الی فرعون دسولا فعملی منوعون السّسول فاخذ نالا آخذ اوسیلا-دا لذیّل ، ۱۵ - ۱۷

نیزفرهایا؛ فکیف اذاجتنامس کل اسة بشمعیید وجننابک علی

تومیں نے آپ کو بھڑکتی آگ سے تند بر کر دیا ، اس میں دہی داخل ہوگا بورڈا نبرت سے جس نے جسٹلایا اور منہ بھیرا۔ تواس عاقبت نا ندیش نے رتو کلام

منداكى تصديق كأمزنما زرطيفى ملكر حجشلا يا اور

أمنزي پرليا -

اسابل مکر بس طرح ہم نے فرعون کے پاس موسلی کو پیغم برنا کر کھیجا متعا، اسی طرح تہا دسے پاس بھی محمدرسول بیسجے ہیں ہوتمہار مقابلے میں گواہ ہوں گے تو فرعون سنے ہما رہے پیغم لواکہا نمانا توہم نے اس کو برط سے وہال میں پیکڑا لیا۔

مجُلااس دن کیا حال موگا ، حب ہم مرامت میں سے اسوال بتا نے والے کو بلاتیں گے اور نم کوان لوگوں کا رصال بنانے کو، گوا ہ طلب کریں گے۔ اس دن کا فرا ور پینمبرکے نا فرمان آرزم کریں گے کاش ان کو زمین میں مدفون کھکے میٹی برابر کردی ماتی اور فداسے کوئی ہات

نيزفرايا؛ يومئلا يُوداللاين كفووا وعصواالوسول لوتسوئ بهم (لادض - (النشاء، ۳۲

هؤلاء شمه يدادالن و) ام

چھپانبیں سکیں گے۔ ر رر

رُسولِ اكرم صلى الشّعلية ولم كوسراحٌ امنيرًا كهاكيا

عوام الناس كس قدرآپ پرائيان لانے اور آپ كى الحا مت كرنے كے پابندين اس کا اندازہ اس سے لٹکانا آسان ہے کہ سورج جس کو قرآن پاک میں سرجہ و مل ج کہاگیا ہے ا ورحس کی روشنی سے لوگ متحاج ہیں ، اس سے زیا وہ صرورت رسولِ اکرم صلی السَّرعِلمبيولم کی ہے۔ اسی لئے آپ کو سرامًا منیرا کے لقب سے لؤازاگیا۔ فلام ہے کمنیرا کے لفظیل فائده بى فائد ه ہے جبحہ و ہاج میں فائدہ اورنقصان دونول کا احتمال ہے یہی دجر ہے کہ حب قدر رسول اکرم صلی التُرعلیہ وسلّم کے مقوق واحترامات ہیں کسی اور کے نہیں، آپ کی عظیم، توقیر مجت سب کے دل ملی سروقت اور سرحگر میں ایک جیسی ہوا یہ کیا تعظیم اور محبت کا انداز ہے کہ جب آپ روضتہ نبوی پر کھٹرسے بہوں، تواس وقت آب كا دل ود ما خ رسول اكرم صلى الترعليد وسلم كى محبّت مين سرشار بوا ورحب وبال ہے ہیں دیں، **تو ہ** پ کے دل میں *محتت و احلال کی تندوتیز موجیں خا*موش ہو حاتیں اور آپ کے سامقد ممتنت میں وہ پہلا بذب عنقا ہوجائے ۔اس کا صاف مطلب یہ سواہے كرة ب در مقبقت رسول أكرم صلى الله عليه والم كے مقام ومرتب سے آشنانبين بين، كي يرتقيقت نهير كروشخف أي كي اطاعت كادم مجرّوا بهي أوه كيسي آب كي قبرمبارك

کے پاس ان مبرعات کا مرتکب ہوتا سہ جن سے آپ نے منع فرمایا ہے اس کے باوجود اگر کوئی شخص آپ کی قبرمبارک یاکسی دوسرے انسان کی قبر کے قریب بدعات کا آسکاب کرتا ہے تو گویا کہ وہ آپ کی الماعت سے گریز کرتا ہیے . مالانکہ آپ کی اطاعت ہی سعادت اور نجات کا پریش خیر ہے۔ جب اصل معیا دآپ کی اطاعیت سے توجیحف ایسے ا مام کے پیچینے نمازاد اکر تاہیے جس کولوگ محبوب مانتے ہیں،اس کی نماز اس خفس کی نماز سے افضل ہوگی جوالیسے امام کے بیچھے نما زاداکر تا ہے جس کولوگ کراہت کے ساتھ د کینے ہیں، اسی طرح اگراپ ایسے متقام پر نماز اواکریں جہاں آپ کواطمینان قلب . نعيب ببواد رخشوع وخفوح فائم رج تويقينا وإن نمازاد اكرنا اس منعام سصافضل موكا جِها ل آب كواطمينان قلب ماصل نبيل بوقا البكن شرط به بي كداس جكد نمازا وأكتف سے سارع علیہ انسلام نے منع نہ کیا ہوا ورابطا سرو ہاں نما زا واکرنے میں حرج بھی دہوہ اسى طرح كمبى خيرا فعنال ممل معض لوگوں كے حق ميں زيادہ فنسيلت والا مؤنا ہے۔ اس لتے کہ وہ اس کے لئے زیاوہ نفع والا ہے اوراس کے بارے میں ترغیب موج دیے اورافصن کام اس کتے فعیلت والانہیں کددہ اس سے عاجز ہے۔ مثلاً دلاکل شرعیہ کی روشنی میں نماز اواکرنا فکرکرنے سے افضل ہے،لیکن بعض اوقات فکر، ڈعاوغیژ كاعمل نماز سے افعنل سوتا ہے، مثلًا فجرا ورعصر کی نمازے بعد نفل نمازا و اکرناممنوع ہے اور ذکر وغیرہ مبائز ہے ، حالا محہ وکرنماز سے افضل نہیں ہے -

ہے اور ذکر وعیرہ جائز ہے ، حال معد و ترق سے معالی ہیں زیادہ فضیلت فیزشلاً سبحان اللہ و فیر کہنا قرآن پاک کی تلاوت کے مقابلہ میں زیادہ فضیلت کا مامل نہیں، لیکن رکوع، سجو د میں قرآن پاک پڑھنا مائز نہیں، اگرچ وہ زیاد فینسبت و الا ہے سبحان اللہ و غیرہ ہی مشروع ہے، اسی طرح قعدہ میں درود شریف کے بعد والا ہے سبحان اللہ و غیرہ ہی مشروع ہے، اسی طرح قعدہ میں درود شریف کے بعد دعا ترکیمات ہی مقام ہیں اور قرآن پاک کی آیات تلاوت کرنا اگرچ اپنی جگر جزیادہ و مائی جگر میں اس لئے دُعا ترکیمات ہی فعنل فضیل ہیں ہے، لیکن چونکہ وہ مقام دُعا کا ہے، اس لئے دُعا ترکیمات ہی فعنل فضیل ہے، لیکن چونکہ وہ مقام دُعا کا ہے، اس لئے دُعا ترکیمات ہی فعنل

بہوں تھے۔

قبرول کا جج اورمریے ہوئے لوگوں سے عائیں مانگنا

بالعل اسی طرح قبرول کی زیارت عبرت اور مففرت طلب کرنے کے لئے جائز اسے ،لیکن جولوگ بیت النہ کے ج کی طرح قبرول کی تعظیم کے پیش نظران کے ج کے لئے مائز کئے مائے بیں اور وہال ان سے مدد ما فقتے ہیں۔ وہ رسول اکرم میں النہ علیہ دسلم کے مکم کی نافر مانی کررہے ہیں اور اسپنے رب کے ساتھ ان کونٹر کیہ بنا رہے ہیں، جب کہ افرانی کورسے ہیں اور اسپنے رب کے ساتھ ان کونٹر کیہ بنا رہے ہیں، جب کہ افرانی کورسے کی افرار کر لینے کے بعدان کے لئے مزوری محاکم وہ کی حالت میں بھی توحید کے دامن کو نہ چھوڑتے اور ایمان بالا نبیار کی نعمت سے محروم ہونے کو میں کورانہ کرتے ؛ چنا بچہ قیامت کے دن ان ہی د و چیزوں کے متعلق تمام مخلوق سے سوال ہوگا کہ تم نے کس کی عبادت کی تھی ؟ اور کی تم پنجروں کی اطاعت بجالاتے تھے ؟ سوال ہوگا کہ تم نے کس کی عبادت کی تھی ؟ اور کی تم پنجروں کی اطاعت بجالاتے تھے ؟

عبدصحا بركرام ادر قبر بنوى

فلفار راشدبن کے عبد میں سیابہ کرام مسجد نبوی میں داخل ہوتے وقت رسول اکرم مسل الدُعلیہ وسلم پرملوۃ وسلام کہتے، نمازاداکرتے اور واپس گھروں میں جلے آئے۔
معلوم نہیں ہوسکا کرنماز کی اور تبکی سے پہلے یا بعد مجرۃ نبوی پرمسلوۃ وسلام کہنے کے
کھڑے ہوتے ہوں۔ خیال رہے کہ فلفار راشدین اور جہرم حابہ میں مجرۃ نبوی مبدک صد و دمیں داخل نہ تھا، ولید بن عباللک کے وُورِ خلافت میں رجبکہ مدینہ منور میں میں لینے والے اکثر صحابہ کوام فوت ہو جی عقد ان میں سب سے آخر میں جا بربن والٹر میں الشرعة ولیدکی خلافت سے قبل سے بھر فوت ہوئے، جبکہ ولیرس میں فوت ہوئے، جبکہ ولیرس میں فلافت کے منصب برحبوہ افروز سوئے اورس میں فوت ہوئے، جبکہ ولیرس میں فلافت کے منصب برحبوہ افروز سوئے اورس میں فوت ہوئے، جبکہ ولیرس میں فلافت کے منصب برحبوہ افروز سوئے اورس میں فوت ہوئے، جبکہ ولیرس میں فلافت کے منصب برحبوہ افروز سوئے اورس میں فوت ہوئے، جبکہ ولیرس کے فلافت کے منصب برحبوہ افروز سوئے اورس کی منصب برحبوہ افروز سوئے اورس کے افران میں فوت ہوئے، جبکہ ولیرس کے فلافت کے منصب برحبوہ افروز سوئے اورس کے افران میں فوت ہوئے، جبکہ ولیرس کے فلافت کے منصب برحبوہ افروز سوئے اورس کے افران کی منصب برحبوہ افروز سوئے اورس کے اورس کی منصب برحبوہ افروز سوئے اورس کی میں فوت ہوئے، جبکہ والیرس کے منصب برحبوہ افروز سوئے اورس کے اورس کی منصب برحبوہ افروز سوئے اورس کے اورس کے منصب برحبوہ افروز سوئے اورس کی منصب برحبوہ افروز سوئے اورس کی منصب برحبوہ افروز سوئے اورس کے منصب برحبوں افروز سوئے اورس کے منصب کے منصب برحبوں افروز سوئے اورس کے منصب برحبوں افروز سوئے اورس کے منصب کے منصب کے منصب کی منصب کے منصب ک مسجديي واخل كياكيا

جرة عَاسَتْ كوكم مسجرنبوي مين واخل كياكيا

چنامخدا بوزيدنميري اخبار المدميزمين رقم لمرازبين كيسلفيته مين جبكه عمربن عبالعزيز ولیدی ما نب سے مدیند کے گورز منے، تو انہول نے مسحد نبوی کو گراکمنقش پیقرول کے ساتھ تعمیر وایا ۔ سنگ مرمے استعال کے ساتھ مختکف قسم کے اعلیٰ درم کے رنگ وروعن کرنے اورسونے کا پانی بھیرنے سے مسجد کی توسیع کے پروگرام کومل مہم بہناتے ہوئے از داج مطہات کے مجروں کو گراکر مسجد میں داخل کر دیاا ورمجرہ عائشہ جس میں آپ مدفون تھے ، اس کوئیبی مسجد میں ملا دیا گیا ا درمسجد نبوی ا در مجروں کی کرنی جس میں آپ مدفون تھے ، اس کوئیبی مسجد میں ملا دیا گیا ا درمسجد نبوی ا در مجروں کی کرنی اینٹوں کو وہاں سے اعمواکر حرق میں ان سے اپنامکان تعمیر کروایا۔اس سلسلہ میں الرون بن كثير بيان كرنے بير كر حصرت عمر نے ان برانے بيتھروں سے سعد بني وا کے معاققہ دو کمریے تعمیر کروائے اور وُروان بیان کرتے ہیں کہ ولید نے عمر بن عبالعزیز

کومسحد نبوی میں توسیع کرنے کا صحم دیا،

چنا بنی انہوں نے سعد نبوئی میں توسیع کرنے کی غرض سے ارد گروسے کچھ بلاث فرریے وقبلدی مانب میں حضرت حفصدی زمین بھی واس مے تعلق حفرت حفصے بھتنے عبیدللدن مبدر مرنے کہا کہ برحفصہ کام کان ہے، اس میں رسولِ اکرم صلی لند عليه وسلم تشرييف ركھتے تھے ،اس لتے ہم اس كوفروخت نہيں كري سے ليكن حرت عرب عبالعزريز في اصاركيا وركهاكمين بهر حال اس كوسجينبوي كيصدود مين واخل كرك بى ربول گاداس مستلەر تاپسىمىن كانى نجىڭ دىكدار بىوتى رسى، بالاخرىم رىن عبدالعزيز نے کی کہ میں تہمیں امازت دیتا ہوں کہتم مسحد کی ما نبسے اپنے گھرمیں داخل ہونے سے لئے ایک در دازہ نکالوا وراس سے عوض میں تنہیں دارالرقیق دیتا سول '

466

اورباتى زمين تم ابين قبعنه ميس كمومسحبركى توسيع كمصلسا ميس حسرت عبالرحمان

بن عوف کے تین گھروں کو جمی سجد میں داخل کردیا گیا اور مسلسل بین سال یک سجد کی تعمیر بھوتی رہی ، لیکن قبلہ کو عفرت عثمان کے نقشے پر برقرار رکھا گیا ؛ البتہ قبلہ کی مہانب سے حضرت عائش کے گھرکو مسجد میں داخل کیا گیا اور قبلہ کی دیوار کو دیگر تین دیواروں کی بہنست زیادہ نولیسورت بنایا گیا اور حصیت میں ساگوان استعمال کیا گیا ۔ دیواروں کی بہنست زیادہ فرہے کا تختیدنہ ۴۵ مزار در ہم بتایا جانا ہے ۔ ولید نے ان سے کہا کہ ویوار دل کو قبلہ کی دیوار کے مانٹ منتش کیوں نہیں کیا گیا ، توانہوں نے جلب کہا کہ ویکڑ دیوار دل کو قبلہ کی دیوار کے مانٹ دیا تھی ۔

حصرت مرن عبالعزیز کامسجد کی تعمیر کے وقت اہل مدینے کے مشائخ سے مشورہ

محدبن عماروعیره سن ذکرکیا سے کم عمر بن عبدالعزیز نے قبلہ کی دلوار بناتے دقت قرایش النصار کے مشاکع کو جمع کرکے ان سے کہا کل یہ نہ کہنا کر عمر بن عبدالعزیز نے قبلہ والی دلوار کی بنیاد بدل دی ہے لہٰذا میں نے کم دیا ہے کہ جہاں سے پیتھرا کھا یا جائے و بہن رکھا ما ہتے گویا کر حضرت عثمان کی تعمیر کردہ دلوار ہی کو برقرار رکھا گیا ہیک جھزت عثمان کی تعمیر کردہ دلوار ہی کو برقرار رکھا گیا ہیک جھزت عثمان کی تعمیر کردہ دلوار ہی کو برقرار رکھا گیا ہیک جھزت عثمان کی تعمیر کردہ دلوار ہی کو برقرار رکھا گیا ہیک جھزت کو مددور سے دمیں داخل کیا گیا ۔

جرُول كى كيفيّت

مسجد نبوی کے ارد گرد تجروں کو اس ترتیب سے بنایا گیا کہ ان کے دروازے معجن سے کم کی و فات کے بعب ر صحبی سحد کی طرف کھلتے تنفے ؟ چنا پندرسول اکرم صلی الترعلیہ وسلم کی و فات کے بعب ر جمعیۃ المبارک سکے دن جسم سعبر میں گنجا کش نرستی ، تو لوگ تجروں میں نمازادا کرتے۔

محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

سعيد بن سيب كاقول

کاش میں بنوی اوراز واج مطہرات کے تجرول کو اپنے مال پر تھی وار دیا جاتا ہوئی ان سے جہ بت حاصل ہوت اس لئے کہ گھرول کی جئت اتنی نزدیت تھی کہ کھر السان کا مرحیت کولگنا اور باسر ڈیور صبول کی جیت برٹاٹ ڈالے ہوئے تھے جبکہ مسجد کی جیت کھی اور جی ارد لیار بی اینٹول کی تقییں اور جس روز دلیدنے ازواج مطہرات کے جرول کو مسحد نبوی میں داخل کرنے کا حکم صادر فرایا ۔ میں نے دیکھا کہ مطہرات کے جرول کو مسحد نبوی میں داخل کرنے کا حکم صادر فرایا ۔ میں نے دیکھا کہ لوگ اس قدر زارو قطا رور ہے تھے کہ اس سے زیادہ آہ وزاری کرتے ہوئے انہیں کہمی نہیں دیکھا گیا ۔ اس لئے کہ وہ آنا روکھنڈ رات لوگوں کی نظروں سے او جبل ہوگئے جن میں رسول اکرم صلی الد علیہ وسلم آباد تھے اور بھی آب کی بود و باش اور کہتے مکانات میں جون کی جیتیں سرکو خیور نی تعمیر میں ۔ ایسے لوگوں کے لئتے باعث میرے میں تھے ہوئے ومبایات بون کی میں تھی میں ہوئے درایا لوگ مال خرج کرتے ہیں۔ مالانکھ آپ نے اتم سلمہ کو مخان کی سے ساتھ محلا ان ہوئے درایا لوگ مال خرج کرتے ہیں۔ مالانکھ آپ نے اتم سلمہ کو مخان کی سے ساتھ محلا ان ہوئے درایا لوگ مال خرج کرتے ہیں۔ مالانکھ آپ نے اتم سلمہ کو مخان میں ۔ کے ساتھ محلا ہوئے درایا بدرین وہ مقام دجہاں لوگ مال خرج کرتے ہیں، مکانات ہیں ۔ کے ساتھ محلا ہے دروا یا بدرین وہ مقام دجہاں لوگ مال خرج کرتے ہیں مکانات ہیں ۔ کرتے ہیں مکانات ہیں ۔ کرتے ہوئے دروا یا بدرین وہ مقام دجہاں لوگ مال خرج کرتے ہیں ، مکانات ہیں ۔ کرتے ہیں ، مکانات ہیں ۔

كياصحابكرام كى موجودگى ميں يەتبدىلى سوتى ؟

اگریہ روایت نابت ہوجائے کہ ان میں حاربرام بھی تقفے جب ججروں کو سجنہوی
کے مدود میں داخل کیا گیا توہم کہیں گے کہ ان سے مرد دہ صحابہ ہوں گے جوعہد نبوت میں
بیبن میں تقبے، مثالًا الوا مامہ بن ہمل بن صنیف، محمود بن ربیع ، سائب بن یزید عبدالله ربیب میں تنے مثلًا الوا مامہ بن ہم براسالت میں سے کوئی بن میکوئی میکے تھے، ان میں سے کوئی بن المحقہ البیت میں سے کوئی بن میکوئی میکے تھے، ان میں سے کوئی بن میکوئی در تھا۔

مجرول سے کیا مُرادہے ؟

نلا ہر سبے کہ تمام گھر کو تو مجرہ نہیں کہا جاسک ، قرآن پاک میں سبے کہ حولوگ آپ کو جرا کے پیچھے سے آواز دینے ہیں، ان میں سے اکثر لوگ وہ ہیں ہو مقل نہیں رکھتے معلوم ہوتا سبے کہ ڈیوٹرھی کو مجرہ کہا جا تا متنا اور یہ ڈیوٹھیاں کھمجور کے تنے اور شانوں سے بنی ہو تی تھیں ان سے پیچھے راکشنی کمرے اینٹول سے بہنے ہوئے تھے ؛البنة حضرت ام سلم کا مجرُہ اینٹول سے بنا ہوا تھا اور یہ بھی مُردِی ہے کہ بعض ازواج کے تجرب مذیقے اور درماز و

پر پر دسے کی میکیں جانوروں سے بالوں سے بنی ہوئی تقییں بھنرت ملی کا گھرجس میں وہ جشر فاطمیکے ساتھ رہتے تھے، حضرت عائشہ کے مجرو سے عشب میں تھا، اس کو بھی ولید نے مسجد میں داخل کر دیا تھا۔

دلیل : ہم نے کہا ہے کہ حجرہ سے مراد وہ ڈپوڑھی سے جودروازے کے ہاس بنائی مباتی ہے ۔ الوداؤدمیں ابن عمر سے مروی مدیث اس پر دلالت کر زہبی ہے ، قال دسُول الله صلی الله علیہ قلم سے رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا

صنون الموءة في بيتها فضك مورت كالحرين نمازاواكرنا جره مين نمازاوا من صلواتها في جمزتها وصلواته من مرفي سه افضل ب اوراس كا كحرك في مخذعها افضل من صلواتها في الذركوني من نمازاد اكرنا كحد ميرينا

اند کونخش میں نماز او اکرنا گھرمیں نماز او اکرنا گھرمیں نماز بیتھا۔ ادا کرنے سے افغنل ہے۔

معلوم ہواکدا صطلاح صد بت میں گھرادر جوہ کے درمیان واضح فرق ہے اور عودت حس قدر زیادہ پروسے میں نما زاد اکرے گ'اسی فدراس کوزیادہ لواب ماسس ہوگا۔

ازواجمطہرات کے جرب وقتاً فوقتاً بنا تے گئے

یہ بات بالکل دامنے ہے کہ سے زبوی کے ساتھ ہی تجروں کو تعمیر خویں کیا گیا اس التے ہی تجروں کو تعمیر خویں کیا گیا اس لئے کہ اس وقت آپ کے نکاح میں لو بیویاں نرخمیں عفرت عائشہ کے ساتھ آپ کے نکاح کیا کہ میں ہوئیا تھا ، لیکن رخصتی مد بہنہ میں ہوئی ، اس کے بعد مودہ سے آپ نے نکاح کیا اور سودہ کے بعد آپ کا نکاح حفصہ سے ہوا ، اس سے الن یمنوں سے تجربے مسجد نبوی کے ساتھ بالکل ملے ہوئے متھے اور سے جو میں فتح فیمبر کے بعد سب سے آخریں آپ

نے صفیہ بنت جی سے نکاح کیا اوراس کے ملے مکان بنوایا اس کامکان مجرسے دگور

تصامِحِين ميں ہے :

کان دسول الله صلی الله علید وسلم معتكفاً فا تبيتر ازوره ليبلاً عجد نشترتم قست فانقلست فقيامر معی لینقلبنی وکان مسکنها فی دار اساسة بن زيد ضسورجلان سن الانصادفلمّا وإياا لبنى صلى اللهعلير وُسلم اسوعا فقال المبْي صسلى الله عليه وسلمعلئ مسلكما انهعاصفية بىنت حيى فقال سبحان الله يادسمل الله فقال ان الشيطان يجرى من ابن اٰدمرفجری السدم وانی فتشبیت ان یقدن فی قلو کمما شراً او شیئ -محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع

مفرت سغيه بيان كرتى بين كرمول التدمل الدعليه وسلم امتكات مي تقع مي رات كوآب كى ملاقات كے لئے آئى آب کے ساتھ مابتی کرتی رہی جب میں البس جلنے لگی و آپ کعرے ہوئے اکر مجھے داہی لولماآييس اوصفيه كامكان اسامرين زيدكم گهریس تنها.اس دوران د وانغیاری گزر انهول نے می علیالسلام کودیکف تو دہتیزتیز **مِلِنے لگے ۔ نبی سی ا**لڈ علم **پرس**لم نے ان سے کہ مھہرو اپر نوسفہ پینے دھکینے لگئے یا رمول الله إلقب ہے۔ آپ سے فرط یا شیطان این آدم می*ں خون کی* مانند گردش

منفر کرموضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

كرناسبے - مجھے خطرہ لاحق ہوگیا كركہ ميں شيطان تمبارے دلوں ميں كسى قسم كانثريادى نزڈال دے۔

اس مدیت سے معلوم موا کرم مفیر کا گھرمسجد سے دور تھا، اس لئے آپ اس کو تھاؤ کے لئے اس کے سامخھ کئے ۔ اگر اس کا گھرسجد کے قریب ہو تا تو آپ کو کی صرورت تھی

آب اس کے ساتھ حلتے اور بحیرگزیتے والے دونوں آدمی بھی راستہ سے گزریہ سے تقے ا ورمسجد توراسته من مقاا و رآپ بیم سحد میں منتقص اگر ده د و نوں آپ کومسجد میں دیکھتے تو آب کوان کلمات کے کہنے کی مڑورت مذمقی۔

معلوم بواكرتمام مجرك مسجدك ماحظ طمق نهين تقيه اورمروى سبع كه صفرت جويرميا وا اورصفيه كے ساتھ نكام سے قبل محام كرام لے مسحد كے ساتھ متقبل لين كھر بنا ليے تقے،اسی لئے ان کے مکانا ت مسیدسے ڈور بنائے ٹگتے۔

www.KitaboSunnat.com

مسجد نبوی میں حضرت عثمان کی توسیع

مذكور ہے كم حصرت عثمان نے جب مسيد نبوى ميں توسع فرمائي تو حصرت عباس کے گھراور حضرت حفصہ کے گھرکے کچھ حسّہ کومسجد کی صدود میں واخل کیا جانب شام سے بتیاس ہمخد کا اضافہ کیا ؛ البیتر مبانب مشرق سے امنا فہ نہیں کیا اور ہاتی مجروں کومسعیدمیں داخل مذکیا۔ولیدکے دُورمین جب مزید توسیع کی گئی تواس د تت ہاتی مجرد ُں كونعي داخل كرليا كيا .

مسید نبوی میں ملحقہ جنگہ کا حکم اس نتم کے آثار مردی میں کہ نماز کے قواب کا بوعکم اصل معجد میں ہے۔ اتنابی

799

نواب اس جگه مین بھی حاصل ہوگا جس کو بعد میں شامل کیا گیا ہیں۔ اسی طرح مسیر حرام میں بھی جس قدر اون افر ہونا ماستے گا۔ مزید داخل نقدہ جگہ کو وہی فضیلت مانسل ہوگا جواصل کو حاصل کو حاصل سے ۔ اصل کی طرح وہاں بھی طوا وٹ کرنا درست ہوگا ، اسی گئے مسجد نہوی میں صحف اقال میں صف اقدار کرنے سے اتنا میں صف اقدار داکرنے سے اتنا تواب ہوگا جتنا تواب قدیم مسجد میں ماصل ہوگا .

اگراس کومسجد کاحفتہ متمجھا جا آ تومما برکرام وہال نماز اور کرنے سے احراز محتے مالانکریڈ نابت نہیں چنا پند خباب بن ارت بیان کرتے میں ،

بنی مسلی الدِّعلیه وسلم نے ایک و ن فرمایا اس مال میں کہ آپ سنے جہاں نماز اوا فرمائی، وہیں تشریف فرما تصف قبلہ ک مبانب ہاتھ کا اشارہ کرتے ہوئے فرماہ میں جاہتا ہوں کہ سحد میں اضا فذکر دیا عبائے۔ جب صفرت عمر فلی غریب سے تو کہنے لگے نما کوم جب صفرت عمر فلی غریب سے تو کہنے لگے نما کوم

علیه وسلم قال لوذد نا ف مسجد نا جا بهنا بول کمسحدیں اضا فدکر دیا جائے۔ وانشار سیده مخوالمعتبلة ۔ جب صفرت عمز لیف سین توکینے لگے نجا کوم صلی الدّعلیہ وسلّم نے قبلہ کی ما نب مسجد ہیں بقدر التحاضا فرکرنے کی نواس فلام فرما نگی

ان النبی حسلی انلک علید وسسلم

قال يوماوهو في مصلاة لوزونا

نى مسعيد نا واشار بسيد ۴ مخواهتبلة

فلما ولى عسر قال ان البتي صلى الله

حفرت عمر النام المردد وضاحت كرته بوئ فرما با اگر ذوا لحليف كى معجدين توسين مومات توسيمى مجكم مسح يمت متحد مبركى ، يز حفرت الوم ريره سے مرفوعًا روابت سبے كه يسول الندسل الندعايد وملم لنے فرايا اگر منا كى معجد ميں اصاف نوبو مائے تو تمام مجكم بريم سجد سبے ، اسى بنا پرا بوم ريره فروا اكرتے تھے ۔ اگر ميرے كھر تك مسجد آ مائے تو ميں يميس نماز احاكر لياكروں كا ۔

ان آثار کی روشنی میں متعدمین ائد کرام کہتے ہیں کہ فرس نماز کا امام کی اقترامین اور کرنے ہیں کہ فرس نماز کا امام کی اقترامین اور کرنے ہیں کرنا افضل سے دربعض متنافزین جراسے سے برکا حصہ شار منین دیشت میں محتبہ دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

YA

گریسے نہیں۔ اور صفرت ممری مبانب سے اصافہ شدہ مقام ہو قبلہ کی دیوار کی مبانب کیا گیا تھا ۔ آپ اس میں کوٹرے ہو کرنمازا داکرتے تاکہ لوگوں کو اس بات کا قائل کریں کہ جیت ہمی فائم مسجد بنوی میں قسیع میں ہے۔ معفرت محتم اللہ سے معفرت محتم اللہ سے دور خلافت میں ان کے بعد ولیدی میراللک سے دور خلافت میں ان کے مکم سے بھر بن معدالعزیز نے توسیع فرماتی اورسے بی میں کمیل ہوتی۔

كے مكم سے عمر بن عبدالعزیز نے توسیع فرماتی اورسے میں میں میں ہوتی۔ اس سال كونسنة الفقهااس لئة كها ما أسبه كه اس سال فقها كثرت كے ساتھ فو ہوتے جنائج فقبا رست عسعيد بن مسبب وغيره اسى سال فوت موت عابر بن عدالله سابقين اولين سيضمار درن واليها وربيعت العقبرا ودميست الرضوان ميں تركيب ہونے والے مسحد کی توسیع سے دوسال قبل نوت ہو گئے۔ان کے بعدان جبیا کوئی محابی مریخا : البقرانس بن مالک تھے لیکن وہ بجائے مدیز کے بھرہ میں سکونت پہریھے سهل بن سعدسا عدى مشته ميں فوت ،وية ، وه عبدِ رسالت ميں بالكل بيج تقه بس رشدکونہیں پینچے تقے ۔سائب بن یز پرکندی سافٹ میں فوت ہوئے ۔عبدالنُر بن ابی طلحہ اس کے بعد نوت ہوئے ا ورمحمود بن ربیع جس کے چہرے پر آپ سنے یان کی کلی پینکی تعیٰ جبکہ وہ پانے سا لیے تنے ستافیہ میں فوٹ ہوئے، ور ابوا مامہ بن سہل بن معنیف شاہر میں فوت بوئے۔ یہ تمام وہ سیا ہرام ہیں جوجہدِ رسالت میں سن تمییز کو نہیں بنیچے تھے کہ وہ آپ کے اقوال وافعال کونقل کرتے اور میدالنّد بن عمر توحیدالنّد بن زبیر کے قتل سے میلے *سائے چر*میں فوت ہوئے اور عبدالتد بن عباس ان سے بھی پہلے مثل^{ین} جرمیں فالف بیں وزت ہوئے ۔ ان صحابہ کوام میں سے کوئی بھی کا بیاس وقت موجود نہ تھا جبکمسجد میں تبدیل گئی ا دراس میں مجربے داخل کئے گئے۔ بیر مجربے سعبد کی مشرقی قبلہ جانب اور شامی مبانب محقے۔ ازواج مطہرات کے ور اسے ان کوفیمتاً خریداگیا ، ورسحد میں دانل كياكيا جمربن عبدالعزرنيان اسابهم كام كوسرالنجام مدياا ورجرة عالتشرص مبن آب مدفون

تھے۔ اس کے ورواز نے کو بنگرد کا اور اس کے گرد ایک اور دلوار بنادی گئی۔ اس کے محتمد دلال و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

بعدآب پرسلام میجنے واھے لوگ قراط سے بنسبت پہلے لوگوں کے ایادہ دوریکتے

مسئسلام التحييته

ماننا چاہیئے کہ وہ حدیث رجس میں مروی ہے کہ بوشخس مجدیر سلام کتا ہے، تو الندمجير پرميري رُوح كُورُكُم تاسب اورمين اس كے سلام كا جواب ديتا ہوں ، سالم تحية پرمشمل ہے ۔اس کی سند میں الوصخراوی مختلف فیہہے رکیلی بن معین سنے کہمی اس کو صعيعت كها حبيساكه امام نساتئ سنے بھی اس كوضعيف كها اوركھبی امام احمد بن منبل كی طرح کباسے کہ اس میں کچے حرج نہیں۔اسم صنبو ہ کی مروی ایک حدیث بھی قابل استنبا دنہیں ا و بچرا مصنمون کی صدیتی سسے قبر نبوی کی زیارت کے استحباب کو تا بت کرنا ممکن نبیں اورزيارت كف عفيوم كى تمام مديني كذاب بنعيت سنى الحفظ رواة بيشتل مين سلام التعبيّة جس كاحواب يسول الرم سلى الشعليه وملم كى طرف سند دياما ماسب، اس كالعديدي کا ذکرکسی مدیث میں نہیں ہیں کہ اس کوسی نبوی کے ساتھ خاص کیا جا سے گا ؟ کیا اس ت سن ده لوگ مراو بین جورد ضرئبوی کے قریب کھر سے بوکر سلام کہتے ہیں ؛ کیان سے مراوروئے زمین کے تمام لوگ مراد ہیں جوآب پرکہیں سے بھی سلام التعبة معیتے ہیں ان میں سے کسی تعین برکوئی ولیل موجود نہیں ،اسی طرح سلام التحبیّة او کچیآ وازسے کہا م یا پست آوازسے سلام التحقیقہ کہنے والے کوئمی شامل ہے ادرکیا اگرا دنجی آوا نے سے سلام التحبيته كباحائي وآب سنته ببي، مالا يحدوه احادييث صحح ببي جن ميں مروى ہے كـآبِ بر صلوة وسلام بنجانے کے لئے فرشتے مقربہی،لیکن اس بات برکوئی دلیل موہود نہیں کہ جِتَّهُ مُحِره سے باسرآب سلام بھیجتا ہے،آپ اس کے سلام کوسنتے ہیں۔ مجمع مدیث میں مروی ہے کُرُسُسجد میں دا مل ہونے والاانسان اگراپنی اواز کوا و نیا کرے تو وہ

گستاخ البیادب ہے بیں مسجد میں ادنجی آواز کے ساتھ سلام کہنا جب ہے ادبی ہے تواس كالازى نتيجه يزنكلا كرسلام آسمة آوازك ساته كها حاست توكيا حب بيت آوانك سا توسادم کہا ماسے گا۔ توسلام کہنے والے کی آواز آپ تک پنچے سکے گی معلوم ہوا کہ ... قرآن پاک میں بس صوفة وسلام کاذ کر ہے اور مدیث پاک میں جووار دہیے کہ وشخص کھ پرایک با رورو دسیجنا ہے، اللّٰہ پک اس پر دس رسین نازل فرماتے ہیں کمسی ملّبا وقت کے ساتھ مام شدیں "س ہیں وہ لوک ہوسجد نبوی سے یاروضۂ نبوی کے قریب آپ صلوة وسلام سين ببراو يو وولاكهول كرور دن ميلول سي آب برصلوة وسلام مي رس مين برابر بي ال مسب كانسلوة وسلام آب بروه فرشت بهنجا ديت بي جواس كام برامور ہیں او یہی ومرہے آپ کی قبرشرایف کی زیارت کے لئے سفر نشر مًا مشر وع نہیں ہے۔ بالفرس زبارت قرنبوی کے معمول کی کوئی صدیث سیح موجود سو تی تو مدیند منوره میں سكونت بذيرسماب مابعين پرايونسم كى مديث كيسے فنى رهكتى بھى اورا مام مالك ميسے ائمة يرفتولي كيس صاور فرما سكت عف كم ودرت قيدالني صلى الله عليد وسلم . كمنا مكروہ بے بعینى بدكهنا دكه میں سنے نبى صلى الله عليه دسلم كى قبرك زيارت كى سب ،كمرو ہ سے .

مئىي نبوى كن^{اي}ر<u>ت</u>

 بی نبیں، غالبًا اسی سے ریا یہ مشروع بھی نہیں ہے۔ پس ان لوگوں کہ قول اُ قرب الله المقال استعمال کرنا مکروہ ہے۔ الله المقال اس علی بی بی کہ آپ کی قبر کی زیارت اور اس عبر عبادت وغیر ہے۔ میساکہ اس کا ذکر پہلے ہو چکا ہے اور سجد نبوی کی زیارت اور اس عبر عبادت وغیر ہے کئے سفر کرنا لفس مربح اور اجماع کے سما تھ ثابت ہے صحاب کرام سے توافز کے ساتھ الیہ آ اُرم وی بیں جن بی سمجد نبوی کی زیارت کی ترفید به وجو دسے، مکر بھن اور مسل القدر الم علم سے وجوب بھی منقول ہے اور شروع اسلام سے ہردور میں علما۔ قول مسل القدر الم علم سے وجوب بھی منقول ہے اور شروع اسلام سے ہردور میں علما۔ قول عمل استحباب پرکھے شہری قریم کے باس مجھ بردورہ بھی عمل اس میں ہے ، من صلی علی عند قبدی جو میں اس کا ورود منتا ہوں اور توخف شمیری قریم کے باس مجھ بردورہ بھی سیس ہے ، من صلی علی عند قبدی سے میں اس کا ورود منتا ہوں اور توخف

دورسے مجھربہ در درجھ بجتا ہے اس کا در درجھی مستاہوں .

اس صدیث میں سمعت کے بجائے بغضہ مجھ ہے مسعت فلط ہے اس صدیث میں سمعت فلط ہے بہت میں سمعت فلط ہے بہت میں بغضہ کے بعض میں نظر ہے ۔ نیزیہ صدیث بیعتی اس بغضہ کے لفظ کے ساتھ موجود سبے ، لیکن امام بیم تھی اس دوایت پر تنقید کرتے میں بغضہ کے لفظ کے ساتھ موجود سبے ، لیکن امام بیم تھی اس دوای میں نظر ہے بیل الت ہوئے فرواتے بیں کم اس کی سند میں محمد بین کم اس کی سند میں محمد بین کم اس کی ساتھ آ ب پر سلواۃ وسلام بھیجا جانا جا بیتے ، ابوداؤدی صدیث میں اس کی تاکید موجود سبے ،

منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

قال مسول الله صلى الله عليدولم انعنل ايككم يوم المجمعة نب خلق أدم وفيه قبص وفيه الشفعت ودنيه المصعقة فاكثر واعلى مس الصلوة فيه فان صلواتكم معروضة

محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و

کے ساتھ در ددیمی باکرو اس کئے کہ تہا را در ودم میں بہٹ کیا جا آ ہے صحاب نے عض کیا آب برکس طرح ہما را عدود پیش ہوگا ، جبکہ آپ بوسیدہ مہیں بھے ہوں گے۔ آپ نے

على قالوا وكيف لغوين صلوا تناعيك وقد ارمت يغولون بليت فقى ال ان الله حومرعلى الارض ان تاكل

ا جسا د الانبسياء -فراياكه الترف زين برنا مائز كرومايس كه وه انبياء كح مبول كولوسيده كرسي -

یر حدیث ابودا و دکھے علاوہ نساتی ابن ما من ابوطائم بیبقی بیں موجود سے نیزاب کا ہم وغیرہ میں اس کے شوا ہرا در معی موجود ہیں ابن ماجہ میں سبے کہ جمعہ سے دن مجھ برکترت کے سابقہ درود میں جو، وہ ایسا دن سبے جس میں فرشتے عاضر ہوتے ہیں اورلوگوں کے درود مجھ بر پہنیں کرتے ہیں صحابی سے کہ تصرت کیا موت کے بعد جونی کیا ہاں ہو تھے بعد کا بعد میں کا اس کو تھے بعد کا میں کے اور کی کا جائے کہ میں کے دہ بیٹے ہوئی کی کے کہ دہ بیٹے ہوئی کے اور کے جمعول کو کھائے۔

اسی صنمون کی حدیث کوان جرر طبری نئے تبذیب الآ آزیں روایت کیا ہے۔ نیز الودا قد دیں حضرت الوہر رہ بیان کرتے ہیں کہنی اکرم صلی التُدعلیہ وسلم ننے فرایا اپنے گھڑل کو قبریں نہ بنا وَ اورمیری قبرکو میلہ نہ بنا وَ اورمجے رپر وُرود دھیجتے رہو، تمہا را دُرود مجوّزاک پہنچا سبے جہال سے بھی تم جیجواس کی شوا ہدمرسل روایات موجود ہیں جواس کو تقویت پہنچا رہی ہیں۔ سنن سعید ہن منصور مین ان الفاظ کے ساتھ روایت موجود سبے نیزسنن سعیدین

سہیل بن ابی سیل بیان کرتے ہیں کہ مجھے میں بن سی بن ابوطالب سنے قبر بنوی کے مشمن بن سی بن الوطالب سنے قبر بنوی کے قریب دوہ فاطمہ کے گھر میں شام کا کھانا کھارہے تھے کہ آقہ شام کا کھانا کھا دہ عدم رفہت کا اظہار کیا، اس براس سنے بیچھاکر تو قبر بنوی اظہار کیا، اس براس سنے بیچھاکر تو قبر بنوی

تال سهیل بن ایسیل دأنی المسیل دأنی الحسن بن الحسن بن علین الی عندالمت بر نتا دانی ده فی بیت فاطمة یشتشی فقال هلم الی العشاء فقلت لدارید و فقال مالی دائیت تک عند الفیر فقات سلّمت علی النبی صلی الفیر فقات سلّمت علی النبی صلی

محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتب

الله عليه وسلم فقال اذا دخلت کے پاس کس ملتے کھڑا ہے میں نے کہا کہ . المسجدنسلم عليه ثنم قال اس ملام کھنے کے لئے اس سے کبامسجد میں لی ويسول الله صلى الله على وسسلّم بوسف وقت بنى اكرم صلى التعطيه ولم بإملام قال لانتخذوا بيتي عيدا ولاسيتكم كبو بيمراس نے بيان بيا كەرسول الترسال له مقابولعن الله البيهودوالنصارى عليه وسلم كاارشا دہے كرميرے گھركومبلدر اتخذوا فتودا نبياء هم مساجل و بناناا ورانب*نے گھروں کو قبرین* نبانا بیڑی^و، صلّوا على فان صلوا تكم تبلّغنى حيثها عيسايُوں يلعنت بوالفكى جنبوں نے اسپنے بيغمبرول كى قبرول پرسىدىي تعميركر ڈاليں ور مندالاسواء. مجه بردرو دنجميع بي شك تها را درو كي تك

كمنتمر انتتم ومن بالاندلسب

میبنجانسے، جہال بھی تم ہوتم اورا ندلس کے لوگ ایک میں ہو۔

اسى طرح اسما ميل بن اسحاق قامنى في فنشل القتلوة مين ذكريا بي كرايوب منتياني فرات بین که مجیے بی خرول ہے کہ ایک فرشۃ اس کام پُرتعین سے کہ وَتّحف بنی اکرم سل اللّٰہ علىبدوسلم پرورود بحيجتاسيد وه آب كك بينجا ويتاسه او يسلام كينجان كاذكرنسا أيمين موجود ہے۔ بنی اکرم صلی النّہ علیہ وہلم نے فرما یا کہ النّہ پاک نے الیسے فرشتے مغر فرما رکھتے ہیں جوزمین میں پھرتے رہتے ہیں اور میری امت کی طرف سے سلام پہنچاتے ہیں۔

نیزعلی بن سین سے روایت ہے کہ اس نے ایک آدمی کودیکھاکہ وہ قرنبوی کے دیب ایک کھٹرکی میں داخل ہوا، تواس نے اسے روکا اورکہا کہ میں تہیں رسول اکرم صلی التُرهلير سِلم كى مديث بتأنابول- آب نے فرواياكم تم مرسے كھركومبلدند بنانا وراسية كلمركوقبري نربنانا تم جہاں بھی ہوتمہاراسلام مجھ تک بینی اسے اس مفترون کی معروف مدیثیں متعدد طرق سے مروى بن السب كالمخص يبي سم كامت سع وتخف يمي أب معلوة وسلام بحييزا سه. اس کاصلوة وسالام آب برگهنچ سبے، لیکن کسی روایت میں مذکور نہیں کہ آپ درو د رسلام

کی واز کومنتے ہیں، اللبہ وہ لوگ جو آپ کی قبراطہر کے قریب کھرے ہو کر آب پر سلام كتية بن توآپ عوا بُي ن كوسلام كيته بن عبس طرح كزنمام مومن معبى جب إن پرسلام كميا حاليه توده سلام كاحداب دينت بير. س بير رسول اكرم صلى التعليدوسلم كى مجتمع ومسيت بيسيم اورىيە سلام وەنىنى ہے جس براللە كى دس بارسلام تھیجنا ہے جس طرح كدا يك بار درود تمييخ واليردس رحمتين نازل موتى ببي ادربه درود وسلام وه سيحس كا ذكر قرآن باك میں ہے ا در یہ در دکھی خاص مبئ کے ساتھ خاص نہیں اور فبرا طہرکے قریب سلام کہنے اور آپ کا سے جواب و بینے کی حدیث پہلے گزر کچی ہے ، اس کی سند قا بل مجتب نہیں ،اگرمیعض دوسری صر تیوں سے اس کامفہوم آبت ہے، لیکن سندس محمد بن مروال تقرنبیں ہے۔ امام مجاری فرواتے ہیں کراس کی مدیث کو تخریر ذکیا مائے جوز مانی نے اس کو ذامب الات كى لناتى نے كهاكد وه متروك الحديث ہے اور يجبى جارحين نے اس كى جملىروايات كوفير مفظ تواردیا ہے: البتہ ویگرامادیث کو ملاتے ہوئے یہ کہاجائے کا کہ آپ پرصلوہ وسلام کوہنجا نے کے لیتے فرشتے مقریبی ورنہ ہے اسن ابت نہیں اسی طرح بعض جا بل لوگوں ایکمناک آ ب جمعہ کی داست ا در دن کوخصوصیت کے ساتھ سنتے ہیں بالکل باطل ہے ا در اسی طرر گ ينظريك إبتام مخلوق كي وازول كوسنت بين بالمل تغوي . يه وصن تورب العالمين کا ہے ہوتمام کی آواز کو سنتا ہے، ارشا ور بان ہے ا كايول يغيال كرتے بن كيم ان ك

امتيحسبون انالانسسع سوخم ونجواهم بلئ ودسلنا لمديهم يكتبوك

(الزخرن) ۸۰

نيزونسره*اي*، مايكون من نجوى

ثلا**تة الامور العهم ولاخسست**ر الاهو محكم دلائل و برابين سے مزين متنوع و منفرد مو

ِضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

پوشیده باتون اورسرگوشیون کوسنته نهین؟

بإں ہاں دسب مینتے ہیں) اوربہائے فرشتے

ان کے پاس ان کی سب باتیں لکھ لیتے ہو

سمسي مبكة من شخصون كالمجمع اور كالول مين

مىلاح مشوره نهيس موتاء كمروه ال يس يجتما

سوتاسیے اور مزکہیں پاپنج کا مگروہ ان میں چھٹا سوتاسیے ۔

سادسهم. رالمجادله ۲

پس بولوگ برنظریه رکھتے ہیں کہ اللہ پاک کی طرح کوئی انسان بھی تمام بندوں کی آوازہ کوسنتا ہے۔ ان کا برنظر برعدسا بیّول والاسہے جمیسے کوالٹر ماشتے ہیں اور جو کام لوگ کرتے ہیں ان کو وہ مبا نتا ہے ، ان کی آوازوں کوسنتا ہے ، ان کی پکار کا حواب دیتا ہے

اس نظريد كى تردىد كرتے موسئے الله پاک فرماتے ين :

لقد کعذا لذیب قالوا ان الله مریم که بیش کافر پی جوکتے پی که موالسیع ابن مریم وقال المسیع یا مریم کے بیٹے میس موالئی مسیح مدا بین مالانکم مسیح من اسوا شیل اعبد ولائله دبی و دبیم میرو دسے کباکر تے تھے کہ لے بن امراتیل امارت کی معاوت کر دوج میرانجی پر دوج کا لیے امارت کا میں میشوث بالله فقد حوم الله علیہ

الحبسة وما ومد المناد وراللظلمين أورتمباراتجي اورمبان ركعوك بوتنع مفداك

من انصاد والماشده ۲۲ مسات مرام

كردس كا وراس كاعظار دوزخ ب اور ظالمون كاكوني مدد كارنبير

نیز فرمایا: لقد کمفرالدذ بین وه لوگ بی کافر بین مجاس بات کے قاتل بین کرفداتین میں کا تیمسراہے، حالا نکم

المه الدالمه واحد وان لم ينتهوا الممعبود كيّا كي واكون عباوت كلّان نبين عما يقولون ليمن المدين كفروا الريول البيرة المرادن المرادن الريول البيرة المرادن المردن المرادن المرا

منهم عن اب اليم اخلا يتوبون الى أيش كئ توان مين م كافر وست بين و تكليف الله ويستغفرونه والله غفود وين فرا عنوا الله ويستغفرونه والله عنود

دهیم ما السیح بن مریم ایدسول کے آگے تو بر نہیں کرتے اور اس سے گنا ہو تدخلت من قبله الرسل واسه کی معانی نہیں ما نگتے اور ضرا تو بخشے والا مزن

محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

صديفة كانايا كلان الطعام الميس الميس الميري تومون فعد الكريم برقي النظر كيم المين الميم المالية مشعر النظر النايد والمناي المنظر النايد والمنايد و

سیدالانبار کے متعلق ارمٹ وربانی ہے :

قل انی لا امل*ت* ککم صنوا ولایشدًا دا لجن) ۲۱

نيزفوليا: قل لا اقول لكم عندى خوات الله ولا اعلم الغيب ولا اقول لكم الغيب ولا اقول لكم الغيب ولا اقول لكم الى ملك دالالغام ، ۵۰ نيزفره الما: قل لا املك لنفسى صنول و لا نفعا الاماشاء الله ولوكنت اعلم الغيب لاستكثرت من الخير

وما مسنم_ السوء دالاعوان،٨٨١

یه که دوکه مین تمبارسے تی بین نقصان اور نفع کا کھے اختیار نہیں رکھتا۔ کبر دوکہ میں تم سے بینہیں کہتا کہ میرے پاس اللہ پاک کے خزلف میں اور نہ یکہ میں فیسہ! نتا ہوں اور نہم سے بہ کتا ہوں کوئیں فرشتہ ہوں۔ کبر دوکہ میں اپنے فائد سے اور نقصان کا بچریجی اختیار نہیں رکھتا، مگر ہو فدا چاہے اور اگر میں فیب کی باتیں جانا ہو تا تو بہت سے فائد ہے جم کرلیتا اور مجر کو کوئی تکلیف نہنچی۔

الآماشا - النركاك متثناء

اس كه تستن د و قول بين استنام تقسل كي صورت بين يمعني مو كاكراب اس چيز كے مالك بں جس کا آپ کو النہ لنے مالک بنا دیا ہے۔ استثنا رمنقطع کی صورت بیں معنیٰ یوں سوگاکہ می مورت میں مجھے نفع، نقصان کا افتیار نہیں ہے، دہی کھے ہوتا ہے جوالٹر میا شاہے۔ مضرت ابرابيم عليه الستادم من كها بخا :

جن کوتم شرکیب بناتے ہوا میں ان سے نبين وزا المرارب بوما بتائد

ولا اخاف ماتشوکون ب الآ ان بشاء دبشب شيئاً.

لینی مجھے تمہا رہے شرک وعنیرہ سے کھے نوٹ نہیں، ہاں میازب جو بابتا ہے وہی کچھ سؤنلب اوراً گروه نهیں ما ستاتو نبیں سونا وہ کونہیں کرسکتے، اسی طرح النّدیا کے ارتباد وه سفارش كالجماختيان بيس ركفت بال بوعلم ولیتین کے ساتھ گوائی دیں۔ وہ سفارش

ولايملك السذين بيدعون من دومذ الشفاعة الآست شمعد بالحق.

دالنغدث، ۸۹

میں بھی میجے قول میں سے کہ استثنا رمنقطع ہے؛ البقہ موحی کی شہادت دیتاہے اس کو شفا

فائدہ دیتی ہے جس طرح دورسے مقام میں فروایا: ولا تتنفع الشفاعة عنده الة

لىن 13ن لە- دالسبا ، ۲۳

ا ورفد اکے بال کسی کے لئے سفائق فلم نہ دے گی مگراس کے لنے جس سے بارے میں وه اجازت بخنے۔

> *اورفروایا* تعل لله المشعناعة میں سہے۔ جمیعًا والمذسو، ۴۸

كه دوكه سفارش مرون فعرابي كحاضتيار

فاسنى عياض كانقطه نظر

قاضی میاض و کرکرتے ہیں کے قبہ نوی کی زیارت کرنامسنون سے اور اس پراجماع ہو پھا
سے۔ نیز زیارت کرنے کی ترخیب ولائی گئی سے، لیکن اس اجماع کی بچر حقیقت نہیں یا در کھیں
سلسف خلف کا اجماع اس پرسپ کر سجد نبوی کے لئے سفر کیا جائے۔ وہاں آپ پرمیاؤہ و
سلسف خلف کا اجماع اس پرسپ کر سجد نبوی کے لئے سفر کیا جائے۔ وہاں آپ پرمیاؤہ و
سلام بھیجا جائے اور آپ کے لئے وسید طلب کیا جائے ،اس کا نام بدل کرا گرکوئی شخص
سرا معیجا جائے اور آپ کے لئے وسید طلب کیا جائے ،اس کا نام بدل کرا گرکوئی شخص
سرا کہ دے کہ قبر نبوی کی زیارت پر اجماع سے تو ہم اسے کیا کہیں سوائے اس بات کے کہ
برنظریہ حقیقت ثابتہ کے منانی سیدے۔

اسحاق بن ابراهيم فقيه كالقطة نظر

اسحاق بن ابراسیم رقسطراز ہیں کہ بہیشہ سے لوگوں کا بہ وطیرہ رہاہیے کہ جب وہ بہاٹگر کے گا کا سفر کرتے ہیں، تو مدینہ منورہ کا بھی قصد کرتے ہیں سجد نبوی میں نمازی ادا کرتے ہیں رجنت کی کیاریاں ، منبررسول ، قبراطهر پہاں جہاں آپ مجلس فرمار ہے جس جگر آپ کے قاموں سنے پکڑا کھجور کا وہ تناجس کے ساتھ کے قدم مبارک لگے جس چیز کو آپ کے ہاتھوں سنے پکڑا کھجور کا وہ تناجس کے ساتھ لیک لگاکرآپ خطبروسیتے رہے جس جس جس مقام پرچھرت جرمال و جی لے کو اقرے اور جہاں جہال صحابہ کرام سے آثار موجود ہیں ، ان کی زیارت سے مشرف ہوسنے کو اپنے لئے سعات مسمجھنے رہے اور عبرت حاصل کرتے رہے ۔

مغالطهكازد

یادر کھتے جس طرح عام فہول کی زیارت ہمکن سے ،اس طرح دسول اکرم علی الٹر علیہ دسلم کی قبراطہر تکب پہنچنا ہی بڑامشکل سہے ،جبحہ دوسری عام قبروں کہ پہنچنا شکل نہیں اس لئے کرسلمان عمو گا کھی فف میں وفن کئے جاتے ہیں اور آپ حجرہ میں فن کئے عاشے ہیں اور آپ حجرہ میں فن کئے مطرف کئے مصرت عائشہ صدیقہ بیان کرتی ہیں کردسول اکرم مسلی الدُعلیہ وہ آ ہے مرف الموت میں فرمایا یہو د ہوں عیسا تیوں پرالٹر کی لعنت ہوجنہوں نے اپنے پیغبروں کی قبروں کوم مرب بنا ڈالا۔ بدکم کرآپ اپنی امت کواس کام سے ڈرارسے ہیں جس کووہ کے لعنت خداوندی کے مستحق کھی ہے۔

قبرنبوی پر مدعات

چنانچ کڑت کے ساتھ جب زائرین نے قراطم کی زیارت کو باعث سعادت سمجماتو زیارت کے ساتھ ساتھ جب زائرین نے قراطم کی بلکہ مجرة عائشہ کا طوا ف ہونے لگا اور سحبہ ہونا شروع ہوگیا ہوکہ بالا جماع کے ضریبے۔ زائرین کے دلول میں باطان ظریم باگذیں ہوگیا کہ انبیار کے مدفن کو سعبدوں پرفضیلت ہے اور نہ صرف بیکہ ان کی زیارت کی مبات بہدان سے اور نہ صرف بیکہ ان کی زیارت کی مبات بہدان سے در نہ مرف بیکہ ان کی زیارت کی مبات بہدان سے در نہ مرف بیکہ ان کی زیارت کی مبات بہدان سے در نہ مرف بیکہ ان کی زیارت کی مبات بہدان سے ہوئی کے ملب کی مباتیں اور ان برسعبدیں تعمیر کی مباتیں اور وہ سعبدیں جورضا ہے

اللی کے لئے تعمیر کی گئی ہیں ان پران مسامبر کو فغیلت ماسل ہے، بلکہ میہاں کک بیت للہ کے ج کرنے سے دہ نظیلت ماسل ہوتی جو ابنیا مسامین کی قبوں کا ج کرنے سے ماسل ہوتی ہو ابنیا مسامین کی قبوں کا ج کرنے سے ماسل ہوتی ہو ابنیا مسامین کھر ارتدا وسمجما جا آ ہے۔ شریعت اسلامید ہیں اس کی کچھ گئی تش نہیں اسلامین مسبحہ نبوی کو سعبر عرام کے بعد فضیلت والا بتایا گیا، اسی گئے آس کی زیارت کے لئے سفر کی اجازت نہیں سبے یہی وجہ ہے کہ زیارت کے مضمون کی کوئی مدیث مجے نہیں ۔ مضمون کی کوئی مدیث مجے نہیں ۔

امام مالك كاقول

اہل مدینہ جب سعد نہوی میں آئیں یا باہر جائیں ان کے لئے قبراطہر ہر وقوت

کرنالازم بنیں ---- البسنة باہرے آنے والے قبراطہر ہر وقو من

کرسکتے ہیں اور آپ کے لئے اور حصرت البابح ، حصرت عرکے لئے و ماکر سکتے ہیں بھائی معالیم الم سے تابت تہیں کہ وہ آپ کی قبر ہر وقوت کرتے ہوں ۔ بیس اس امت کے معالیم کام کو کا کو سے تابت تہیں کہ وہ آپ کی قبر ہر وقوت کرتے ہوں ۔ بیس اس امت کے سُلف اُخری کو کو کو کا کو اُسلام اسی را ہ بر صلح سے ہوسکتی ہے ، جس را ہ برامت کے سُلف عیات رہے ۔

<u> قرنبوی کی زیارت کے لئے نذر ما ننا</u>

امام مالک فرماتے ہیں کہ چشخص قرنبوی کی زیارت کی نذر مانتا ہے ،س کوندر لوکی نہیں کرنی نذر مانتا ہے ،س کوندر لوکی نہیں کرنی جائے مدیث محم میں نہیں کرنی جائے۔ مدیث محم میں سبے کہ صرف بین سمجدول کی زیارت کے لئے سفرا ختیا رکیا جائے ۔ پس فبر نبوی کی زیارت کے لئے سفر کرنا خرع احمد محمد اس کونہ توعبا دت کہا جائے گا اور دہمی پسفر اللہ اور محتمد دلائل و بداہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

اس کے دسول کی اطاعت کاسفرہوگا، بلکہ بہت فرشرک، برعت کاسفرہوگا، اس میں نیت کو معیار قرار دیا جائے گا۔ اگر نیت مسجد نبوی کی زیارت سے توسفر ستحب ہسجہ نبوی کی زیارت سے توسفر ستحب ہسجہ نبوی کی زیارت سے توسفر ستحب ہس مستحب اگر کی زیارت سے مسلوۃ وسلام کا بدیجیج سکتا ہے اگر نیت قربنوی کی ہے تو بھی نیت قربنوی کی ہے تو بھی نیت اسی طرح اس کی مستحب میں مبتلا کر وسے گی ، اسی طرح وس اور خوص مدید متورہ ، بیت المقدس کا سفراس کے افتا ارتبار کرتا ہے تاکہ وہاں قروں اور ابنیا رکے آثار کی زیارت کرے گا تو بھی اس کا یسفر شرعًا نا جا تو بوگا اس مفرکو مستحب ابنیا برے آثار کی زیارت کرے گا تو بھی اس کا یسفر شرعًا نا جا تو بوگا اس مفرکو مستحب کہنا یا استحباب پر انجاع کی چھاپ لگانا سراسر جھوٹ اور خلط میانی ہے جقیقت یہ سے کہ اس کو مستحب قرار دینے والے اسلام میں اپنی طرف سے پوند کاری کر رہے ہیں۔ اس قسم کی فلط بیانیوں سے اصراز کرنا چا ہیئے اور شریعت کے واضح اصحام کو بدلنے سے ڈرنا چا ہیئے ۔

مسلمان بهان کی زیارت کے لئے سفرکرسکت ہے اور وہ اس سے اللّٰہ کی فحبت کا مقدار بوتا بساتوكيا ومرسه كدرسول اكرم صلى التُدعليه وسلّم دجن كااحرّام فوت بوسف کے بعد مجمی اتناہی رہنا میا ہیتے مبتنا کہ زندنی میں تھاا ورجن کو الٹریاک نے متب ام مخلوقات پرشرف بخشا ہے اورجن کی وجہ سے مہیں ہوایت حاصل ہوتی اورجن کی بہت سے ہم شیطان سے محفوظ مہسئے اور جوہم پراس قدر دمیم ہیں کرجہتم سے بچاہئے کے لئے زندگی بجرکوشال رسیدے کی قرکی زیادت کے لئے سفر ماکیا مائے۔ جعلیب ، جن امادیث سے رسول اکرم صلی النّرعلی وسلم کی قرکی زیارت کے استمباب پراستدلال کیاگی ہے ان میں صراً حَثاً ذکر ہے کہ ایک مسلمان دور مصلمان کی زیارت سمے گئے مبا ناسبے جبکہ وہ زندہ سبے۔ زندگی کے بعداس کی قبر کی زیارے کا ذکر مدسیث میں نہیں ہے بس حبن شخص کورسول اکرم صلی الٹرعلیہ دسلم کی زیارت ماصل ہوئ، وه محابہ کرام ہیں جن کو خیرالقرون کا لقب ملا، لیکن کیا جب آب فزت ہوگئے ہیں، تو آپ کی قبرکی نریارت بالکل اسی طرح سیے جس طرح کرآپ کی زیارت صحاب کوام لے کی جب كرآب ان كے درمیان تصف ظامرہ كراس كواس پر قیاس كرنا بالكل غلط سے كسى مجى الم سے يہ استدلال منقول نبير كداس سے آپ كى قبر كى زيارت كو آپ كى زندگى كى زيارت كےمسادى قرار ديا ہويا اس پرقياس كيا ہو كيا پر عتيقت ننہيں كہ وجمعن اپنے علي کی اس کی زندگی میں ملاقات کرتا ہے وہ ندمرف بیکہ اس کامشا ہرہ کرتا ہے، بلکہ اس كُفتْكُوكر البعد ،اس كى كلام كوسنتا بعد -أبس من سوال جواب بوتا سهد، ليكن الركام ال مب ونت بوماست وكياس كى قركى زيارت كرسفس اس كامشابده كرسك كاياس کا کالم مسن سکے گا ہرگزنہیں - اس طرح میتخفی دسو لِ اکرم صلی الڈعلیہ وسلم کی قبراطہ کی زیارت کردے گایااس داوار کامشامرہ کردے گا جو آپ کے حجرہ سے گرد بنی ہوتی ہے،

اس کورز قرآب کا دیدار حاصل ہوگا نہ آب کا کلام سن سکے گا نہ اس کوآب کی مجلس کا نرف ما ساکو ہوئی نرف ماصل ہوں گی تو بھراس کو محابہ ماصل ہوں گی تو بھراس کو محابہ کرام سے شمار کرنا چا ہیں کہ شنہ نہیں کیا کوئی شخص اطل اور غلط ہونے میں کچھ شبہ نہیں کیا کوئی شخص ان کو محابہ کرام میں داخل سمجھ تا ہے ؟ ہرگز نہیں۔

م آپ کی زندگی میں آپ کی *طرف سفر ہیجر*ت

فتح کمت بہلے جب ہجرت کا حکم دیاگی توسی ابرام کم کم کمرہ سے ہجرت کرکے مدیزہ توا پہنے لگ کئی جب ہے آرڈ فرطا کا فتح کم کے لیز جرت نہیں ہے، تواپ کی جانب ہجرت کرنے سے صحابہ کرام کرک مکتے ۔ بھی وجرسے کر جب فتح مکت کے بعد صفوان بن امیہ ہجرت کر کے مدینہ آسے توا کہ ہے اس کو والیس مکہ جانے کا حکم دیا ، اس طرح وہ اسپرلوگ ہوفتح کمر کے قت رہاکہ وسینے گئے ، انہوں نے بھی مدینہ کی جا نب ہجرت نہ کی ۔

وفودكا اسلام كعست سفركرنا

میم دیجھتے ہیں کہرسول اکرم سی الترعلیہ وسلم کی ضدمت میں وفود آتے آپ کے باتھ پراسلام کی بیعت کرتے منروری تعلیم حاصل کرتے اور واپس جلے جاستے ۔ خصوصیّت کے ساتھ آپ کی خدمت میں وفود ہنج اِسی لئے خصوصیّت کے ساتھ آپ کی خدمت میں وفود ہنچ اِسی لئے اس سال کوسنتہ الو فود کہا جا آ ہے۔ مرض الموت میں وفود کے بارسے میں آپ سنے وصیّت کرنے ہوئے ورا ایا ہمود یوں، عیسا تیوں کو جزیرۃ العرب سے نکال و وا درص طرح میں وفود کو الغام واکرام کے ساتھ اوار آنا تھا، اسی طرح تی میں ان کے ساتھ مرق و ممدر دی کے ساتھ بیش آؤ، چنا بینہ وفد حو بالقیس کا آپ کی ضدمت میں آنا ور شروری تعلیم حاصل کرکے توم کی جانب وابس جانام شہور ومعروف ہے۔

معلوم ہوا جب آپ زندہ تھے،آپ کی خدمت میں دُور درازسے سفرکر کے آنے والعالم شريعت بيكفته، آپ كاكلام مبارك سنته اور آپ كى زيارت كے لئے آتے تھے، ان كاأنا فيني كاكام على، وه آب كا المرام كمت عقد، ليكن كياان ميس سيكسى في آب ك عبادت كن بركز نهيس آي تولوگول كومعمولى فلطيول سے بازرمنے كى تلقين فرماتے، چر مانیکه آب این آنکموں کے سامنے شرک جیسے براسے گناه کا ارشکاب مونا دیکیمیں۔ آپ توا تنامجی گوارا نفرمائے کہ آپ بیٹے ہوتے ہوں اور محالبکرام کھڑسے ہوں۔ ایک بارآپ نے ڈانٹ بلاتے ہوئے فر ما یاکہ تم فارس، روم کی طرح احترا ما کھڑے ہوتے ہواں سے ماز آ ۋرمسندا حمد بن منبل میں سے کہ صحابر ام کو آہیے زیادہ کوتی مجموب نہ تھا، لیکن بایں ہمدوہ آپ کے لیے کھڑے نہیں ہوتے تنفے اس لیے کدوہ مواسے تھے كرآب ان كے كھ اے ہونے كو بنظر كرائيت و تيجيتے ہيں ميج مسلم ميں ہے كہ ايك بونڈی نے جب کہاکہم میں وہ نی ہے جوستقبل کی باتیں مانا ہے او آپ نے عیظ د غصنب سمے عالم میں فرما یا برکلمہ نرکہو' اس سے پہلے حوکہ رہی تھی' اسے دسراتی رہو۔ پر ا پ جب بھی اپنے سامنے سی فلط کام کودیجھتے اس سے منع فرواتے اوراب بولوگ قروں کی زیار*ت کرتے ہیں و مال مختلف تنم سے تمرک دیدعت کے کاموں کے مزلک* ہوتے ہیں مبیاکہ مشرک اور بہودی اپنے عقیدت مندوں کی قبروں پر مذصرف برعاقة خرافات کا ارتیاب کرتے ہیں ، بلکہ مثرک اور غلو فی المحبقہ میں اس قدرمتحا وز موستے ہیں كر أن كومشكل كشاهمجين لگ جاتے ہيں ،اسى ليے دسول اكرم مىلى التُدمليہ وسلم نے ان پرلعنت فرمانی مواسینے پیمبروں اور نیک لوگوں کی قبروں کو سجدیں بنا تے ہیں کیس کسی قر کومسید بنانا لعنت کے استحقاق کا فعل ہے۔آپ کی قبرمبارک کا قصد کرنامی آپ کی قبرکومسجد بنا نا سے جس سے روکا گیا ہے اور توبعنت کا کام ہے اور بیجی یا در کھئے كرآب كى قبركى زيارت ميس كوئى دىنى مصلحت نهيس سے اور ندنى اس سے الدكا قرب محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

ماصل بوتاسید - بال آپ بارصالحة وسلام میسینے کے گئے قبراطبر ریماضر بوناصروری نهیں - اگرآپ کے دل میں رسول اکرم صلی الله علیہ وہلم کی مجتب اور احترام موجود ہے تو آپ سرم گرسے ان ریصالوۃ وسلام کا ہدر میسیج سکتے ہیں ۔ پیس زندگی میں آپ کی زیارت میں صلحت کا رفر مارہی اور قبراطہر کی زیارت میں مفسدہ تو موجود ہے مصلحت راجبری وہ منہیں ہے ؛ اللہۃ مسیو بنبوی کی طرف سفر کر سنے میں مصلحت را حجم موجود سیے ۔

مَن ذارنى بعدماتى الحديث كم قيقت

رُسول اکرم صلی النْدعِليديوسلم كى قبراطهركى زيارت سے استحباب پربعن لوگ ير مدیث بیش کرتے میں کر جسٹی نے میری و فات کے بعدمیری زیارت کی کویا کہ اس نے میری زندگی میں مبری زیارت کی ۔ اسی طرح عبدالنّد بن عمرسے مردی موسیث که ^{رو} النّر مسلى التعطيروسلم فف فرما باجس في حج كبا أورميري وفات كي بعديري قركى زيارت كى توگویااس نے میری زندگی میں میری زیادت کی میصدیث انتبا درجرک کمزورسے -اس مدیث کے راوی عفص بن سلیمان غا ضری سے بار کیمی بچئی بن معین کہتے ہیں کہ وہ تقرنہیں سے امام بخاری اس کومتروک کہتے ہیں علی بن مدینی سے اس کومنعیف قرار دیا ہے۔ دیگر جرح تعدیل سے ائرتہ نے اس کی جملہ اما دیث کو منکر قرار دیا ہے - ابن عدى كيت بي اس كى روايت كرده اكثر *حديثين غير فحفوظ بين -* حافظ طبراني معم بين مي^{ر دايت} ایک اور سند <u>سسالئے ہیں مگر</u>اس میں لیٹ اور زوجۃ جدہ دونوں مجبول ہیں نیز ا**س مدی**ٹ کا متن بھر فخابل ا متبار نہیں ہے کیا وہ شخف مواپ کی قبراطہر کی زیارت کرتا ہے۔ وہ محامہ کی مانند ہوسکتا ب، ببكم محموين مين محابرام كى فضيلت كم متعلق مديث واردب كراكركون شف احديها کے برابرسونا خرچ کردے تو بھی وہ محار کرام کے ایک مدا ورنعسف مدکے تواب کے برابرهبی تواب ماصل نہیں کرسکتا۔اس قد رفضیلت کے ہوتے ہوئے عیرصحابی کوسحابی

محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

کیصف بین کھواکر ناکیسے درست بوسک سے بھراس بات برتمام مسلمانوں کا اتفاق ہے کہ جہاد کا آج کرنا ایسے اعمال ہیں جن کوہرِ مال زیارت قبرنبوی پربرتری ماصل سیے ، تولازم -ا آئے گاکہ جہاد ، ج کرنے والے لوگ گویا کہ آپ کی زیارت کرنے والے ہیں اور آپ ک زیارت کے ملتے سفرگرنے والے ہیں وہ شخص (جو کہا سے کہ آپ کی وفات کے بعد آپ کی قبراطہر کی زیارت کرنا اس طرح ہے جس طرح کہ آپ کی زندگی میں آپ کی زبارت کرنا ہے کو تول کہ رہا ہے ا دراس کی تقل میجے نہیں ہے ۔ ہا در کھنے مینت کی قبر كى زيارت نترميبسيم تعصو وصاحب قبر كے لئے وُعاكر نا استغفار كرنا ہوتا سہے اور رسول التُرصَل التُرطيبه وسلم محيي مين بوردُعامشروع سب، وه آپ پرصلوة وسلام ين ہے، خواہ کہیں سے آپ بھیمیں ۔اس کے لئے آپ کی قبراطم رریانا لازم نہیں اور نہ بی زياده فضيلت كامامل بهع البتة مسحد نبوى مي آناا وروبال آب برورود سلام بمينا ز یاده فعنیلیت والا سبے، اس لئے کمسی نبوی کودیگرمسامد پرفعنیلیت حاصل سیے او مسى نبوى كى فىلىدت قىرنبوى كى وحرست نهين سے -آپ كے وہال مدفون مونے سے بہلے، نیزاب کی قبراطہ کے سعد نبوی میں داخل ہونے سے پہلے بھی اس کوفسیلت ماصل بھی اور پوعبا دائ رسول اکرم صلی الٹرعلیہ وسلم کی زندگی میں سیحد میں ا داک ماتی تھیں ۔ آپ کی وفات کے بعد بھی انہیں سجد میں اوا کمیا ما آبار لم اسی طرح سلام ودرود جى جس طرح آپ كىسىجەمىي مبيجا ما تا را، دىگرتمام مساجدىيں سے بھى جىجا جا تا^ارىل^{ا،} بلكم مروه مبكة جهال نماز ريط هذا مائزيد، وبال سد درود وسلام معيجنا تهي ما ترسيد امّستِ محدید کی خصوصیّعت سبے کرتمام د وسے زمین اس کے لیے مسٰجد بنا دی گئی سے بیس صلوة وسلام كے لئے قراطهر رواضرى دينے كے لئے سفركر ناماز مبي عبرالله بنعمر بھی آپ کی فبرکے لئے مربیزی جانب سفرنہیں فرماتے تقے بلکہ مدبیز کو وطن مجدر ال اتے اور مسجد میں آتے نفل اواکرتے بھرآپ پرصلوۃ وسلام معیجے۔

محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

<u>کسی بھی قبرکی زیازت کے لئے سفرکرنا ما تزنہیں</u>

قبرول کی زیارت کے لئے سفر کرنا معابہ کرام سے تابت نہیں ہے ؛ چنا پیزعبداللہ بن عمرجب بیت المقدس جاتے تو صفرت ابراہیم خلیل الٹر کی قبراطہ کی زیارت نہیں کرتے ہے ، اس طرح حفرت جمراور دیگر مہاجرین والفعار جب بیت المقدس گئے ، تو الن میں کئی بھی حضرت ابراہیم علیہ السّلام کی قبراطہ کی زیارت کے لئے نہیں گیا بیزوہ معابہ جو بیت المقدس میں مقیم تھے ان کے بارے معلوم نہیں ہوسکا کہ وہ تصرت بابر بیم معابہ جو بیت المقدس میں مقیم تھے ان کے بارے معلوم نہیں ہوسکا کہ وہ تصرت بابر بیم الجو بیدہ بن جراح ، عبا دہ بن صامت ، الوالدر دا دیگر صحابہ کرام جو شام میں قیام پزیر الجو عبیدہ بن جراح ، عبا دہ بن صامت ، الوالدر دا دیگر صحابہ کرام جو شام میں قیام پزیر الجو عبدہ بن جراح ، عبا دہ بن صامت ، الوالدر دا دیگر صحابہ کرام جو شام میں قیام پزیر المجون سے مدینہ منورہ کی جانب کی قبر کے لئے مبھی سفر نہیں کیا جس طرح انہوں نے مدینہ منورہ کی جانب کی قبر کے لئے سفر نہیں کیا ۔

کیا قبر نبوی کی زیارت آپ کے ساتھ محبت کی ملاسیے

رسول اکرم میں الندهلیہ وسلم کی زندگی میں آپ کی زیارت کے لئے وہی لوگ
آتے ہے جن کو آپ کے ساتھ محبت بھی اور آپ کے ساتھ محبت ہی کا تقاصنا بھا
کہ دہ کشال کشال آپ کی خدمت میں ما صربیو تے تھے۔آپ کی وفات کے بعد آپ
کے ساتھ محبت کا تقامنا ہیہ ہونا چا ہیئے کہ آپ کی قبراطہر برچا ضری دی جائے۔ اس
طرح محبت کا اظہار کیا مبائے۔ اس متم کی باقوں کا اظہار ان لوگوں کی جانب سے کیا
جار ہا ہے ہو قبراطہر کی زیارت کے لئے سفر کرنے کو باحث سعادت سمجھتے ہیں، لیکن
ان کے اس مغالطہ کی تردید کرتے ہوئے ہم کہیں گے۔

مغالطركى تردير

بلاشرسول اکرم صلی الترطیه و ملے کے ساتھ مجت رکھنا دین اسلام کے اجا سے سے میے و مدیت میں سے ، جس شخص میں تین خصلتیں ہول گ ان کی دجرسے اسے ایمان کی سرشاری حاصل ہوگ جس کی مجتب الشراور اس سے رسول کے ساتھ دیگر تمام لوگوں سے زیادہ ہو اور جس کی مجتب کسی انسان کے ساتھ صرف الترکی رضا کے لئے سبے اور چنخص کفر کی حاب اور شخص کفر کی حاب اور جنج میں ڈالے مانے کو اور جا تا ہی کو وراحا تا ہے۔

نیزارشاد بنوی سے کہ کوئی شخص اس وقت تک ایما ندار نہیں کہلا سکتا جب
بک کہ اس کواولاد، والدین اور تمام لوگوں سے زیادہ میرے ساتھ مجتنت نہ ہونیز
بخاری شریف میں ہے کہ رسول اکرم مسلی اللہ علیہ وسلم نے مفرت مرکے ہاتھ کو پکڑار کھ
تھا۔ حضرت عمر نے عرص کیا یارسول اللہ! آپ مجھے اپنے نفس سے ملا وہ سب سے نیادہ
محبوب ہیں ۔ آپ نے فرمایا نہیں تیراایمان شب مجے ہے جبکہ تو مجھے اپنے نفس سے بھی
زیادہ محبوب مبانے ۔ اس برحضرت عمر کہنے لگے اللہ کی شم اب مجھے آپ اپنے نفس سے
زیادہ محبوب ہیں ۔ آپ نے فرمایا عمر! اب تیراایمان میجے ہے، قرآن پاک ہیں اس ک
تصدیق موج دہے ۔ ارشاد ربانی ہے ،

النبى اولى بالسؤمتين من انفسهم . دالاحزاب، ۲

یرفرهایا، قل ان کان ا^نا وکمر وا بنا دکم واخوا نکم واذوا جکم وعشیدتکم واموال ا قنزفتوها

پیغمبریومنوں پران کی حالوں سے بھی سے معبی زیادہ حق رکھتے ہیں۔ سر سر ریں ہیں۔

کہدد وکداگر تمہارے ہاپ بنیٹے اور بھائی اوزعور تیں اور ضاندان کے آدمی اور مال

بوئم كمالتي موا ورمخارت بس كصبند معجن

محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

سے فارستے ہو اورمکا نات جن کولپنڈکے تے
ہو۔ خدا اوراس کے رسول سے اورخدا
کی راہ میں جہا دکرنے سے تمہیں زیاد عزیز
موں تو مفہرسے رہو، یہاں کہ کہ خدا اپنا
حکم لینی عذاب بھیجے اورخدا نا فرمان
لوگوں کو ہدایت نہیں دیاکرتا۔

جولوگ فدا پرا در روزقیامت پرایمان رکھتے ہیں بنم ان کو فدا ادراس کے رسول کے ذخمنوں سے دوستی کرتے ہوئے مذکھو گے بنواہ وہ ان کے باپ یا بیٹے یامجاتی یا خاندان کے ہی لوگ ہوں ۔ یہ وہ لوگ ہیں جن کے دلول میں فدانے ایمان دہچقر وتجادة تغشون كساد هاوساكن ترصونها احب اليكم من الله ورسوله وجهاد في سبيله فترتبصوا حتى باقت الله بامخ والله لايهدى القوم الفاسقين. (التوبة) ۱۲۸

تیزفرهایا، لا تجده تو ما یؤسنون بالله والیوم الاخریوادون مسن حادالله ورسوله و لوکانوا آباعهم اواخوانهم اوعشیرتهم اوللنگ کتب نی قلویهم الایمان و پدهم بروح منر را لمجادله) ۲۲

پر ککیر کی طرح) تخریر کرد یا سبے اور فیص فیبی سے ان کی مدد کی ہے ۔

میحی بخاری میں الومرس بیان کرتے ہیں کہ رسول النّدسلی النّدعلیہ وہم نے فرمایا دُنیا وا خرت میں ہرایمان دار آدی سُب سے زیا وہ میرے ساتھ محبّت رکھنے والاسے۔ قرآن باک میں ہے کہ رسول النّد علیہ دسلم تو ایمان داروں سے ان کی جانوں سے باک میں ہے کہ رسول النّدعلیہ دسلم تو ایمان داروں سے ان کی جانوں سے محبی زیادہ قریب ہیں۔ یہی وجہ ہے کہ آپ سے فرمایا مومن سے مال کا وارث اس کے عصبتہ ہیں اور جب وہ مقروم سویانا با نے بچ جو در جانے تو میں اس کا مرطرح معاون ہوں اس کے ایماندار نہیں کہلاسک ، جب سوں اسی سے اسکام بیمل نکرے۔

پئس ثابت ہوا کہ مرمومن کے لئے ضروری سے کہ وہ دسول اکرم صلی الٹرعلیہ ولگم کی توقیر وتعظیم میں کوتی د قیقہ فروگذاشت نہ کرہے ۔ دل میں مجتب موجز ن ہو'اس کے سائقه سائنة آب مے مملحقوق واحترامات اوراحکا م کیتعمیل میں کا ہائے سستی اختیار نه کرے اور جہاں کہیں بھی ہواس کا ول آپ کی مجتب میں سرشار ہوں لیکن آپ کی وفات کے بعداّب کی قبراطہرراکم محبّبت کا زیادہ اظہارکرنا ا درجملہ احترامات کوملح ظ رکھتے مجتّ نہایت تواضع کے ساتھ تھیکے رہنا _____ اور دیگرمقامات میں آپ کے ساتھ اس شوق مزب مستی، وارفتائی کا اظہار نرکرنا اس بات کا پتر دیتا ہے کہ اس السان كي وه مجتت نهيل سيحس كاحكم كتاب دستنت مين موجود سي يخور كيجية قبراطمرك زیارت نه توعبا دت سعے، بلکه زیارت ممکن بی نهیں -اگرزیارت کونشرعًا عبا دت مجھا ما یا تو حجرة عانشر سے دروا زے کو کھلار کھا ما تا تاکہ آپ کی قبر کے باس پہنے کرلوگ عبادت كرسكتے اور حجرہ كى دليارول كود كيھ ليناتو قبركو دىكھنا نہيں ہے اوركيا يقيح نہيں كدبجوانسان سيرينبوي ميس حجره عاتشه كى ديواروں كو ديجھ ر ہاہيے ا درجواً د مى مزاروں ميل وُور بعيد، دولون برابرين - أن مين سے كُونى بھى قبراطبركى زيارت نېين كرر ما سيزاسى لئة تواكب في منع فرواديا متعاكرميرى قبركوميله ندبنانا وراصل آپ مي خطر و محسوس فرما رہے تھے کہ کہیں وہ موالح من کوالٹہ پاک سے طلب کرنا چاہیئے، لوگ مجھ سے مذ طلب كمين لگ مائيں اور مجھے خالق كے ساتھ نہ ملاديں حبحہ كلمة شہا دت ميں مجھے المتُر كارمول كماكيا بي كمعبود عقيقي التركى ذات سبهاس فدشر كع بيش نظرابني فتركى زيارت سے متع فرمایا ٹاکران میں کامل توحیہ قائم رہیے اورمیری اطاعت کریں ۔ بیس بولوگ آپ کی ا لهاعت کرنے والے ہیں وہ اولیا ۔ الٹٰدییں وہ کامیاب ہیں اور ہولوگ آپ کی نافران كرينے والے ہيں، وہ اللہ كے شمن ہيں ۔اوليا مرانشيطان ہيں .بس آپ كى قبراطہ إيكسى قبر کا حج کرنے والے ہیں کوملجا و ماو کی مجھنے والے آپ کے نافرمان ہیں ،اگرمبر دہ مجھتے ہوں کہ محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

یہ تومہاری مبت کا اقتصار ہے ،ہم کیسے آپ کی قبرا لمہرر آ نے سے دکر سکتے ہیں ال وگو كايرفيال عيسانيول سيحكم نهيل موحفرت مسح عليدالسّلام كحصا تومحبت مين غلو كت بوئے تنے اور شرک کی صرفک بینے گئے تھے خطرہ سے کہ کہیں است محدیہ کے لوگ ہواس غلو يک آپ کي مجتب مين مجنس مانين، وه شرك کي دلدل مين منهينس مانين اور قيامت کے دن الٹرکے رسول اس شم کے لوگوں سے بڑات کا اظہارہ کرنے لگیں ۔ ارشاورًا ہے تتہیں امراہیم اوران کے رفقار کینیک قدكانت لكعاسطة مسنة بیال میلنی دصرورسے) جب انہوں سنے فى ابراهيم والسذين معدُ اذ قالوا اپنی توم کے لوگوں سے کما کم ہم تمسے اوران ىقومهم انا بواء سنكعروما تعبد^{ون} بتول سے جن کوتم خدا کے سوالو مجت ہو، سن دورن الله كنونا مكم وبدابينا بے تعلق بیں را ور ، تہارے رمعبوُوں کے ومبنيكمرا يعداوة والبغضاء كبھى قائل نہيں ہوسكتے ، اور جب نك رُدِدُ ا حَتَّىٰ تَوُمِنُوا بِاللَّهِ وحد لا-*خداشے واحد برا*یمان نرلاؤ بم می*ں تم*یں را لمعتمنه ، ۲

۱۶ مصلحت ۹ سمیشه گفته که لقا عداوت ا وروشمنی رسبے گی۔

بیسته هام عداوت ، وروسی رسب به بیسته هام الد علیه وستم کے بیسته هام عدار و بین جوتمام او قات میں رسول اکرم صلی الله علیه وسلم کے محاسن فضائل اور احوال کا تذکرہ کرتے رہتے ہیں۔ جہاں کہیں رہتے ہیں، وہیں سے آپ پرمسلوۃ وسلام جیجے رہتے ہیں اور جب وہ رسول اگرم صلی الدعلیہ وسلم براحسانات والد اور انعامات رہائی کا شمار کرتے ہیں تو آب کے ساتھ ان کی محبت اور محقیدت میں اصافہ ہو سے مرف آپ کی قبراطم کی زیارت سے ال کے دلوں میں مجبت بڑھتی ہے، بالکل غلطہ بی بینا پیسم دیکھتے ہیں کردہ لوگ جو قبروں پراعت کاف ملی بینا پیسم دیکھتے ہیں کردہ لوگ جو قبروں پراعت کاف ملی شریع میں ان کے ساتھ ابنی عقیدت کا اظہار کرتے ہیں محبولوں کی میا دریں چراساتے ہیں، ان کے ساتھ ابنی کوگوں کی زیرگی سے بالکل مختلف ہوتی سیے جن بردہ دل ومان سے قربان ہونے کا اظہار کرتے کے زیرگی سے بالکل مختلف ہوتی سیے جن بردہ دل ومان سے قربان ہونے کا اظہار کرتے

ودولت حاصل مواوران کی سیادت سلیم کی مبائے ندید کم جن کا دوعرس مناتے ہیں، ان کے ساتھ انہیں کچھ مجتب سہے مسندا حمدا و میچ ابوحاتم میں مروی سہے۔ نبی اکرم معلی الشدعلیہ وسلم نے فروایا، برترین لوگ دو ہیں جن کی زندگی میں قیامت آسئے گا۔ نیز وہ لوگ بھی بدترین ہیں مجرقبروں پرسحبریں بناتے ہیں۔

ہیں، قبرول پرمیلہ لٹھانے اور غرس منانے سے ان کامقصد و میدمیر مہزنا ہے کہ انہیں ا

پس قبرول کی زیارت کے لئے شدرمال کرناسفر کی معوبتوں کوبرداشت کرنا کیسے جائز ہوسکت سبے ، جبکہ تین مسمبروں کے ملادہ کسی سجد کے لئے شدرمال کرنا مبائز نہیں 'اسی لئے رسول اکرم مسلی الڈولمیہ وسلم کی زبانِ اقدس پروہ لوگ ملعون قرار قبیئے گئے ہیں جو پنمبروں کی قبہ وں پرسجدیں بناتے ہیں اوران پرعوسوں کا انعقاد کرتے ہیں عافا نا املاء عن ذالاق ،

كيا قرنبوى كى زمارت كے كئے سفركرنا معصيت بيء

اگرقرنبوی کی زیارت کے گئے سفرکرنا درست مہیں توکیا اس کومعسیت کبا بہتے ؟ اورکیا اس سفری ندرما ننا جائز نہیں ؟ اور کیا اس سفری ماز قعرکرنا بھی جائز نہیں ؟ اور کیا اس سفری ماز قعرکرنا بھی جائز نہیں ؟ اور کیا اس سفری کا چھ کرتے ہیں اوراس کو بیت اللہ کے دستا وی قرار دیتے ہیں یا آپ کی قبراطبر کا چھ کرتے ہیں، بلکہ بہت اللہ کے چھ کو اس کے مقابلہ میں کچو میڈیت نہیں دیتے، بلکہ بعض لوگ اپنے شخ کی مجت میں اس قدرمتی اور دکھائی دیتے ہیں کہ وہ اپنے شخ کی قبری جانب منہ کرکے نماز پڑھتے میں اس قدرمتی اور دکھائی دیتے ہیں کہ وہ اپنے شخ کی قبری جانب منہ کرکے نماز پڑھتے ہیں اور انفرہ نگالے ہیں کہ دیم خاص لوگوں کا قبلہ ہے جبیم مام لوگوں کا تعبہ قبلہ ہے اور مشام ہے کے گئی کر غیب دلاتے ہیں ، ان کے فعنائل ومناقب میں کتا ہیں تحریر کرتے ہیں ، ان کے فعنائل ومناقب میں کتا ہیں تحریر کرتے ہیں ، ان کے فعنائل ومناقب میں کتا ہیں تحریر کرتے ہیں ، ان کے فعنائل ومناقب میں کتا ہیں تحریر کرتے ہیں ، ان کے فعنائل ومناقب میں کتا ہیں تحریر کرتے ہیں ، ان کے فعنائل ومناقب میں کتا ہیں تحریر کرتے ہیں ، ان کے فعنائل ومناقب میں کتا ہیں تحریر کرتا فرانی نا فرانی نا فرانی نا فرانی نا فرانی نا فرانی نا فرانی کے ذریر نا کی نا فرانی کی نا فرانی کرنا فرانی کا فرانی کی نا فرانی کے نا فرانی کی کتا کہ کا کھیا کہ کا کھی کے دیوں کی کا کھی کرنا کی کا کھی کرنے کی کرنا کی کا کھی کے دیا گئی کے دیا گئی کی کرنا کی کا کھی کرنا کی کا کھی کرنا کی کا کھی کرنا کی کا کھی کرنا کو کھی کی کرنا کی کی کرنا کے دیا گئی کی کرنا کی کا کھی کرنا کی کا کھی کی کرنا کی کرنا کی کا کھی کی کرنا کی کھی کرنا کی کا کھی کرنا کی کرنا کی کی کرنا کی کا کھی کی کرنا کی کرنا کی کا کھی کرنا کی کی کرنا کی کا کھی کرنا کی کی کرنا کی کرنا کی کا کھی کرنا کی کی کرنا کی کی کرنا کے کا کی کرنا کی کی کرنا کی کرنا کی کرنا کی کرنا کی کرنا کی کا کی کرنا کرنا کی کرنا کی کرنا کی کرنا کی کرنا کرنا کرنا کرنا کی کرنا کرنا کی کرنا کرنا کی کر

کررہے ہیں، بلکہ شرک کررہے ہیں اور محروات کے مرتشک ہورہے ہیں کسی تہر مسجد قبر کے کئے سفرکرنا شرمًا نام ا تربید و ہاں طلب علم ، تجارت و مخیرہ کے لئے سفرکرنا مباتز سے - قبربنوی کی شرعی زیا رہ یہ سہے کم سجد نبوی کے لئے سفر کیا مبائے - وگر ندمر ف كم كمرهم مرميز منوره بهيت المقدس كي زيارت كمد ليت سفركرنا و جبلًا ل كي زبارت کا قصد مزموی جائز نهیں اور مذہبی اس سفر میں نماز قصر کرنا مبایز ہے اور جب بہمزمائز نہیں ، تو پھر اس سفر کی ندر ماننا بھی جائز نہیں یہی دین اسلام کا حکم ہے اور ہی محكم دے كرالتْريك سے تمام انبيار كومبعوث فرمايا-ارشادر بانى ب ،

اور داسے محد ہوا ہے بینر بم نے واسئل من ادمسلنا من تبلك سن درسلنا اجعلنا من دون الرحس تم سے پہلے بیسجے ہیں وال کے اموال وریا کرلو کیا ہم نے مداتے رحمان کے سوا المهتريعبدون وزخوف ۲۵ ا ورمعبود بنائے تھے کہ ان کی عبادت کی مبائے۔

ادروميغربم نفخ سعيب بيع، *تيزفرمايا*؛ وماارسننا سن قبلك من رسول الآ نؤحمـــ اليه ان کی طرف یمبی و'حی بھیجی که میرسے سوا انتزلاالمه الاانا فاعسبزون ـ کوئیٔ معبود نہیں، تومسے ری ن (الانبسيام) ٢٥ عبادت کرو۔

نىزفروايا؛ دُلقد بعث نى كل أمسة مرسولا ان اعبد والله والتنوا امبتناب كروبه الطاعوت رالمخل ۲ س

*يْزفروا يا*بْماكان لبشيدان يۇتىپىر الله انكتب والحكعر والمنبوة شعر يقول للناس كونؤا عبادالحي من

ا دریم نے سرحاعت میں بنیہ بھیجا کہ خدا ہی کی عباوت کروا ور بنوں کی پیشش سے مسمسي آدمي كوشايان نهين كه ضداتوا سے كتاب اورحكومت اورنبوت عطا فرمات

ا وروہ لوگوں سے کے کرخداکو چھوڑ کر

دُون الله- والعبوان) ٥٩ بس جولوگ سی قبر کے جج کا حکم دیتے ہیں، تو وہ الٹر کے ساتھ عیرکو شریک بنائید بیں . مراطِمستقیم سے بھٹک گئے بیں ممکمات سے روگردانی کرتے ہیں اور منتَّا بہات سے استدلال کررسیے میں ان میں اور میودو نفداری میں کی فرق نہیں حس طرح وہ ال کی نا فرما نی کرکے اللہ کی ناراهنگی کے ستحق ہوئے ،اسی طرح میرلوگ مجھی اللہ کے غینظ وضع کو دعوت دیے رہے ہیں ا ورکمرا ہی کے ممیق گڑھے میں گرچکے ہیں۔عیسا نیو ل مرخاص طور ررابب لوگ زیاد، عباد کے زمرہ میں شمار ہوتے ہیں ۔ اس کے باوجود وہ گراہ بیں بمیں حم دیا ہے کہ مم صراط مستقیم کی توفیق ما نگیں اور جن پرالٹد کی نارا صنگی ہے ا جوری گراہ بی ،ان کے راہ سے دُور بیں، بلکہ صفیقت تویہ سبے کروشف کسی شنے ا ا امر بنی کی قبر کی عبانب مفرکرفے کو بیت النّہ کے چےسے افضل عبانیّا ہے ،اس کے کافر ہونے میں کچے شبنہیں اوراس کا پرگناہ کس نفس کوفتل کرنے گئاہ سے بڑا ہے واس لئے کہ فبری زیارت سے لئے سفر کی صورت میں قبری صافیت ایک بمت کی سوحاتی ہے اسی بنار پر آپ نے ڈیتے ہوئے وعا فرمان کے اللہ امیری قبر کو بُت نہ بنا ناکہ لوگ اس ک عهادت شروع کردیں ؛ چنانچه الله باک نے آپ کی د عاکو قبول فروا یا اوروہ مشرک زلیل ہو گئے بوآپ کی قرکود میر قروں کے ماتھ مشاہمت دیتے ہیں، مبکدآپ کی قبر کو حجره يرمح فوظ كر دياكه كويت خص و بال پيني نهيس سك ،البيتة مسيد نبوي مي**ن ع**اضري دين جواله کا گھرہے اگر کچھ لوگ مجد نبوی ہیں ہینے کرشرک سکے مرتکب بورسیے ہیں تواس میں بھھ تعب ک بات نہیں، جبجہ شرکین کہ سیت الٹری*یں صربیًا شرک محرقے تھے۔ بہرط*ال ٹرک

ك ال الودكيول سے قبر بنوى بالكل محفوظ سے - والحد للدرت اللعالمين -

بدعت منرك اورمعصيت

قبروں پرمامنری دسینے والے لوگ عیسائیوں کی طرح شرک و بیعت ہیں مبتلا بیں اور بیعت کی قباصت معصیّت سے 'دیا وہ ہے بینا نچے سفیان توری فراتے ہیں :

سُفيان تُورى كا قول

البیس کونا فرانی اس قدر محبوب نہیں جس قدر برعت محبوب ہے، اس لئے کہ نافرانی کے کام سے تو ہ تابت ہے جبکہ برعت سے تو بر تابت سیں ۔

المبدعة احب الحا المبيس من المعصية لاك المعصية قد يتاب منها والمبدعة لايتاب

اس کا داخیج نبوت اس بات سے ملنا ہے کہ رسول اکرم مسل التہ ملیہ دستم کے عہد مبارک میں ایک آدمی نبراب پیتا بھا، اس کو عبدالنہ حمار کہتے تھے۔ ایک آد ہی فیاس پر معندت کی بنی اکرم مسل النہ علیہ دسلم نے فرما یا اس پر لعنت نہ کرو، تمہیں معلوم نہیں دہ النہ اور النہ کے رسول سے محبت رکھتا ہے۔ اس کے برعکس ایک بدحتی جس کو ذوا لؤھی گہتے تھے جس کی بیشانی ابھری ہوئی آنکھیں اندر دھنسی ہوئیں اور داڑھی گھنی تھی، آپ کہتے تھے جس کی بیشانی ایم مری ہوئی آنکھیں اندر دھنسی ہوئیں اور داڑھی گھنی تھی، آپ کے پاس آکر کہنے لگا اسے محد! انصاف کر تو انصاف نہیں کر رہا ہے۔ اس کے کستان نا ہم بریابعن محا ابرائے اس کی کستان نا ہم بریابعن محا ابرائے اس کے دوا یا میں انداز معا میں اللہ علیہ دوسلم سے فرما یا اس کے دوا ابھی کہ بریابعن محا ابرائے اس کے دوا ابرائی کی کا دورائی کی کستان کو دوا کو دورائی کر دورائی کی کستان کا کہ دورائی کے دورائی کستان کی کستان کا کہ دورائی کی کستان کستان کی کستان کستان کستان کستان کستان کی کستان کی کستان کستان کستان کی کستان کی کستان کی کستان کستان کستان کی کستان کی کستان کستان کستان کستان کستان کی کستان کستان کستان کستان کستان کی کستان کی کستان کستان کستان کی کستان کستان کستان کستان کے کستان کستان کی کستان کستان کی کستان کی کستان کستان

اسے کچھ نرکہواس کی نسل میں سے الیسے نوگ مہوں گے کرتم ان کی نما ذوں کے مقابلہ میں اپنی نماز وں کے مقابلہ میں اپنی نماز وں کو معمو لئے محموسے ۔علیٰ ہزالقیاس روز ول اور تلا دست قرآن کو بھی بہت کم سمجھو کے ،وہ قرآن پاک کی تلاوت توکریں گے، لیکن اس کا انر ان کے دلول پر کچے ذہ کا وہ اسلام سے بوگ نہا مائیں گے جس طرح تبرنشا نہ سے صاف آر پار مہوما تا ہے۔

پئس بیرعباوت گذارلوگ سنت رسول کی مخالفت اور اسپنے مخالفین کے خون گرانے سمجہ در کا سنت میں کا استعمال کی مخالفت ا

کومیچے سمجھنے کی وجہسے بہتی قرار دسینے گئتے اوران سے جنگ کرنے کامکم دیا گیا جبکہ شرابی کے بارسے میں حکم دیا کہ اس پر بعنت مذکر و، اس لئے کہ وہ نا فرمانی صرور کرر ہاہئے لیکن سنستِ رسول کے ساتھ والہامہ شغف رکھتا سیے۔

اعتقراحی امیح مدیث میں قبروں کی زیارت کی ترینب موجود ہے اورجب زبارت سخسن ممل ہے توسفرکرنا زیارت کا وسیلہ ہے، بلاسفر توزیارت ممکن نہیں ہیں سفرکو بھرکیسے معصیّت کہا جاسکتا ہے۔ نیک کام کے مصول کے لئے جوذر لیوبرد سے کا

لایا مبائے گا، کسس کے ایجھے ہونے میں کیا شہر ہوکٹ ہے۔ جوامب ، قبروں کی زیارت بلاسفرا در چیز ہے اور سفر کرکے قبروں کی زیار

جحوا حب ، فرول فی زیارت بااسفرا ورجیزید اورسفر اردے فرول فی زیاد کرنا ایک دوسرامستلاسی ، اسی لئے ہم بر کا کہتے ہیں کہ سفر کے جواز پرکتاب وسنت کوئم سے اور اجماع سے کوئی ولیا نبیر بیٹ کی مباسکتی اور مقرض کتاب وسنت کے فہم سے عاری معلوم ہوتا سیعے ۔ بہی وجر ہے کہ جب مسلامتنا زفتیر میں مجے محکم مدیثیں اور اندوین کے اقوال محید موجود ہیں ، تو انہیں درخورا عتنا مرد مجھتے ہوئے کیوں متشا بردلائل کا سہارا سے درایخ نی العلم لوگوں کا کہی یہ وطیرہ نہیں رہاہے کہوہ محکمات کو جھوڑ کرمتشا بہات کے بیچے دوار سے بھریں ، ان سے قبل ہودی میساتی علمارسوء جھوڑ کرمتشا بہات کے بیچے دوارست مجاری ، روافقن ، جمیر، قدریہ بھی فعوص مرکبے کا بہی طرز ممل رہا ہے۔ ابل بوعت ، نوارج ، روافقن ، جمیر، قدریہ بھی فعوص مرکبے

محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

سے اعراص کرکے متشابہات سے استدلال کرتے ہیں کی مسیمی علمار نے نہیں کہا ہو

شخفی سے ملیالسلام کو النّد کا بندہ کہا ہے، وہ اس کو گالی دے رہاہے اور اس کی شان میں گسناخان کلمات زبان پرلارہاہے ، کیا حضرت علی کے بیرو کارول نے برملا اس بات کا اظہار نہیں کباکہ چشخص حضرت علی کے بارے میں ان نظریات کا برچاد کرے گاجوا ہل سنت کی کتابول میں رسول اکرم علیہ القبادة والسلام یاخود حضرت علی سے گاجوا ہل سنت کی کتابول میں رسول اکرم علیہ القبادة والسلام یاخود حضرت علی سے منقول ہیں تو وہ حضرت علی کی تو بین کررہا ہے اور اس کی شان میں تنقیص کا مرتکب مور ہاہے کہا اہل قبور سے نہیں کہا کہ جشخص قبروں کا ج نہیں کرتا ، ان سے وعا برنہیں کراتا ۔ رسول اکرم صلی النّد علیہ وسلم کی قبراطہ رہم حاضری نہیں ویتا ۔ وہ رسول اکرم کی شان

پاگل سمجستے ہیں۔ ارشا ور بانی سبے ، کندا دائ سا ان المدند بن سن اسی طرح ان سے پیلے لوگوں کے باس 44.

کہتے۔ ادر کہا کر دیوانہ ہے ادر انہیں ڈانٹ

*بومینیبر*آ ما، وه اس کومها دوگریا د لوانه

بھی ۔ پیمنچیبر ہوئتہا ری طرف تھیجا گیا سیے د ایاز

ہے۔ نزفراہا:

ا ورکفار کتے بیں کہ الیخف میں پفیعت کی کتاب نازل ہوئی ہے ، تو تو دیوانہ سید سد اومجنون (احذادیات) ۵۲ اورقوم نو*ن نفکه* و تا لوا عبون وازدجد والمقس ۹

فتبلهم من رسون الاقالواساحر

اور ٔ فرمون سنے کہا : ان دسودکم الذی ادسل ا لسیکھ

مهجنون رالشعراء) ۲۷ ارتادربان ہے:-وقالوا پایتماالـذی نزل علیه المـذکو ۱ نك لـمعبنو ن -راکمجدے ۲

ابل قبور کے مناقشات

جولوگ مهالحین یا دیگرلوگول کی قبرول پرآمدورفت ریکھتے ہیں، دُور درازسے سفر کی معوبتیں بردا بشت کرتے ہوئے دیوانہ وار مزارات پر مامزی دینے کو نوا اس مجتے ہیں وہ اپنے اس مشرکانہ فعل کومہاں با ورکرانے برغلطا ورموضوع مدیتنیں پیش کرتے ہیں چنا بخ مصرت ابراہم خلیل کی قبر کی زیارت کے متعلق وسب بن منبہ کا قول ذکر کرتے ہیں۔

محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

وُسِب بن مىنىبركا قول

اُذا کان اُنوالزمان حیل بین

النّاس د ببین المج منسَن کم سیج ملحق بقبرا براهیم فان زیارت،

آخرز مانہ میں ج کرنے سے روکا مباتے گا تو چنخف ج نکرسکے اور حصرت اراہم کی قبری زیارت کرلے تو اس کو ج کے برابرتواب ماصل موگا-

تعدل مجة-يه قول بموٹ ہے؛ اہل ملم لنے تفحص کے بعد کہا ہے کیجب صلاح الدین الَّہِ بی نے بیت المقدس کوفتے کیا اور عیسا تیول کومغلوب کیا ہو اس دوران عیسا تیوں نے مسنرت ابراسيم عليه السلام كى قبر كا كلوج لى كايا ، صحابة البعين سے تهدميں جبكہ وہمب بن معنب ذند تصے حضرت اراہم علیہ انسلام کی قبر کا کوئی نشان نہیں ملیا تھا اور نہی کو اُر صحابی یا اہمی كسي بمي بغيركي قبركي طر ن مفركر كے كيا بھروبهب بن منيه تو شام بين سكونت پذير بي مز تحصان کی ر ہائش کمین میں تنفی اور وہ کعب اصارا ور محدین اسحاق کی مانند بنی اسرائیل اور كذشة بيغمبرون سيرحد مثين بيان كرتے تمعے ؛ لبندا إن كايہ قول سا قطالا عتبار سے ملكہ اس قول کی ان کی طرف نسبست کرنامیحی نهیں اس طرح وسبب منب دسولِ اکرم صلی الشرطیر ولیم کے ہارہے فرماتے ہیں:

قال البنى صلى الله عليه وسلم من

ذارنى وذاد ابى فىعامرواحوضنت

له على اللهُ الجِنسَة -

نبى صلى التُدعليه وسلم نے فروا يا و تشخف عجي میری اورمیرے باپ کی زیارت کرمے میں

اس کوحتنت کی ضمانت د بتامبول ـ

ا در ،التد کے رسول ریا فترا · · · ہے اہل یہ صدیث مھبی تھوٹ سیے ، . . برعت ابینے مدّعا کے ا ثبات کے لئے اس قسم کے جبو لئے آ ٹار گھڑنے میں بڑے مشّاق ہیں' اس طرح وہ برعات کورواج دے رہے ہیں جس طرح کہ اہل بیت بھی وسیع پیمانے پر اس مسم كى افترايردازيول سينهين وفكت وانكام تصديب كروه صفرت على حفرت حسُین دیگرگیاره ائمترکی قرول کاچ کریں۔بار ہواں امام توان کے نز دیک ایک غارمیں چھباہوا ہے، اس کی آمد کا انتظار *کر رہے ہیں۔ اس شم کے م*غوات کا بلندہ ان کاعلم *پُر*لیہ ہے۔ یہ لوگ ان مشرکین کی مانند ہیں ہوآپ کے عہد میں مستوں کا چ کرتے مقے۔ یہ لوگ میمی قبروں کا حج کرتے ہیں خصوصًا رسول اکرم صلی الٹرعلیہ وسلم کی قبرکے چے کوانی

محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

سمجنے ہیں۔ بئیت الندکے ج کی ضرورت محسوس نہیں کرتے جبکہ اسلام سجد نبوی کی زیارت کے لئے سفر کی اما زت دیتا ہے اور چ نکہ آپ کی قبراطہر کے پاس سجد نبوی کی تعریب کی قبراطہر کے اس لئے مسجد نبوی کی زیارت لاز گا ہوتی ہے جبکہ دیگر قبروں کے پاس سجدیں نہیں ہیں اس سلے نامرین محفن قبروں کی زیارت کے لئے سفر کرنے والے بین لیس ای کا یہ ج شرک ہے۔

کیاانبیار فتم اتھانا مائزہے؟

جس طرح تین سجد ول کے علاوہ کسی سجد، قبر و فیرہ کی زیارت کے لئے سُفر کرنا جائز نہیں، اسی طرح النّرکے علاوہ فرشتوں بیغمبروں، سیت النّد کی شیم ندا کھی و بعض لوگ سول کا ارشادہ ہے کہ النّرکے علاوہ فرشتوں بیغمبروں، سیت النّد کی شیم ندا کھی و بعض لوگ سول النّرصلی النّرعلیہ وسلم کی سم اعظا نے کو جائز سمجھتے ہیں جبکہ میجے مسلک بہی ہے کہ بنی اکرم سالی لئّد علیہ وسلم کی جھج ہتم مذا مطاوَ جمہور کا یہی مسلک سے ۔ اس لئے کہ جب مخلوق کی عبادت سے روکا گیا ہے تو بنی اکرم صلی النّد علیہ وسلم بھی مخلوق میں داخل ہیں: لٰذا آ ہے لئے نذر مان النّد کی شیم نا اسطانا آ ہے کی شیم اعظانا آ ہے کی عبادت کرنا ہے ۔ جب ان چیزوں سے منع کیا گیا ہے تو قبروں کا ج کرنا ، ان کی زیارت کے لئے سفرکرنا ان سے زیادہ شنیع ہے ۔

<u>قېرنبوي کې زيارت کوممين</u>

زیارت نشری برسی کرمسجرنبوی کی زیارت مقصود دادر سخبر نبوی پینج کر قبر بنوی کی زیارت بھی کرے ۔ زیارت عیز نشری برسی کرمرف قبرنبوی کی زیار مع مقصود مومسجر نبوی

کی زیارت مقصود رز سور ایک زیارت بیسی که زا نز دولول کا اداده کرتا سے مسحد نبوی کے اندر نمازاداکرنے سے تواب کامستی موتا ہے اور ایک زیارت بہے کہ زائر م^{وت} تېرنبوي کې زيارت کا قصد کرتا سېے ، جب وه سجد نبوي مين بې<u>خ</u>تا سېه، تو و بال نمازي ا د ا كرتاب، أب برمسلوة وسلام كا مدر بهجيجتا ہے، ملا شبراس كى عبادت وعنيرہ براس كوٽوك ملتا ہے، لیکن چونکہ قبربنوی کی زیارت ممکن ہی نہیں، وہ حجرہ کی دیواریں یامسحد نبوی ہی دیجه سکتا ہے ،اس لئے اس کومقصد دماصل ہی نہیں ہوسکتا ۔بیں اس کے اس سفر کو عمل صالح نبین کها مباسکتا - اسی طرح وه لوگ جو پینمبرد ب ا ورنیک لوگول کی قبرو ں کی زيارت كوتقرت البي اورعبا دت محصته بين، وه اجماع امّنت كي مخالفت كررسي بين اور بعن لوگوں کا تیم مجنا کرمدیت میں شدر مال کی نبی سے مراد استباب کی نفی سے درست نہیں کینی اباحت کی نفی نہیں ممکن ہے اگر ہولوگ دیا نتاً ہر رائے رکھتے ہیں توان کی یہ غلطى عندالته معاف موحاست اوراس فعل بران كوكچه سزانه طح جس طرح وة تحف عقاب مدا دندی کا حق دا رنبیں جوا دقات منہدیں نماز بڑھتا ہے۔جبکہ اس کونہی کا علم نہیں ہے۔ ارشادِر ابن سے ، دمالنا معدنین اورجب تک ہم پیغمرز میں لیں عذاب بہیں دیاکرتے۔ حتى منبعث دسولا ﴿ (الاسراء) ١٥ الوحامداسفارتنی، الوعل، الومحدمقدسی، امام عزالی ا درامام را فعی وغیره عدم استما سے قائل ہیں۔

قاصنى عياض كى وضاحت

قاصنی عیامن، امام مالک اوراس کےاصحاب بین سعدوں کے غیر کی طرف سفر کو حرام قرار دیتے ہیں، اس میں سیغمبروں کی قبر سے بھی داخل ہیں لیکن قاصٰی عیامن سے اس

قول کا مردِی ہونا کہ دہ فتر نبوی کی زیارت کوسنت سمجھتے ہیں کامطلب زیارتِ *مترعیہ* بے، بعنی اصل مقصود مسجد نبوی کی زیارت سبے اور و ہاں سسے آپ برصلوۃ وسلام بمبیجنا ہے۔ قاصی عیاص زیارت کی فقسل میں دقمط از ہیں کہ مضرت انس کے نٹا گرنے نے بیان گیاکه میں نے مصرت انس کو د بیھا کہ وہ قبربنوی پرکھرسے ہوکرد ولوں ہا تھول کو ا مھاتے ۔ میں مجننا کہ آپ نے نما زئٹروع کرلی سبے، لیکن آپ پرسلام کہنے کے بعد اپس لوط آتے میجے منیں سے دکہ وہ قبلہ رُخ نہیں کھرسے ہوتے تھے بلکہ قبراطم رکی مانب رُخ كرته عقه اوردُ عا ما ننگته عقبه ، البته عليم سبكه وه قبرُكو ابته نبين لگات عقبے مر سلام كبتے مبیساكه عبدالله بن عمر بھی سلام كہتے تھے جسنرت نا فع اسپنے استاذ عبداللہ بن عمر کے بارے بیان کرتے ہیں کرمیں نے سو بارسے زیادہ دیکھاکروہ قبرنبوی پراستے اورالتلام علیک یارسول النّد، السلام علیک یاا با بحر، السّلام علیک یا ابت کہتے اور واپس میلے ماتے ۔ ابن وہسبک روایت کے مطابق السّلا مرعلیٹ ابھیاالبنی ودحدۃ اللّٰہ د بد کا «کیتے - نیز قاصنی عیا من اسے استا ذا بن قسط ، قعبنی سے بیان کرتے ہیں کورول اكرم مىلى التُرعليه وسلم كے صحابر كرام مسحد نبوى ميں اُستے، منبركو المتح لسكاتے، بھر قبله لائح کھڑے ہوکرد عاتیں مانگتے اور ان کی کوششن یہ ہوتی کہ وہ جنت کی کیار یوں میں منبر کی مانب کھرے ہوکر دعائیں کریں۔ روضہ نبوی کی جانب کھرے ہولے سے کنارہ کش رہتے ۔ امام مالک ۔ دُعا کے وقت جحرہ کی جانب ڈخ کرنے کے قائل نہیں ، جبحہ امام الوصنيف قبله ك مبانب رُخ كريف كويسند فروات بي امام احمد سلام كوقست مجرہ کی دیواری مبانب رُخ کرنے کے قائل نہیں بلد دیتے ہی کر جرہ کے قریم جن میریں ہی آپ براورابوبجرا ورغمربرسلام مبیامات اور مجد نبوی کوالوداع کہتے وقت دوکومت نفل ا داکتے جائیں اور قبلہ جائب رُخ کر کے بہلے کی طرح سلام کہا ماستے اور نبی

مىلى النُرعلىيە دسلم كودسىيە بناكرانتُرسے اپنى ماجت كوطلب كميا جائے توليقنينَّا النُّد كريم صاجت روائى فزوتے ہیں-

کیا فبرنبوی کو ہاتھ لگانا تابت ہے؟

قاصنی اسماعیل بن اسحاق فننسل العسلوة علی البنی صلی الشرعلید وقم مین سند کے ساتھ رُوایت کرتے ہیں ،

حفرت عبالنربن مرجب مفرسے آتے تومی دنبوی میں دونفل اداکرتے مچر نی صلی النرعلیہ وسلم کی قبراطہر ردایاں ہاتھ رکھتے اور قبلہ کی طرف بیٹھ کرکے آپ پر اور حضرت الو بجرا ورحضرت عمر میر سلام کہتے ۔

ان ابن عبو کان اذ اقد مرمن سدوم الی السجد تبین فی المسجد شقراق البنی صلی الله علیه وسلم فیسضع یده البیمنی علی قبرالبنی صلی الله علیه وسلم ویستد بور العبلة ثم لیسلم علی المنبی صلی الله علیه وسلم علی المنبی صلی الله علیه وسلم علی المنبی صلی الله علیه وسلم علی ابی بکو

روایت پر تجث

یرروایت محل نظریں ہے، اس لئے کا مام مالک، امام احمد نے عبداللہ بن مرکایہ فعل نقل کیا ہے کہ وہ قرنبوی کے قریب تو مباتے تھے، لیکن ہاتھ نہیں لگاتے تھے، اسی ح مدینہ کے علمار نے ہاتھ لگانے کا ذکر نہیں کیا ہے۔ امام احمد بن منبل کے شاگر دالو بجائزم کتے ہیں کہیں نے احمد بن معنبل سے بوجھا قرنبوی کو ہاتھ لگانا ادراسکا سے کرنا کیسا ہے؟

محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

فرمايا مين محيح نهيس مجستا بعوال كبا منبرير بالته بجيرا جاسكا سبيه واس كالثبات مين بواب ديية بوسك كماكر عبدالترب مرسي منقول ب كدوم نبرير ما تديميرت عقد اسى طرئ سعيد بن مديب سع منقول بدك وه يجى منر أبي الم تع يجري ن كوما ز سمجة عقد يحيئ بن سعيدكم إرد منقول سي كرمب اس في عراق مبان كالداده كيا تومنر بريامة بچھ کرردعا کی بھر کہا کرسفروغیرو کے وقت منبرر با تھ بھیرنا جاسیتے ۔ عبداللہ بن عمر کی وا^{یت} رجس میں قبر بنوی کو ماتھ لگانے کا ذکر ہے ، میں اسحاق بن محدور وی اس زیادتی کے ساتھ منفرد سبے اوراپینے سے او تق راوی کی مخالفت کر زما ہیے۔ دیگرمیح طرق میں یہ زیاد تی بنيس ب ؛ بنا يخ الواسام عبدالترس وه نا فع سے وه عبدالله بن مرسے روایت كرتے بین کروه قبرنوی ریامته مجیرے کو مکروه مباہنے تھے۔ خیال رہے کہ الواسا مقطعی طور مر فروى سے زیادہ تفہ سے اور فروی اگرچ فی نفسہ صدوق ہے، لیکن آخر عمر میں نابینا بوكيا متعا جسب حفظ سے بيال كرما تو غلطى كرما آما تھا اورجب كسى لفظ كى تلفين كياجا ما، اس كوقبول كرليتا تقا؛ اسى للية اس كى صديثين جوديگر رواة كے خلاف بول ان كومنكركها جاتا سے عس طرح کدا فک کی حدیث کو دیگر رواۃ کے خلاف بیان کیا ہے۔اسی طرح واللہ بن عمر کی به حدیث بھی دیگرروا ہ کے خلاف سے ۔ الوعبید آجری بیان کرتے ہیں کرمین امام الوداد دسے فروی کے باسے بوچھا تواس سے اس کو کمزور کہا ۔ ام سان نے فرنقہ قراردیا سے جبکہ ابن حبان سنے اس کا ذکر تعاّت میں کیا سے اورامام مجاری نے بھی اسے روايت كى سبعد الوحائم رازى نے فرايا ده صددق ب، ليكن بينا في مباسف كے بعد للقين کو قبول کر نامتھا۔ جرح تعدیل سے اتمہ کی کلام اس مدیث کو کمزور ثابت کرنے کے لئے كانى ب اور مهرجب علمار قبراطهرر بالتقريه يرك كراست بمتعق بي، توعيدالله بعر ست کیوں کر فبرِا المرکی تعمیر نامیح ہوسکتا ہے۔ اگرا بن عمرسے اس کا نقل کر نامیح یہونا تو است جلیل القدرائم پرکیسے تنفی رہ سکا بھا،جبکہ انہوں نے ابن مرسے منبر پر ہاتھ بھیرنے کو ڈنقل محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

كياب يجرعبدالله بن عمرس أبت سيكرانبول فقر إطهرك جهوك وكاره كهاب

سفيان بن عيدنير كاقول

ان کے شاگرد تماد بن دلیل نے ان سے استفسار کیا 'بتا بیئے قربنوی پر ہا تھ بھیرنا کمیسا ہے ، فرمایا جائز نہیں اور نہ ہی قبرا لم رکے ساتھ لیٹنا جائڈ ہے - اس اثر کی سند بس می دہن دلیل میں جوام احداد رام ابودا دُد کے امتنا دہیں - ان کی شخصیت الم علم میں متعاد ت ہے اور مدائن میں عہد ہُ قضا پر فائیز ہے

ابراسم بن سُعد کا قول

ابراہیم بن سعد بیان کرتے ہیں کہ ہیں سف اپنے باپ کو کھی قبر نبوی پر آتے نہیں کھا
اس بے دہ قبر نبوی کی ایت کو بنظر کرا ہت دیجھتے تھے۔ اس انزکی سند میں نوح بن پر بدراوی
تقہ ہیں ۔ امام احمد بن منبل کے استاذ ہیں انہوں نے اس کو تقر کہا ہے ، نیز ابن حبان نے
اس کو تفتہ راولیوں میں ذکر کیا ہوا کا اراہیم بن سعد مدینہ کے اکا برعلما ہوسے تھے ۔ خبال ہے
کہ تابعین کے آثار بیان کرنے سے مقصد بہ سبے کہ لوگوں کو بتایا جائے کرما لحین کا مؤقف
کیا تھا۔ اس سند میں ابراہیم بن سعد را وی تو مدینہ کے اکا برعلما ہوسے شمار ہوتے ہیں ۔
کیا تھا۔ اس سند میں ابراہیم بن سعد را وی تو مدینہ کے اکا برعلما ہوسے شمار ہوتے ہیں ۔
ان کے علمی تعنوق کے لئے بیشہا وت کا فی سبے کہ لیٹ بن سعد جیسے مبلیل القدر الحام بھی
ان سے روا بت کہ قے بیں اور ابراہیم بن سعد کے باپ سعد بن ابراہیم ما بدصالح النان
میں داخل کیا گیا ۔ سفیان لوری ، شعبہ جیسے عبلیل القدر اتمہ ان سے روا برت کرتے ہیں۔
میں واخل کیا گیا ۔ سفیان لوری ، شعبہ جیسے عبلیل القدر اتمہ ان سے روا برت کرتے ہیں۔

فقها سبعدا وردیگرا کابرین کی ان سے ملاقات نابت ہے بولندائی میں وقت ہوئے دوست وقت ہوئے دوست المحدث ہی احدث ہی اس ان کاعمل جمہور صحابہ کے موافق تھا کہ قربنوی برما صربونے کو مکروہ مجھتے ۔ اسس کی ظ سے صفرت عبدالٹرین محرکے مخالف تھے کہ وہ قربنوی پر آنے کو مکروہ نہیں جانتے تھے کہ وہ قربنوی پر آنے کو مکروہ نہیں جانتے تھے حدیث ہی میں ناکبد کے ساتھ موجود ہے کہ آپ نے دعا فرما یا میری قبر کو معبد خانہ نہ بنانا ۔ نیز آپ نے دعا فرما یا میری قبر کو معبد خانہ نہ بنانا ۔ نیز آپ نے دعا فرما یک الٹرا میری قبر کو عبد خانہ نہ بنانا ۔ نیز آپ نے دعا فرما یک الٹرا

اثمة أربعها ورحببورعلما كالمسلك

ائمۃ اربعہ اور تمہو علمار کامسلک یہ ہے کہ تین سعدوں کے علا وہ کسی سعد ، فہرا مترکر مقام کی جانب سفر کرنامستحب نہیں ہے ، اسی طرح برخفس نذر مانتا سے کہ وہ کسی پینمبرایس نیک آ دمی کی فبرکی زیارت کرسے گا تواس کے لئے ندر کا دفا ضروری نہیں ،

امام ابن حزم کا نظریبے

ابن حزم كااستدلال

ارشادنبوی دلا تشد الدحال الاالی تلشه مساجد ، کاسیات اس بات کا متقامنى بيے كدان تين مسجدوں كے علاوہ كسى دوسرى مسجد كى مانب توشدر مال مائز نہيں البته فيري جانب شدرهال جائز بد مكر بعض بن حزم كي ظاهرت سيض كحسن بي اشديد وضاحت موتى ب مثال اقل ، ارشاد نبوی سے دکوئی تفس کھرے بان میں بیثاب فکرے كريميراس سيغسل كرسے ان الفاظ سے استدلال كرتے ہوئے ما فظ ابن حزم فرا تے ہيں كر الركوكي شخف كسى برتن ميں بيشاب كرسے بيمر بيشاب كوبانى بى كراتے تواس بانى سے غُسَل کرنے میں کچھ ممالعت نہیں۔ واقر د ظاہری سے بھی ایک روایت اسی طرح کی نتول ہے، سین جمہورعلمارما فظ ابن حزم کے استدلال کوغلط قرار دسیتے ہیں، اس سلتے کہ رسول پاک صلى التُدعليه وسلم كے ارشا دكامطلب وامنح سےكم بان نخس بومائے گا نوا و بيشاب بان میں کیا مائے یالمسی دور سے برتن میں بیشا ب کرسے اس کو معمر پانی میں گرادیا ماتے۔ان ددنوں میں کچیفرق نہیں جس طرح کر جنول کے طعام کے ساتھ استنجا کرسنے سے منع کر سنے سے بیمطلب بہیں کر جوچیز السالؤں کی ٹوراک ہے، اُس سے استنجاکیا ما سکتا ہے۔

مت ال ثانی ، ارتبا دِ فداوندی ہے دکھاں باپ کواف ندگو ، اس سے ظلمری مفہوم کے بیش نظرما فظ ابن حزم قائل ہیں کہ ال باپ کواٹ کہنا نا جائز ہے جبکہ ال کو گال دینا مارنا پیٹنا حرام نہیں ، ظا مرہے کہ ما فظ ابن حزم کا یہ قول فاسد ہے کہی بھی ہم کال دینا مارنا پیٹنا حرام نہیں ، ظا مرہے کہ جب مال باپ کواٹ کہنا جائز نہیں تو ال کوائنا نے ان کی موافقت نہیں کی ہے ۔ ظامرہے کہ جب مال باپ کواٹ کہنا جائز نہیں تو ال کوائنا کال گلوچ دینا بالاول نا مائز ہوگا ، اسی لئے ہم کہتے ہیں کہ صحابر کرام سے جو انہوں سے می علیہ کی مرب سے مرب رسول اکرم صلی لٹد علیہ کی مرب سے مرب ان کہ بین میں داخل ہے ، اگر جو طور سینا اس جنہیں ہے ۔ سمجھ کہ مثلاً طور سینا کی جانب سخر کرنا بھی نہی میں داخل ہے ، اگر چوطور سینا اس جنہیں ہے۔ سمجھ کہ مثلاً طور سینا کی جانب سفر کرنا بھی نہی میں داخل ہے ، اگر چوطور سینا اس جنہیں ہے۔

چنانچ بصره بن ال بسرة الوسعيد خدري عبدالله بن عمرا در ديگر محالې کرام اس مديث کي روشی میں طور بیاڑی ما نب سفر کے لئے کو منع ما نتے تھے ، حالانکہ طور پیاڑ کو قرآن پاک يس وعظمت عطاك كني سع، ومنسى دوسرسيها لأكوماصل تهين مجكداس كووادى مقدس اورىقعىمباركه كالقب عطاكيا سے يس جب اس مى باك وادى كى جانب سفركرنا جائز نہیں ہے، توکسی غار، پہارامسحر، قبروعیرہ کی جانب سفر کو نا مائز کھیے سوسکتا ہے۔ یہی و مہ سے کہ ص طرح صحابہ کرام طورمہا ڈکی مانب نفرنیں کرنے تھے، اسی طرح مب وہ مکہ ماتے۔ تو غارهوا، غار توركى زيارت بنين كرت عقد واكرمه غاره وا وه مقدس غارب، جهال ابتدارً اقرآن باک نازل مہواا ورغار نوروہ متعام ہے ،جس کا تذکرہ قرآن باک میں موجو ہے ا دراسى غارمين ممرةب في صفرت الوكيرسي فرايا ولا تحددن ان الله معنا، عم نركر ب مثک النّدیما رہے سا تھ سیے) رسولِ اکرم صلی النّرعلیہ وسلم نزولِ وی کے بعد کھیل ن غاروں کی مبانب تنہیں گھتے، صرف مسجد الحرام اورمشا عرکا قصدُ فرماتے ،اس ملئے ک^اس كونمام روئے زمين بريشرب فعنيليت حاصل ہے۔

وه مقامات جهان شیاطین سیتے ہیں

معلوم مواکم سیرین جن کوالنگر نے قرآن پاک میں بیوت الند کہا سیے، تین معبدوں کے علاوہ جب ان کی جانج بسفر کرنا جائز نہیں، توان کے علاوہ ان مفام کذناہی مقدس کیبوں نہیوں اس کی جانب سفر کرنا ورست نہیں، مساحبہ کے علاوہ ان مفامات کو شیاطین کا مسکن کہنا ورست سے بیس جس طرح اونٹوں کے باڈوں اوغ سلی نوں میں اس لئے نمازادا کرنا جائز نہیں، سے کہ وہ شیطا نوں میں اس کئے نمازادا کرنا جائز نہیں، سے کہ وہ شیطا نوں میں واقع ہیں عوام الناس ان کا تعظیم کے او بہا کر جو شام مصر، جزیرہ ، خواسان میں واقع ہیں عوام الناس ان کا تعظیم کے اوبہا کر جو شام مصر، جزیرہ ، خواسان میں واقع ہیں عوام الناس ان کا تعظیم کے اوبہا کر جو شام مصر، جزیرہ ، خواسان میں واقع ہیں عوام الناس ان کا تعظیم کے

لئے ان کام خ کرتے ہیں اور ہروہ منام ہومسامبرا ورمشاع رجے کے علادہ ہے اور ہوگ ان کی تعظیم کرتے ہیں ان کوسٹیطانوں ہی کامسکن کہنا جا ہیئے یعف او قات دیجھاگیا ہے کہ الیسے متفامات میں شیاطین النسانوں کے شکلوں میں دکھاتی دیتے ہیں عوام الناس اہنیں رجال غیب اورا بدال کا لقب ویتے ہیں -ارشا و خداوندی ہے :

اور ہے کہ تعبق بنی آ دم بعق جناست کی بیٹ ہ پکڑا کرتے تقے۔ اس سے ان کی مکشی ا وربڑھ گئے تھی۔

وانه کان دجال سن الانس یعوذون برجال سن الجن فزادوهم رهقاً دالجن ۲

کیارجال غیب ہیں ؟

رمال نیب کے دافعات کترت کے ساتھ عوام النّاس میں مشہور ہیں ۔ عام طور پر
لوگوں میں بینا تروکھائی ویتاہے کہ رجال بنیب درصیقت نیک لوگوں کی نظروں سے موجہل موجہ بنیں ۔ اس میں کچھشر نہیں کہ بعض النسانوں کوالٹر پاک بعض لوگوں کی نظروں سے دان کی عزت یاان کوظم سے بجا نے کے لئے ، بعض ادقات او جھل کرویتے ہیں ۔ پرلوگ اولیام النّر ہیں ؛ البتہ کسی انسان کا تمام عمر لوگوں کی نظروں سے منفی رمبنا واقعہ کے خلا نے ۔ بروصف تو جنوں کا ہے جبکہ وہ انسانوں کو نظر نہیں آتے۔ ارشا و ربانی ہے ، اندہ ، بدا کھ ھی قبیلہ من حیث لا بے شک وہ البیس اور اس کا قبیلہ تم کو النہ بین ادہ ، بدا کھ ھی قبیلہ من حیث لا

شدد منهم روا لاعداف ، ۲۷ ویکه است اس طرح کرتم ان کونمبی ویکه

سکتے ہو۔ ک ان جوراس سی سر بر

بیں جولوگ بعض بہاڑوں، وادیوں. خانقا ہوں کی جانب جھیول رکمت کے گئے مفرکرتے بیں۔ دہ دَراصل شیطانی اڈوں کی حانب جاتے بیں اوراگرا نہیں ولی کچھ مجیرًالعقول واتعا

د کھاتی دیتے ہیں ، تو وہ شیطانی کوشے ہیں۔ شیاطین لوگوں کو گمراہ کرتے ہیں بعض اوقات دیکھا گیا ہے کہ ثبت سے آواز آرہی ہے۔ ساوہ بوح لوگ ان ملبیسات کو کوامات سمجھنے لگ مباتے ہیں ،اس طرح ان میں شرکا مز عقائد مزید تقویت بل ،رہے ہیں -

طوُر میبار کی طرف سفری ممانعت کی حدیثیں

بَعْرَه كى مديث ،سنن ادرموطامين منقول ہے ،

تال لا بى هريوة وقد اقبل من الطود لواددكتث قبل ان تخنزج

الىيە ساخرىجت سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلّم يقول لاتعل

السطىالا الختلأثة مساجدالسجد المحامروسجدى لهذا والبسجد الا قصلي ـ

ا بوم ررہ طور کی مبانب سے والیں آئے تولبفرونے ان سے کہا اگر میری ایترے طور كى ما نب مان سے بہلے ، توسے ملاقات ہوجاتی، تو بھیرتو لمورک جانب سفرنہ کوا ہیں

رسول الترصلي التوطييه وسلم ستصناب اپ سے فرما ہاکتین مسجدوں 'دمسجد حرام' مسجد بنوى مسجد إقفى كيعلاق كمسي سجد

کی مانب سفرزکیا مائے

ا بن محرکی حدیث

مسنداحد من مروی سے ا عن قزعترقال (تيت ابن عسر فقلت اني ادبيرا لطور نقال لا انميا تشدا لرحال الى ثلثة مساجد

قزعه بان كرتے بين كرمين عبرالنين عمر کے باس آیا، میں سنے کہا میں طور پہاڑ مانا چا ہتا ہوں [،]اس نے منع کیا اور کہا صرف تين سحدول مسحدحرام بمسجد مدميز

مسحدِانضلی کی طرف سفرکسیاحات لهٔ ناطوری حاشب سفرنه کیجیت

السعيدالح المديستيد المدينة والسعيد الاقعلى فدع عنك الطول فلاتأكث

ابوسعيد خدرى كى مدسيث

صحیعین میں مروی سے:

قال شهر بن حوشب سمعت رًبا سعید وذکر عنده انتسادة فی ا تطورفقال قال دسول الله صلی الله علید وسلم لاینبغی للملی ان تشد دحالها الی سیم در بیتغی

فيد المضلوّة غيرا لمسجد الحرام والمستعبد الاقصل ومسجدى

شہربن وشب بیان کرتے ہیں ہیں نے الوسعید فدری سے سنا بہب اکس کے بال طور پہاڑ میں نماز پڑھنے سے بارے سوال موا تودہ کہنے لگے کر رسول الرعلیہ وسلم نے فروایا ہے کہ میں میں الرعلیہ وسلم نے فروایا ہے کہ میں میں ال

مستعددام مسجداته فی میری اسس مسجد کے علاوہ کسی مسجد کی طرف سفرنکہا حاستے کہ اس میں نمازاد اکرنا مقصود ہو۔

ان تینوں مدینوں کی روشنی میں برگہنا درست ہے کو صحابہ کرام جس طرح تین محبُل سے علاوہ کسی میں میں میں ان کے علاوہ سے علاوہ کی میں میں بالدولی داخل ہیں۔
درگیر مقامات مجمی مان کے ہال منہی میں بالاولی داخل ہیں۔

مائزهم کے دسائل

-----بعب قبروں کی زیارت نثرعًا حا تزہبے، توجا مُزحکم کے دسائل کو بھی جا تزکہنا جا ہیئے 190

· طلامرسیے کہ زیارت کا وسیلہ سفر ہے؛ لہٰذا زیارتِ فبور کے لیتے سفرکرنا بھی مباتز ہونا جا ہیے لبكن بفظريه غلط سے، اس ليئے كرجب صراحةً سعركركے زيارت كرنے سے روكا كيا ہے : تواس سفر کوسفرمع منیت کہا جائے گاجس طرح اگر کو ڈی شخص مین سے دوں کے غیر کی ط^ن وہاں نماز اعتثاب ن کر تلاوت قرآن کے لیے سفر تراس کے سفر کو نام اتر کہا مباتے گا، اسی طرح کسی عورت کا نفل ج کے لئے ما وندکی امبازت کے بغیرسفرکر نا حرام ہے ،اسی طرح کسی غلام کا اپنے آ قاکی امبازت کے بغیر جے کے لئے سفرکزا معیّت كاسفر بيرليكن بلاسفركسي عورت كامسجدين جمعه كى نما زا داكرنا جائز سے معلوم سوا تنظا و، عمل بو تواب والاسه، مفرى صورت مين ده عمل نا مبائز بوما ما سي مبكه بلاسفروني عمل باعث رصائے المی بوتا ہے۔ ایس تمام مسامد میں بلاسفر آنا تواب کا کام ہے۔ ایس کے ساتھ ہی وہ صدیث معبی ملحوط خاطر سے حس میں وار دسے کمسجد میں نمازا داکرنے کے کئے منتے زیادہ قدم ہوں گے اتناہی ثواب زیادہ ہوگا۔ برمدیث بلاسفرمسجد میں آنے کوشا مل ہے جس طرح کرآپ بقیع قرستان کی زیارت فرمایا کرتے ہے ہے۔ کے لئے اپینے اپنے شہر کے قبرستانوں کی زیارت کرنامسنوں ہے۔البقہ رمول اکرم مسالانہ عليه رسلم كى فبراطم كى زيارت كى مشروعيت اس كئة ابت تنهين تأكر آب كے حقوق واحترامات مرحبك ايك جييية نابت بهول اورآب برصلوة وسلام يحييجنه اور وسيله فللب كرين كمح السب كي قراطه رياضري ك ساته فاص ذكيا مائك ،بلكه أب كى عبت تمام سلمانون کے دلول میں مرحیزیسے زیادہ موا ور مرمقام سے آب پر در و دوسلام بھیجا جائے او خطرہ ہے داگرہم لوگ صلوٰۃ وسلام بھیجنے کے لئے آپ کی قبراطہر ریصا ضری دینے کوفیاص کریں گئے، اس صدیث کی زومیں نہ اما ئیں جس میں آب نے منع فرمایا ہے کرمیری فرکومیلدگاہ نہانا تم جہال کہیں سے بھی مجدر ورود بھیجو گے ، تمہا را ورود مجے بک پہنچاو یا جائے گا۔

فبرنبوي كى زيارت كے مجوزين

اگرچشوا فع علمارسے عزالی اور منبی علمائے ابوالحن بن عبروس، ابو محد مقدی قبر بنوی کی زیارت کے لئے سفر کو مباح قرار دیتے ہیں جبہ امام مالک، ابوعبرالتُربن بطت ابوالوفا بن عقیل اور دیجر مقدر ملمار اس سفر کو نا جا تز قرار دیتے ہیں ؛ ار از او بہت ہیں کا معمل کیس علیہ امر مناخه و د مروہ کام جس رہم اراضکم نر بودہ مُرود دہوتا ہے۔
کل عمل کیس علیہ احد مناخه و د مروہ کام جس رہم اراضکم نر بودہ مُرود دہوتا ہے۔
خیال رہے کہ سفر کونا جائز قرار دینے والے علما منصب علمی اور اجتها دکے لیا ظرے ان علمارے کم درجہ کے مرکز نہیں ہیں جو از کے فائل ہیں۔ بھر امام شافعی کے اصحاب میں معمد جو درجہ اور مقام ابو محمد ہو بنی کا تھا جو سفر کے عدم جواز کے قائل ہیں، وہ امام غزالی کا نہ متعا ہو جواز کے قائل ہیں۔ امام غزائی منصب اجتباد ہر فائز نہ ہو سکے اور نہیں اُن کا کا ختم ہو ایک منفر و دیشیت ماصل ہے ؛ چنا پخہ قول اصحاب الشوا فع کے ہاں بچہ و وقیع ٹابت ہو سکا، جبکہ الجمح موبین جو کہ ابوالمعالی کے والد ہیں انہیں امام شافعی کے اصی بیں ایک منفر و دیشیت ماصل ہے ؛ چنا پخہ بیان کیا جا آ ہے اگر التہ کو بم کے ان کے دور مایں سی بی کو جمیع بنا ہوتا ، توان کا و فور علم صن کے والد ہیں ابت کا متقامی تھا کہ ان کو نبی بناکہ جمیع با بیا آ

ابن لطه عكبرى

اور ابن لبطة مکبری سنّت اورا تأریخ علم میں ممتاز حید ثیّت کے مالک تھے۔ان کا زہرو درع اور ستجاب الدعوات ہونا اہل علم سے مخفی نہیں۔ا تباع سنّت کے جذبہ سے سے بنا ریھے۔ یہ وجہ سے کرصین ابن علی جوہری نے نبی اکرم صلی اللّہ علیہ وسلم کوخواب میں دیکھا تھا کیا سے دریا فت کیا کئس ندمب پڑمل کیا مائے، آپ سنے فرمایا ابن بطرکے ندمب کوافقتیار کرو؛ چنا نخپروہ اس کے ہاں حاضر ہواا ور اس کو دیجھ کرمسکرا تے ہوئے کہا رسولِ اکرم مسل الڈوملیہ وسلم نے ہی فرمایا - فی الحقیقت اس انسان کاعلم بانسنتہ زم دورع اور دینداری قابل رشک ہے -

الوالوفا بن عقبل

بریمی اینے دُورکے علمار فضلاء سے سبقت کے گئے تھے، ان کی علی مبالات اور فهم وذكا كيسيش نظرتمام كروه ال كي تعظيم كرت اورعلم دفقه ، كلام ، صديث اورقراك باك كے معانی غامصنه میں ان كوا مام غزالى پر فوقيت دليتے - ان فضوصيتوں كے ماتھ سائقدان کی دینداری کی صن کی چیک کے سامنے امام عزالی کا فلسف، تفتوف ماند پڑھیے تھے، بلکہ ابوالو فا توامام عزالی کے فلسفہ کو زند قد قرار دیتے تھے اور میں فیاء کے توبهات كوا دله تشروييك سائمة بالحل قرار ديتے تقے ران كے سائمة سائمة ائر اربعه ومقاً اجتها دبرفا تزيته ودكيرًا لعبين عظام وائمة كرام بجئ ديادت قبرنبوى كے لئے سفركرنے كونا جاتز قرار ديت بين يم ائم كرام كے اصلات كو قرآن باك كے اس ارشاد سے خم كوتے ہیں کہ اگرکسی بات میں تمہا را تناز عرب حاستے تواس کو الندا وررسول کی طرف روکرو، او د مخلوق میں جومقام رسول اکرم صل الترعلیہ وسلم کو حاصل ہے و کسی کونہیں ۔ آپ ہی کو اس خصوصتیت کے ساتھ نوازاگیا کہ آپ کےعلاوہ سرشخص کے قول کو قبول بھی کمیاجاسکیا سے اوررد بھی کیا جاسکتا ہے ،لیکن رسول اکرم صلی النّدعلیہ وسلم کے مرفروان کو مانٹ صرورى بسے اور آپ كى اطاعت واجب بسے جبيساكه امام مالك سے منقول بسے كوره آپ کی قراط رکی مانب اشارہ کرتے ہوئے فرمای کرتے تھے کداس قروالے کے علاوہ تمام

کے قول کور دیھی کیا ماسکتا ہے اور قبول بھی کیا جا سکتا ہے۔ پس جا ننا جا ہیئے کہ فہوی کی زیارت سے لئے رسول اکرم صلی النی علیہ وسلم سے کوئی صدیث مروی نہیں اور زیارت كے جواز كے فائلين جوا حا ديث بيش كرتے ہيں ۔ محتبين بالا تفاق ان تمام كوكمزور قرار دیتے ہیں، بلکه در حقیقت وه موضوع ہیں ۔ فابل اعتماد سنز کی کما بول میں ا^ن کا وجود نہیں مل ، اسى لنته امام مالك بواس مستله كي تمام جزئيات سعه واقعت بي، وه ان الفاظ كے كہنے كو مكروہ ما نتے ہيں كركون سخف يدكيد كرميں نے قبربوى كى زيارت كى ہے۔ اكرد بارت كالفظان كيميال ستعمل بوتا بإنبى أكرم صلى الشطييه وسلم سيمنقول بهوّالوكبا الهم مالك جبيعة ملبيل القدر فاصل النسان اس لفظ كوبنظر كرامت ديجه كتنت تقير بيز امام احمد بن متنبل موسنت مسي خوب واقعت تحصه، ان مسيم عب قبر نبوي كي زيار کے منعلق سوال ہوا تو ان کی وسعت نظری سنے جب کتب مدیث کانفخص کیا توسو لئے الوهرريه كى اس روايت كركه بو مجدر بسلام كهاب والندتعالي مجدر بميرى رُوح كو لاً تے ہیں تو میں اس کے سلام کا مواب دیتا ہوں الکوئی مدیث نظر آئی ، لیکن اکس صدیث برنا قدار بجث <u>یم</u>لے گزرمیکی ہے۔

زیارتِ قبرنبوی اوراجماع

قربنوی کی زیارت کے گئے سفرگرنے کو مباح یا مستحب قرار دینے وکے اس پر نادانی اور کم ہنمی کی وجرسے اجماع کا الحلاق کرتے ہیں ، حالا نکہ سالقہ اور اق میں بم نے ثابت کر دیا ہے کہ استعم کا سفر کرنا ناجائز ہے تو گویا پرلوگ ایک ناجائز کا م برائمتہ کا اجماع سینے مررہے ہیں جس کا اطل ہونا بدیمی ہے کیا اتمت محمد برکے علما مگراہی پرجمع ہو سکتے ہیں ؟ ہرگز نہیں ۔ ان لوگول کی کذب بیانی پرجم اس کے علا وہ کیا کہ سکتے پرجمع ہو سکتے ہیں ؟ ہرگز نہیں ۔ ان لوگول کی کذب بیانی پرجم اس کے علا وہ کیا کہ سکتے ہیں کہ رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کا ارشاد ہے ؛ اگر لوگول کو ان کے دعوول کی بنا

پرحقوق دسیئے جا میں، تواس کا نیتے میں نسکے گاکہ ملا وجہ لوگ آپس میں نولوں اور مالوں کا دعویٰ کرسنے لگیں گے؛ لہٰذا مدعی کو دلیل پیش کرنی جا ہیئے ۔ اگر وہ دلیل نہ بیش کرسکے نو مذعیٰ علیقسما مٹھاکر سُری سوحاستے ۔

ا معلوم ہواکر مجرود توئی کی چینیت نہیں اس کوکسی صورت میں قبول نہیں کیا جاسک اور نداس ریکم لگایا مباسکیا ہے۔ اس پرچندا مثلہ پیش کی مبار ہی ہیں تاکہ مسلہ بحفر کرسا منے آمباستے۔

مثال اقدل : ہم دیکھتے ہیں کردہ لوگ ہو باطل نظریات کا پرجارکرتے ہیں۔ مندالت و گراہی ان کے دل ود ماغ پرما وی ہے۔ وہ اہل مق کے ضلات جموئے پرو پائیڈے سے باز نہیں آتے ۔ ان کی طرف غلط باتیں منسوب کرتے ہیں ، مثلاً یہود بول نے دعو کی کیا اگری التٰہ پاک نے سفتہ کے روز عبادت کے علاوہ دیگر کاموں کو حرام قرار دیا ہے، لیکن رسول اکرم میں الشرعلیہ وستم نے اس کا میں کام کرنے کی اجازت دی ہے ۔ ان کا یہ دلوی بلادلیل ہے اس کے اس کو تسبیم نہیں کیا میاسک ا

مثال تانی: عیسائیوں کے مسلمانوں کے بارسے میں کہاکہ ان لوگوں نے صفرت میں علیالسلام کوالٹہ کا بندہ کہرکران کی شان میں گستا تی کی ہے جفیقت بہدے کہ مسیح علیالسلام توحشرت ابراہیم اور حفرت موسی علیہ السّلام سے بھی افضل تھے، انہیں ضلاکا بیٹا یا خدا کہا گئی بھی حضرت علیہ کا لیندہ محبوبی ہوئی ان کے دعویٰ پر کچھ دلیانہ ہی اور نہ ہی امنت محمد بی ان کوالٹہ کا بندہ محبوبی ہوئی ان کی سیاد بی کررہی ہے، ان کے اور نہ ہی دیویٰ پر بھی کوئی دلیل نہیں ہے۔ اس دعویٰ پر بھی کوئی دلیل نہیں ہے۔

ه شال ثالث ؛ میهودی عیسا بی لونڈی بنانے کوھلال نہیں مجھتے ، عیسا بی عورت کوطلاق دینا حرام سمجھتے ہیں جبر میہودی مدعی ہیں کر جب مطلقہ کسی دوسرے انسان سے کلح کرلیتی ہے تو وہ طلاق دینے والے پرایڈا حرام مہوجا تی ہے۔عیسا بی مدعی ہیں کہ چَپا، بھیجھی ماموں ، خالہ کی بیٹیوں کے ساتھ نکاح کرنا حرام ہے۔ نیز ایک سے زیادہ عور توں کے ساتھ نکاح کو بھی حرام مجھتے ہیں۔ اس کے ساتھ دیلوگ مدعی ہیں کہ اللہ پاک نے جن عوتوں کے ساتھ نکاح کو حرام قرار دیا تھا، امت محتے ہیں نے ان کے ساتھ نکاح کو حلال کر دیا ہے۔ ان کے ساتھ نکاح کو حلال کر دیا ہے۔ ان کے اس دعوے کو بنظر تحقیق دیکھا جائے توصاف بیہ چیلتا ہے کہ ان کے پاس دموی کے اثنات میں کوئی ولیل نہیں ہے ؛ البنداان کے دعووں کو تسلیم نہیں کیا جائے گا۔ اس طرح ابل حق کے دعو ول کو تسلیم نہیں کیا جائے گا۔ اس

مثال دا لع ، الإتشيع مّرى بيركه صحابرام في مسلة خلافت مير نفس مريم ك مخا كى بحب كدانهول نے حضرت على كوليس بيتت ڈال كر حضرت الوبكر ، حضرت عمر ، حضرت عثمان كوبالترتيب خلييفه منتخب كيا الاتشيع كايه دعوي سراسر غلطه بصفرت على كيضليفه ملكل يركوني نفس موجود نهبي . بنيزوه مدى بير كرصحابه كرام ا درحمهو رامت منے حصرت على اورائمة ا ہل بیت کے مرتبہ کو گرایا ، حالا نکہ وہ عصوم عن الخطاستھے . ان سے علی کا کچھ اِ مکان نهبين تقاءان لوگوں نے مصمت ابنيار ميں اسی ملئے ملواختيار کيا تاکھائمۃ ابل بيت کی عصمت بثابت کرسکیں، بلکہ شبعہ کا ایک فرقہ انٹہ کوانبیار سے بھی افضل سمجیتا ہیے جبكه عمومًا تمام ابل شيعه قائل بين كرجس قدرلوگ امامون كے محتائ بين اس قدروہ انبيار كے محتاج نہيں ميں ليني وہ نبي اكرم صلى الله عليه وسلم سے تومستغنى موسكتے ہيں ليكن ائمة ابل بيت سے استغنائهيں موسكة اورص طرح نبي مبوت سے بيلے محبي عصوم مواسے اسی طرح اتمہ بی بن سے معصوم ہوتے ہیں البعض شیعداس صدیک غلوا ختیا کر گئے ہیں کہ انبیا ملیم انسلام کی طرح اتمة امل سیت عمی حن کی مدایت کے لئے مبعوث و تے ہیں، ان كى تمام زبالول سے ان كو واقفيت موتى ہے۔ نيز صنعت و حرفت اور تجارتي امورسے ان کی واقعفیت صروری ہے تاکہ ان کو دین وُنیا کےکسی علم میں کمسی کی احتماج نہ ہو، وگرنہ لازم آئے گاکەمعمىوم غيرمعصوم سے علم حاصل كرے اور ان كے ساھنے زا لؤنے تلمذ تہ

کرے۔ نوکیااس کا بریمی نتیج بینہیں موگاکہ انبیار ائتہ اولیار کا وہ مقام ہوانہیں ماصل بے حتم ہو مائے گاا وران کی قدرومنز لمت کو بھر لور دھیجا لگے گا۔

پس جولوگ انبیار کیمنل ائر کومعصوم تسلیم نہیں کستے ہیں، وہ دیدہ دلیری کے سائقدان كى يتنيت كومجروح كررسه بن البذان سے جہا وكر ناصرورى سب تاكاسلامى معاشره میں ائمتر کا ہونقام ہے انہیں دیا ماستے اوران کی شان میں گستا فا ند کلمات کہنے والے اس لاتق ہیں کہ ان سے جنگ ومدال کیا جائے ۔ان کے خون مال کومبار سمجھا جاتے ان کی ہیویوں کو چیسین **کرلونڈ یا**ں بنالیا مائے اوران کے مجیں کوغلام بنالیا ماستے۔ غرض ک^{افعیا} دانسة طوررِ السِيدلوگوں بركفركے فتوبے لكاتے گئے تاريخ كے معنمات بہة دسے دہ ہیں کرکس طرح نامار اوں لنے اہل اسلام کے خوان کے ساتھ سول کھیلی اور حلم وادب کے چىنستايۇن *كوڭھنڈرات مىں تبد*يل كيا او*رئس طرح عر*اق . خراسان ، حزريه ، شام ،مصر مغرب مین سلانون کونه تبیغ کیا ان کی نونچهان داستانین ومشت و بربرتیت کا المناک منظر پیش کررہی ہیں اور تاریخ کی ورق گردانی کرنے والے لوگ انگشت بدنداں ہیں کہ کس طرح اہل برعت نے اہل مت کومرف غلط کلمے مطلفے بیں کو ٹی کسرنہ اٹھارکھی اوران کے استیصال میں کو تی وقیق فروگذاشت مذکیا ۔ اہل حق کونیست و نالو دکر سفییں اہل بدعت شیعه نے جس بربرتت اور قتل وغارت کامنظائبرہ کیا۔ شایداس قدرا ہار کفرنے عجی ا ہل حتی کو ملیا میں نے نرکیا ہوا ور ملا وم ایک مفروضہ کی بنیا دیرجس کی کچھقیقت مزتھی اتنا دَرُوناک ناٹک رمیایا۔

فنم كاانتلان

مل بعض أوقات فنم كا اختلاف موتاسم يا اجتهاد كي ومبسعه ختلاف موتاسهے -

اگر فی الحقیقت ایک مجتهدی دائے صائب ہوتی ہے تو وہ و و مرا تواب ما صل کرتا ہے اور دو در مرح اللہ کا جہاد محیح نہ ہؤاس اور دو در مرح بیاں کا جہاد محیح نہ ہؤاس قسم کا اختلاف اسلام میں قابل بر داشت ہے اور خطا کا رانسان کی خطا معاف ہوجا تی ہے لیکن ان کے تعقیقہ ماس پوزلیشن میں بالکل نہیں ہیں کہم ان کو بدن تنقید بنا تے ہوئے یہ کہیں کہ انہوں نے حرام کردہ جیزوں کو ملال محرایا یا صلال چیزوں کو حرام قرار دیا بہرکیف اختلاف کو دیا بت برمحول کو الے ہوئے کسی و مجمول کو این میں موجوم قرار نہیں دیا جائے گا۔ چندا مست کے معلوف سے مائل میں دیا جائے گا۔ چندا مست کے ملاحظ ف مائل میں دیا ہوئے کسی و مجمول کو سے میں کا مست کا دیا ہوئے کسی و مجمول کو سے میں میں دیا جائے گا۔ چندا مست کے معلوف فی میں دیا جائے گا۔ چندا مست کا دیا ہوئے کسی و مجمول کو سے میں کا میں دیا جائے گا۔ چندا مست کا دیا ہوئے کسی و میں میں دیا جائے گا۔ چندا مست کا دیا ہوئے کسی دیا جائے گا۔ چندا مست کا دیا ہوئے گا دیا ہوئے کا دیا ہوئے کا دیا ہوئے کا دیا ہوئے کی معلوف کا دیا ہوئے کا دیا ہوئے کی میں میں دیا ہوئے کی دیا ہوئے کا دیا ہوئے کی دیا ہوئے کا دیا ہوئے کی دیا ہوئے کی دیا ہوئے کی دیا ہوئے کا دیا ہوئے کی دیا ہوئے کا دیا ہوئے کی دیا ہوئے کے دیا ہوئے کی دیا ہوئے کیا ہوئے کیا ہوئے کی دیا ہوئے کی دی

مثال اقل ، امام شافعی کے ہاں چو نکہ زنامصا مرت کی حرمت تابت نہیں کرنا اس لیتے وہ الیں نوکی سے نکاح کرنے کی اجازت دیتے ہیں جس کی ہٹی یا مال سے شکاح کرنے والے نے زناکیا ہے جبکہ امام الوصنیعہ اورا مام مالک اس نکاح کو جائز قرار نہیں دیتے ، اس سے کہ ان کے ہاں زناکر نے سے بھی رشتہ مصا ہرت ثابت ہو جا آہے ۔ اس مستلہ میں اکتہ کا اختلاف فہم کا اختلاف ہے جو قابل برداشت سے ۔

مثال ثابی بمنایات کملاق مثلاً انحلیت البریه الباتن البته وغیره الفاظسے
بیوی کو کملاق دینے میں اختلاف سبے یعفرت عمر امام شافعی اس کو ایک طلاق رجعی
قرار دیتے ہیں، جبکہ حضرت علی اور امام مالک اس کو تین طلاق کہتے ہیں اور عبداللہ بن سود
کے نزدیک ایک طلاق بائذ ہوگی ۔ امام احمد کا نقط نظر بہنے کہ اگراس نے ایک طلاق کی
نیت کی تو ایک طلاق رجعی ہوگی، وگرمذ ایک بائز ہوگی ۔

منتال ثالث ، ایک فخص اپنی میوی کو د و لمالاق دسینے کے بعد اس سے ضلع کرا ہے توکیا ضلع طلاق متعتور ہو گایا نہیں - اتمۃ اس میں اختلات رکھتے ہیں - ابن عباس طادّ س عکرمہ احمد دیگرفقہا محدّثین اس کوطلاق قرار نہیں دسیتے ہیں، جبحه مصرت عثمان اور کچھ دیگر صحابہ اس کوایک طلاق قرار ویستے ہیں ، لیکن امام احمد بن صنبل ، ابن خربمہ اور محدثین

ا بن عباس کے قول کو ترجیح دیتے ہیں۔اکثر قالعین کا یمی تول سبے۔ بیز امام الوصنیفہ، امام مالک اور شافعی بھی اسی کے قائل ہیں، لیکن اتمہ کا یہ اختلاف اجہّا دی ہے۔ وہ سب رسول اکرم صلی اللہ علیہ وہتم کے اسحام کی تابعداری کرنے والے ہیں۔اگرم فی الحقیقت ایک قول صائب ہے، لیکن لنظام ردونوں قول صائب سمجھے مبائیں گے۔

بلادلیلکسی کو اجماع کا بخا لف کهناهیجی نهیں www.KitaboSunnat.com

ان لوگوں کا یہ دعویٰ کرناکہ ابنیار ہے ناموں کے ساتھ قسم نراحھانے والے ان کے لئے نذر مذ ماننے والے ان کی قبرول کو سجدہ ذکرنے والے ان کی قبول کا ج مذکر نے والے اور ان کی قیروں پرسحدیں مذہنا نے والے ہی دہ لوگ بیں جوانبیار کی شان میں گستا خی کرتے ہیں، ان کی تنقیص کرتے ہیں . حالانکد انبیار کرام کا احترام سرسِلمان کے للتة صرورى سب اوراس براجماع موچكا سب كدان كا احرام دكرسف ولنف دارّة اسلام سے خارج ہیں۔ ان لوگول کی اس تتم کی فرسودہ بالق کا حجراب ہم اس کےعلادہ کیا وسے سكتے بین كدان كاموں كے مرانجام وسينے سے ابنيا مى شان میں كچھاضا فرنہیں ہوتا .بلكہ اس فتم کے شرکیہ اعمال کے مرکبین مٰذاب نعالو ندی کو دعوت دے رہے ہیں ا دران کے ان کامول سے حضرات انبیا ملیہم السلام کی شان میں اضافہ نہیں ہوتا ، بلکه ان سکے ارشادات سے واضح تنوت ملتا ہے کہ انہوں نے زور دارالفاظ میں اپنے متبعین کومنع فرایا کرتم میری فبرکومیلی منانا اور ندان کے جج کے لئتے آنا بس اجماع کا وعویٰ کرنے والمے افترا پر داز میں اور درحقیقت یہ لوگ میں ہو پیغمبروں کے گستاخ میں ، جبکہ ان کی اطامت سے کھنم کھلا باغی ہوجیے ہیں ا در پھر ملا دلیل اجماع کا دعویٰ عدم وا تفیّت پرمبنی ہے۔

امام احمد كا قول

ومن يشاقق الرسول من بعد

مانبين لدالهدئ ديتيع عشير

المم احمد فرمات مين الآلاء ان تنتكلم في مسئلة ليس لك فيها المام (تجھے ایسے مسئلہ میں رائے زنی سے احتراز کرنا چا پہتے جس میں تجھے کسی امام کی رائے معلم نه مير) كبس جب مهم اسلاف كے اقوال كاس قدرا ہمّام كرتے ہيں توكس طرح ميم اجماع ك مخالعنت كريكت بين كلأثم كلِّ وه لوگ موكسي سكر بين أمَّه كُ اختلات كاعلم نهين ركھتے ہيں، وه فورًا كهر ديت بين كريمستلدا جماعي سيد، حالانكريه فن السِتاجس مين بورسي مزم واحتياً کی صرورت سے اور معیراستفساکرنا صروری ہے۔ اسی لئے ہم کہتے بیں کرسی مسئل میں اہماع کا دعوی کرنے کے لئے و سعت علمی اور بالغ نظری کی صرورت سے بہی وجہ ہے کہ امام شانحی امام احدسنے واضخ الفاظ میں فرمایاکدا جماع کا مطلب برسپےکدا سمسنڈ میں کمسیجی اختلات كاعلم نہیں۔ امام احمداکٹر كہا كرتے تقے كه اجماع كا دعوىٰ كرسنے والا تجوٹا ہے۔ استصعلوم بى نهبىل كداس مستلميل لوگول كا اختلاف كياسب ال يركم الميح سب كه اس مسكه میں مجھے اختلاف کا علم نہیں ہے۔ ابوثور کا قول ہے کہ اجماع کامعنی یہ ہے کہ ہمیں مخالفت کا علم نہیں، بس متنازع فیمستلاک تین مساجد کے فیلیعی قروں کی زیارت کے لئے سفررنا اجما مُامستعب سے میر اجماع میں اس قبیل سے سے کیامشہور مدیث کرتین مرول کے عنركى طرف سفركر ناجائز نهيس كى موجودگى ميس اس سيمغلات كيسيدا بماع سوسكتا سبيد اور بلادليل اس تسم ك اجماع كوتنابت كرسف والے رسول اكرم صلى الله عليه وسلم كى مخالفت كرك والعين اورملمار امت كے را وست الخراف كرنے والے ميں . ارشا

ا در دوتخص سبدها را سنذم

کے بعد پغیرکی مخالفت کرے

۳.0

سبیل المدوسنین نولد ما تولی دنست بنتم کے راست کے سوا اور راستہ بہلے تو مرحوہ و سباد مدین اولد ما تولی دیں گے وساء ت مصیدا دالنساء ، ۱۱۵ پلتا ہے۔ اور قیامت کے دل جہنم میں داخل کریں گے اور وہ بُری مگریئے۔

اور قیامت کے دل جہنم میں داخل کریں گے اور وہ بُری مگریئے۔

پس سجد نبوی کی زیارت کے لئے سفر کو سنے سفر کورنے کے استحباب اور تین مساحد کے فیر قران کی زیارت کے لئے سفر کے عدم جواز پراجماع ہے اور ان دونوں کے ساتھ نفس مرکع بھی موجود ہے۔

موجود ہے۔

قروں کی زیارت ان کی تعظیم کے لئے سئے ؟

قرول کی زیارت کے لئے سفر کی شروعیت کے قائلین اس طرف گئے ہیں کوزیارت میں وراصل صاحب قبر تی تعظیم قصود جوتی بہاوراس کے علوم تبت کا اعتران بولسب يس اگرشدرمال كى مدين كے سين نظر سول اكرم صلى الدُعليه وسلم كى قبراطم ركى زيارت کے لتے سفرکو ممنوع مظہرا یا مباہتے ،اس سے آپ کی قدرومنزلت میں نفص لازم آئے گا اورکسی سلمان کے لئے مائز منہیں کہ وہ آپ کی عظیم میں کو تا ہی کرسے یا ایسے اسباب برقتے كارنة لا مع جوآب كي ظمت كونمايال كرتي سور، ليكن يادر كين قبول كي زيارت سے مقصود مرگزان کی تعظیم نہیں۔ رسول اکرم صلی النّرطید وسلم نے قبروں کی زیارت اس کئے مشروع فرمانی تاکہ زائرین ان کے حق میں دعاکریں اوران کے لئے معنفرت طلب کریں ' جبحه وهمومن مون اگرمومن نهین تو عبرت اورموت کی یاد کوتان کرنے کے مقتے زیارت کی اليكن صاحب قبرى تعظيم اس كے سامنے خشوع فينوع سے سر حجر کماکر کھوٹے مہونا زیارت مکروم ہسے جس سے شارع علیہ السلام سے سختی سے سائقه منع فرما دماس توجب قبرول كي زمارت سيمقصودان كالعظيم نهيل تونزز مارت

محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

كرنے سے عدم تعظيم كيسے لازم آتے گى ، فاہرہے أكر زيارت كرناان كى ثنان ميں

نقس کا باعث ے ، تو بھرزیارت کو واجب قرار دیا جاتا حالا کمرہ ذا تہیں ہے۔
ہاں جولوگ انبیار کے ساتھ ایمان نہیں رکھتے یا ان کی الحاصت کو واجب نہیں گروانتے یا ان کی الحاصت کو واجب نہیں والے بیں جوانبیار کی شان میں گستا خی کے مرحکب ہو رہے ، البذا ان کے کا فرا ور مرتد ہونے میں بچھ شک نہیں جبہ وہ ببانگ دہل انبیار علیہ السلام کی فنالفت کر ہے ہیں اور ہر فرد رہر دہ مخالفت کر ہے ہیں ، توان کو منافق زندیق کہا جائے گا بھرنیا رہت شرحی میں میں قرب فرم میں صاحب قبرسے و عاکے لئے کہا جائے گا بھرنیا رہت شرحی میں میں قبر سے و عاکے لئے کہا جائے گا اس سے شفاعت کا سوال ہوگا ہو شرفا حرام ہے ۔
گا اس سے شفاعت کا سوال ہوگا ہو شرفا حرام ہے ۔

رسوال كرم صلى الترعليه وسلم كاشفاعت فرمانا

اس میں قطعاً کھ شک نہیں کہ رسول اکرم مسلی الڈعلیہ وسلم کی قبراطہر کی نیارت سے مقصود یہ نہیں کہ ایسے ورخواست کی جائے یا اُپ سے دُعا کے لئے کہا جائے ۔ ہاں معابہ کرام آپ کی زندگی میں آپ کی خدمت میں حاضر ہوتے اور دُعاکی ورخواست کرتے ہا رش کی دُعاکر سے کی درخواست کا ذکر واضح طور پرموج دہے بہی وجہ ہے کہ جب آپ فوت ہو گئے وجہ بارش کی دُعاکر نے کی درخواست کا ذکر واضح طور پرموج دہے بہی وجہ ہو تی کہ جب آپ فوت ہو گئے کہ کئی میرے بغاری میں صفرت عمر کا قول موج دہے کہ لے النہ جب بم تحظ زوہ ہوتے تو ہم کئی میرے بغاری میں صفرت عمر کا قول موج دہے کہ لے النہ جب بم تحظ زوہ ہوتے تو ہم برسادیا تعاد اب ان کے بعد ان کے جبا کا وسیلہ لاتے ہیں ، یعنی اس کی دُعاسے ہم بہا وش برسادیا تھا ۔ اب ان کے بعد ان کے جبا واش کے دعاکر نے سے ہم بہا وش برسادیا تھا ۔ اس کے دعاکر نے سے ہم بہا وش برسادیا تھا ۔ اس کے دعاکر نے سے ہم بہا وش کے دیا دیا تھا جائے گئے ۔ النہ کے سامنے صفرت حس برسادیا تھا جائے گئے ، بلکہ الٹار کے سامنے صفرت حس سے ہوائش ما تھے ، بلکہ الٹار کے سامنے صفرت حس سے ہوائش ما تھے ، بلکہ الٹار کے سامنے صفرت حس سے ہوائش ما تھے ، بلکہ الٹار کے سامنے صفرت عباس کی حرمت عظمت و عفرہ کے دسیلہ سے ہارش ما تھے ، بلکہ الٹار کے سامنے صفرت عباس کی حرمت عظمت و عفرہ کے دسیلہ سے ہارش ما تھے ، بلکہ الٹار کے سامنے صفرت عباس کی حرمت عظمت و عفرہ کے دسیلہ سے ہارش ما تھے ، بلکہ الٹار کے سامنے صفرت عباس کی حرمت عظمت و عفرہ کے دسیلہ سے ہارش ما تھے ، بلکہ

انہیں بارش کی دُعاکر لئے کے لئے بام رلے جاتے۔ اگر مرمت کا واسطہ دے کرشفات كامعنى ليا مائے الويھران كى دفات كے بعد معى ان كى حرمت وظلت كو بطور سفارش بيش كرنا جائز بوتا . نيزيمعني اس ليت درست نبين كه اكرمقعود حرمت كا داسطه دينا بوتو تجهررسول اكرم صلى التُدعليه وسلم كي حرمت كا واسطه كا في تحقا يحضرت عباس كي حرمت كوبطورسفارش ببيش كرنے كى صرورت نائقى معلوم سوامقصود محض ان سے دُعاكروا ناخاً اسی المرح تصرت معاویہ نے بزید بن اسوہ جرشی سے بارش کی دعا کرنے کی در تواست کی ۔اسی ح منحاك بن قیس سے بھی اِرش کی و عاكرہ ان گئی بیس تابت ہوا كدرسول اكرم مىل لازماد يسلم سے وفات کے بعد شفاعت کرنے کی در نواست کرنا اُلبت نہیں ؛ البنة قیامت کے دوز آب سفارش فرایس گے مبکرتمام مخلوق آپ کی خدمت میں آتے گی اور آپ سے مغارش ک درخواست کریں گے۔ یہی وجہ سبے کدالٹر پاک نے ممین حکم دیا ہے کہم آپ پرمساؤہ و سلام تعیجتے رہیں۔ نیزا ذان کے کلمات کسن کرآپ کے لئے وسیلہ کی دُعاکریں ال کے لئے مسی مکان کوخاص کرنا اُ بت تہیں ہی آپ کی قرِ اطر کوخاص کر سنے برک ب وسنت سے كونَ نفس بيش ...كى ماسكتى بلكه مرم ككرست آب برصلوة وسلام مبيجا ماست اسكت منع فرمایا کیمیری قبرکومیله گاه نر بنانا، تم جهان سے بھی مجھیر درود سلام بھیجو سے۔اس کو فرشتے مجہ تک بہنچا دیں گے جواسی کام برمقرر ہیں۔ كبكن عام مسلمانول كى قبرول بردُعاكر في سے ده ميلدگاه نبيس بنتى بين،اس ليت ان کی زیارت مشروع سے ؟ تاہم اگران برسجد عمارت تعمیر ہوجی ہے، تو بھراس کے ميلكاه بنن كا خطره سبع اس لنة وال مان اورد عاكر في سعدوك دياكياس، توكيا أكركو تى تتحف رسول اكرم صلى التُرعليه وسلم كى قبرا طهركى زيا رمت كيمسلت سفركونها ز معجمتا ہے، اس منے کراس کا ایمان ہے کررسول اکرم ملی الدّعلیہ دستم کی اطاعیت خروری ہے اور آپ کے حکم کونسلیم کرتے ہوئے وہ اس سفرکو ماجا رہم تھا ہے توا یسے

شخص سے متعلق کیسے کہ مباسق ہے کہ وہ النّداور اس کے سول کی شان میں ایانت آمیز رُوسِتے کا متحب ہور باہے ہم آواس بات کے قائل میں کہ جِنْحض رسول اکرم صلی النّہ علیہ ولم کا استخفاف کرتا سہے ۔ آپ کی شریعیت کو بدلیّا ہے وہ کا فریجے اوراس لائٹ ہے کہ اس کو قبل کردیا مائے ۔ ہاں اگر کسی شخص پررسول اکرم ملی النّہ علیہ وسلّم کاکوئی حکم پوشیدہ رہتا ہے ، حق واضح نہیں ہوتا ، تو وہ معذور سبے نہ اس کوکا و کہا جائے گا اور مز ہی اس کا قبل مردی ہے۔

عبا دقبورا ورعبا داوثان ایک ہیں

بولوگ قروں کا چ کرتے ہیں . فوت نند بزرگوں سے دعائیں مانگتے ہیں . تغرع ، انکساری کرتے ہوئے ان سے فریاد رس کرتے میں اور جس طرح تین محبروں کی مبانب سفز کرنا مقدس ہے، اُسی طرح قرول کی طرف سفرکومقدس مجھتے ہیں ان سے مشرک ہونے میں کچھے شعبہ نہیں اور بتوں کی عباوت کرنے والوں میں کیے فرق نہیں۔ اسی خون كے پیش نظر سولِ اكرم مل التُرعليه وسلم نے وعا فرماتی ؛ ليے التُرميري قبر كومبت ندبنانا كماس كى پوما ياك سروع مومائية ان لوگون بر الله كا قبرنازل مو جنہوں نے اپنے میغمبروں کی قبروں میسجدیں تعمیر کی آپ کی قبر تک جب کو تی شخف پہنے ہی نہیں سک اواس کے بت بننے کا شائر معی ختم ہوگیا۔ آپ کی قبراطہری مانب سفر کرنے والا در حقیقت مسجد بنوی کی مانب سفر کرنے والا سے رئیں جب وہ لوگ ہو قبروں پر پینج كرصرف التُدكى عبا دت كرتے ہيں، التُركے لئے نمازيں اواكرتے ہيں، وہلعون ہيں او تو وہاں جاکران سے مرد مانگتے ہیں، خشوع خصنوع سے ماتھ فیرالٹدسے نریا درس کرتے ہیں ہ زباده حقدارس کران پرسنت کی میکی کسفدروا صح میکی و گول کا فعل شرک کا در لعیرسے جب و ه ملعون میں، توسر پڑا شرک کرکے قبروں کا طوا ٹ کرنے والے ان براعت کاف بیٹھنے والے

میلکشی کرنے والے لیتنیا تعنتی بیں اور بتوں کی پوماکرنے والوں سے بچھ کم نبیں مِشرک کا فرہونے میں دونوں مساوی ہیں اور ٹٹرک تمام گنا ہوں سے بڑا ہے میحمین میں ہے کہ مبرالتُد بن مسعود في ذريافت كيايارسول النُداكون ما كناه براسيد فرمايا النُدكا فركِ بنانا برُاگن و بيد، جبكه النُّرتيرا خالق سبے - ارشاد رَباني سبے -

والذين لا يُدعون مع الله المَّهُ أخوولا يقتتلون النفس التححرم الله الابا لحق ولا يذنون ومنايفعل ذالك يلق اثَّامًا-

رالطرتمان) ۲۸

يزفراياء انالله لايغمند ان پشرك به ويغفر ما دون ذالك لمن يشاء - زالنساء) ١١٦

ا دروه جوفدا کے ساتھ کسی ا درمعبو د کو نهيں پهارتے اور صب مبا ندار کو مارڈالنا ندانے حرام کیا ہے، اس کوقتل نہیں کرتے مگرمانز طریق دیعنی شریعت سے حکم ، سے اوربدکاری تبیں کرتے اورج برکام کرے گا سخت گٺ وين مبتلا موسكا-

فداس گنا مونبس بخشة كاكس كواس كا شریب بنایا مائے اور اس کے سوا (اور **گناہ)** من كوماس كالمش دس كاء

انبيار كتعظيم

اس میں کچرشہ نہیں کہ انبیار علیہ السلام کی تعظیم کرنا صروری ہے، اس لتے کہ وہ الٹر کے برگزیدہ بندسے ہیں - امنبول سنے لوگوں کو توحید کا مبتق دیا الٹرک عبادت کی جانب بلادیا۔ اللہ کے اسکامات کولوگوں ٹکس پہنچا دیا الس ان کی ا طاعت مروری سہے۔ اورم يغيربم سفة تم سي يلي مسيح ال ارفتادر بانى سے: دما ارسلا

مودسول الانوعي إليه انه لااللا

ک طرف یمی وی میمنجی کر میرسے سواکوئی معبود محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

نهیں تومیری می عبادت کرو۔ ا وربم لے سرجها عت میں بغیر بمبیجا که خلا ہی کی عبادت کر واور بتوں کی د*یرسستش* سے امتناب کرد۔

اوردامے تحذی جواپنے بیغمبرہم نے تم ے پہلے مجیعے میں ان کے احوال در کیا۔ كرلو،كيام في فدات رحمان كمصوا اور معبود بنائے تھے کہ ان کی عبا دت کی مباج

بس علوق کی محبّت میں غلو کرنے والے میسانی ہیں ان کے مشرک ہونے میں کھوشبہ انبول نے اسپے علمار ا درمشائع اور مسيح ابن مريم كوالتركي سوا خدا بناليا عال أنحدان كوميكم ويأكيا تتعاكه ضدات واحترمح سواکسی کی مبادت مرکب اس کے سولکونی معبودنهيں اوروہ ان لوگوں کے تشرکیے مجرر کہنےسے پاک ہے۔

اینے دین کی بات میں مدسے آگے بذبره معوا ورخدا كعابار سيعين حق كصموا کچھ نہ کہو مسے لعنی مرام کے بیٹے عیسیٰ (م مٰراکے بیٹے تھے،بلکہ) مٰداکے رسول اوراس کاکلمہ دلشارت ، مقے ہواس کے مریم کی طرف مجیجا تھا اوراس کی طرف سے

الَّهُ امَّا فَا عَبِدُ مِنْ رَأَلًا بَبِياءً ﴾ ٢٥ أيزفروايا؛ ولقد بعثنا ف كل اتسة دبسولا اناعبد طالله واجتنيأ الطاغوت والنحل) ٣١

يزومايا واسأل موادسلنا من قبلك مِن رسلنا ا جعسلنا من دون الحسن الهيّ يعبدون -دالزخوين) ۲۵

نہیں . ارشاو *فدا وندی ہے* ، ۱ تخذ وا احبائدهم ودهباننهم ادباباً ممن دون الله والمسييح البن مريم وما اصواالآ ليعبدوا المهثأ واحدأ كالهالاحوسيمانه عبا کِشُوکِون ۔ دانتوبہ ؒ) ۳۱

نيزفرايا: لا تعلوا في د بينكم ولا تقولوا على الله الا الحق انتما المسيحيين ا من مريم رسول الله و كلمنتذالقا ها الحامريم وروم منه فاامنوا بالله ورسله-دالشاء اءا

ایک رُوح تقے قوندا اوراس کے سولوں پر ایمان لاؤر

<u>گناہوں میں تفاوت</u>

جس ملی شرک غلون استظیم کے گناہ ہونے میں کچھ شبہیں، اسی طرح سی پنجبر کی شان کو کم کرنا اس کے حقوق واحرامات کو ملحوظ نرکھنا بھی گناہ ہے۔ اگر جبر شرک غلون انتظیم میں ناہ ہے۔ اگر جبر شرک غلون انتظیم کروہ الشرکے رسول ہوئے کے با وجو دصلیب پر اٹٹکاتے گئے ان کی شان میں کمی کرنا ہے بہ جب حقیقت ہے کہ اللہ باک سے ان کو آسمان کی طرف اطحالیا اور وہ وہمنوں سے خفوظ جب کے بان کو آسمان کی طرف اطحالیا اور وہ وہمنوں سے خفوظ رہے کہ کہ اللہ باک سے ان کو آسمان کی طرف اطحالیا اور وہ وہمنوں سے خفوظ رہے کہ کہ اللہ باک شان میں غلوا فتیار کر کے انہیں خدایا خدا کا بیٹا کہنے والے زیاد گئر کا رہے ایک ان کا میں ان کی شان میں غلوا فتیار کر کے انہیں خدایا خوالی بیٹا کہنے والے زیاد گئر کا رہے اور ہمنا کو میں گئر کہ کہ کہ کہ کہ کہ کہ کہ کہ وہ بیں جو تروں کی زیارت کرنے کو معفر فریسفر دونوں میں وہن میں کہ خواں کا شرک قبروں والوں سے فریاد رہی کی جائے میسا کہ مشرکین کار قریہ ہے فلا مرہے کہ ان کا شرک قبروں والوں سے فریاد رہی کہ جائے میسا کہ مشرکین کار قریہ ہے فلا مرہے کہ ان کا شرک جیکے کئروں کے قرار دیتے ہیں اور کھی کو استے کہیں دیا وہ بی جو میں کہ میں کو ہمکی ویتے ہوئے فرایا ؛

جس دن ہم ان سب کو جمع کریں گے پھر مشرکوں سے کہیں گے کہ تم اور تمبارے شریب اپنی اپنی جگہ تھم ہرے رہو توہم ان میں تعرقہ ڈال دیں گے اوران کے شرکیب ان سے کہیں گے کہ تم ہم کو تو نہیں پہ جاکرتے متے۔

ويوم يخشرهم جميعًا ثم نقول الكذين اشوكوا مكانكم انتم وشركا يم فزيلنا بينهم وقال شركا ومع ماكنتم ايانا تعبد ون -

ریونسن، ۲۸

تہا رہے پروردگاری شم ہمان سے فروس پرسٹ کریں گے۔ ان کاموں کی بودہ کتے

يْرُولْ إِنْ وَدِيكَ لَسَاءُ لَنَهُمُ اجْمَعَتِينَ عَمَا كَانُوا يَعْمَلُونَتَ -

(العجد) ۹۲-۹۲ رسے کم

ابوالعاليه فرماتے ہيں كر دوباتيں اليي ہيں جن كے متعلق تمام منلوق سے سوال مولا كريم كس كوعبا دے كرتے رہے اور تم فے پیغیروں كی دعوت كاكيا ہوا ہو يا ؟

رم نس بی عبادت رسے رسیے اور م سے بیمبروں می دعوت کا کیا جراب دیا ؟ نیز فرمایا: قو لواالمنا بالله و مسلمانو کم و کتم خدار ایمان لائے اور حج

ما انزل المینا وما انزل الی ا بواهیم می کتاب بم براتری اس بر اورمومینے ، بادیم واسما عبیل واسعاقب و بعقوب سیماعیل اسحاق اوربعقوب اوران کی اود

والاسباط- دانسقوه ۱۳۲ پرنازل بوستے-

اس آیت میں بھی انبیار علیهم السّلام برنازل شده آیات برایمان لانے اور اللّد کا عبادت کرنے کا محم ویا گیا ہے۔ می محم مخاری میں ہے کہ رسول اکرم مسلی اللّه علیه وسلّم فجر کی ورکعتوں میں یہ آیت اور سور و آل عمران کی آیت قبل یا اهل الکتاب نقاط الی مدر سواء

بیننا و ببینکم ۱۷ بیدة پڑھتے اوراس کورسول اکرم صلی الٹرعلیہ وسلم نے تیھروم کی طر نمطیس مکھ کرچیجا مقصود یہ ہے کہ الٹدگریم نے ہمیں مکم ویا ہے کہ ہم انبیار اور فرشتوں پر ایمان لائیں ایکن ان کورب مترجمیں - ان کو الٹر کا مثر کیب رہمجیں۔ بس مرف ایک اللہ

کومعبودسلیم کریں اورتمام ا نبیار پر جواحکام نازل ہوئے ان پر ایمان دکھیں اور جی تفسیمی نبی برایمان نا لاتے دہ کا فرمر تدہیے اور اس

كاخون رائيكال ب اور وبعض پرايمان لاتے بعض پرنہ لاتے دہ بھى كافرىم معلوم موا

تمام نبی رکادین ایک ہے ، ال سب کی ملت ایک ہے ؛ البقہ شرائع میں اختلاف ہے۔ ارشا درتا بی ہے ؛ سلا جعلنا مستکعہ سے تم میں سے برایک کے لئے بم نے ماستہ

شدعة دسنها جا- رالنمل، اور فرليته بنايا-

العِتْم بیرودیوں نے ابنیار کی تکنیب کی، ان سے تتل کی کوششیں کی او عیسائیو مفعنوا فتيار كرك ال كوالله ك سائد تركي كما، ليكن سلما ون كومكم وياكي كه انبياري اطاعت كري ان كى تعظيم مين غلوسے كناره كش مييں اوران كى بے اور الى المحقير كرنے سے وموربیں ارشادر آبی سبے ،

ولاياسوكم ان تتخذواالملائكسة والعنبيين ادبابا ايا م كمربا لكعثر بعدادانتم مسلمون رالمعمول.٨ بلكميسا تيول نفميس عليبالسلام سعكم درم كولوكوك وميى التركي سأتحه ملاديا-ارشا در بانی ہے : ۱ تخذ وااحبادهم

ورحبانهم ا ربابا من دوت الله-

دالتوحيه") ۱۳

انہوں سے اپنے علمار اور مثالخ اور

مسيح ابن مرم کو النّد کے سوا منُدا

اوراس كوريمى نهيل كهناي سيئة كرقم فرشتور

اوريغمبرول كوندا بنالو مجلاجب تمسلمان

موصيحة وكيا لمص زياب وتهبين كافربون وكفي

بس جران کورب محبتا ہے دہ بھی کا فرہے اور ہوان کو بڑا مجلا کہا ہے، دشمنی کرتا سب گالیال کا لناہے وہ تعبی کا فریسے ۔

جباد افعنل اعمال سے ہے

بولوگ دسولوں کی مخالفت کریں · ان کے خلاف محاذ اً رائی قائم کریں · ان کے ملات مبادكرا ورسولول سے معاونت كرنائ كى اشاعت كے ليے كوشاں ربنا مزمز برکه افضل عمل ہے ، بلکه فرض کفایہ ہے۔ جہاد کی فضیلت میں کتاب وسنت سجرے پرسے ہیں، لیکن معمض لوگوں کا جہا دعقیقی ہے جبکہ بعض لوگوں کا جہا دا ہل بوت سے ہے۔

اہل برعت سے جہاد

وہ لوگ ہوشیطان کی سازشوں میں مبحوطسے ہوتے ہیں ، مدعات کوسنت پیمجھتے ہیں بھا سرمجھتے ہیں کہ الٹرکی اطاعت کررسے ہیں ، لیکن درمقیقت گراہ ہیں اورش بطان کی اطاعت کررہے ہیں ، ان سے جہا دکیا مباستے ۔

نوارج

ان میں سے خوارج میں جوالد قعانی اس معل رابال مام کے ساتھ رسر سیار میں. يه لوگ جس طرح حضرت على اوراس كي رفقا كي خلاف نبردا زماريداس طرح معتر معاور اور اس كمساحقيول كے خلاف مى جنگيں اولتے رہے ۔ان كے بارے دسول اكرم مل التُرمليه وسلم سن خروايا ، مسلما اؤل ميں افتراق سے وقت ايك نتى جما عن خرفي كرك كرم ورماً عول من سے اقرب ال الحق جماعت قتل كرم كى ؛ جنائجہ آپ کیمیشین کُو زَ کے مطالِق ان کو حضرت علی ا ور اِس کے معامقیوں سنے قتل کیا جبکتعجب انگیزوہ لغرہ سے جوخوارج لگا تے تھے کہ دہ الترکے دیمنوں سے اسلام کی سربلندی کے ملئے جہا دکر رہے ہیں اسی طرح اہل بدعت ہمیشہ اہل سنت کے خلاف معاذآرا رہے، انہوں سنے اہل کتاب،مشرکین ، نا تاربوں سے بھی تعاون ماصل کرسنے میں کچے حجامجے ہوں ذكيه، اسى طرح انهول في جها دك تقدس كويا را پاراكرديا ، ان كى طرح عيسا بتول لے بھی اپنے آپ کومجا برحمجها، حالان کومجا بدوہ ہے جوالٹر کی راہ میں اس لئے جہا دکر تا ہے، تاكرالنركا كلمد مبندموا ورتمام دين الترك لت موجات محيمين ميں الوموي اشعري سے روابت بدكرسول اكرم ملى الترمليدوسلم سعدريا فنت كياكيه يارمول الله إ ايك آدى

کم اس

بهاوری جنانے کے لئے لڑا ہے ، دور اا وی عمیقت کے لئے اور پیسراآدی ریا کاری کے لئے لڑائی کرناہے ، تو الٹر کے لئے لڑائی کرناہے ، تو الٹر کے لئے لڑائی کرناہے ۔ ارشا در بانی ہے ، ارشا در بانی ہے ، وہ الٹر کے لئے لڑائی کرنا ہے ۔ ارشا در بانی ہے ، وہ الٹر کے لئے لڑائی کرنا ہے ۔ ارشا در بانی ہے ، وہ الٹر کے لئے لڑائی کرنا ہے ۔ ارشا در بانی ہے ، وہ الٹر کے لئے لڑائی کرنا ہے ۔ ارشا در بانی ہے ، کہ فتنے دین کے کا فسا در باتی نہے کہ فتنے دین کے کا فسا در باتی نہے ۔ کے کہ فتنے دین کے کا فسا در باتی نہے ۔ اور دین مب فدا بی کا ہوم باتے ۔ اور دین مب فدا بی کا ہوم باتے ۔

نيز فسسرمايا

اوراگریم بیاست تومربستی میں ڈرلنے والا بھیج دیتے ، توم کا فروں کا کہا نہ مانوا وران سے اس قرآن سے منم کے مطابق بڑے شدّ دمر سے لڑو۔ ولوشتُنابعثنا في كل مَرْية نَذيرا فلا تطع ا لكا فرين وجا عدهم بــــ جهادًا كــــيرا رالفرقانــــــــ)اه-۵۲

دین اسلام میں جہا دکواس لئے اصل قرار دیا کہ دین کو غلبہ ماصل ہو، اللہ وصدہ کی عبادت کو فروغ ماصل ہو، اللہ وصدہ کی عبادت مغلوب ہو۔ ارشا دربانی ہے :
حدالت می ارسل دسولہ بالمعدی دیں آؤ ہے جس نے اپنے بیٹی برکو ہات درب می دربی می دربے جسیا تاکہ اسے اورسب ددین الحق لینظہ دہ علی المدین کلہ میں دین المح دربے وال کو مفر ہستی دین میں کرتے ہیں، تو ان کو صفحہ ہستی کو جب مشرکین اللہ کے دین کے غلبہ کو تسلیم نہیں کرتے ہیں، تو ان کو صفحہ ہستی کو جب مشرکین اللہ کے دین کے غلبہ کو تسلیم نہیں کرتے ہیں، تو ان کو صفحہ ہستی کے تعلیم کو تسلیم نہیں کرتے ہیں، تو ان کو صفحہ ہستی کو جب مشرکین اللہ کے دین کے غلبہ کو تسلیم نہیں کرتے ہیں، تو ان کو صفحہ ہستی

کلمتر توحید کو خلبه ماصل موتاسیے - نیز کتاب وسنت کوتفوق و برتری ماصل موتی سیے -محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

سے نیست ونا بود کرنے کے لئے جہاد کیا مائے ، اسی کوجہادِ اعظم کہا ماتا ہے۔ اس

پس بولوگ النر، اس کے رسول کے ارشادات کوتسلیم کوتے ہوئے قامر برکار بندستے ہیں' منہیات سے دور رہتے ہیں، وہ النرکے کلم کو بلند کرسنے والے ہیں اور جولوگ النداس کے رسول کے اقوال؛ افعال کے مخالف ہیں، دہ دین اسلام کو کمزور کر رسیم ہیں۔

شدرمال

پس شدرمال میں یہ لوگ اللہ اس کے رسول کی مخالفت کررہے ہیں جبر رسو لڑی ملی اللہ علیہ مسلی اللہ علیہ منع فرمایا کہ تین سجدوں کے علاوہ کسی مقام کی طرف شدرمال نہ کیا جائے مفہوم لفظی کے لھا ظرے اس میں قریبی واض ہیں اور بلحاظ خطاب کے جب ان تین سجدوں کے علاوہ کسی سجد کی جانب شدرمال مربئز نہیں توکسی قبر کی جانب شدرمال کیسے مباتز ہوسکت ہے اور بھر پانچوں نمازوں کی اوائی قرآن پاک کی تلاوٹ احتماء فرکہ وعا وغیرہ سجدوں میں مشروع ہے۔ قبول میں نہیں اس لحاظ سے سجدیں توہر مال قبر سنان سے افضال ہیں۔

اس سابطہ کی روشن میں ہم کہیں گے کرکسی قبر کی جا نب سفر کو مبائز کہنے والے لوگ الداد کو اس کے رسول کے مخالف بیں ، ان کے ساتھ جہاد کرنا ضروری سبے۔ یہ لوگ اہل مدت ہیں ، ان کے ساتھ جہاد کرنا ضروری سبے۔ یہ لوگ اہل مدت ہیں ، ان کے منا ہے جن کے ساتھ درسول اکرم صلی الدّ علیہ وسلم نے ہما درنے ان کو نوارج سسے بھی بدتر کہنا جا ہیے جن کے ساتھ درسول اکرم صلی الدّ علیہ وسلم نے ہما درنے اوران کے استیصال ... کا حکم فرمایا ، مالانکہ وہ بنظام رنہ توشرک کی دعوت دیتے اوران کے استیصال کی نا فرمانی کا اظہار کرتے تھے، وہ مجھتے تھے کہ وہ اللہ کے رسول کی مدد منظے اور نہیں رافتول کی نا فرمانی کا اظہار کرتے تھے، وہ مجھتے تھے کہ وہ اللہ کے رسول کی مدد کر رسبے ہیں ، مالانکہ ان کا یہ خیال بالکل باطل مقا ، اس سے ان کو کچھ فائدہ نہ ہوا

دور سے بینیبروں کی معاونت کررہے ہیں، جبکہ انہوں نے اپنے علما یصو فیا کو النّر کے علاوہ رہنا رہ بنایا، مالا نکہ ان کوئم تھا کہ وہ ایک النّد کی عبا دت کریں ۔اس کے ساتھ کسی کو شرکی بنائیں۔ ساتھ کسی کو شرکی بنائیں۔

اس کنشر کرتے ہوئے آپ نے عدی بن ماتم سے فرمایا کہ ان کو اپنائرب مرام کو مدال اور صلال کو حرام کر دیا، تو انہوں سے ان کی اطلاعت کی ان کو اپنائرب بناید اللہ کی عبارت میں ان کو متر کی کرایا ۔ اس ولیل کی روشنی میں علماء کا اس پرجماع ہے کو جس شخص کے سامنے رسول اکرم مسلی اللہ علیہ وسلم کا حکم واضح ہوجائے ۔ اس کے لئے تعلیٰ ما تو نمیں کہ وہ اس کی مخالفت میں جسی کی تقلید کرسے ۔ البتہ بعض علمائے اس سے شخص کو تقلید کی امبازت وی سے جوا جہاد سے عاجز ہے۔ یہ روایت محمد بن صن مروی ہے، لیکن واضح ہوایت سے موجود مونے میں تقلید نا جائز ہے اور جوج زی کما کہ مقل مثرک ہیں، میلیے قبروں کی زیارت کے لئے سفر کرنا ان کا ج کرنا غیرالنہ سے مائکنا ان میں تقلید کا مؤتر کے اور جوج زی دالی میں تقلید کی گئی تش منہیں ہے جقیقت تو یہ ہے کہ اس قسم کے شرکیے کام کوئے والوں کے سامۃ وہا ، کیا جا سے تاکہ اللہ کا وین غالب ہوا و کھم تو صد جا برکیا جا سے تاکہ اللہ کا وین غالب ہوا و کھم تو صد جا برکیا جا سے تاکہ اللہ کا وین غالب ہوا و کھم تو صد جا برکیا واسے کا تاکہ کہ ہوایت اور باطل کے درمیان فرق کیا جا ہے گا تاکہ ہوایت اور گراہی واضح ہوا۔

وَلا حُولُ وَلَا تُوهُ } الابالله العالمي العظيم

خائمته

پُس ماننا چاہیئے کہ الڈ کریم سنے تمہیں حکم دیا ہے کہ ہم ابنیا مراور جن تو یو ک کو واقعے سند سر سر سر سر سے معرف کا میں میں اس میں اور ہیں ان برایمان رکھیں اس کے ساخد ساخد ساخد اسول اکرم سلی النّد علیہ دسلم کی اطاعت مجت تعظیم، توقیر مجی بم پرفرض ہے، اس نے ہمیں می دیا کہ ہم ایک الٹرکی عبادت کریں۔اس محم سائه کسی کوشریک زبنایس، فرشتول ا ور پخیبرول کورب شمجیس،اسی طرح الترکے مقوق ُ رمولِ اكْرَمِ ملى المُرْعِلِيهِ وَللَّم كَيْمُقُوقَ وَنْ فرَشْتُولِ اوْيَكِيْمِرُول كَيْمِتُوق بِهِجا نين بعض كوبعض بِفِعْيلَت ماصل ہے؛ چنالغِ بمّام فرشتوں بِعِفرت ببرملِ كوففيلت ماصل ہے، جبحة تمام ينيبرون بيصرت محرصلى الشرعليه وسلم كومين لياكيا سبع واورانبس بداعزاز عطافراليا کر حضرت جبریل کی وساطنت سے ان پر قرآن باک کا نزول موا بھنرت جبریل سے بارسے . ينزفروايا كرحفرت جرلي عليه السلام ك أب كے دل برقرآن پاک نازل فرمایا تاکه آپ لوگوں کوڈرائیں، وہ کتاب نصبیح بلیغ مرن ٰ زبان میں ہے۔اس کے برخلاف میساکہ بعفن کا فروں نے الزام لگایا کہ یہ توکسی انسیان سے تعلیم حاصل کرتاہے ' تواس كانفي فروات موست التركزيم نے فروا يا كرجس النسان سيقعليم حاصل كرنے كا الزام یه لوگ لگا رہے ہیں، وہ توجمی ہے، اس سے عربی زبان کیسے پڑھی ماسکتی ہے بئی معلم

مواکد اس نبی سے کسی انسان سے کچھنہیں پڑھا، اس کا استاذ الند کریم ہے۔ بواسط محضرت
جریل ان پرا حکام خداوندی نازل ہوتے ہیں جس کو روح الا مین کا لقب دیاگیا بعض مقاما
میں روح القدس کہا گیا ہے اور بعض مقامات میں رسول کریم بھی کہا گیا ہے۔ ان سب
اوصا ف کے بیان کا مقصد رہ ہے کہ حضرت جریل نے اپنی طرف سے اس میں کچھاضا فہ نہیں کیا اسی طرح رسول کریم میں النوعلیہ و تم نے قرآن پاک کوجن وانس کے پاس پہنچا یا۔ اس میں اپنی جانب سے پچھامنا فرنہیں کیا۔ آپ سے سن کرآپ کے اصحاب نے آگے اس کو بہنچا یا۔ ارشاور بانی سبے یہ الاندار کے اس کہ اس کے فریعے سے تم کوا ورجس تحفیل بہنچا یا۔ ارشاور بانی سبے الاندار کے مالے دور ہے سے تم کوا ورجس تحفیل بہنچا یا۔ ارشاور بانی سبے الاندار کے میں اپنی جانب کے اصحاب نے آگاہ کردوں۔
دید و میں بلغ کرالانعام ، ۱۹ وہ بہنچ سکے آگاہ کردوں۔
دیر میری میں سئے آپ نے فرمایا میری طریح بہنچا دو اگر چرا کی آئیت کیوں

نزمیم بخاری میں سئے آپ نے فرمایا میری طریح بہنچا دو اگرچر ایک آیت کیوں مذہبوا ور بنی اسرائیل سے اصا دیث بیان کرو ، کچھ حرج نہیں اور دوشخص مہان لوجوکر ممیری طرف جموٹی باتیں منسوب کرتا ہے ، وہ اپنا شمیکا نہ جہنم بنا ہے ۔

تمام انبيار كرام ايك دين برعظ

ممارے گئے صروری سیے کتمام انبیا۔ برمجہ لا ایمانی رکھیں اور حضرت محرصل التعلیم التحالیم میں التعلیم التعلیم التحالیم الت

قولوانمنّا بالله وما انزل المين (مسمانی کهوکهم خوابهان لاستے ج وَما انزل الیٰ ابرا خیم و اسماعیل و (کتاب مِم بِهاری اس بِرا وربح (محیفی)

ابراميما وراسماميل اوراسحاق اوربعقوب اوران کی اولاد برنازل ہوئے، ان براور*ی*و اور میمبروں کوان کے برورد کاری طرف سے ملیں ان پر دسُب ہواہیان لاستے ، ہم ان پخیراں

بلكمنيكي برسي كدلوك فدايرا ورفرشتون پراد د منداکی، اس کاب پر سوینسبه ول بر

ايمال لاتيس -

رسول اس کما جمیوان کے بیدر د گار کی ملرت سے ان برنا زل ہو تئ ایمان رکھتے ہیں اورمومن مجيسب فدا پراوراس كے فرشتوں پرا دراس کی کمابوں برا دراس کے بینمبروں بر ایمان رکھتے ہیں۔

مومنو! مندا پراوراس کے رمول براور ہوکتاب اس سنے اینے بینمبرد آخرالزمان ، برنازل كى سے اور بوكتابي اس سے يہلے

نازل كى تقين سب يرايمان لاقر-

اسطق وبعقوب والاسباط ومااوتي موسىٰ وعيسیٰ ومااوتی الْنبیّون لا

نغرقب بین احد منهم . رالبقريه) ١٣١

میں سے کسی بیں کچے فرق نہیں کرتے ۔ نیز فسسر مایا ،

وككن المبومن أمن بالله واليوم الآخووا لملائكة والمكتاب والنبيين

والبقرة ١٧٧

نيزفرايا: امن الدسول بماانزل الميه من دمه والمؤمنون كلأمن بالله وملائكت وكمتب ودسيله.

رالبقره) ۲۸۵

نيزمنسرايا: بإايعا المذين أمنوامنوا بالله ودسوله مالكتاب الذى نزّل علىٰ ديسولمه والمكتاب الذى انزلىن

تسبل رالمنسام ۱۳۷

حصرات انبیارعلیهم انتسلام کا وجودگرامی التّدعز دحل ا دراس کے بندوں کے درمیان واسطہ پیٹ الٹرکے احکام ،ا وامر ، لذاہی و منیرہ سے لوگوں کومطلع کرتے ہیں [،] نیزو در گذشته کے واقعات ا درستقبل کی نبریں دسیتے ہیں۔ ان سب پنمبروں کے آخر مين التُدياك فيصفرت محدصل الشرعليه وسلم كومائم النبيين ساكريميما اورا يسيفضا مَل طلا

فراتے جن کی ومرسے آپ کوسب پر فوقیتت حاصل ہوگئی ۱۰ سطرح آپ کوتمام بنوآ دم ا پرسیادت اور رزری مامسل موگنی - آپ کے خصائص وفضائل لیے شمار ہیں ، لیکن ان سب فعنائل كے باومود النريك في ميں خرواركياكم الله تعالى كے ساتھ كى مثرك فرمناً الما يهال تك كدرسول اكرم ملى الترعلب والم توعبى الترك مقام يراستواركر ناشرك بدء مسي دمي كوشايان نبين كه خدا تواس ارشادرانسے ، دُماكان لبشر كمّاب اور يحومت اور نبوت مطا مزمائے۔ ان يؤتييه الله ا لكثاب والعكم والنبرج اوروہ لوگوں سے کھے کم خداکو مجبور کر میے ثم يعتول للناس كونوا عبادًا لم بندے بوجات ملک داس کودیکنا سزاوار من دون الله ومكنكونوا سيانيتين ك كدا بل كاب، تم على رباني مرماوً بماكنتح تعلمون انكتب وبسأ کیوکوئم کا ب خدا پر صنے بڑھاتے کنتمر تدرسون ۔

داللعسول

معلوم ہوا فرشتوں پیغمبروں پرایمان لاناصروری ہے، لیکن ان کورب محبنا کفر ہے، جبکہ بتوں کی الم نت کرنامجی ضروری ہے بلکہ ان کو اس طرح ٹکڑے ٹکڑے کرویا جائے

جس طرح حفرت ابراہیم علیہ السّلام اور بعفرت محمصلی النّرعلیہ وسلّم ہے سبّوں کو باش باش کسیا۔ معیرضانوں اورضا نقامہوں کے گرانے کا حکم دیا، اسی سلتے ان سے بارسے میں حکم ہوا ،

انكم وما تعبدون من دون بختك تم ادرتم المه وهم ورجبي تم اس ولله حصب جمع استم لمها والدون كي علاوه يوجة برحبتم كاليندهن بي وبي

(الانبياء - ٩٨) تم كوجاناك -

ایمان و توحید کے حذبات اس بات کے متعاصی ہیں کہ ماسوی الندجن بتول دخیرہ کی لوگ پوما کرتے ہیں، ان کی اہنت کی مائے ، البقہ فرشتے ، انبیار اورنیک لوگ جن کی

محبّت بین طوافتیار کرتے ہوتے لوگ ان کی عبادت کرتے ہیں، وہ اس لائی نہیں بین کر ان کی ابات کی عبائے ؛ البقہ لوگوں کو ان کی تعظیم اور محبّت میں غلوکی معدوں سے کوٹاہ رمبنا میا ہیئے تاکہ شرک میں منطق میں جائیں، ہاں ان کی تقریف اور عزّت کرنا بھی صووری ہے۔ ان کی نشان میں گستانی انمٹیار کرنا ان کے مقوق میں کو تا ہی کرنا بھی ایک تسم کا کفر ہے اور مراطم ستقیم سے انخرات ہے۔ ارشا در تا بی ہے ،

اورحس دن دخذا ، ان کوپکارے گا اورکے گاکممیرے وہ نٹریک کبال ہیں ،

ویومرینادیهم فیقول این اورک شرکاءی المذین کنتمرتزعمون و اورککی دا نقصص ۱۲ جنکام

۱ نفصیصی ۱۲ جن کائمہیں دعویٰ تھا۔ حضرت نوح علیہ الست لام نے قوم کو نخا طب کرتے ہوئے فرمایا ،

یا تومرانی لکمرندپرمسپین ان احبد والله واتفوه والحبیعون

رنوح، ۲-۳

مجائیو، میں تم کو کھلے طور پرنفیصت کرتا ہوں کہ مداکی عبادت کر واوراس سے

فرروا ورميراكها مالوبه

دیگرتمام پیخمبرول نے اپنی قومول کو ایک النّد کی عبادت ادر اپنی الاعت کی طرف دی وقت می دان میں النّد باک نے ان کی حفاظت کرتے ہوتے فر مایا :

وان پر مید وا ان یعد عوف فان اور اگریہ یا بین کرتم کوفریب دیں توخد اسک وفریب دیں توخد اسک وفریب دیں توخد اسک وفریب دیں توخد اسک وفریب دیں توخد اسک ولئے حوالم دی اید می ا

، مستبین تعای*ت رسے* ۵۰ روپی وہے ہیں ہے تم کو اپنی مردسے اور مسلمانوں کی دیمعیت

اسے بنی! نمداتم کوا دربومنوں کو ہوئتہسا رہے پئرو ہیں، کا فی ہیں ۔ نیز منسرمایا: وان پرمیدواان پخدعوٺ فان حسبك الله هوالمذی اید ك بنصدم (الانفال) ۱۲ سے تقویّت بخشی۔

نيزفرمايا : بياييها المبنى مسبك الله مدن انتبعك من المؤمسنين دالانغال، ۱۳ الميس الله بكاف عدى الاالزس ٢١ كيا فدالية بندر كوا في تبير.

ا در د فدا پر بجروسه دیکھے گا، توده اس ومن يتوكل على الله فهوحسبه -کوکفایت کرے گا۔ (الطلاق) ۳

ایک دوسرے مقام میں صالح انسانوں کا تذکرہ کرتے ہوئے فرمایا کروہ کہتے ہیں کہ سمیں الٹر کا فی ہے، وہ یہ نہیں کہتے کہ مہیں الٹراور اس کا رسول کا فی ہے۔ اسی طرح ضرمایا که النّٰد پرتوک*ل کرنے والے کہتے ہیں* د انا ا لی اللّٰہ دا عبون *سبے شکسیم النّہ کی طرف* رغبت كرف والعين ميهال معي ينهيل كهاكهم التداوراس كرسول كي طرف رضبت كرنے والے ميں - رغبت كو صرف التّٰدكى حانب منسوب كيا ہے ، حبيساكہ اللّٰہ ياك نے دسولٍ كرم صلى التُرعليه وسلّم كو وصيّت فرما تى (خاذ ا فوغت فا ننصب والىٰ د ببتُ فارغب) رئیس جب آپ کو فراغت موتوآپ کھرے موں اور اپنے رب می کی طرف زنبت کریں، غورکرنے سے بہۃ چلتا سبے کہ رغبت کا لفظ تو کل کومبی شامل ہے ، اسی مستے صرف الٹر پر تو تل كرف كاحكم دياكيا - ارشادر بانى سبد :

اورالٹرہی پرتو کل کرو۔ وعلى الله فتوكلوا -كم مجرمومن مين اور اپينے پروردگار مربيم وس

نيزفرمايا: انه ليس له سلطان ر کھتے ہیں وان براس کا کچھ زور نہیں میلیا۔

على المذين المنوا وعلى ربّهم يتوكلون

دالنغل، ۹۹

یس نوکل، رغبِت، خشیت کے معاملِ میں اللہ کے ساتھ کسی مخلوق کو شریب مرجماً ما جس طرح کرعبا دت میں کسی مخلوق نبئ فرشتہ کو کچھ صفتہ دار مذبنا یا مبائے ۔ ارشاد رّ ہا نی ہے: مومن تووه میں کرجب ضرا کا ذکر کیا جاتا انساا نسگیسنون الذین ا ن ا ہے تو ان کے دل ڈرماتے ہیں اورجب ذكرإلله وهبلت قلوبهم واذا كليت

775

انہیں اس کی آیتیں پڑھ کرسنا نُ جاتی ہیں توان کا ایمان ا دربڑھ جا آ ہے اوروہ لینے پرور دگار پر بھروسہ رکھتے ہیں۔ علیهم ایات زادتهم ایمانا وعلیٰ دبتهم پتوکلون -(الانغال) ۲

خالص توحير

ان ادلیک روشنی میں اگر کوئی تخف ہے کہا ہے کہ توکل مرف الڈ پر کیا جائے۔ مرف احکی کی عبادت کی جائے ، صرف اسی سے ڈرا جائے ، کوئی فرضۃ ، کوئی پیغبراس لاتی نہیں کہ اس کی عبادت ہو ، اس پر بھروسہ کیا جائے یا اس کا خوف دل میں رکھا جائے ، تواس کا یہ کہنا خالص توحید پرمینی ہے ۔۔۔۔۔ ، اس سے مزاد فرشتوں بیغمبروں کے مرتبہ میں کچھی آتی ہے اور نداس سے ان کا معبوب ہونالازم آتا ہے۔ زیاد سے زیادہ اتنی بات قطعیت کے ساتھ تا بت ہے کہ انبیار، فرشتے راوبیت سے ورج برفائز نہیں مہیں ، ان کا متام خالق کے مقام سے نیچے ہے ، وہ سب اللّٰدی محلوق بیں اور یہ بینے ممکن ہوسکا ہے کہ مخلوق کو خالق کے مساوی کر دیا جائے ، جبکہ وہ سب اللّٰدی بندے ہیں۔ ارشاور بانی ہے ۔۔ ان کا مقام بندے ہیں ۔ ارشاور بانی ہے :

میسے اس بات سے عار نہیں رکھتے کہ خداکے بندے ہوں اؤرنہ مقرب فرشتے د مار، رکھتے ہیں۔

ا ورکھتے ہیں کہ ضدا بدیار کھتا ہے۔ وہ باک ہے داس کے مذہبیا ہے مذہبیلی رہلکہ

مِن کو یہ لوگ بیٹا اور سیٹیاں سمجھتے ہیں، وہ م عبدٌ الله ولاالملائكة المقربون و النساء) ۱۷۷ (النساء) ۱۷۷ فيزفروايا : وقالوا تخذ الوحل ولدٌ اسبحان بل عباد مكومون و رالانبياء) ۲۷

لن يستنكف المسييح أن يكون

سهمهم

اكسس كے عزبت والے بندے ہیں۔

ان آیات کی روشی میں تمام محلوق کے بارے یہ ہامیج ہے کہ ان میں رہبت کے خواص موج دنبیں ہیں، وہ سب اللہ کے بندے ہیں۔ اگر کوئی شخص کسی نبی ولی کو رہبت کے مقام پر لا کھڑا کر تاہیے، تو وہ مذصرف بیر کم معقبت کا مرتکب ہور ہاہیے، بلکم شرک ہے ۔ تقام پر لا کھڑا کر تاہیے، تو وہ مذصرف بیر کہ مول النوصلی اللہ علیہ وسلم نے فرایا تم ہے بیرے مرسول النوصلی اللہ علیہ وسلم نے فرایا تم نے میری مدح و توسیف میں مبالغ آرائی سے کام نہیں لینا ہوگا جیسا کے عیسا تیوں نے معنوت عیسی ملیدالسلام کی تعرفیف میں مدسے تجا وزکیا۔ بیس میں تواللہ کا بندہ ہوں بتم محصول الند کا بندہ اوراس کا رسول مجھو۔

رسول اكرم صلى الشرعلية وسلم كى عبريت

جب آپ کومبوت فرمایا تو آپ کوعبودیت کے لقب سے نوازت و نے فرمایا دوان کسا قام عبد الله اورجب آپ کی مدافت کے لئے عام چیلج کیا توجی آپ کو مدافت کے لئے عام چیلج کیا توجی آپ کو مدکت موسے فرمایا دورجب آپ کواملر مرایک عبد نا) اورجب آپ کواملر کرایگیا ، چرجی آپ کوعبر کے نفظ سے یا وفر ماتے ہوتے فرمایا : (سبحان الذی اسوی بعد یہ کا کیا گیا ، چرجی آپ کو عبد کہنے والوں پوطعنہ نی کرتے ہیں بعد یہ کی کو تی ہیں کہ اور انہیں گستاخ رسول کہتے ہیں۔ اس بارسے میں مفسرین بیان کرتے ہیں کہ نجران کے اور انہیں گستاخ رسول کہتے ہیں۔ اس بارسے میں مفسرین بیان کرتے ہیں کہ نجران کے میں عافر موااور عرفن کیا اسے محمد ! تو ہمار سے بیغر کومیوب گردان ہے ، جبحد قواس کو عبد کے لفظ سے بیکار تا سے ۔ آپ سے دنوایا مفرت عیسی علیہ السلام کے لئے المند کا بندہ ہوتا کچھ حمید بنییں ، آپ کے اس فرمان پر معفرت عیسی علیہ السلام کے لئے المند کا بندہ ہوتا کچھ حمید بنییں ، آپ کے اس فرمان پر دیل کی آ بیت نازل ہوئی ؛

لن يستنكعت؛ لمسيح ان يكون

ضراكي بندسي بوا وربذمقرب فرشتة

مسحاس بانت سے مار نہیں رکھتے کم

عبدًا لله ولاالهلائكة المقربون-. ماررکھتے ہیں ۔

دالمشام، ۱۲۲

یم و مرمے کرجب تجاشی نے صفرت معفرسے در یافت کی محفرت عیسی علی السالام ہے باسے آپ کی راتے کیا ہے ، تو حفرت جعفر سے کہا وہ الٹر کا بندہ اور اس کارمول ہے

ا دراس کا کلمہ ہے جس کا تصرت مریم کی طرف القاکیا اوراس کی روح سے بتب نجاشی نے تنكا المعات موت كما كرمفري يلم أب كريان سي تنك كرابرهمي زياده منهي بي-

اس برفورًا بادری برافروخت موسكت بنجاشي نے كہا مجع تمهارے برا فردختر بونے كى مجدارًا ہ نہیں سے معلوم ہوا موجودہ ؤور سے مطابق اس وقت سے با دری تھی سے علیہ السّلام

كوعبد كَبِنے ميں ان ك تنعتيص مجھتے تقے ، ليكن الذُكومعيوب كر داننے اور نعائص كے ساتم موصوف كمدني مين كيمه عارنمبن سمجقة عقد فيحين بيرب آدم كابشام محكاليال ديباس

اس كے التے سزاوار نه تھا ،آدم كا بيٹا مجھے عبطلا ما سبئ اس كے ليے لائق نه تھا وہ كہتا كہ ليك

دالابول، مالانكري ايك بول، ب نيازمول تكسى كاباب بول فركسى كابيا مول اور نهی کوتی میرے ساتھ برابری والاہیے ۔ اور اس کا جبٹلانا پرسیے کدوہ اسس کودوبارہ

بدانہیں فراسکتا ، جیساکہ اس سے اس کو پہلے پیدا کیا ، مالانکہ پہلے پیدا کونا دوبا وہیدا

كرف سے اسان نہيں معلوم مواكسي بغيركونداكا بيٹا قرار دينا الندكو كالى ديناسب

ميهى وُجرب كرحف رت معا ذبن جبل ميساتيول كے متعلق فروايا كرتے بھے ان پررتم ندكيا جائے کر الندکوایسی گالی دیتے ہیں کراس طرح کی گال الندکوکسی انسان سنے نہیں دی-ان تھے

قول كرم تل مشكين كے قول كوالله ياك فيريان فرايا:

أورجب كافرتم كود تيكيتي مين توتم س واذاراؤك ان يخذونك

استہزار سے کہتے ہیں کرکیا بی شخص الد مسزدًا كَاهُذا اللَّذِي مِيذَكُم کرچرتمہارے معبودوں کا ذکر دبڑائی سے) کیاکڑاہے، مالا ٹکہ وہ نود رثمان کے نام سے منکز ہیں۔

الفتكم وهم بذكرًا لوحمًا هُمَافَوْدَ دا لانبياء) ۳۹

کفار کم رسول اکرم صلی النه ملبه وسلم کو بنظر استحقار دیکھتے ہوئے تعبب سے کہتے کر پیشخص ان کے بتوں کو بڑا عبلا کہر رہا ہے۔ اس کے مما تقدم اللہ کے ذکر کا انکار کرتے تھے ، حبیبا کہ اللہ کیاک سنے فرمایا :

اُ ورجن لوگول کویمشرک خداسکے سوا پکارتے ہیں ، ان کو بُرا ذکہنا کریھجی کہیں خدا کو بے اوبی سے ہے مجھے بڑا ذکہ بیٹیس

ولاتسبوالذين يدعون من دون الله فيسبواالله عدوا بغير علم رالانعام ، ١٠٧

يہو دونصار لي وُرشركين غلو في المشائخ سے آيئنر ميں

ہم بھے ہیں کہ بہودی میسا قاؤر شرکین بعض مشائے ، انبیار اولیار وغیرہ کی مجتت اوتسطیم میں غلوا نمتیار کرتے ہیں۔ ان سے وہ مراتب جودر تقیقت من بعنداللہ انبیخ صل ہیں ، ان کا انکاد کرتے ہیں ، ان کو ان کے اصل روپ میں بیش کرتے ہیں ان کا انکاد کرتے ہیں ۔ اس طرح ہیں گوگ اللہ کی عبادت اس کے حقوق ، حرمات فعائر کا استرفا ف کرتے ہیں۔ اس طرح ہیں گوگ اللہ کی عبادت اس کے حقوق ، حرمات فعائر کا استرفا ف کرتے ہوتے اولیا رمشائے کو ان کے درم سے زیادہ مجتنے ہیں۔ کس قدر تر کر بات سے کہ اس قماش کے لوگ جب کسی کام پراللہ کو شم اسمات ہیں توجھوٹی قسم اسمات ہیں توجھوٹی قسم اسمات ہیں توجھوٹی قسم اسمات ہیں توجھوٹی قسم کی بہی کو شسم اسمات ہیں توجھوٹی قسم کی بہی کو شسم اسمات ہیں وربادی ہمارامقارم کی بہی کو شسم میں ہو تا ہے تھیں ، توجھوٹی قسم کی بہی کو شسم اسمات ہیں وربادی ہمارامقارم کی بہی کو شست میں جو تربادی ہمارامقارم کی کہی کو شست میں جو تربادی ہمارامقارم کو تسمال کی کہی کو شست میں جو تربادی ہمارامقارم کو تسلم کی کہی کو شست میں جو تربادی ہمارامقارم کو تسلم کی کہی کو شست میں جو تربادی ہمارامقارم کو تسلم کی کھی کی کو تب ہی کو شست کی بھی کو شست میں جو تربادی ہمارامقارم کو تسلم کی کھی کو تسلم کی کر تب ہمارامقارم کو تب کو تسلم کی کھی کو تب ہمارامقارم کو تسلم کی کھی کو تب ہمارامقارم کی کھی کو تسلم کی ہمارامقارم کی کھی کو تب ہمارامقارم کی کھی کو تب ہمارامقارم کی کھی کو تب کی کھی کو تب کا تعام کی کھی کو تب کر تب کو تب کی کھی کو تب کو تب کو تب کو تب کی کھی کو تب کی کو تب کو تب کو تب کو تب کو تب کی کو تب کو

مج فبور

اسی طرح اس ذہن کے لوگ ان لوگوں کو معیوب گرد اسنے ہیں ہوان کو مشر کانہ کا موان قبرول کے جو دفیرہ سے منع کرتے ہیں اس لئے کہ یہ لوگ تو پوری ڈسٹان کے ساتھ بیت اللہ کے جے سے قبرول کے جی کرنے کو بہتر اور افسنل سے ہے ہیں، بلکہ بیت اللہ کے جی سے دو گئے ہیں اصل جے ہے اور بی جے اکبرہے۔ ان کی سے رو گئے ہیں اور لی جا ہیں کہ قبروں کا جی ہیں اور استال سے ساتھ سے تاک کو ساتھ اس کو ساتھ اس کی قبروں کا جی نہیں کرتے ہیں، دہ ان کے حقوق واحرافات میں استخفاف کے مرتکب ہورہے ہیں اور ان کے ساتھ ان کے حقوق واحرافات میں استخفاف کے مرتکب ہورہے ہیں اور ان کے ساتھ ان کی توجی بالک واضح ہے۔ اس کے ساتھ ساتھ اللہ کے ساتھ بی اور ان کو اپنا ولی بنانا ایسے افعال نہیں ہیں جن سے اللہ کی شان میں کچھ کی آتی ہو، حالا لکہ حقیقت یہ ہے کہ مشرکین میں جن سے اللہ کی شان میں کچھ کی آتی ہو، حالا لکہ حقیقت یہ ہے کہ سے کہ مشرکین میں ۔ ارتفاد ربانی ہے ؛

مؤنؤاگرتم میری را ہیں لوسنے اوریری نوسنو دی طلب کرنے کے لئے دکتے سے نکے ہو تو میرے اور اپنے دشمنوں کو دوست نہ بنا قرائم توان کو دوستی کے پیغیام مصیحتے ہو"۔ باليما المذين أمنوا لا تتخذوا عددتى وعدوكم اولياء تلقون اليهم بالممودة. دالممتحث، ا

ام آیت مین حفرت ابراسیم علیه السّلام اوراس کے متبعیّن کی اقتدا کا حکم دیاگیا سبے کم انہوں نے مشرکین اوران کے معبودوں سے برآت کا اظہار کیا اور اس وُقت تک ان کے ساتھ دشمنی اور عداوت قائم رکھنے کا اظہار کیا جب مک کروہ ایک اللہ بإلیان نالائیں بیس شرک کرنے والااس کا حکم دینے والا اس برخوشی کا اظہار کرنے والااللہ کا دشمن سبے کین ابنیار کا دشمن سبے کین ابنیار کا دشمن سبے اور جواللہ کا دشمن سبے ۔ وہ اس سے انبیار اولیار کا دشمن سبے کین ابنیار کے امرونہی سے مطابق حکم دینے والا ان کا دشمن نہیں سبے۔ ارشاد رتبان سبے ،

اشتم عابد ون ما ا عبد مکم دینکم ولی دین -

(الكافروك) ۱- ۲

میخوا در میں بھر کہتا ہوں ، کرمن کی تم پرشش کرتے میچا ہوا ان کی میں پرستش کرنے والا نہیں ہوا در میس کی میں سند گی کرتا ہوں تم است دی در، ر،

چی واوت کرنا مول ، اس کی تم هباوت نمبیر محتی

مرئم اس کی بندگی کونے والے معلوم ہوتے ہوجس کی بیں بندگی کر تا ہوں تم اپنے دین برا میں اپنے دین بر-

ايك اشكال

میحے صدیث میں ہے آپ نے فرمایا لبید نے کئی بات کمی ہے جب اس نے کہا کہ ہم پرز اللہ کے سوا باطل ہے ، اسی طرح اللہ کا قول کہ اللہ حق ہے اور اللہ کے سوا جس کولوگ بھاتے ہیں، وہ باطل ہے ۔ ان دوسو الوں سے معلوم ہوا کہ اللہ کے ماسوی اولیاء ، انہیار، صالحین کی جمی عبادت کی مباتی ہے کیا ان کو بھی باطل کہا جا ہے گا ؟

جوادب ؛ الله کاماسوی باطل ہے اس کا عام معنی یہی ہے کہ وہ کوئی فائدہ نہیں دے سک اور نداس کی عبادت کرنا فائدہ دیتی ہے۔ ایک مدیث میں ہے ، میں گواہی دیتا ہوں کہ عرش سے فرش تک مجعبود سولتے الٹارکی ذات کریم سے بلمل ب- اس کلیسے انبیار اولیار کا استفار واضح بے ارشا و فداوندی سے :

ان المذين سبقت لعم مناالحسن من لوگوں كے لئے ہمارى طرف سے اولئتك عنعا مبعدون - ميں الحسن مقرر ہو كئى ہے ، وہ اس

اولىتك عنها مبعر كون مي المادي المرد مي المعلق عرد الانبيام المادي الما

معلوم مواكدا بنيار اوليار بالحل نهين بين البية ال كى عباوت باطل سے اس

مسر بحد فامده ما صل نبين مو گا-

کے لیا ظامنے وہ باطل لاشیم ہیں۔

مثال ہمورج میاندگی پرستش کی مباتی ہے۔ ندکورہ کلید کی روشنی میں ان کو بھی طل لاٹنیٹی سجھا مبائے گا ، ما لانکہ ان کا دجود ہے ادران سے روشنی ماصل کی مباتی ہے تو تفصور پر سے کمران کی عبادت کرنا ہا مل لا ماصل ہے۔

 لحا طسے ان کو باطل اور لاٹینی کہا گیاہیے ، بلکہ اپنی مبادت سے برآت کا تذکرہ کرتے ہوئے ان کی مکایت بیان کرتے ہوئے الٹرکڑیم سے فرمایا ہے ۔

انا بواء منكم و ممّا تعبدون من بم تم سے اور ان بتول سے جن كوتم فدا دون الله عندى من الله عندى م

اسی طرح صفرت ابراہیم علیہ السلام سے برائت کا اظہارکرتے ہوئے مزوایا کہیں اسی طرح صفرت ابراہیم علیہ السلام نے سورج چاندستارہ سے بہا سے برک ہوں کیا صفرت ابراہیم علیہ السلام نے سورج چاندستارہ سے برائت کا اظہاراس لئے کیا ہے کہ ان سے مخلوق کو فائد ہنمیں اور وہ الٹرکی قدرت کے تحت مسخر تنہیں اور وہ الٹرکی تعدرہ تنہیں کرتے مذاس کی تسبیح بیان کرتے ہیں، ہرگز نہیں، بلکان کو الترکا بنریک بنانے سے برائت کی ہے۔ یہی وہرہ کے کہتوں سے مطلقاً برائت اور تیمنی کا اظہار کیا جائے گا۔ اسی طرح مفرت میسے علیہ السلام سے برائت کا اظہاراس لئے تنہیں انظہار کیا جائے گا۔ اسی طرح مفرت میسے علیہ السلام سے برائت کا اظہاراس لئے تنہیں جوان سے کہ وہ الٹرکے رسول ہیں، عزت والے ہیں ، بلکمان کے بارے میں ہوغلا نظریات فائم کر التہ گئے اور انٹرک بیٹا اور معبود کہا گیا ، اس سے برائت کا اظہار ہے ۔ پس بوان سے التہ کے لئے مجت کر تاہیں وہ مومد سے اور جوان کو الٹرکی بنا تاہے اور الٹرک سے ۔ اس سے مجت کر تاہیے ، وہ مومد سے اور جوان کو الٹرکا نٹر کی بنا تاہے اور الٹرک سے ۔

کیاکسی کوشفاعت کااستقاق ہے

ار شاور بانی سید؛ مالکم من اس کے سوائم ہا را نہ کوئی ووست سید دو خدمن ولی و لا شفیع دسج بن میں من ولی اس کے سوانہ توکوئی ان کا دوست ہوگا مین دون باس کے سوانہ توکوئی ان کا دوست ہوگا الله وَلَى وَلَى الله عَلَى وَلَى الله عَلَى الله

کے بغیرسی کی سفارش نہیں کرسکا۔ کون ہے کہ اس کی اجازت کے بغیاس سے کمی کی سفارش کرسکے۔ اور خدا کے ہاں دکسی کے لئے ہفار فائدہ نہ دیے گی ، گراس کے لئے مسکے بارسے میں وہ امبازت بخشے ۔

بعد اذند-ريونس، ٣ يزفرالي: من ذالسذى يشفع عند؛ الآباذن دالبقوة، يزفرالي: ولا تتنفع الشفاعة عند؛ الالمن اذن لمه رالسبا)

ان آیات سے معلوم ہونا ہے کہ انبیار وا ولیا را دوفر شنے الٹرکے ہاں کسی کی سفار تن اللہ کی اما اوت اور فرانروا کی اما وہ نے بغیر نہیں کرسکیں گے۔ ایک صدیف میں فرطنوں کی اطاعت اور فرانروا کی کا نقشہ بیان کرتے ہوئے کہا گیا ہے کہ جب آسما نوں پرکوئی فیصد ہوتا ہے تو فرشنے الٹرک مکم کے سامنے مرتب ہم کی کر سامنے مرتب ہم کی کا لاتے ہوئے اپنے پروں کو حرکت وسنے ہیں۔ ان کے پروں کی مربر امہ یہ وہ سنائی وہتی ہے میسا کہ کسی پیقر پرز نجر کے گرف سے آواز بیدا ہوتی ہے اس پروہ وہ بیہ وی ہوئی ہوئی ہے اس پروہ وہ بیہ وی ہوئی ہو ہو اس مرب انہیں ہوئی ہے کہ الٹرکی فرمان سی ہے اور وہ بلنداور براہ ہے بروردگارنے کیا ارشا دورہ با ہواب مل ہے کہ الٹرکی فرمان سی ہے اور وہ بلنداور براہ ہے اس وقت انہیں الٹر باک کے فیا ہو اب مل ہے تاہے تو وہ کس طرح الٹر کے معاملات میں اس کی امبا زت کے بغیرہ خیل ہو سے ہیں ، درسفارش کرسکتے ہیں ، ارشا و دربا تی ہے ۔ اس فرشنے تو الٹرکے کسی کم سے آگے نہیں فرشنے تو الٹرکے کسی کم سے آگے نہیں فرشنے تو الٹرکے کسی کم سے آگے نہیں برخ صفے ۔ بئی ان کی کارکردگی الٹرکے کی کارکردگی الٹرکے کی کارکردگی الٹرکے کا بی تربی ہوئی ہے ۔ طاب تی ہوئی ہے ۔

رسول اكرم كي شفاعت

قیامت کے دن مبدلوگ سخت سے بینی میں ہوں گے، او تمام لوگ شفاعت سے کے مفرت اوم علیہ السلام کے باس ما تیں گئے وہ عذر پہشیں کرتے ہوئے انہیں معز

۲۳۲

پرالندپاک فروایس گے ۔ سامے محرم ! اپنا سراعفاسنے اور کھتے ہم آپ کی بات سنیں گے سوال کیمجتے ہم آپ کاسوال ہے راکئے دیتے ہیں، سفارش کیجئے، آپ کی سفارش قبول ہوگی۔ آپ نے فرمایا، میں دینواست کروں گا۔ لیے میرسے پرور دگار!میری اقت کو معاف فرا۔ پ

ایک مدکا تعین کیامات گاتی شند کو کا کو میں جنت میں داخل کروں گا،اس طرح دیوی ایک مدکا تعین کیامات گاتی شنے لوگول کو میں جنت میں داخل کروں گا،اس طرح دیوی اور تیسسری بارمد بندی ہوگی معلوم ہوا کہ قیامت کے دن تمام لوگوں سے پہلے جو سفارش کریں گے دہتے چمد ملی النّر علیہ وسلم ہیں اور آپ کی شفاعت کے مستمق وہ لوگ ہوں گے ہج

مریات میں میں میں ہیں ہیں۔ خلوص کے ساتھ لا المہ الا النّہ کا اقرار کریں گے ۔ اس میں شریب سے معالم میں کہ سریب الله شام نام میں امور میں میں

اس مدیث سے پھی معلوم ہوا کہ جب آپ بارگاہ خدا وندی ہیں ما طرہوئے ہیں تواس وقت آپ سنے اوّلا اللّٰہ باک کی تعرفیف کی ہے۔ اللّٰہ کے سامنے سحیرہ ریز ہوئے ہیں اوراس وقت تک سفارش نہیں کہ ہے، جب بنک کہ آپ کوسفارش کی امبازت نہیں ملی ، مجھ شفاعت کی امبازت بھی محدود ہے معلوم ہوا اگرمے آپ کا مقام اللّٰہ کے ہاں تمام www.KitaboSunnat.com سس س

فائنات سے افضل سے ، مھرمینی آپ اللّٰہ کی اجازت کے بغیر سفارش کے لئے لُب کُشانی اللّٰہ کی اجازت کے بغیر سفارش کے لئے لُب کُشانی اللّٰہ کے اس کے کہ تمام اختیارات مرت ایک اللّٰہ کے باتھ میں بین جس کا کوئی شرک اللّٰہ کہا ہے ، دہی ہے جو سُفارش قبول کرتا ہے ، دہی

ب برص چیزکومیا ستا ہے ، پیداکرتا سے - تمام افتیارات کا مالک وہی سیے ماکا ن دم الحدیدة - سیحان الله و تعالیٰ عمّا پشر سحون -

انبياراوليار تعظيم مين فلو

ہولوگ انبیارا ولیار کی تعظیم میں علوا ختیار کرتے ہیں 'ان کی مقرر مدسے زیا و تعظیم کرتے ہیں ، ان کی مقرر مدسے زیا و تعظیم کرتے ہیں ، اسی لئے انبیا کے ان سے برات کا اظہار کریں گے ؛ جنا بی حضرت محمر صلی الشعلیہ وسلم اس آدمی کے عمل سے برات کا اظہار کرتے ہیں جو آپ کی سنت کی محالفت کرتا ہے ۔ ارشا در تابی ہیں ہو ا

فان عموك فقل انى بدئ ما بيم الراوك تمهارى افران كري توكهدوكم بدن - دانشعارى ۲۱۷

تعملون د الشعار من المراق المراق كرتاب السياعمال سي بعثن مول و المراق كرتاب المراق كرم و المراق كرم و المراق كرتاب المراق

سے کہتا سے کریرا مقعد تورسول اکرم مل التّرطید ولم کی تغظیم تھا، اس کسے کہ تعظیم سے مرادالل سے کہتا ہے مرادالل سے رجب اطاعت مذکی تو تعظیم بھی نہوئی۔ سے رجب اطاعت مذکی تو تعظیم بھی نہوئی۔ ارشا دِرآبانی سے ، واذ قال اللّٰہ داور اس وقت کو بھی بادرکھو، جب خدا

يا عيسى ابن مديم منت قلت للنّاس فرائع لاكرائ عيسى بن مريم كياتم فلالو

ا تخذونی وامی المهین من دولت کوکهایمها کرنداسکے سوامجھے اورمیری والدہ انڈر دالمائدہ، ۱۱۲

الله . دالما تُده) ۱۱۱ اس آیت نے واسے کردیاہے کے حصرت علیہ السّلام نے ان سے انہی کامول سے

محکم دلائل و براہین سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

سم سم

کسنے کا مکم دیا ، جن کا حکم النہ باک نے دیا تھا کہ ایک النہ کی عبادت کریں ۔ اسی طرح تمام انبیار نے ایک النہ کی عبادت کی طرف دعوت دی ، توالٹہ باک کی عبادت بنرلیت کی دوشتی میں ہوگی ۔ غیر شرعی ا نعاز میں اس کی عبادت شرک کہلاتے گی ۔ ارشاد خداوندی ہے ، ام دھم شوکا ء شوعو ا ابھم میں المدین ما کیا ان کے وہ نٹر کیک بہیں جنہوں نے المہا دُن مقرکیا ہے جس کا ان کے لئے الیسا دین مقرکیا ہے جس کا المہا دُن مقرکیا ہے جس کا مدانے سے تم تنہیں دیا ۔ السخودی ، ۲۱ ان کے لئے الیسا دین مقرکیا ہے جس کا خدانے سے تم تنہیں دیا ۔ سالم میں بین واجب اور بعض سخب ہیں توجو واجب مستحبات کو چھوڑ کردین میں اپنی طرف سے واجبات اور سخبات کا اضافہ کرتے ہیں ، تو واجبات کو شرک اور مستحبات کو بعوت کہا جائے گا۔

قبرول كاهج كرنا

امی قبیل سے قبروں کا کے کرناہے۔ شریعت اسلامیہ میں نداس کو واجب اور نہ مستحب کی میں تہیں کہا جاسکتا ۔ اس کے استحب پرکوئی شخص صحیح مدیث بیش نہیں کرسکا۔
البقہ کچے موضوع جبوئی مدیث بی موجود ہیں ، جن کی شریعت میں کوئی چینت نہیں ۔ یہ کہنا کہ جب قبروں کا چی مضروع نہیں ، قربیت الله بیت المقدس اور سجد نبوی کی زیارت کے لئے سفر کیوں مشروع ہیں ، قربیت الله کا سے سفر کیوں مشروع ہیں ، اس لئے کہ پرسفر النہ کے ایسے گھروں کی المندی طرف ہے جن گھروں کو انبیا ، لئے المندی عاوت کے لئے تعمیر کیا۔ جن میں بیت النہ کا طرف ہے جن گھروں کو انبیا ، لئے المندی اور سجد نبوی کی زیارت کے لئے سفر کرنا متر میں جا ور بیت المندی اور سجد نبوی کی زیارت کے لئے سفر کرنا متر میں جن کوکسی دوسری میں فی فی ان میں اور کی خوا می المندی کرنا ، عرف میں اور میں دوسری میں فی فی ان میں اواکرنا جائز ہیں ۔ مثلاً بیت النہ کیا طواف کرنا ، صفامروہ کے درمیان سعی کرنا ، عرف میں اواکرنا جائز ہیں ۔ مثلاً بیت النہ کیا طواف کرنا ، صفامروہ کے درمیان سعی کرنا ، عرف

مزدلف منی میں و تون کرنا جمروں کوکنکر مارنا ، قربانیوں کا ذبح کرنا وغیرہ مسمبر نبوی اور سی دبیت المقدس میں مرف دہی کام جائز ہیں جود پیڑ مسا مدیس جائز ہیں ، مثلاً نماز پر مسنا ذکرا ذکارکرنا ، وعا ما نگنا ، اعتکاف مبیٹے نا ۔ البقہ ان دونوں سیدوں میں عباوت کود پیڑ مسا مدیس حباوت پرفضیلت ماصل ہے ، اسی سلتے ان کی زیارت کے لئے مفر کومشروع قرار دیا ہے ۔

ئروضەنبوي كى زيارت

چونکه روضة نبوی سی بنبوی سے سا تھ ملحق سپے ۔ اس سکتے جب کو تی شخف مخبری کی زیارت کے سکتے وہاں بہنجیا سپے ، تو اس میں رسول اکرم صلی الٹرطلیہ وسلم کے حقوق و احترام حجکہ شرعًا مشروع ہیں ، ان کولچ راکر تا سپے یعنی آپ پرصلوۃ وسلام کا ہر پیجیجنا ، ذصرف سی دنبوی میں مشروع سپے ، بلکہ تمام مسامدا ورتمام متعامات میں اس کی شرویت

اسرام بودر مرق سروی بین مشروع سے، بلکہ تمام مسامدا ورتمام مقامات بین اس کی شرقیت فرات سے، جہال کہیں سے بھی آپ برکوئی انسان صلواۃ وسلام کا بدیم بیج تاہے، تو وہ آپ شابت ہے ، جہال کہیں سے بھی آپ برکوئی انسان کا پہنچ جانا ہی آپ کی قبراطبر کی زیارت کرنا سے اور بہی زیارت نشری ہے، وگرز آپ کی قبراطبر کل بہنچ بانا ممکن سے اسی لیخاس سے اور بہی زیارت نشری ہے، وگرز آپ کی قبراطبر کل بہنچ بانا ممکن سے ۔ اسی لیخاس کو مشروع قرار نہیں دیا ہے مبکداس سے روک دیا گیا ہے ، جبکہ مام قبرول کی زیارت بلاسفر مشروع سے۔ اس سلے کہ وہ کھلے میدان میں بین اور آپ خاص طور برجم و ماکشہ بلاسفر مشروع سے۔ اس سلے کہ وہ کھلے میدان میں بین اور آپ خاص طور برجم و ماکشہ بلاسفر مشروع ہیں۔ اس سلے کہ وہ کھلے میدان میں بین اور آپ می جا تو نہیں اور مبدانسان میں مدفون ہیں کی قبر کو سے بنانا مید گا ہم جون ا ، بُت بنانا کسی مالت بین بھی جا تو نہیں اور مبدانسان میر بیت سے اور افعال میں میں میں بین اسلامی میں جہاں اللہ باک کو اپنی کمال قومی مطلوب سے اور افعال میا میں جہاں اللہ باک کو اپنی کمال قومی مطلوب سے اور افعال میں ماسے گا کو تین کمال قومی مطلوب سے اور افعال میں ماسے گا کو تین کمال قومی مطلوب سے اور افعال میں میں جہاں اللہ باک کو اپنی کمال قومی مطلوب سے اور افعال میں میں جہاں اللہ باک کو اپنی کمال قومی مطلوب سے اور افعال میں میں جہاں اللہ باک کو اپنی کمال قومی مطلوب سے اور افعال میں میں جہاں اللہ باک کو اپنی کمال قومی میں جہاں اللہ باک کو اپنی کمال قومی میں جہاں اللہ باک کو اپنی کمال قومی میں جہاں اللہ باک کو این کمال تو میں میں جہاں اللہ باک کو ایک کو اپنی کمال تو میں میں جہاں اللہ باک کو این کمال تو میک کو ایک کو

www.KitaboSunnat.com

دركارس، وبال تغيرول كى بؤرى بؤرى الما عت ال كى تجبت ، ان كى متالعت ان كى معاونت بمي مطوب سبد به بس تمام لوگول سے زیادہ سعید دنیا اور آخرت میں وانسان سبح بوظا مرًا اور باطن رسول اكرم مىلى الترعليه وسلم كى زيادہ سے زيادہ اتباع كرنے والا سبح - صلى الله عليه وسلم تسليمًا والحد الله وصلوا دتر وسلا مؤحلى محت والله وصحبه وسلم - وحسسنا الله و فعم الحكيل - وسلم - وسلم - وحسسنا الله و فعم الحكيل - وحسب الله و فعم الحكيل - وحسب الله و فعم الحكيل - وحسب المكلم و فعم الحكيل - وحسب و سلم - وحسب المكلم و فعم الحكيل - وحسب المكلم و فعم المحسل و فعم المحسل و فعم المحسل و فعم المحسل و فعم و ف



محدّماشق صين إشى توشنوس لِلَكْرِ

